UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178799

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—552—7-7-66—10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 | E65S Accession No. G.H.2636

Author दुबे, पुरुषोत्तम.

Title शिक्षा विवेक. 1957.

This book should be returned on or before the date last marked below.

इस ग्रंथ के समस्त पात्र काल्पनिक हैं;
तथा सेना के विभिन्न दलो और
संगठनों के नाम भी वास्तविक नहीं हैं।

प्रथम खंड

. १ .

उस वर्ष ग्रीष्म-ऋतुके अन्तिम दिनों में हम एक देहात के घर में रह रहे थे। वहाँ से, नदी के उस ओर का दृश्य तथा पहाड़ों में विलीन हो जानेवाला मैदान साफ दिखाई देता था। सूर्य के प्रकाश में सूखे और सफ़ेद दिखने वाले कंकड़ों तथा गोल-गोल चिकने पत्थरों से नदी का तल भरा हुआ था। उसका स्वच्छ-नीला जल तीव्र गति से बहता रहता। घर के निकट से नीचे सड़क पर सैनिक टुकड़ियाँ निकल जातीं और उनके चलने से उड़नेवाली धूल वृक्षों के पत्तों पर जम जाती। वृक्षों के तनों पर भी धूल जम गई थी। उस वर्ष समय के पहले ही पत्ते झड़ने लगे थे। सड़क से जानेवाली सैनिक टुकड़ियों को, उड़ती हुई धूल तथा हवा के झोंके से हिलते हुए नीचे गिरनेवाले पत्तों को, हम देखा करते। सैनिकों के गुज़र जाने के बाद सड़क सूनी हो जाती—सिर्फ़ वृक्षों के पत्ते सर्वत्र बिखरे रहते।

मैदान फ़सलों से भरा था। उसमें कई फलों के भी बग़ीचे थे। मैदान के उस ओर नंगे और मटमैले पहाड़ खड़े थे। पहाड़ों में लड़ाई हो रही थी और रात में हम तोपों की चमक को देखा करते! अँधेरे में यह चमक कड़कती हुई बिजली-सी प्रतीत होती। किन्तु रातों में ठंढ रहती थी और तनिक आभास भी नहीं होता था कि तूफ़ान आनेवाला है।

कभी कभी हम अँधेरे में अपनी खिड़की के नीचे सैनिक टुकड़ियों के गुज़रने तथा मोटर-ट्रैक्टरों द्वारा तोपों के खींची जाने की आवाज़ सुनते। रात में सामानों को ढोकर ले जाने का काम खूब चलता। पीठ पर कसी हुई ज़ीन के दोनों ओर कारतूसों और बारूद से भरी पेटियाँ लादे खच्चर निकलते, सैनिकों से लदी भूरे रंग की मोटर ट्रकें होतीं और टाट से ढँकी हुई दूसरी ट्रकें, जिनमें सामान भरे होते और जो धीरे-धीरे आगे बढ़तीं। बड़ी बड़ी तोपें भी थीं, जिन्हें ट्रैक्टर दिन में खींच कर ले जाते। उनकी लम्बी नलियाँ हरी टहनियों से ढँकी रहतीं और ट्रैक्टरों पर हरे-हरे पत्तोंवाली शाखाएँ तथा अंगूर की बेलें बिछी रहतीं। उत्तर की ओर,

घाटी के पार हमें अखरोट का वन तथा उसके पीछे नदी के इस किनारे, एक अन्य पहाड़, दिखाई देता था। उस पहाड़ के आगे भी लड़ाई हुई थी; किंतु जीत हमारी नहीं हुई। पतझड़ में जब वर्षा हुई तो अखरोट के वृक्षों के सभी पत्ते गिर गए और उनकी शाखाएँ पत्र-विहीन हो गईं तथा तने वर्षा के कारण काले पड़ गए। अंगूर की बेलें बिलकुल सूख गई थीं और उनके पत्ते भी झड़ गए थे। सारा गाँव पतझड़ के कारण गीला, भूरा और मृतप्राय दिखाई देता था। नदी पर कुहासा छाया रहता और पहाड़ पर बादल तैरते रहते। ट्रकें सड़क पर कीचड़ उछालती निकल जातीं और इटालियन लबादे पहने सैनिक कीचड़ से लथपथ हो जाते, उनकी राइफलें भीग जातीं। उनके लबादों के भीतर कसे हुए पट्टों पर सामने की ओर कारतूसों से भरी चमड़े की दो पेटियाँ बँधी थीं। ६·५ मिलीमीटर की लम्बी और पतली कारतूसों से भरी, चमड़े की ये दो भूरी पेटियाँ उनके लबादे के नीचे आगे की ओर उभरी हुई थीं और सड़क पर गुज़रते वे सैनिक ऐसे प्रतीत होते, मानो उनके पेट में छह महीने का बच्चा हो!

सड़क पर छोटी भूरी मोटरें; बड़ी तेज़ी से निकल जातीं। साधारणतः इन मोटरों में (ड्राइवर की बग़ल में) एक अफ़सर बैठा रहता। कुछ अफ़सर पीछे की सीट पर भी बैठे रहते। ये मोटरें तोप ढोनेवाली मोटरों से भी अधिक कीचड़ उछालतीं। यदि पीछे की सीटपर बैठे हुए अफ़सरों में से एक अफ़सर छोटे क़द का और दो सेनापतियोंके बीच बैठा होता—इतने छोटे क़द का कि, सिर्फ़ उसकी टोपी का ऊपरी हिस्सा और उसकी तंग पीठ दिखाई देती, तो मोटरें और तेज़ दौड़तीं। यदि मोटर की रफ़्तार विशेष रूप से तेज़ होती, तो उसमें कदाचित् राजा बैठा रहता था। वह 'थूडाइन' में रहता था और प्रायः प्रति दिन इसी प्रकार वहाँ की स्थिति का निरीक्षण करने आता था। स्थिति थी भी बहुत खराब।

जाड़े का मौसम शुरू होते ही स्थायी रूप से वर्षा शुरू हो गई और उसी के साथ शुरू हो गया हैज़ा। किन्तु तुरन्त ही उसकी रोक-थाम की गई और अन्ततः सेना में मात्र सात हज़ार सैनिकों पर ही मृत्यु अपना मनहूस साया डाल सकी!

· २ ·

अगले वर्ष बहुत-सी लड़ाइयों में हमारी जीत हुई। घाटी के उस ओर जो पहाड़ था और उसके पास के उस स्थान पर, जहाँ अखरोट का जंगल था,

हमारा अधिकार हो गया। मैदान के दक्षिण की ओर के पठार के लिए जो युद्ध हो रहा था, उसमें भी विजय का सेहरा हमारे ही सिर बँधा। अगस्त में हम नदी पार कर गये और अब 'गोरीज़िया' (एक इलाक़ा) के एक घर में रह रहे थे। घर के सामने ही चहारदीवारियों से घिरे हुए बग़ीचे में फ़व्वारा और कई घनी -गहरी छाया वाले वृक्ष थे। एक ओर 'विस्टेरिया-वाइन-परपल' (लालरंग के फूलोंवाला एक पेड़) का भी पौधा था। युद्ध अब दूसरी पहाड़ियों में चल रहा था, जो वहाँसे मील भर भी दूर नहीं थीं। शहर बड़ा ख़ूबसूरत था और घर भी सुन्दर मिला था। हमारे पीछे ही नदी बहती थी। शहर पर तो बड़ी ख़ूबी से अधिकार कर लिया गया था; किन्तु उसके आगे के पर्वतों पर विजय प्राप्त न हो सकी थी। मैं यह देखकर बड़ा प्रसन्न था कि आस्ट्रियनों ने शहर पर इतनी अधिक बमबारी नहीं की थी कि वह पूर्णरूपेण ध्वस्त हो जाय। युद्ध के कारण ही उन्होंने उसपर थोड़े-से बम बरसाये थे। ऐसा प्रतीत होता था कि, युद्ध बन्द हो जाने पर वे कदाचित पुनः वहाँ बसना चाहते थे। शहर में लोग अभी भी रहते थे और सड़कों पर के अस्पताल, कॉफे और तोपखाने में पूर्व की तरह ही जीवन था। वहीं पर दो चकले भी थे। एक सैनिकों के लिए और दूसरा अफ़सरों के लिए।

गरमी का मौसम ख़तम होते ही ठण्डी रातें आरम्भ हो गईं। गत वर्ष, पतझड़ के समय हम देहात में थे, किन्तु इस वर्ष हमारी हिम-ऋतु गोरीज़िया में बीत रही थी। गोरीज़िया में वस्तुतः अनेक विशेषताएँ थीं। शहर से दूर पहाड़ों में चल रही लड़ाई, बम के गोलों की कहानी कहते हुए रेल के पुल, ध्वस्त लौह-खंड और नदी के पास की नष्ट-भ्रष्ट सुरंग जहाँ लड़ाई हुई थी, सब मिलकर एक अद्भुत दृश्य उपस्थित करते। शहर का चौक वृक्षों से घिरा हुआ था और वहाँ तक वृक्षों की लम्बी-सी क़तार थी। नगर के विभिन्न अंचलों में बमबारी से नष्ट अनेक घर अभी भी अपने दुर्भाग्य की कहानी सुना रहे थे। उनकी ध्वस्त दीवारों के कारण भीतर का दृश्य स्पष्ट दिखाई दे जाता था। मकान के बग़ीचों में और कभी कभी तो सड़कों पर भी ईंट-पत्थरों के ढेर और प्लास्तर बिखरे नज़र आते थे, फिर भी कार्सोपर सब काम पहले की तरह ही चल रहे थे। सड़कों पर लड़कियाँ स्वच्छन्दता से इधर उधर घूमती दिखाई देती थीं। राजा भी अपनी मोटर में निकल जाता। कभी-कभी लम्बी गर्दनवाला उसका ठिगना शरीर और बकरे की दाढ़ी के समान घनी गुच्छेदार भूरी दाढ़ी से आच्छादित उसका चेहरा दिखाई पड़ जाता और इन सबके बीच हिमपात—गत

वर्ष गाँव में दिखाई देनेवाले हिमपात से बिलकुल निराला दिखाई देता था। उसका स्वरूप ही भिन्न था! युद्ध का रूप भी अब तक बदल चुका था।

शहर के उस ओर के पहाड़ का बलूत-वन नष्ट हो चुका था। ग्रीष्म-ऋतु में जब हम शहर में आए थे, जंगल बिलकुल हरा-भरा था; किन्तु अब उसके स्थान पर वहाँ वृक्षों के ठूँठ, टूटे हुए तने तथा बीच-बीच में कटे-फटे मैदान ही शेष रह गए थे। बर्फ़ गिरना बन्द होने के बाद, एक दिन जब मैं उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ यह बलूत-वन था तो मैंने देखा कि, बादल का एक टुकड़ा पहाड़ को ढँकता चला आ रहा है। वह बड़ी तेज़ी से बढ़ रहा था। शीघ्र ही, सूर्य फीका और पीला पड़ गया, प्रत्येक वस्तु भूरी दिखाई देने लगी, और आकाश बादलों से घिर गया। देखते ही देखते बादल, पहाड़ से नीचे उतर आया और हम अचानक उसमें घिर गए। वह और कुछ नहीं, बर्फ़ था। हवा के कारण, बर्फ़ तिरछा होकर गिर रहा था, सारा ख़ाली मैदान बर्फ़ से ढक गया और वृक्षों के ठूँठ बर्फ से ढँक कर उभर आए। हमारी बन्दूकों पर भी बर्फ़ जम गया और खाइयों के पीछे बने शौचालयों तक जानेवाले रास्ते बर्फ़ में डूब गए।

बाद में, जब मैं नीचे शहर में, अफ़सरों के लिये सुरक्षित चकले में बैठा था, मैंने बर्फ़ गिरते देखा। मैं अपने एक मित्र के साथ बैठा था। सामने की मेज़ पर दो गिलास रखे हुए थे। हम 'आस्ती' (एक प्रकार की शराब) पीते हुए खिड़की से, बाहर देख रहे थे। धीरे-धीरे; किन्तु पर्याप्त मात्रा में बर्फ़ गिरते देखकर हम समझ गए कि इस वर्ष अब युद्ध न हो सकेगा। अभी तक नदी के ऊपर की ओर के पहाड़ों पर हमारा अधिकार नहीं हुआ था। वस्तुतः उस ओर का एक भी पहाड़ हमारे कब्ज़े में नहीं आ पाया था। यह कार्य हमने अगले वर्ष के लिए छोड़ दिया था। तभी मेरे मित्र ने हमारे भोजन-गृह (मैस) से पादरी को निकलते हुए देखा। वह नर्म बर्फ़ में, बड़ी सावधानी से सड़क पर चला जा रहा था। मेरे मित्र ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए खिड़की थपथपाई। पादरी घूमा और हमें देखकर मुस्कराया। मेरे मित्र ने उसे भीतर आने का संकेत किया। किन्तु पादरी ने सिर हिला कर इनकार कर दिया और आगे बढ़ गया।

उस रात हमने मैदे की बनी मिठाई खाई। प्रत्येक व्यक्ति बड़ी तेजी से; किन्तु गम्भीरतापूर्वक खा रहा था। हम काँटे के ज़रिये मिठाई ऊपर उठाते, और जब उसके लच्छे अलग-अलग होकर झूलने लगते; तब उसे मुँह में डाल लेते अथवा उसे एक साथ ही उठा-उठा कर मुँह में रखते और निगल जाते। उसीके

साथ घास से ढँकी कुप्पी से हम शराब ढालकर पीते जाते थे। उस कुप्पी में एक गैलन शराब आती थी। शराब की कुप्पी धातु के बने हुए एक छींके से लटक रही थी। कुप्पी के ऊपरी हिस्से को हम अपनी तर्जनी से पकड़कर उसी हाथ में थामे हुए गिलास में शराब ढाल लेते। छाल से निकाली हुई, साफ़ लाल रंग की शराब बड़ी आकर्षक दिखती थी। ...खाने-पीने के बाद कैप्टन ने वही, भोजनालय में पादरी को चिढ़ाना शुरू कर दिया।

पादरी नौजवान था और बड़ी जल्दी शरमा जाता था। उसने हमारे समान ही वर्दी पहन रखी थी। किन्तु उसके भूरे रंग के छोटे-से कोट की नई जेब पर गहरे लाल रंग में मखमल का क्रॉस बना था। मुझे इटालियन भाषा अच्छी तरह नहीं आती, इससे कैप्टन टूटी-फूटी इटालियन में बोल रहा था, जिससे मैं सारी बातें ठीक-ठीक समझ सकूँ और कोई भी बात मुझसे समझने में छूट न जाय।

"पादरी तो आज लड़कियों के साथ—" कैप्टन ने पादरी और मेरी ओर देखते हुए बस इतना ही कहा। पादरी मुस्कराया और लजाते हुए उसने अपना सिर हिला दिया। कैप्टन अकसर उसे इसी तरह छेड़ा करता था।

"क्या यह सच नहीं है?" वह बोला—"आज ही मैंने पादरी को लड़कियों के साथ देखा था।

"ना" पादरी ने स्पष्ट इनकार कर दिया। दूसरे अफ़सर पादरी के इस प्रकार बेवकूफ बनाये जाने का आनन्द ले रहे थे।

"नहीं नहीं, पादरी लड़कियों के साथ नहीं रहता—" कैप्टन ने कहना शुरू किया—"पादरी कभी लड़कियों के साथ नहीं रहता।" उसने जैसे मुझे समझाया और मेरा गिलास लेकर मेरी ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए उसे भर दिया; किन्तु फिर भी पादरी को उसने अपनी आँखों से ओझल नहीं होने दिया था।

"पादरी हर रात पाँच-पाँच लड़कियों से घिरा रहता है।" और इसपर मेज़ के निकट बैठे सब लोग हँस पड़े।

"कुछ समझे? पादरी हर रात पाँच-पाँच लड़कियों के साथ!" एक विशेष भाव-भंगिमा के साथ वह ज़ोर से हँस पड़ा। पादरी इसे एक मज़ाक मान मौन रह गया।

"पोप की इच्छा है कि युद्ध में आस्ट्रियन लोगों की जीत हो।" मेजर ने कहा—"वह 'फ्रान्ज़-जोसेफ' को प्यार करता है। पैसा भी तो वहीं से आता है। भाई, मैं तो नास्तिक हूँ।"

"क्या तुमने 'ब्लैक पिग' नामक पुस्तक पढ़ी है?" लेफ्टिनेंट ने पूछा– "मैं तुम्हे उसकी एक प्रति ला दूँगा। उसी पुस्तक ने मेरे विश्वास की जड़ हिला दीं।"

"वह एक गन्दी और बेकार पुस्तक है।" पादरी बोला "निश्चय ही, उसे कोई पढ़ना पसन्द नहीं करता।"

"नहीं-नहीं, वह बड़ी महत्त्वपूर्ण पुस्तक है–" लेफ्टिनेंट ने कहा–"उसमें तुम्हें इन पादरियो के बारे में सबकुछ मालूम हो जायगा। तुम्हें वह पसन्द आयेगी।" वह मुझसे बोला। मै पादरी की ओर देखकर मुस्कराया और उत्तर में, मोमबत्ती के प्रकाश के उस ओर से वह भी मुस्कराया। "तुम वह पुस्तक मत पढ़ना।" उसने कहा।

"मैं तुम्हें वह पुस्तक मँगवा दूँगा।" लेफ्टिनेंट बोला।

"सभी विचारक नास्तिक होते हैं।" मेजर ने कहा–"किन्तु मै आपस मे प्रेम और भाई-चारे की बात करनेवालो पर विश्वास नहीं करता।"

"मै तो ऐसे लोगो पर, विश्वास करता हूँ।" लेफ्टिनेंट बोला–"इन लोगो की संस्था एक श्रेष्ठ संस्था है।" तभी कोई भीतर आया और ज्योंही द्वार खुला मैंने देख लिया कि बाहर बर्फ़ गिर रहा था।

"बर्फ़ गिरना शुरू हो गया है, इससे सम्भवतः हम अभी कहीं हमला नहीं करेंगे," मैंने कहा।

"बिलकुल नही"–मेजर बोला–"तुम चाहो, छुट्टी पर जा सकते हो। तुम्हें 'रोम', 'नेपल्स', या 'सिसिली'.....जाना चाहिए।"

"इन्हें तो एमाल्फी जाना चाहिए"–लेफ्टिनेंट ने कहा–"मै तुम्हें, 'एमाल्फी' में, अपने परिवार के नाम चिट्ठियाँ लिखकर दे दूँगा। मेरे परिवार-वाले तुम्हें अपने बेटे की तरह प्यार करेंगे।"

"इन्हें 'पालेर्मो' जाना चाहिए।"

"नहीं, इनका तो 'काप्री' जाना ठीक रहेगा।"

"मैं तो चाहता हूँ कि तुम 'अब्रूज़ी' जाओ और 'काप्राकोट्टा' मे मेरे घर के लोगो से मिलो।" पादरी बोला।

"ज़रा 'अब्रूजी' जाने की उसकी बातें सुनो। वहाँ तो यहाँ से ज्यादा बर्फ़ गिरता है। अरे भाई, ये किसानों से मिलने के इच्छुक नहीं हैं। इन्हें तो सभ्यता और संस्कृति – के प्रतीक कहलानेवाली जगहो की सैर करने दो।"

"इन्हें तो अच्छी-अच्छी लड़कियाँ मिलनी चाहिए। मैं तुम्हें नेपल्स के

बहुत-से अड्डों के पते दे दूँगा। वहाँ तुम खूबसूरत युवा लड़कियों और उनकी माताओं से मिल सकोगे। हाः-हाः-हाः-हाः।"

वह पादरी की ओर देखकर चिल्लाया,-"हर रात बेचारा अकेला पादरी और पाँच-पाँच लड़कियाँ!" एक बार फिर सब लोग हँस पड़े।

"तुम्हें फ़ौरन छुट्टी ले लेनी चाहिए।" मेजर बोला।

"मैं तो चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ-साथ चलकर तुम्हें सब-कुछ दिखाऊँ-", लैफ्टिनेंट ने कहा।

"जब तुम वापस आओ, तो एक ग्रामोफोन लेते आना!"

"अच्छे-अच्छे नाच के रिकार्ड लाना।"

"'कारुसो' (एक गायक) के रिकार्ड लाना।"

"ना, कारुसो मत लाना। वह तो डकारता है।"

"क्या तुम्हारी इच्छा नहीं होती कि तुम भी उसकी तरह डकार सको?"

"वह डकारता है—बिलकुल साँड़ की तरह डकारता है।"

"मैं तो तुम्हें 'अब्रूज़ी' जाने की सलाह दूंगा—" पादरी बोला। बाक़ी लोग चिल्ला रहे थे। पादरी बोलता गया—'वहाँ शिकार का बड़ा आराम है। तुम्हें वहाँ के लोग पसन्द आयेंगे। और ठंढ होते हुए भी वहाँ का मौसम बिलकुल साफ़ और सूखा है। तुम वहाँ मेरे परिवार के साथ ठहर सकते हो। मेरे पिता एक प्रसिद्ध शिकारी हैं।"

"चलो भाई!" कैप्टन ने कहा—चकला बन्द होने के पहले ही वहाँ पहुँचना है।"

"अच्छा नमस्ते।" मैंने पादरी से विदाली।

"नमस्ते।" वह बोला।

३

जब मैं मोर्चे पर वापस आया, तो हम उसी शहर में रह रहे थे। आसपास के इलाके में बहुत-सी तोपें आ गई थीं। अब तक वसन्त का मौसम भी आ गया था। खेत हरे-भरे दिखाई देते थे। अंगूर की बेलों पर नन्हीं-नन्हीं हरी कोंपलें आ रही थीं। सड़क के किनारों के पेड़ों में छोटे-छोटे पत्ते निकल रहे थे और समुद्र की ओर से धीमी-धीमी हवा चला करती थी। मैंने शहर और

उसके निकट की पहाड़ी को देखा। पहाड़ी पर बना वह पुराना किला उन पहाड़ियों के बीच किसी प्याले में रखा प्रतीत होता था। उस ओर के मटमैले भूरे पर्वतों के ढलानों पर थोड़ी-थोड़ी हरियाली छा रही थी। शहर में पहले की अपेक्षा अधिक तोपें आ गई थीं, कुछ नए अस्पताल बन गए थे, सड़कों पर अंग्रेज पुरुष और कभी कभी अंग्रेज स्त्रियां भी दिखाई दे जाती थीं और, कुछ और घर अपने विनाश की कहानी कह रहे थे। वातावरण में गरमी थी और वसन्त के आगमन का स्पष्ट अनुभव हो रहा था। दीवारों पर बिखरी हुई धूप की गरमी से परेशान मैं वृक्षों के बीच से गुज़रनेवाली गली में बढ़ता गया। मैंने देखा कि हम अभी उसी मकान में रह रहे थे और वह बिलकुल वैसा ही था, जैसा मैं उसे छोड़कर गया था। दरवाजा खुला था और बाहर धूप में बेन्च पर एक सैनिक बैठा था। बग़ल के दरवाजे के निकट एक एम्बुलेंस खड़ी थी। भीतर घुसते ही मुझे अस्पताल तथा सगमरमर के फर्श की चिरपरिचित गंध अनुभव हुई। सब-कुछ वैसा ही था, जैसा मैं छोड़कर गया था, अन्तर इतना ही था कि अब वसन्त ऋतु आ गई थी। मैंने बड़े कमरे के द्वार से भीतर झाँका। कमरे की खिड़कियाँ खुली थीं, सूर्य का प्रकाश अन्दर आ रहा था और मेजर अपने डेस्क के निकट बैठा था। उसने मुझे नहीं देखा और मैं पल भर तक यह निश्चित नहीं कर पाया कि अन्दर जाकर अपने लौटने की सूचना दूँ या ऊपर जाकर पहले नहा-धो लूँ। अन्त में, मैंने पहले ऊपर जाना ही तय किया।

जिस कमरे में मैं अपने मित्र लेफ्टिनेंट 'रिनाल्डी' के साथ रहता था, बाहर के सदन से वह दिखाई देता था। खिड़की खुली थी, मेरे बिछौने पर कम्बल बिछे थे और मेरी वस्तुएं दीवार पर लटक रही थीं। टीन के एक डिब्बे में, विषैली गैस से बचानेवाला मेरा 'गैसमास्क' लटक रहा था और मेरा लोहे का शिरस्त्राण उसी खूँटी पर टँगा हुआ था। बिस्तर के पैताने मेरा चौरस सन्दूक रखा था और उसपर मेरे जाड़े के दिनों के जूते रखे थे, जिनका चमड़ा तेल से चमक रहा था। दोनों बिस्तरों के ऊपर नीली अठपहलू नली और सुन्दर काली अखरोट की लकड़ी के कुन्देवाली और अँधेरे में भी निशाना लगानेवाली मेरी आस्ट्रियन बन्दूक लटक रही थी। तभी मुझे स्मरण हो आया कि मेरी दूरबीन सन्दूक में बन्द है। दूसरे बिस्तर पर लेफ्टिनेंट 'रिनाल्डी' सो रहा था। जब उसने कमरे में मेरी-खटपट की आवाज़ सुनी, तो जाग पड़ा और उठकर बैठ गया।

"अरे,!" वह बोला-"कहो दोस्त, कैसी बीती?"

"खूब मज़े में।"

हम दोनों ने हाथ मिलाए और उसने मेरे गले में बाहें डालकर मुझे चूम लिया।

"ओफ़!" मैं चिल्लाया।

"तुम बड़े गन्दे हो रहे हो।" उसने कहा "तुम्हें नहा-धो लेना चाहिए। पर पहले मुझे बताओ कि तुम कहाँ-कहाँ गए और तुमने क्या-क्या किया? सब कुछ विस्तार में बताओ अभी!"

"मैं हर जगह गया था-मिलान, फ्लोरेन्स, रोम, नेपल्स, विला-सान-जिओवान्नी, मॅसीन, ताओर्मिना..."

"तुम तो बिलकुल किसी समय-सारणी की तरह बता रहे हो। क्या तुम्हें कहीं किसी साहसपूर्ण कार्य का अवसर भी मिला?"

"हूँ-हूँ!"

"कहाँ?"

"मिलानो, फिरेन्ज, रोमा, नापोली..."

"बस बस, बहुत हुआ। सच सच बताओ कि सब से सुन्दर मौका कहाँ मिला?"

"मिलान में।"

"इसलिए कि वह तुम्हारा पहला मौका था। तुम्हारी उस लड़की से भेंट कहाँ हुई? 'कोवा' में! फिर तुम कहाँ गये? तुम्हें कैसा लगा? सारी बात मुझे अभी बताओ। क्या तुम उसके साथ रात भर रहे?"

"हाँ!"

"पर यह तो कोई खास बात नहीं है। अब तो यहाँ भी सुन्दर-सुन्दर लड़कियाँ हैं-बिलकुल नई, जो पहले कभी मोर्चे पर नहीं आई थीं।"

"ताज्जुब है!"

"तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं होता? आज ही तीसरे पहर चलकर हम उन्हें देखेंगे। शहर में अब कई खूबसूरत अंग्रेज लड़कियाँ हैं। मैं तो कुमारी 'बर्कले' नाम की लड़की से प्रेम करने लगा हूँ! मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँगा। हो सकता है, मैं कुमारी बर्कले से शादी कर लूँ।"

"अभी तो मुझे नहा-धो कर पहले अपने आने की सूचना देनी है। आज-कल किसीके पास कोई काम नहीं है क्या?"

"जबसे तुम गये हो, हम लोगों को हिम-रोग, हाथ पैरों में बिवाई, पांडुरोग, सुजाक, अपनी ही हरकतों से मोल लिए हुए घाव, न्यूमोनिया इत्यादि रोगों को अपनाने के सिवा और कोई काम नहीं रह गया है। हर हफ्ते कोई न कोई पत्थर के टुकड़ों से घायल हो जाता है। पर जिनको वस्तुतः घायल कहते हैं, ऐसे बहुत

कम हैं। अगले सप्ताह युद्ध फिर प्रारम्भ होनेवाला है, कदाचित् नए सिरे से! सुनने में तो ऐसा ही आया है। तुम्हारे विचार से कुमारी बर्कले से मेरा विवाह करना उचित होगा—अभी नहीं, युद्ध के बाद!"

"क्यों नहीं?" बर्तन से पानी उँडेलते हुए मैं बोला।

"आज रात तुम मुझे अपनी सारी कहानी सुनाना।" रिनाल्डी बोला।

"अब मुझे फिर सो जाना चाहिए, जिससे कुमारी बर्कले से मिलने के समय मैं बिलकुल तरोताजा और सुन्दर नज़र आऊँ।"

मैंने अपना फ़ौजी कोट और कमीज उतारी, और बर्तन के ठंडे पानी से जी भर कर नहाया। तौलिये से अपने शरीर को रगड़ रगड़ कर सुखाते हुए मैं कमरे में इधर-उधर तथा खिड़की के बाहर नज़रें दौड़ाता रहा। 'रिनाल्डी' आँखें बन्द किये अपने बिस्तर पर लेटा था। वह देखने में ख़ूबसूरत था, उस की आयु मेरे बराबर थी और 'एमाल्फी' का रहनेवाला था। उसे सर्जन बनने का शौक था और हम दोनों घनिष्ठ मित्र थे। मैं उसकी तरफ़ देख ही रहा था, कि उसने आँखें खोल दीं।

"क्या तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं?"

"हाँ, हाँ।"

"मुझे पचास 'लिरे' उधार दे दो।"

मैंने अपने हाथ पोंछे और दीवार पर टँगे हुए अपने फ़ौजी कोट की भीतरी जेब से अपनी पाकेट-बुक निकाली। रिनाल्डी ने नोट लिये और बिस्तर से उठे बिना ही उन्हें मोड़ कर उसने अपने पायजामे की जेब में रख लिया। वह मुस्कराया—, "मुझे कुमारी बर्कले के मन में यह बात जमा देनी चाहिए कि मैं काफ़ी धनी व्यक्ति हूँ। तुम मेरे एक महान और अच्छे दोस्त हो और आर्थिक-संरक्षक भी!"

"जहन्नुम में जाओ तुम।" मैंने कहा।

उस रात भोजनालय में, मैं पादरी के पास बैठा। मेरे 'अब्बूजी' न जाने के कारण वह बड़ा निराश और दुखी था। उसने अपने पिता को लिख दिया था कि मैं वहाँ आ रहा हूँ और उन लोगों ने सब तैयारियाँ कर रखी थी। वहाँ न जाने का मुझे भी उतना ही दुख था, जितना पादरी को। और मेरी समझ में यह स्वयं नहीं आ रहा था कि आखिर मैं वहाँ क्यों नहीं गया। मैं स्वयं भी तो वहाँ जाना चाहता था। मैंने पादरी को समझाने का प्रयास किया कि कैसे एक के बाद-एक घटनाएँ घटती गईं और मैं वहाँ न जा सका। अन्त में पादरी मान गया कि

मैं सचमुच वहाँ जाना चाहता था। और तब क़रीब-क़रीब सारी बातें बन गईं। उस समय मैंने काफी शराब पी रखी थी और बाद में कॉफी और स्ट्रेगा (एक प्रकार की शराब) पी ली। नशे में ही मैंने पादरी को समझाया कि किस प्रकार हम जो करना चाहते हैं, वह नहीं कर पाते। हम अपने इच्छानुसार कभी कोई कार्य कर ही नहीं पाते।

हम दोनों इधर बातें कर रहे थे और हमारे बाक़ी साथी आपस में किसी बात पर बहस कर रहे थे। मैं 'अब्रूज़ी' जाना चाहता था। मैं ऐसी किसी भी जगह नहीं गया था, जहाँ सड़कों पर बर्फ़ जमकर लोहे के समान सख़्त हो जाती है, जहाँ काफ़ी ठंढ पड़ती है और मौसम बिलकुल सूखा होता है। जहाँ पाउडर के समान, सूखा बर्फ़ चारों ओर बिखरा रहता है, बर्फ़ में खरगोशों के पद-चिह्न दिखाई देते हैं, जहाँ के किसान अपने हैट उतारकर आदर-सहित आप को बड़े आदमियों की तरह सम्बोधन करते हैं और जहाँ ख़ूब शिकार खेला जा सकता है। मैं ऐसे किसी स्थान पर नहीं गया था; किन्तु उन जगहों में गया था जहाँ के कॉफीघर धूम्रपान से आच्छादित रहते थे, जहाँ रात में ऐसा प्रतीत होता था, मानो कमरा घूम रहा हो और जहाँ स्वयं को संतुलित रखने के लिए एकटक दीवार की ओर देखना पड़ता था। रात्रि में शराब के नशे में मदहोश बिस्तर पर पड़े-पड़े ऐसा लगने लगता था, जैसे जिन्दगी में जो कुछ है, बस यही है। सुबह उठने पर एक विचित्र अनुभूति होती थी और यह भी पता नहीं रहता था कि रात किसके साथ गुज़ारी थी? अन्धकार में लुकती-छुपती एक बनावटी दुनिया, जो इतनी उन्मादक थी कि अनजाने ही उसे पाने के लिए मचल उठता। रात्रि में बेपरवाही रहती कि निश्चय ही, जो-कुछ है, यही है और बाक़ी कुछ नहीं---और फिर वही बेपरवाही। अचानक ही कभी जागरूकता आ जाती और एक चिन्ता-सी लिए-लिए सो जाता। कभी-कभी सारी रात सोचते-सोचते बीत जाती और सवेरा होने पर जो कुछ मस्ती अथवा बेपरवाही होती, सब दूर भाग जाती। प्रत्येक वस्तु एक तीखापन और कठोरता लिए हुए अपने वास्तविक रूप में सामने आ जाती। कभी पैसों को लेकर कोई झगड़ा हो जाता, फिर भी बड़ा आनन्द आता था। सुस्वादु नाश्ता और भोजन तथा हर चीज़ बड़ी प्यारी-प्यारी और उष्णता प्रदान करती-सी लगती। कभी-कभी सारी रोचकता और सुन्दरता समाप्त हो जाती और बाहर सड़क पर निरुद्देश्य घूमने में आनन्द आता; किन्तु हमेशा ही दूसरा दिन आता और फिर दूसरी रात। मैंने पादरी को वहाँ की रातों के बारे में बताने की चेष्टा की। मैंने उसे यह भी

बताना चाहा कि वहाँ के रात और दिन में क्या अन्तर होता है और जब तक कि दिन मे ठंढ और मौसम साफ़ नहीं होता, रात किस प्रकार दिन से ज्यादा आनन्द दायक होती है। किन्तु मैं ठीक-ठीक नहीं कह सका, जैसे मै अभी नहीं कह पा रहा हूँ। पर अगर आपने इसका अनुभव किया है, तो आप समझ सकते हैं। पादरी के जीवन में कभी ऐसा प्रसंग नही आया था; किन्तु वह इतना अवश्य समझ गया कि मैं सचमुच अब्रूजी जाना चाहता था; पर जा नहीं सका। सो हमारी मित्रता कायम रही। बहुत-सी बातो में हमारी रुचि एक थी; पर हमारे बीच अन्तर भी काफ़ी था। उसे बहुत-सी ऐसी बातें ज्ञात रहतीं, जो मैं नहीं जानता था। इतना ही नहीं, जानकारी प्राप्त कर लेने पर भी मै उसे सदा भूल जाता था। किन्तु यह बात मुझे उस समय नहीं मालूम थी, बाद में, अवश्य ही ज्ञात हो गई। इस बीच हम सब भोजनालय में थे। खाना खत्म हो गया था और बहस चल रही थी। हम दोनो ने अपनी बातें बन्द कर दीं और तभी कैप्टन चिल्लाया—

"पादरी इन दिनों सुखी नहीं है। लड़कियो के अभाव में पादरी सुखी नही है।"

"मै बिलकुल सुखी हूँ।" पादरी बोला।

पर कैप्टन ने जैसे सुना ही नहीं। वह बोला–"पादरी सुखी नहीं है। पादरी चाहता है युद्ध मे आस्ट्रियन लोग जीत जाय।" अन्य सभी मौन सुन रहे थे। पादरी ने अपना सिर हिलाया और कहा—"ना!"

"पादरी नहीं चाहता कि हम कभी हमला करें। क्या तुम नहीं चाहते कि हम कभी भी हमला न करें?"

"नहीं, यदि युद्ध हुआ, तो मेरी समझ से हमें अवश्य हमला करना चाहिए।"

"अवश्य हमला करना चाहिए, अथवा हमला करेंगे!"

पादरी ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया।

"उस बेचारे को अकेला छोड़ दो" मेजर ने कहा,—"वह बिलकुल ठीक है।"

"वह इस सम्बन्ध में कुछ कर भी नहीं सकता।" कैप्टन बोला।

हम सब उठे और वहाँ से चल पड़े।

. ४ .

सवेरे पास के बग़ीचे के तोपखाने की आवाज़ ने मुझे जगा दिया। सूर्य का प्रकाश खिड़की से अन्दर आ रहा था। मैं बिस्तर छोड़कर खिड़की के

निकट आ खड़ा हुआ और बाहर देखने लगा। मैंने देखा कि कंकड़ो से भरी पग-डंडियाँ भीग गई थीं और घास ओस से तर हो गई थी। तोपें दो बार और दागी गईं। उनके छूटने के साथ ही वायु का एक तीव्र झोंका आता और खिड़की को जैसे झकझोरते हुए मेरे पायजामे के सामनेवाले भाग को फड़फड़ा देता। तोपें यद्यपि दिखाई नहीं दे रही थीं; फिर भी इतना स्पष्ट था कि वे इसी दिशा में दागी जा रही थीं। उनका वहाँ रहना कुछ कम कष्टप्रद नहीं था। फिर भी यह संतोष की बात थी कि तोपें बहुत बड़ी नहीं थीं। ज्यों ही मैंने बग़ीचे की ओर दृष्टि दौड़ाई, त्यों ही सड़क पर एक ट्रक चालू होने की आवाज़ मुझे सुनाई दी। मैं कपड़े पहनकर, नीचे पहुँचा और रसोईघर में थोड़ी सी काफ़ी पीने के बाद गैरेज की ओर चल पड़ा।

लम्बे ओसारे में बिलकुल पास-पास एक कतार में दस मोटरें खड़ी थीं। वे एम्बुलेंसें थीं, जिनका ऊपरी हिस्सा वजनी और आगे का भाग चपटा था। उनकी बनावट चलती-फिरती रेलगाड़ी के माल रखने के डिब्बे के समान थी और उन्हें भूरे रंग से रंग दिया गया था। बाहर के आँगन में कुछ कारीगर एक मोटर की मरम्मत कर रहे थे। तीन अन्य मोटरें ऊपर पहाड़ो में मरहम-पट्टी के केन्द्रों में थीं।

"क्या उस तोपखाने पर भी कभी बमबारी होती है?" मैंने एक कारीगर से पूछा।

"नहीं, लेफ्टिनेंट साहब! उस छोटी पहाड़ी के कारण वह बिलकुल सुरक्षित है।"

"और क्या हाल है?"

"कुछ खास चुग तो नहीं। यह गाड़ी बिलकुल बेकार है। हाँ, दूसरी गाड़ियाँ ठीक चलती हैं।" उसने काम बन्द कर दिया और मुस्कराया "आप छुट्टी पर थे क्या?"

"हाँ!"

उसने कुरते से अपने हाथ पोंछे और दाँत निकालते हुए हँसा—, "आप तो मज़े में रहे न?" वहाँ उपस्थित शेष व्यक्तियों ने भी दाँत निकाल दिये!

"बिलकुल मज़े में।" मैं बोला "इस मोटर में क्या खराबी है?"

"बिलकुल बेकार है। एक के बाद-एक कुछ न कुछ खराबी होती ही रहती है इसमें।"

"अभी क्या खराबी है?"

"पहियो पर नये हाल चढ़ाने हैं।"

मैंने उन्हें काम करते हुए छोड़ दिया। खुले हुए एंजिन तथा बेंच पर फैले हुए हिस्सो के कारण मोटर बिलकुल खाली ओर भद्दी-सी लग रही थी। वहाँ से ओसारे में पहुँचकर मैंने हरएक मोटर की ग़ौर से देखभाल की। वे साधारणतया साफ़ थीं। उनमें से कुछ तो अभी-अभी धोई गई थीं और कुछ धूल से भरी थीं। मैंने उनके टायरों की अच्छी तरह जाँच की कि वे कहीं नुकीले पत्थरो से कट-फट तो नहीं गए हैं। प्रत्येक चीज़ सही-सलामत थी। वस्तुतः वहाँ चीज़ों की देखभाल के लिए मेरे रहने या न रहने से कोई अन्तर नहीं पड़ता था। यह तो मेरी कल्पना थी कि चाहे आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध हों या नहीं; किंतु मोटरो को अच्छी हालत में रखना, घायलों और बीमारो को मरहम-पट्टी के स्थानो से निर्विघ्नतापूर्वक हटाना, पहाड़ी क्षेत्र से उन्हें उन स्थानों तक पहुँचाना, जहाँ से वे विभिन्न अस्पतालो में पहुँचाये जाते थे, तथा उन्हे उनके निर्दिष्ट अस्पतालो तक पहुँचाना जिनके नाम उनके आवश्यक कागज़-पत्रो पर लिखे रहते थे, बहुत-कुछ मेरे ऊपर निर्भर था। पर वास्तव में, मेरे रहने या न रहने से कोई अन्तर नही आता था।

"मोटर के आवश्यक हिस्से (पार्ट्स) प्राप्त करने में कोई कठिनाई तो नहीं हुई?" मैंने सार्जेंट-मैकेनिक (मोटर सुधारनेवाला सार्जेंट) से पूछा।

"नहीं, साहब!"

"गैसोलीन अब कहाँ रखा जाता है?"

"वही, जहाँ पहले रखा जाता था।"

"अच्छा।" मैंने कहा और मकान में लौट गया। भोजनालय की मेज़ के निकट बैठकर मैंने एक प्याली काफ़ी और पी। जमाये हुए दूध से बनाई गई काफ़ी पीले भूरे रंग की और बड़ी मीठी थी। खिड़की के बाहर वसन्त का सुन्दर प्रभात दृष्टिगोचर हो रहा था। नाक में कुछ---खुश्की सी महसूस होने लगी थी, जिसका मतलब था कि दिन में काफी गरमी पड़नेवाली थी। उस दिन मै पहाडी क्षेत्र के विभिन्न सैनिक शिविरो में अपने विभाग का निरीक्षण करता रहा और तीसरे पहर काफी विलम्ब से नगर में लौटा।

जब तक मैं बाहर था, सब-कुछ बड़े मज़े में चल रहा था। मैंने सुना कि हमला फिर शुरू होनेवाला है। हम लोग जिस टुकड़ी के साथ काम कर रहे थे, वह नदी के पास एक स्थान पर हमला करनेवाली थी। मेजर ने मुझसे कहा कि हमले के समय मैं सैनिक शिविरो का ध्यान रखूँ। उसने बतलाया कि

आक्रमणकारी टुकड़ी तंग पहाड़ी दर्रे के ऊपरी तरफ़ से नदी पार करेगी और पहाड़ो में इधर–उधर फैल जायेगी। मोटरों के पड़ाव नदी के अधिक से अधिक क़रीब होंगे और उन्हें अच्छी तरह से संरक्षण में रखा जायेगा। इन स्थानो का चुनाव यद्यपि पैदल सेना करनेवाली थी; परन्तु बाक़ी सारा कार्य हमें ही करना था। यह एक ऐसी बात थी, जो हमारे हृदय में इस झूठी भावना को जन्म देती थी कि हम भी सैनिकों की तरह ही सक्रिय सहयोग दे रहे हैं।

मेरा सारा शरीर धूल और गन्दगी से लथपथ था, इसलिए हाथ-मुँह धोने के लिए मैं अपने कमरे में पहुँचा। रिनाल्डी, ह्यूगो का अंग्रेजी व्याकरण लेकर अपने बिस्तर पर बैठा था। वह कपड़े पहनकर तैयार था। उसने अपने काले जूते पहन रखे थे और उसके बाल चमक रहे थे।

"बहुत खूब," मुझे देखते ही वह बोला, "तुम आज मेरे साथ मिस बर्कले से मिलने चलोगे न?"

"नहीं"

"नहीं भाई, आज तो तुम्हें मेरे साथ चलना ही पड़ेगा, जिससे मैं उसपर अपना प्रभाव डाल सकूँ।"

"अच्छी बात है। थोड़ी देर ठहरो। मैं ज़रा नहा धो लूँ।"

"हाँ हाँ, नहा धो-लो और जैसे हो, वैसे ही चलो।" विशेष बनाव-शृंगार की जरूरत नहीं!"

मैंने स्नान किया, बाल सँवारे और चलने के लिए तैयार हो गया।

"एक मिनट रुको," रिनाल्डी ने कहा, "चलने के पहले हम थोड़ी शराब पी लें, तो कैसा रहेगा!" उसने अपना सन्दूक खोलकर एक बोतल निकाली।

"स्ट्रेगा है?" मैंने पूछा।

"नही, ग्रेपा!"

"कोई बात नही।"

उसने दो गिलासो में शराब उँडेली। हमने हाथ बढ़ाकर गिलासो को एक दूसरे से छुलाया और उन्हें खाली कर दिया। शराब बहुत तेज़ थी।

"और डालूँ?"

"डालो!" मैंने कहा और हम लोगो ने दूसरी बार गिलास भर कर शराब पी। रिनाल्डी ने बोतल उठाकर रखी और हम सीढ़ियो से नीचे उतर आए। शहर में चलते हुए हमे काफी गरमी लग रही थी; किन्तु पश्चिम की ओर क्षितिज में सूर्य धीरे धीरे विलीन होता जा रहा था और सब कुछ बड़ा सुहावना लगने

लगा था। अंग्रेजो का अस्पताल बड़ी विशाल इमारत में था, जिसे जर्मनों ने युद्ध के पहले बनवाया था। मिस बर्कले अस्पताल के बग़ीचे में बैठी थी। उसके साथ दूसरी परिचारिका भी थी। वृक्षों के बीच से हमें उनकी सफ़ेद पोशाक दिखाई दे गई। हम उसी ओर बढ़े। रिनाल्डी ने फौजी ढंग से उसे नमस्कार किया। मैंने भी फौजी ढंग से नमस्कार किया; किन्तु कुछ विनम्रता के साथ।

"आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई—" मिस बर्कले ने कहा—

"किन्तु आप इटालियन तो नहीं है, क्यो?"

"नहीं तो।"

रिनाल्डी दूसरी परिचारिका से बातें कर रहा था। वे दोनो ही हँस रहे थ।

"कितनी अजीब बात है—" मिस बर्कले ने कहा—

"आप इटालियन सेना में है?"

"मै सेना मे नहीं, केवल उसके एम्बुलेंस-विभाग मे हूँ।"

"यह भी कम विचित्र बात नहीं है। आप इसमें भर्ती ही क्यो हुए?"

"मै स्वयं भी नहीं जानता।" मै बोला

"हमेशा हर बात का कारण नहीं होता।"

"सच? मै तो ऐसे वातावरण मे पली हूँ, जहाँ मै यह सोचने पर बाध्य थी कि प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

"क्या हम इसी तरह की बाते करते रहेंगे?"

"नहीं, कोई जरूरी नहीं है।" मैंने कहा।

"चलो, कुछ तो राहत मिली। है न?"

मिस बर्कले काफ़ी लम्बी थी। मुझे वह परिचारिका की पोशाक पहने प्रतीत हुई। वह छरहरे शरीरवाली युवती थी। उसका रंग गोरा और आखे भूरी थीं। मुझे वह बड़ी सुन्दर लगी। उसके हाथ मे चमड़े से मढ़ी हुई, बच्चो के खेलने के छोटे से कोड़े के समान, एक पतली-सी बेत की छड़ी थी।

"आपके हाथ में, यह छड़ी कैसी है?" मैंने पूछा।

"यह एक युवक की स्मृति है, जो गत वर्ष युद्ध में मार डाला गया।"

"ओह, मुझे बहुत दुःख है।"

"बड़ा अच्छा युवक था वह। मेरी उससे शादी होनेवाली थी; किन्तु वह सोम्मे में मार डाला गया।"

"वहाँ तो बड़ी भयानक लड़ाई हुई थी।"

"क्या आप वहाँ मौजूद थे?"

"नहीं।"

"मैंने उस युद्ध के विषय में सुना है।" उसने कहा "उसके समान भयंकर लड़ाई अभी तक यहाँ हुई ही नहीं है। उस युवक की माँ ने उसकी यह छड़ी मेरे पास भेज दी। सैन्य अधिकारियों ने उसकी अन्य वस्तुओं के साथ यह छड़ी भी लौटा दी थी।"

"क्या आप लोगों की सगाई बहुत पहले हो गई थी?"

"आठ साल पहले। हम साथ साथ युवा हुए।"

"फिर आपने उससे विवाह क्यों नहीं किया?"

"कह नहीं सकती क्यों" उसने कहा, "ऐसा न करके मैंने सम्भवतः मूर्खता ही की। मैं ऐसा कर सकती थी; किंतु मैंने सोचा यह उसकी प्रगति के मार्ग में बाधक होगा।"

"ओह!"

"क्या आपने किसी से प्रेम किया है?"

"नहीं तो—" मैंने कहा।

हम एक बेंच पर बैठ गए। मैंने उसकी ओर देखा।

"आपके बाल बड़े ख़ूबसूरत हैं।" मैं बोला।

"आपको पसन्द हैं?"

"बहुत।"

"उसकी मृत्यु के बाद मैं इन्हें कटवा डालना चाहती थी।"

"लेकिन क्यों?"

"मैं उसके स्मृति-स्वरूप कुछ करना चाहती थी। मैंने कभी किसी बात की परवाह नहीं की और मुझे ज़रा-सा आभास भर हो जाता, तो वह मुझसे सब-कुछ पा सकता था। उसके लिए मैं अपना सर्वस्व लुटा सकती थी। मैं उससे विवाह कर लेती या जो वह कहता, वही करती। अब मैं यह सब महसूस कर रही हूँ। किन्तु उस वक्त मुझे कुछ मालूम नहीं था। वह भी युद्ध में जाना चाहता था।" मैं मौन रहा।

"हाँ, उस समय मुझे सचमुच ही किसी बात का ज्ञान नहीं था। मैं सोचती थी कि यह सब उस के लिए घातक होगा। मुझे ऐसा आभास होता था कि कदाचित् वह यह भार नहीं उठा सकेगा और उसके बाद तो वह युद्ध में मर ही गया। बस, कहानी ख़त्म हो गई।"

"मैं ऐसा कैसे कहूँ !"

"किंतु मैं जो कह रही हूँ। हाँ, कहानी ख़त्म हो गयी।"

हमने रिनाल्डी की ओर देखा। वह उस दूसरी परिचारिका से बातें करने में खोया था।

"उस युवती का नाम क्या है ?"

"फर्ग्यूसन, हेलेन फर्ग्यूसन। आपके मित्र डाक्टर हैं न ?"

"हाँ, वह बहुत कुशल डाक्टर है।"

"कितनी अच्छी बात है !" मोर्चे के इतने निकट योग्य व्यक्ति मुश्किल से ही मिलते हैं। यह स्थान मोर्चे के निकट है। है न ?"

"बिलकुल।"

"युद्ध का यह मोर्चा बिलकुल बेकार है; किन्तु जगह बड़ी अच्छी है। क्या आप लोग हमला करनेवाले हैं ?"

"हाँ।"

"तब हमें भी काम करना पड़ेगा। अभी तो कोई काम ही नहीं है।"

"क्या आप बहुत समय से परिचारिका का कार्य कर रही हैं।"

"हाँ, जब मैं पन्द्रह वर्ष की थी तभी से। जब वह युद्ध में शामिल हुआ था, तभी से मैंने भी यह जीवन अपनाया। मुझे याद है, उन दिनों मेरे मस्तिष्क में एक मूर्खतापूर्ण विचार मँडराया करता था कि मैं जिस अस्पताल में काम करूँगी, उसी अस्पताल में एक न एक दिन कदाचित् वह भी आ जाए—किसी तलवार का घाव लेकर और सिर के चारों ओर पट्टी बाँधे अथवा अपने कन्धे में गोली खाए हुए—किसी चित्र के सदृश ही!"

"यह युद्ध का मोर्चा भी तो चित्र के सदृश ही है।" मैंने कहा।

"हाँ," उसने कहा "फ्रान्स का यथार्थ रूप लोग नहीं समझ पाते हैं। यदि वे समझ पाते, तो यह सब इसी तरह नहीं चलता रहता। वह तलवार का घाव लेकर नहीं आया। शत्रुओं ने उसे तोप से उड़ा दिया।" मैं इस बार भी मौन रहा।

"आपका क्या ख़्याल है? क्या यह सदा इसी तरह चलता रहेगा।"

"नहीं।"

"पर यह बन्द कैसे होगा ?"

"कहीं न कहीं उनका मोर्चा अवश्य टूटेगा ही।"

"हम उनका मोर्चा तोड़ेंगे। हम फ्रांस में उनका मोर्चा तोड़ेंगे। सोम्मे

में उन्होंने जो नृशसता दिखाई थी, उसकी पुनरावृत्ति करते रहने पर भी उनका विनाश न हो यह कैसे सम्भव है।"

"किन्तु यहाँ वे पराजित नहीं होंगे?" मैंने कहा।

"क्या आप सच ही ऐसा सोचते हैं?"

"हाँ, पिछली गर्मियों में वे बड़ी कुशलता से लड़े थे।"

"फिर भी वे पराजित हो सकते है।" उसने कहा," कोई भी पराजित हो सकता है।"

"जर्मन भी!"

"नहीं"—उसने कहा—"मै ऐसा नहीं सोचती।"

हम उठकर रिनाल्डी और मिस फर्ग्यूसन के पास पहुँचे।

"आप इटली से प्रेम करती है?" रिनाल्डी ने मिस फर्ग्यूसन से अंग्रेजी में पूछा।

"बहुत!"

"मै समझा नहीं।" रिनाल्डी ने सिर हिलाते हुए कहा।

मैंने इटालियन में अनुवाद करके उसे बताया। रिनाल्डी ने फिर सिर हिलाया।

"यह तो अच्छी बात नही है। आप इंग्लैंड से प्रेम करती है?"

"बहुत अधिक नहीं। मै स्कॉटिश हूँ, समझे आप?"

रिनाल्डी ने अबूझ दृष्टि से मेरी ओर देखा।

"ये स्कॉटलैंड की रहनेवाली है। इसीसे इन्हें इंग्लैंड की अपेक्षा स्कॉटलैंड से अधिक प्रेम है।" मैंने इटालियन भाषा में समझाया।

"किन्तु स्कॉटलैड भी तो इग्लैंड ही है?"

मैंने मिस फर्ग्यूसन के लिए इसका अनुवाद अंग्रेजी में कर दिया।

"क्या कहा आपने? फिर तो कहिए।" मिस फर्ग्यूसन ने कहा।

"क्या ये सचमुच एक नहीं है?"

"ना, बिलकुल नहीं। हम अंग्रेजों को बिलकुल पसन्द नहीं करते।"

"अंग्रेजो को पसन्द नहीं करतीं! मिस बर्कले को भी नहीं?"

"ओह, यह और बात है। मिस बर्कले कुछ अंशो में स्कॉटिश भी है। आपको हर बात का इस तरह शाब्दिक अर्थ नहीं लेना चाहिए।"

थोड़ी देर बाद हम विदा लेकर चल पड़े। रास्ते में रिनाल्डी ने कहा—"मिस बर्कले, मेरी अपेक्षा तुम्हे अधिक चाहती है, यह बिलकुल स्पष्ट है। किन्तु वह नन्हीं स्कॉटिश लड़की बहुत प्यारी है।"

"बहुत!" मैंने कहा। वास्तव में मैंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था—"तुम उसे पसन्द करते हो?"

"नहीं।" रिनाल्डी बोला।

. ५ .

दूसरे दिन तीसरे पहर मैं फिर मिस बर्कले से मिलने गया। वह बग़ीचे में नही थी, अतः मैं अस्पताल की बग़ल के उस द्वार पर पहुँचा, जहाँ से घायलों और रोगियो को ढोनेवाली गाड़ियाँ आती-जाती रहती थी। अन्दर प्रवेश कर मैं प्रमुख परिचारिका से मिला। उसने बतलाया कि मिस बर्कले ड्यूटी पर है। "युद्ध चल रहा है। आप जानते हे न?"

"जी हाँ।" मैंने कहा।

"आप ही वह अमेरिकन हैं, जो इटालियन सेना में हैं?" उसने पूछा।

"जी हाँ, देवीजी।"

"पर आपने ऐसा क्यो किया? आप हमारी सेना में भर्ती क्यों नहीं हुए?"

"मैं क्या बताऊँ?" मैंने कहा, "क्या मै अब भर्ती हो सकता हूँ?"

"ना, मुझे भय है कि अब आप ऐसा नहीं कर सकते। बताइए तो सही, आपने इटालियनों का साथ क्यो दिया?"

"क्यों कि मैं इटली में था।" मैंने कहा, "और मैं इटालियन मज़े में बोल लेता हूँ।"

"ओह,--" उसने कहा, "मैं भी इटालियन सीख रही हूँ, बड़ी सुन्दर भाषा है।"

"सुना है कि लोग दो सप्ताह में ही इटालियन भाषा सीख सकते हैं।"

"ना, मैं उसे दो सप्ताह में नहीं सीख सकूँगी। महीनों से मैं उसे सीख रही हूँ। यदि आप चाहें, तो सात बजे के बाद मिस बर्कले से मिल सकते हैं। उस समय तक उसकी ड्यूटी खत्म हो जाएगी। लेकिन देखिए, अपने साथ बहुत से इटालियनो को नहीं ले आइएगा।"

"क्या उनकी सुन्दर भाषा का आनन्द उठाने के लिए भी नहीं!"

"ना, और न उनकी सुन्दर वर्दियो को दिखलाने के लिए।"

"नमस्ते।" मैंने कहा।

"नमस्ते।"

मैंने फ़ौजी ढंग से सलाम किया और बाहर निकल आया। बिना थोड़ी असुविधा का सामना किए विदेशियों से इटालियन ढंग की अभ्यर्थना असम्भव थी। ऐसा प्रतीत होता था, मानो इटालियन अभ्यर्थना देश के बाहर व्यवहृत होने के लिए बनाई ही नहीं गई थी।

दिन-भर बड़ी गरमी रही। मैं नदी के चढ़ाव की ओर प्लावा के पुल के छोर पर जा पहुँचा। यहीं से हमला शुरू होनेवाला था। पिछले वर्ष हमारे लिए बहुत आगे बढ़ना असम्भव-सा हो गया था; क्योंकि नावों के पुल तक पहुँचने के लिए दर्रे से होकर केवल एक मार्ग था और उसपर प्रायः एक मील तक मशीनगनों से गोलियों की बौछारें हुआ करतीं—बम बरसते रहते। फिर वह मार्ग इतना चौड़ा भी नहीं था कि उसपर से हमले के लिए आवश्यक सामग्री और फ़ौज साथ-साथ ले जाई जा सके। आस्ट्रियन सेना सरलता से उस मार्ग को नष्टकर वहाँ मृत्यु का तांडव रचा सकती थी; किन्तु इटालियन सेना नदी पार कर गई थी और उस ओर के आस्ट्रियन इलाक़े में काफ़ी दूरी तक इधर-उधर फैल गई थी। उसने प्रायः डेढ़ मील तक अपना अधिकार जमा लिया था। वह बड़ी वाहियात जगह थी और आस्ट्रियनों को चाहिए था कि उसपर इटालियनों का क़ब्ज़ा नहीं होने देते। मेरे विचार से आपस में यह एक-दूसरे के प्रति सहनशीलता की भावना ही थी, जिसके कारण उस इलाक़े पर इटालियनों के लिए अधिकार करना सम्भव हो सका था; क्योंकि नदी के ढाल की ओर कुछ ही दूरी पर बना एक दूसरा पुल अभी भी आस्ट्रियनों के हाथ में था। इटालियन सैन्य-रेखा से कुछ ही ग़ज़ के फ़ासले पर, पहाड़ियों की ओर, ऊपरी भाग में आस्ट्रियन खाइयाँ थीं। वहाँ किसी समय एक छोटा सा शहर भी था; किन्तु अब वह बिलकुल तहस-नहस हो चुका था। वहीं रेलवे स्टेशन के बचे-खुचे चिह्न भी मौजूद थे। पूर्णतया विनष्ट एक पक्का पुल भी था, जो वहाँ कोई ओट न होने के कारण आसानी से दिखाई दे जाता था। शायद इसीसे उसे सुधारने की जरूरत नहीं समझी गई थी।

मैं उस सँकरे मार्ग से नदी की ओर बढ़ गया। अपनी मोटर मैंने पहाड़ी के नीचे ही घायलों की मरहमपट्टी करनेवाले पड़ाव पर छोड़ दी। पहाड़ के कारण सुरक्षित नावों के पुल को पार किया और ध्वस्त शहर तथा ढाल के किनारे बनी हुई खाइयों का चक्कर लगाने लगा। सब लोग खाइयों के तहख़ानों में छुपे थे। वहीं बहुत-से राकेट खड़े थे, जिससे टेलिफोन के तार कट जाने पर

उन्हें उड़ाकर या उनके द्वारा संकेत करके तोपख़ाने को सहायता के सन्देश भेजे जा सकें। सर्वत्र शान्ति थी। काफ़ी गरमी महसूस हो रही थी और चारों ओर गन्दगी बिखरी थी। मैंने तारों के उस ओर आस्ट्रियन पंक्तियों पर नज़र दौड़ाई। कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। मैंने एक खाई में अपनी जान-पहचान के एक कैप्टन के साथ शराब पी और पुल पार करते हुए, वापस आ गया।

पहाड़ों के बीच से नागिन-सी बल खाती, पुल तक पहुँचने के लिए, एक नई और चौड़ी सड़क बनकर तैयार हो रही थी। सड़क तैयार होते ही हमला शुरू होनेवाला था। जंगल के बीच से होकर नीचे के नुकीले चक्करदार मोड़ों तक सड़क बन चुकी थी। हमारी योजना थी कि इस नई सड़क द्वारा युद्ध के सब उपकरण नीचे की ओर लाए जाएंगे और पुरानी सँकरी सड़क के ज़रिये खाली मोटरें, गाड़ियाँ, घायलों से लदी मोटरें तथा अन्य सामग्रियाँ, जिनकी ज़रूरत वहाँ समाप्त हो जाती थी, लौटाई जाएँगी। मरहमपट्टी का स्थान नदी के किनारे आस्ट्रियन सीमा में, पहाड़ी की कोर के नीचे था। घायलों को स्ट्रेचरों पर लादकर, नावों का पुल पार करते हुए वहाँ से लाने ले जाने की व्यवस्था की गई थी। हमला शुरू होने के बाद भी यही व्यवस्था बनी रहनेवाली थी। मेरी अपनी समझ और अनुमान के अनुसार नई सड़क पर, उस स्थान से, जहाँसे उसका समतल होना प्रारम्भ हुआ था, प्रायः एक मील तक, आस्ट्रियन लोग जब भी चाहते, बड़ी आसानी से बमबारी कर सकते थे। स्वभावतः इससे बड़ी असुविधा होने की आशंका थी। किन्तु मैंने एक ऐसा स्थान खोज निकाला था जहाँ एम्बुलेंसें उस अन्तिम ख़तरनाक हिस्से को पार करने के बाद सुरक्षित रूप से ठहराई जा सकती थीं और नावों के पुल को पार करके वहाँ तक घायल सैनिक बेखटके पहुँचाए जा सकते थे। मेरी इच्छा तो नई सड़क पर से ही मोटरें ले जाने की थी; किन्तु वह अभी तक तैयार ही नहीं हुई थी। सड़क चौड़ी और बड़े अच्छे ढंग से बनाई गई प्रतीत होती थी। वह काफी मज़बूत नज़र आ रही थी। पर्वत की ओर के जंगल के खुले हिस्सों से जहाँ-तहाँ सड़क दिखाई दे जाती थी। उसके मोड़ बड़े सुन्दर और बरबस अपनी ओर खींचते-से लगते थे। मज़बूत धातु के ब्रेकों के कारण पत्थर की इस सड़क पर से गुज़रने के लिए, मोटरें बिलकुल उपयुक्त थीं। फिर नीचे की ओर आते समय तो वे खाली ही रहनेवाली थीं। मैं सँकरी सड़क पर मोटर दौड़ाता हुआ वापस आया।

राह में दो संतरियों ने मुझे थोड़ी देर के लिए रोक लिया। वहाँ एक बम गिरा था। जबतक मैं वहाँ रुका रहा, सड़क पर तीन बम और गिरे। वे वायु के तीखे झोंके के समान सनसनाते हुए आए। एक तीव्र और कठोर चमक के साथ वे फट गए। भीषण धमाका हुआ, चकाचौंध सी पैदा हुई और फिर भूरे धुएँ का गुबार उठा, जो उड़ता हुआ सड़क को पार कर गया। सन्तरियों ने हाथ हिलाते हुए आगे बढ़ने का संकेत किया। जहाँ गोले गिरे थे, उन स्थानों को पार करते समय मैंने विस्फोट से बनी हुई करारों का विशेष ध्यान रखा। उनसे बचते हुए जब मैं आगे बढ़ा तो मैंने भयानक विस्फोटक पदार्थों, बम गिरने से चारो तरफ़ उड़ी हुई मिट्टी तथा पत्थरों, और हाल ही में सड़क पर डाली गई गिट्टियों की गन्ध महसूस की। मैं गोरीज़िया लौट आया। वहाँ से अपने रहने की जगह पहुँचा और जैसा कि मैं कह आया था, मिस बर्कले से मिलने की तैयारी की जो, उस वक्त, ड्यूटी पर थी।

जल्दी-जल्दी खाना खाकर मैं उस इमारत मे पहुँचा, जहाँ अंग्रेजों का अस्पताल था। वह सचमुच बहुत बड़ा और रम्य स्थान था। उसके अहाते में बड़े सुन्दर-सुन्दर वृक्ष थे। मिस बर्कले बग़ीचे में एक बेंच पर बैठी थीं। मिस फर्ग्यूसन भी वहीं थी। मुझे देखकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की और थोड़ी देर बाद ही क्षमा माँगते हुए मिस फर्ग्यूसन वहाँ से चलने को तैयार हो गई।

"माफ़ कीजियेगा मैं आप दोनों को अकेला ही छोड़े जाती हूँ" उसने कहा—"पर आप मेरे नहीं रहने पर भी अच्छी तरह बातें कर सकते हैं।"

"रुको हैलेन!" मिस बर्कले ने कहा!

"नहीं, मुझे जाना ही चाहिए। मुझे कुछ ज़रूरी पत्र लिखने हैं।

"नमस्ते," मैं बोला

"नमस्ते मि० हैनरी!"

"देखो, कोई ऐसी बात मत लिख देना, जो अधिकारियों को व्यर्थ ही उलझन में डाल दे।"

"चिन्ता मत करो। मैं अपने पत्रों में केवल इतना ही लिखा करती हूँ कि हम कितनी लुभावनी जगह में रहते हैं और इटालियन कितने बहादुर होते हैं!"

"तब तो वे तुम्हें तरह-तरह के उपहारों से पुरस्कृत करेंगे।"

"यह तो बड़े मज़े की बात होगी। अच्छा नमस्ते कैथरीन!"

"थोड़ी देर बाद मैं तुम से मिलूँगी।" मिस बर्कले ने कहा।

मिस फर्ग्यूसन अन्धकार में अदृश्य हो गई।

"बड़ी भली लड़की है।" मैंने कहा।

"सचमुच, बहुत भली है। पारिचारिका है।"

"क्या आप परिचारिका नहीं हैं?"

"नहीं, मैं जिस विभाग में हूँ, उसमें काम करनेवालों को वी० ए० डी० कहा जाता है। यद्यपि हमें बहुत मेहनत करनी पड़ती है, फिर भी हमपर विश्वास नहीं किया जाता।"

"लेकिन क्यों?"

"जब कोई काम नहीं होता, तब हमपर विश्वास नहीं किया जाता; किन्तु जब सचमुच काम का भार होता है, तब विश्वास करना ही पड़ता है।"

"दोनों में अन्तर क्या है?"

"पारिचारिका एक डाक्टर के समान है। परिचारिका बनने में समय भी बहुत लगता है। वी० ए० डी० बनना, इस पद तक पहुँचने के लिए सबसे सरल मार्ग है।"

"अच्छा!"

"इटालियन लोग यह नहीं चाहते थे कि स्त्रियाँ, मोर्चे के इतने निकट रहें। इसीसे हमलोगों के लिए विशेष व्यवस्था है। हम बाहर भी नही निकलतीं।"

"यद्यपि मैं यहाँ आ सकता हूँ।"

"अवश्य, हमें यहाँ किसीने छिपा कर थोड़े ही रखा है।"

"युद्ध की बातें हमें बन्द कर देनी चाहिए।"

"पर ऐसा करना तो बड़ा कठिन है। उसे छोड़ने की गुंजाइश ही कहाँ है।"

"कुछ भी हो, हमें उसके विषय में बातें नही करनी चाहिए।"

"अच्छी बात है।"

हमने अँधेरे में एक-दूसरे की ओर देखा। मुझे वह बड़ी सुन्दर लगी। मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसने कोई विरोध नही किया और मैंने उसकी बाँह के नीचे से अपनी बाँह निकालकर उसकी कमर के गिर्द घेरा डाल दिया।

"ना" उसने विरोध दर्शाया। मैंने अपनी बाँह नहीं हटाई।

"क्यों नहीं?"

"ना।"

"हाँ।" मैंने कहा। मैं उसका चुम्बन लेने के लिए आगे झुका और तभी एक जोर से तिलमिला देनेवाली चमक-सी महसूस हुई। उसने मेरे मुँह पर एक करारा तमाचा जड़ दिया था। वह कठोर चपत मेरी नाक और आँखों पर पड़ी और मेरी आँखों में आँसू डबडबा आए। "मुझे बहुत अफसोस है।" उसने कहा। मुझे आशा की एक क्षीण किरण नजर आई।

"आपने जो किया, वह उचित ही था।"

"मुझे वस्तुतः बड़ा दुःख है।" वह बोली "परिचारिकाएँ शाम की छुट्टी लेकर जो रंगरेलियाँ मनाती हैं, वह मुझे स्मरण हो आया और अपनी शाम का वह रूप सहन न कर सकी। आपको चोट पहुँचाने की मेरी इच्छा नहीं थी पर मैंने आपको चोट पहुँचाई। है न?"

वह अँधेरे में मुझे देख रही थी। मैं क्रोध में भरा बैठा था; फिर भी शतरंज के खेल की तरह आगे क्या होनेवाला है, इसे मैं निश्चित रूप से जानता था।

"आपने बिलकुल ठीक किया।" मैंने कहा, "मुझे तनिक भी बुरा नहीं लगा।"

"बेचारा!"

"देखिये, मैं आजतक बड़े अटपटे ढँग से ज़िंदगी बिताता आया हूँ। मैं कभी अंग्रेजी में बात तक नही करता। और फिर आप इतनी खूबसूरत हैं।" मैंने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"व्यर्थ की बातें करने की आवश्यकता नहीं। मैं कह चुकी हूँ कि मुझे वस्तुतः बड़ा दुख है। अच्छा हो, हम इसे यहीं छोड़ दें।"

"ठीक है।" मैं बोला—"और हम युद्ध की बातें भी छोड़ चुके हैं।" वह हँस पड़ी। यह पहला ही मौक़ा था, जब मैंने उसे हँसते हुए सुना। सो मैं उसका मुँह निहारने लगा।

"आप बहुत भले हैं।" उसने कहा।

"नही, मैं भला नही हूँ।"

"नहीं, आप सचमुच बहुत अच्छे हैं। यदि आप बुरा न मानें, तो मैं आप का चुम्बन ले लूँ।" मैंने उसकी आँखो में झाँका, पहले की तरह अपनी बाँह से उसकी कमर का घेरा डाल उसे अपने आलिंगन में ले लिया और उसका चुम्बन लिया। एक तीव्र चुम्बन के साथ मैंने अपना बन्धन और मज़बूत कर

दिया और उसके अधरों को खोलने का प्रयत्न किया। किन्तु उसके ओठ बिलकुल सटे हुए थे। मैं अभी भी गुस्से में था और ज्यों ही मैंने उसे अपनी भुजाओं में भरा, वह सिहर उठी। मैंने उसे अपने से और सटा लिया। उसके दिल की धड़कनें मुझे महसूस हो रही थीं। उसके बंद ओठ धीरे-धीरे खुल गए--उसका सिर मेरे हाथ पर आ टिका और मेरे कन्धे से लगकर वह सिसकियाँ भरने लगी।

"प्रियतम!" वह सिसकते हुए बोली, "तुम सदा मुझे प्यार करोगे! करोगे न?"

क्या बकवास है। मैंने सोचा। मैंने उसके बालों में उँगलियाँ फिराईं--उसके कंधो को स्नेह से थपथपाया। वह रो रही थी।

"बोलो तुम मुझे प्यार करोगे—करोगे न?" उसने मेरी ओर देखते हुए कहा—,"क्योंकि हम बड़ी विचित्र ज़िन्दगी बिताने जा रहे हैं।"

कुछ देर बाद मैं उसके साथ उस इमारत के द्वार तक आया। वह अन्दर चली गई और मैं अपने मकान की ओर लौटा। सीढ़ियाँ चढ़कर जब मैं ऊपर अपने कमरे में पहुँचा, तो रिनाल्डी बिस्तर पर लेटा था। उसने मेरी ओर देखा।

"तो मिस बर्कले के साथ तुम्हारी अच्छी निभ रही है?"

"हम दोनो मित्र बन चुके हैं।"

"तुम्हारा स्वभाव तो एक कामुक कुत्ते के समान है!"

मैं उसका मतलब समझ नहीं सका।

"क्या?" मैंने पूछा

उसने मुझे मतलब बताया।

"और तुममें" मैंने कहा..."उस कुत्ते की सी प्रवृत्ति है, जो...।"

"बस बस, बहुत हो चुका"—वह बोला—"थोड़ी देर में ही हम अपमानजनक बातें करने लगेंगे।" वह हँस पड़ा।

"नमस्ते" मैंने कहा।

"नमस्ते, नन्हें श्वान!"

मैंने उसकी जलती मोमबत्ती तकिया मार कर बुझादी और अँधेरे में ही अपने बिस्तर में घुस गया।

रिनाल्डी ने मोमबत्ती उठा ली—उसे जलाया और पढ़ने में मग्न हो गया।

• ६ •

दो दिनों के लिए मैं अपने क्षेत्र के विभिन्न उपचार-स्थलों का निरीक्षण करने बाहर गया था। जब मैं अपने ठहरने की जगह लौटा, तो बहुत देर हो गई थी, इसलिए दूसरे दिन शाम तक मैं मिस बर्कले से नहीं मिल सका। जिस वक्त मैं वहाँ पहुँचा, वह बग़ीचे में नहीं थी। जबतक वह नीचे नहीं आई, मैं अस्पताल के कार्यालय में उसकी प्रतीक्षा करता रहा। जिस कमरे में कार्यालय था, उसकी दीवारों के रंगीन खम्भों पर संगमर्मर की बहुत सी ऊर्ध्वकाय मूर्तियाँ थीं। पास का हाल भी इसी प्रकार की मूर्तियों से सजा था। संगमर्मर की वे मूर्तियाँ बिलकुल एक-सी दिखाई देती थीं। मूर्तियों में हमेशा एक सूनापन होता है। तांबे की मूर्तियाँ तो कुछ सजीव भी प्रतीत होती हैं; किंतु संगमर्मर की मूर्तियां सदैव कब्रगाह-सी उदासी लिये रहती हैं। यों तो 'पिसा' में एक ऐसी कब्रगाह थी, जो बड़ी सुन्दर प्रतीत होती थी। हाँ, जिनोआ एक ऐसी जगह थी, जहाँ उदासी से भरे संगमर्मर की भरमार थी। यह इमारत पहले किसी धनी जर्मन का निवासस्थान थी। उसने इन मूर्तियों पर निश्चय ही काफ़ी धन व्यय किया होगा। मुझे यह तो सोचकर आश्चर्य हो रहा था कि उन मूर्तियों को किसने बनाया होगा और उसे कितना धन मिला होगा! मैंने यह पता लगाने की चेष्टा भी की कि वे एक ही परिवार के सदस्यों की मूर्तियाँ थीं अथवा अलग अलग परिवारों की। किंतु वे सब मूर्तियां एक प्रकार की और उच्च कोटि की थीं। उनके विषय में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन था।

मैं एक कुर्सी पर बैठ गया। मैंने अपनी टोपी उतारकर हाथ में ले ली। गोरीज़िया में भी हमें लोहे के शिरस्त्राण पहनने का आदेश था; किन्तु वे बहुत कष्टदायक थे। एक ऐसे शहर में, जहाँ से नागरिक हटाए नहीं गए थे, ये शिरस्त्राण नाटकीय प्रतीत होते थे। जब मैं उपचार-केन्द्रों का निरीक्षण करने गया था, तब मैं भी लोहे का शिरस्त्राण पहनकर गया था और अपने साथ इंग्लैंड का बना हुआ गैसमास्क लेता गया था। हमें हाल ही में कुछ गैसमास्क मिलने लगे थे। वे सही माने में मास्क थे। हमें एक स्वयंचालित पिस्तौल भी रखनी पड़ती थी। डाक्टर और आरोग्य-विभाग के अन्य अधिकारियों को भी पिस्तौलें रखनी पड़ती थीं। कुर्सी के

पीछे की ओर मुझे अपनी पिस्तौल चुभती हुई-सी प्रतीत हुई। यदि कोई पिस्तौल नहीं रखता, तो उसे क़ानूनन गिरफ्तार किया जा सकता था। पर रिनाल्डी उसके स्थान पर कागज़ों से भरी एक चमड़े की पेटी बाँधे रहता था। मेरे पास सचमुच की पिस्तौल थी और जबतक मुझे उससे निशाना लगाने का मौक़ा नहीं आया, तबतक मैं स्वयं को एक सच्चा निशानेबाज़ समझता रहा। मेरी पिस्तौल एस्ट्रा ७·६५ कैलिबर की छोटी नलीवाली पिस्तौल थी और चलाए जाने पर इतने ज़ोर से झटका लगता था कि किसी वस्तु पर निशाना बैठाने का प्रश्न ही नहीं उठता था। मैं उसे चलाने का अभ्यास करता रहा। लक्ष्य से बीस क़दम दूर से पिस्तौल को निशाने से कुछ नीचे झुकाते हुए मैं उसकी हास्यास्पद नन्हीं नली से लगनेवाले झटके पर क़ाबू पाने का प्रयास करता। मेरा यह प्रयास उस समय तक चलता रहता, जबतक मेरी पिस्तौल की गोली अपने लक्ष्य-बिन्दु से एक गज़ की परिधि में अपने निशाने पर नहीं जा लगती। और तब अचानक ही पिस्तौल लेकर चलना मुझे बड़ा हास्यास्पद लगने लगा। किन्तु शीघ्र ही मैं यह सब भूल गया। फिर अपनी छोटी-सी पीठ से टकराकर फट-फट की आवाज़ करनेवाली उस पिस्तौल को लेकर चलने में मेरे मन में किसी प्रकार की भावना नहीं उठती थी। हाँ, जब किसी अंग्रेजी-भाषा भाषी सज्जन से भेंट होती, तो अवश्य ही एक प्रकार की शर्म-सी महसूस होती।

मैं अब कुर्सी में जमकर बैठ गया। पीछे के डेस्क से एक अरदली मेरी ओर नापसन्दगी की नज़र से देख रहा था। मैं संगमर्मर के फर्श, खम्भों पर बनी संगमर्मर की ऊर्ध्वकाय मूर्तियों और दीवारों पर खुदे हुए चित्रों की ओर देखता हुआ मिस बर्कले की प्रतीक्षा करता रहा। दीवारों पर खुदे हुए चित्र बुरे नहीं थे। ऊपरी रंग और परतें झड़ना आरम्भ होने के पहले भी दीवार पर खुदे हुए चित्र अवश्य ही सुन्दर रहे होंगे।

मैंने हाल की ओर से कैथरीन बर्कले को आते देखा और उठकर खड़ा हो गया। मेरी ओर आते समय वह लम्बी तो नहीं; किन्तु बहुत आकर्षक लग रही थी।

"नमस्ते मि० हेनरी।" उसने कहा।

"कैसी हैं आप?" मैंने पूछा। पीछे के डेस्क से अरदली हमारी बातें सुन रहा था।

"हम यहीं बैठें या बाहर बग़ीचे में चलें?"

"बाहर ही चलें। वहाँ काफ़ी ठंढक है।"

मैं उसके पीछे-पीछे बगीचे की ओर चला और अरदली हमें पीछे से देखता रहा। जब हम कंकर बिछे रास्ते पर पहुँच गए, तब उसने पूछा, "तुम कहाँ गए थे?"

"मैं उपचार-केन्द्रों का निरीक्षण करने गया था।"

"क्या तुम मुझे दो-चार पंक्तियाँ लिखकर भेज भी नहीं सकते थे?"

"नहीं!" मैंने कहा—"इतनी सुविधा नहीं थी; फिर मैंने सोचा, मैं लौट तो रहा ही हूँ!"

"पर तुम्हें मुझे बताकर जाना चाहिए था, प्रियतम!"

अब हम रास्ता छोड़कर वृक्षों के बीच से गुज़र रहे थे। मैंने रुककर उसका हाथ अपने हाथ में लिया, और उसका चुम्बन ले लिया।

"क्या, यहाँ निकट में कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ हम जा सकें?"

"नहीं" वह बोली—"हमें यहीं घूमना है। तुम मुझसे बहुत समय तक दूर रहे हो।"

"आज तो तीसरा दिन है और आज ही मैं लौट आया हूँ।" उसने मेरी ओर देखा—"क्या सचमुच तुम मुझसे प्यार करते हो?"

"हाँ।"

"तुमने कहा था, तुम मुझे प्यार करते हो। कहा था न?"

"अवश्य!" मैं झूठ बोला—"मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।" यद्यपि पहले मैंने ऐसा नहीं कहा था।

"और तुम मुझे कैथरीन कहकर पुकारोगे?"

"कैथरीन!" मै फुसफुसाया। हम आगे बढ़ते गए और एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये।

"एक बार कहो तो, मैं निशीथ-बेला में कैथरीन के पास लौट आया हूँ।"

"मैं निशीथ-बेला में कैथरीन के पास लौट आया हूँ।"

"ओह, प्रियतम! तुम लौट आये हो। लौट आये हो न?"

"हाँ, प्रिये!"

"मैं, तुम्हें इतना प्रेम करती हूँ, इतना कि...। अब तुम कभी मुझसे दूर नहीं जाओगे न?"

"नहीं, मैं जब भी जाऊँगा, लौट आया करूँगा।"

"ओह, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ। अपना हाथ फिर से मेरे हाथ में दे दो, प्रियतम!"

"मैंने उसे हटाया ही कहाँ है!" मैंने उसे पकड़ कर अपनी ओर घुमा लिया, जिससे जब मैंने उसका चुम्बन लिया, मैं उसके मुख को देख रहा था। उसके दोनों नेत्र मुँदे हुए थे। उन मुँदे हुए नेत्रों को मैंने चूम लिया। मुझे ऐसा लगा, जैसे वह कदाचित् कुछ पागल-सी हो गई थी। यदि ऐसा था, तो भी कोई बात नहीं थी। मैं किन नई परिस्थितियों में प्रवेश कर रहा था, इसकी मुझे किंचित् भी परवाह नहीं थी। अफसरों के उस चकले में, जहाँ दूसरे अफसरों के साथ सीढ़ियां चढ़ते समय लड़कियाँ चारों ओर लिपट जाती थीं; और अपना प्रेम जताने की चेष्टा में अफसरों की टोपियाँ पीछे खिसकाकर पहन लेती थीं, प्रतिदिन सन्ध्या समय जाने की अपेक्षा, यह बंधन कहीं अधिक प्रिय था। मैं जानता था कि मैं कैथरीन बर्कले से रत्तीभर भी प्रेम नहीं करता था और न ऐसा करने का मेरा कोई विचार ही था। यह तो ब्रिज (ताश का एक खेल) की भाँति एक खेल था, जिसमें पत्ते खेलने की अपेक्षा बातें अधिक की जातीं हैं। ब्रिज के खेल की भाँति मुझे यह दर्शाना पड़ रहा था कि जो खेल खेला जा रहा है, वह पैसे कमाने अथवा दाँव जीतने के लिए ही खेला जा रहा है। दाँव क्या है, इसका हम में से किसी ने भी उल्लेख नहीं किया था और मेरे हक में यह अच्छा ही था।

"मैं चाहता हूँ कि कोई ऐसा स्थान होता, जहाँ हम लोग एकांत रूप से थोड़ा समय व्यतीत कर सकते।" मैंने कहा। खड़े-खड़े बड़ी देर तक प्यार जताने की पौरुष-जन्य कठिनाई का अब मैं अनुभव कर रहा था।

"ना, यहाँ कोई ऐसा स्थान नहीं है।" इधर-उधर देखकर वापस आते हुए वह बोली।

"तो थोड़ी देर के लिए हम वहाँ सामने ही बैठ जाएँ।"

हम दोनो पत्थर की सपाट बेंच पर बैठ गये। मैंने कैथरीन बर्कले का हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसने अपनी कमर के चारों ओर अपनी बाँह का घेरा डालने से मुझे रोक दिया।

"क्या तुम बहुत थक गये हो?" उसने प्रश्न किया।

"नहीं तो!"

वह नीचे घास की ओर देखने लगी।

"हम जो यह खेल खेल रहे हैं, वह बिलकुल वाहियात है। है न?"

"कौन-सा खेल?"

"बेवकूफ मत बनो।"

"मैं जान-बूझकर बेवकूफ बनना पसंद भी नहीं करता।"

"तुम बहुत अच्छे हो!" उसने कहा—"और तुम जितनी अच्छी तरह खेलना जानते हो, उतनी ही कुशलता से खेल भी रहे हो, किन्तु यह खेल बड़ा वाहियात है।"

"क्या तुम हमेशा दूसरो के मन की बातें जान लेती हो?"

"हमेशा नहीं; पर तुम्हारे मन की बातें जानती हूँ। तुम्हें यह बताने की ज़रूरत नही है कि तुम मुझ से प्रेम करते हो। आज शाम के लिए तुम्हारा प्यार खत्म हो गया। क्या तुम और किसी विषय पर बातें करना पसंद करोगे?"

"पर मैं तुम्हें वस्तुतः प्यार करता हूँ।"

"जब झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं है, तब हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए। मैंने अभी-अभी थोड़ी देर तक एक बड़े सुन्दर नाटक का आनंद उठाया है और अब मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ। मैं न तो पागल ही हूँ और न ही मैंने अपना संतुलन खोया है—समझे! कभी-कभी केवल कुछ क्षणों के लिए ही ऐसा हो जाता है।"

मैंने उसका हाथ दबाते हुए कहा—"कैथरीन—मेरी प्राण!"

"अब यह बड़ा हास्यास्पद प्रतीत होता है—कैथरीन। तुम तो उसका शुद्ध उच्चारण भी नहीं कर सकते। फिर भी तुम बड़े अच्छे हो—बहुत ही अच्छे!"

"यही पादरी भी कहता था।"

"सच ही, तुम बहुत अच्छे हो। और तुम आते रहोगे और मुझसे मिलते भी रहोगे?"

"अवश्य!"

"और देखो, तुम्हें यह दुहराने की आवश्यकता नहीं हैं कि तुम मुझसे प्रेम करते हो। कुछ समय के लिए इस सब का अन्त हो चुका है।" वह खड़ी हो गयी। उसने अपना हाथ छुड़ा लिया और कहा—"नमस्ते।"

मैंने उसका चुम्बन लेना चाहा।

"नहीं—" वह बोली—"मैं बेहद थक गयी हूँ।"

"फिर भी, तुम ही मेरा चुम्बन ले लो।" मैंने कहा।

"मैं बहुत थक चुकी हूँ—प्रियतम!"

"नहीं, तुम मेरा चुम्बन लो।"

"क्या तुम्हारी यह बड़ी तीव्र इच्छा है?"

"हाँ।"

हमने एक-दूसरे का चुम्बन लिया और तत्काल वह अलग हो गयी—"नहीं प्रियतम—नहीं। नमस्ते।" हम दोनो दरवाजे तक साथ-साथ आये। मैंने उसे द्वार में प्रवेश–करते और हॉल से गुज़रते देखा। जब वह चलती थी, तो मुझे बड़ी प्रिय लगती थी। वह हॉल पार करती हुई ओझल हो गई। मैं अपने मकान की ओर मुड़ा। रात गरम थी और पर्वतों में युद्ध की काफी तैयारियाँ थीं। सॉन जेब्राइली पर दिखायी देनेवाली काली तोपो की चमक देखता हुआ मैं आगे बढ़ता गया।

'विला रोस्सा' नामक मकान के सामने आकर मैं रुक गया। किवाड़ बन्द हो चुके थे; किन्तु भीतर अभी भी चहल-पहल थी। कोई गाना भी गा रहा था। मैं आगे बढ़ गया। अपने कमरे में मैं कपड़े उतार ही रहा था कि रिनाल्डी आ गया।

"आ-हा!" उसने कहा, "खेल कुछ अच्छी तरह नहीं चल रहा है। तुम बहुत परेशान दीख रहे हो, दोस्त!"

"तुम कहॉ गये थे?"

"विला-रोस्सा में। बड़ा आध्यात्मिक कार्यक्रम था, दोस्त! हम सबने मिल कर गाने गाये। तुम कहॉ गये थे?"

"उस अंग्रेज़ युवती से मिलने।"

"ईश्वर को धन्यवाद कि मैं उस अंग्रेज़ युवती से दूर ही रहा!"

.७.

अगले दिन तीसरे पहर को मैं प्रथम पहाड़ी उपचार-केन्द्र का निरीक्षण करके वापस आ गया। लौटते समय मैंने अपनी मोटर 'स्मिस्टामेंटो' में खड़ी की, जहाँ परिचय-पत्र तथा उनसे सम्बन्धित विभिन्न अस्पतालों के कागज़ात के आधार पर घायलों और बीमारों को अलग-अलग समूहों में बॉटा जाता था। मैं मोटर चला रहा था, इसलिए मोटर में ही बैठा रहा। ड्राइवर कागज़ात लेकर अंदर गया। वातावरण में गर्मी थी, आकाश चमकीला और नीला था और धूल से भरी हुई सड़क सफ़ेद नजर आ रही थी। मैं फिएट (मोटर) की ऊँची आरामदेह सीट पर बेफिक्र बैठा हुआ था। किसी प्रकार की चिंता नहीं थी। ठीक उसी समय पास ही से, सड़क पर एक सैन्य-दल गुजरा। मैं उसे जाते हुए देखता रहा।

सैनिक गरमी के मारे पसीने में लथपथ थे। कुछ तो अपने लोहे का शिरस्त्राण पहने हुए थे; किन्तु बहुत-से सैनिकों के शिरस्त्राण उनकी गठरियों से बँधे झूल रहे थे। बहुत-से शिरस्त्राण बहुत बड़े थे और जिन्होंने इन्हें पहन रखा था, उनके कान लगभग ढँक से गये थे। अफसरों में से प्रत्येक ने शिरस्त्राण पहन रखा था, जो उनके सिर पर अच्छी तरह बैठ जाता था।

मैंने अफसरों को उनके कालर पर लगी लाल और सफ़ेद पट्टियों के निशान से पहचान लिया। सैन्य-दल के गुजर जाने के बड़ी देर बाद कुछ छिटपुट सैनिक निकले, जो अपनी टुकड़ी के साथ चलने में समर्थ न होने के कारण पीछे छूट गए थे। वे पसीने में लथपथ, धूल में सने और थके हुए थे। कुछ की दशा काफी खराब दिखाई दे रही थी। सबसे अंत में एक ऐसा सैनिक निकला, जो लंगड़ाकर चल रहा था। चलते-चलते थककर वह रुक गया और सड़क के किनारे बैठ गया। मैं मोटर से उतरकर उसके पास पहुँचा।

"क्या बात है?"

उसने मेरी ओर देखा और उठकर खड़ा हो गया।

"कुछ नहीं, मैं जा रहा हूँ।" उसने कहा।

"क्या तकलीफ है तुम्हें?"

"—युद्ध!"

"तुम्हारे पैर को क्या हो गया?"

"पैर को तो कुछ नहीं हुआ, आंत उतर गई है।"

"तुम मोटर में क्यो नहीं जाते?" मैंने पूछा—"अस्पताल क्यों नहीं चले जाते?"

"अधिकारी वर्ग ने मुझे जाने नहीं दिया। लैफ्टिनेंट कहता था कि मैंने जानबूझकर पट्टी (आंत उतरने पर बाँधी जानेवाली पट्टी) नीचे खिसका दी है।"

"जरा मुझे देखने तो दो।"

"वह भीतरी हिस्से में है।"

"कौन-से भाग में है?"

"यहाँ।"

मैंने उसे हाथ से छुआ।

"खाँसो।" मैंने कहा।

"मुझे डर है कि खाँसने से तकलीफ़ बढ़ जाएगी। सबेरे की अपेक्षा अब वह बढ़कर दुगुनी हो गयी है।"

"बैठ जाओ।" मैने कहा—"इन घायलो से संबंधित कागजपत्र मिलते ही मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा और तुम्हारे स्वास्थ्य-अधिकारियों के पास पहुँचा दूँगा।"

"मेडिकल अफसर तो यही कहेगा कि मैंने जानबूझकर ऐसा किया है।"

"वे तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते।" मैं बोला—"यह घाव का मामला नहीं है। यह रोग तो तुम्हें पहले से ही है। है न?"

"लेकिन, पट्टी तो मैंने कहीं खो दी।"

"तुम्हें अस्पताल भेज दिया जायेगा।"

"क्या मैं यहाँ नही रह सकता, लैफ्टिनेण्ट साहब?"

"नहीं, मेरे पास तुम्हारे कागज़ात नहीं हैं।"

ड्राइवर, मोटर में बैठे हुए घायलों से संबंधित कागज़पत्र लेकर द्वार से निकलता हुआ मेरी ओर बढ़ा।

उसने कहा—"१०५-वें के लिए चार और १३२-वें के लिए दो।" ये नदी के उस पार स्थित अस्पतालों के नम्बर थे।

"तुम मोटर चलाओ।" मैंने कहा और रोगी-सैनिक को मोटर में चढ़ने में सहायता करने लगा।"

"आप अंग्रेज़ी बोल लेते हैं?" उसने पूछा।

"हॉ, हॉ, क्यों नहीं।" मैंने उत्तर दिया।

"इस राक्षसी युद्ध के विषय में आपके क्या विचार हैं?"

"यह बिलकुल वाहियात है।"

"वाहियात, ईश्वर कसम! बिलकुल वाहियात है!"

"क्या तुम कभी अमेरिका के किसी प्रदेश में थे?"

"हॉ, पिट्सबर्ग में। मैं जानता हूँ, आप अमरीकी हैं।"

"क्या मैं काफ़ी अच्छी इटालियन नहीं बोल लेता?"

"पर मुझे मालूम है कि आप अमरीकी हैं।"

"तो यह दूसरा भी अमरीकी है।" ड्राइवर रोगग्रस्त सैनिक को देखकर इटालियन भाषा में बड़बड़ाया।

"लपटन साहब (लैफ्टिनेण्ट), क्या आपके लिए मुझे मेरे सैन्यदल में पहुँचाना आवश्यक है?"

"हॉ।"

"कप्तान (कैप्टन) डाक्टर को मालूम था कि मेरी आंत उतर गई है; इस-

लिए मैंने उस बदजात पट्टी को उतार कर फेंक दिया, जिससे मेरा रोग बढ़ जाए और मुझे फिर से युद्ध में वापस न जाना पड़े।"

"अच्छा, तो यह बात है!"

"क्या आप मुझे और कहीं नहीं ले जा सकते?"

"यदि तुम युद्ध-स्थल के पास होते, तो मैं तुम्हें प्रथम उपचार-केन्द्र पर ले जाता; किन्तु युद्ध-स्थान से इतनी दूर यहाँ, तुमसे संबंधित कागज़पत्रों के बिना तुम्हें भर्ती नही किया जा सकता।"

"यदि मैं वापस अपने दल में जाऊँगा, तो वहाँ मेरी शल्य-चिकित्सा की जायगी और मेरे स्वस्थ हो जाने पर मुझे हमेशा के लिए अपनी टुकड़ी के साथ युद्ध में भेज दिया जाएगा।"

मैं सोच में पड़ गया।

"आप हमेशा ही तो लड़ाई पर नहीं रहना चाहेंगे। बोलिये, रहना चाहेंगे?" उसने पूछा।

"नहीं।"

"हे भगवान! कितना राक्षसी युद्ध है यह!"

"सुनो," मैं बोला—"तुम मोटर से उतरकर इस सड़क पर गिर पड़ो और अपने सिर पर एक गूमड़ा पैदा कर लो। जब मैं उधर से लौटूँगा, तो तुम्हें उठाकर अस्पताल ले चलूँगा। लो, हम यहीं सड़क के इस बगल, अपनी मोटर रोक देते हैं।" हम सड़क के किनारे रुक गये। मैंने उसे नीचे उतरने में सहायता दी।

"मैं बिलकुल इसी स्थान पर रहूँगा, लेफ्टिनेण्ट साहब," वह बोला।

"अच्छा, तब तक के लिए बिदा।" मैंने कहा और हम लोग चल दिये। एक मील बाद हमें वही सैन्य-दल मिला। उसे पीछे छोड़कर हम आगे बढ़ गये और हमने नदी पार कर ली। नदी बर्फीले पानी पर छाये हुए कुहासे से ढँकी थी और पुल के नीचे लगे पीपों से होकर उसका पानी तीव्र गति से बह रहा था। मैदान पार करके घायलों को दोनों अस्पतालों में पहुँचाने के लिए हम नदी के पार की सड़क पर आगे बढ़ते गये।

लौटते समय अपनी खाली मोटर दौड़ाते हुए मैं पिट्सबर्ग-निवासी उस सैनिक की ओर चला। राहमें, सबसे पहले उसी सैन्य-दल से भेंट हुई। सैनिक पहले की अपेक्षा अधिक गरमी महसूस कर रहे थे और बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे। उनके बाद पिछड़े हुए सैनिक मिले। बाद में, हमें सड़क के किनारे

खड़ी हुई रोगियों को ढोने वाली एक घोड़ागाड़ी दिखाई दी। हमने देखा कि दो आदमी उस रोगी सैनिक को गाड़ी में ले जाने के लिए उठा रहे थे। वे उसी के लिए अपने दल से वापस आये थे। उस रोगी सैनिक ने मुझे देखकर अपना सिर हिलाया। उसका शिरस्त्राण नीचे गिर गया था और बालों की रेखा से नीचे उसके ललाट से खून बह रहा था। उसकी नाक का चमड़ा छिल गया था और खून से लथपथ भाग पर तथा बालों मे धूल जम गई थी।

"लेफ्टिनेण्ट साहब, इस गूमड़े को देखिये।" वह चिल्लाया—"अब कुछ नहीं हो सकता। ये मुझे लेने आये हैं।"

जब मैं अपने ठहरने की जगह लौटा, तो पाँच बज चुके थे। मैं, मोटर-गाड़ियाँ धोने के स्थान पर, नहाने पहुँचा। कमरे में वापस आकर पायजामा और गंजी पहन, एक खुली खिड़की के सामने बैठकर मैंने अपनी रिपोर्ट लिखी। अगले दो दिनों में हमला शुरू होनेवाला था और मुझे अपनी मोटरें लेकर प्लावा पहुँचना था। कई दिनो से मैंने अपने देशवासियों को पत्र नहीं लिखे थे; पर अब मुझे पत्र लिखने की जरूरत महसूस हो रही थी। किन्तु मैं इस काम को इतने दिनों तक टालता आया था कि अब लिखना प्रायः असम्भव था। यों तो लिखने-योग्य कुछ था भी नहीं। मैंने सेना में प्राप्य युद्ध-क्षेत्रीय कार्ड लेकर एक-दो पत्र भेज दिए। "मैं अच्छी तरह हूँ।" इस वाक्य को छोड़कर उनमें की शेष सभी बातें काट दीं। "परिचितों को इन पत्रों से संतोष हो जाना चाहिये"—मैंने सोचा—"ये पोस्ट कार्ड अमेरिका वालों के लिए एक अनोखापन लिये होंगे—इतना ही नहीं, ये उन्हें रहस्यपूर्ण भी प्रतीत होंगे।" यह क्षेत्र भी एक विचित्र और रहस्यपूर्ण युद्ध-क्षेत्र था; किन्तु जहाँ तक मेरा अनुमान था, आस्ट्रियनों के साथ होनेवाले अन्य युद्धों की तुलना में, इस क्षेत्र का युद्ध सुचारु रूप से संचालित तथा अधिक उग्र रूप धारण किये था। आस्ट्रियन सेना का जन्म तो केवल नेपोलियन को विजेता बनाने के लिए ही हुआ था; वह चाहे कोई भी नेपोलियन क्यों न हो! मैं चाहता था कि हमारे साथ भी कोई नेपोलियन होता। किन्तु उसके स्थान पर हमारे साथ था इल्-जॅनॅरेल—कॅडोर्ना—मोटा और ऐश्वर्यशाली और विट्टोरियो इॅमॅनुएल, जो देखने में नाटा था, जिसकी लम्बी और पतली गर्दन थी और बकरे-सी दाढ़ी! आगे, दाहिनी दिशा में आओस्टा का डयूक था। हो सकता है कि एक महान सेनापति के लिए उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो; किन्तु वह एक साधारण व्यक्ति की तरह ही नजर आता था। अधिकांश व्यक्ति उसका राजा बनना

अधिक पसन्द करते। राजा-जैसा ही वह लगता भी था। वह रिश्ते में राजा का चाचा था और तृतीय सैन्य-दल का सेनापति भी ! हम लोग द्वितीय सैन्य-दल में थे। तृतीय सैन्य-दल के साथ कुछ अंग्रेजी तोपखाने थे। उस दल के दो तोप-चालकों से मैं मिलान में मिल चुका था। वे बड़े भले थे और हम लोगों ने आनंदपूर्वक एक साथ सन्ध्या व्यतीत की थी। वे बड़े भरे-पूरे शरीर के, किन्तु लजीले और व्यग्र स्वभाव वाले थे। जो-कुछ होता, उसकी वे दोनों एक साथ तारीफ़ करते। मेरी इच्छा होती थी कि मैं भी अंग्रेजो के साथ रहता। उनके साथ रहना बड़ा सरल होता। फिर भी उनके साथ रहकर कदाचित् युद्ध में मैं मारा जाता। रोगियों और घायलों को ढोने और उनका उपचार करने के इस कार्य में नहीं—या कदाचित् इसी काम को करते हुए—कौन जाने ! यदा-कदा रोगियो और घायलों को ढोनेवाली मोटरों के अंग्रेज चालक भी मारे गए थे। खैर, मैं जानता था कि मैं मारा नहीं जाऊँगा। कम-से-कम इस युद्ध में तो नहीं। इसे मुझसे कुछ लेना-देना नहीं था। मेरे लिए तो यह चलचित्र के परदे पर दिखाई देने वाले युद्ध से अधिक खतरनाक नहीं मालूम होता था। तो भी मैं ईश्वर से प्रार्थना करता था कि यह समाप्त हो जाय तो अच्छा। मैं सोचता था कि कदाचित् आगामी ग्रीष्म ऋतु में युद्ध खत्म हो जाएगा। शायद आस्ट्रियन लोग हिम्मत हार जायें। वे अन्य युद्धों में सदा हिम्मत हारते आए थे। किन्तु इस युद्ध में तो न जाने उन्हें क्या हो गया था ! हर व्यक्ति यही कहता था कि फ्रान्स में लड़ाई शुरू हो गई है। रिनाल्डी ने बताया कि फ्रांसीसियों ने विद्रोह कर दिया था और पेरिस में सेना पहुँच गई थी। मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ, तो उसने बताया कि अधिकारियो ने उन्हें रोक दिया। मैं आस्ट्रिया जाना चाहता था; किन्तु एक सैनिक के रूप में नही। मैं कृष्णवन की सैर करना चाहता था—हार्ज़ पर्वतो में घूमना चाहता था। पर ये हार्ज़ पर्वत थे कहां? कारपैथिन पर्वतों में युद्ध हो रहा था। पर मैं वहाँ नहीं जाना चाहता था, यद्यपि वहाँ जाना शायद ठीक होता। यदि युद्ध नही होता, तो मैं स्पेन भी जा सकता था। विचार-धारा टूटी। सूर्य पश्चिम में ढल रहा था और दिन-भर की उमस कम होती जा रही थी। शाम को खाना खाने के बाद मैंने कैथरीन बर्कले से मिलने का निश्चय किया। मैं उसका अभाव बुरी तरह महसूस कर रहा था। मेरे मन में यह प्रबल इच्छा उठी कि काश! मैं उसके साथ मिलान में होता। मेरी इच्छा हो रही थी कि मैं कैथरीन बर्कले के साथ कोवा में खाना खाऊँ—तपती सॉझ में उसके साथ वाया मॉन्ज़ोनी की सैर करूँ।

फिर नहर के किनारे-किनारे चक्कर काटते हुए होटल पहुँचूँ। शायद वह राजी हो जाए। कदाचित् वह ऐसा अभिनय करे कि मैं ही उसका वह प्रेमी युवक हूँ, जो युद्ध में मारा गया है। फिर जब मैं और कैथरीन होटल के प्रवेश-द्वार के निकट पहुँचेंगे, तो हमें देखकर दरबान अपनी टोपी उतार कर हमारे प्रति सम्मान प्रदर्शित करेगा। मैं होटल के क्लर्क के डेस्क के पास खड़ा होकर उससे कमरे की चाबी माँगूँगा और कैथरीन 'एलीवेटर' (ऊपर ले जानेवाला यन्त्र—लिफ्ट) के समीप मेरी प्रतीक्षा करती रहेगी। फिर हम एलीवेटर में सवार होंगे। एलीवेटर हर मंज़िल पर एक 'खट्' की आवाज करते हुए धीरे-धीरे ऊपर उठेगा। अन्त में, वह मंज़िल भी आएगी, जहाँ हम उतरेंगे। एलीवेटर ले जानेवाला लड़का द्वार खोलेगा और एक ओर खड़ा हो जायगा। कैथरीन लिफ्ट से बाहर निकलेगी-फिर मैं उतरूँगा। हम दोनों हॉल से होते हुए अपने कमरे के सामने पहुँचेंगे। मैं द्वार में चाबी डालकर उसे खोलूँगा। भीतर पहुँचकर मैं टेलीफोन उठाऊँगा और होटलवालों से बर्फ से भरे हुए चांदी के पात्र में काप्री-बिआन्को (एक प्रकार की शराब) की एक बोतल भेजने के लिए कहूँगा। और तब गलियारे में, चाँदी के पात्र के भीतर हिलते हुए बर्फ के टुकड़ों के टकराने की आवाज सुनायी देगी। थोड़ी देर बाद ही खानसामा द्वार खटखटायेगा और मै बंद दरवाजे के बाहर ही उसे छोड़ जाने के लिए कहूँगा; क्योंकि असहनीय गरमी के कारण हमारे शरीर पर कपड़े नहीं होंगे। खिड़की खुली रहेगी और घरों की छतों पर अबाबील (एक पक्षी) उड़ती रहेगी। बाद में जब अंधेरा हो जायेगा और हम खिड़की के निकट खड़े होंगे, तब घरों के ऊपर और पास ही वृक्षों पर छोटी-छोटी चमगादड़ें चक्कर काटती हुई दिखाई देंगी। हम काप्री का आनंद लेंगे; द्वार बन्द होगा और गरमी के कारण हमारे शरीर पर सिर्फ एक चादर होगी। सारी रात हमारी होगी। मिलान की उस गरम रात में हम रात-भर एक-दूसरे के प्यार में डूबे रहेंगे। ऐसा होना ही चाहिए! मैंने तय किया कि जल्दी-जल्दी खाना खाकर मैं कैथरीन बर्कले से मिलने जाऊँगा।

भोजनालय में खूब बातें चल रही थीं। मैंने थोड़ी शराब पी; क्योंकि आज की रात बड़ी महत्त्वपूर्ण थी। आज की रात बिना शराब पीये हम एक-दूसरे के भाई नहीं समझे जाते। मैं पादरी से आयरलैंड के आर्चबिशप के विषय में बातें करता रहा। मुझे ज्ञात हुआ कि वह एक कुलीन पुरुष था जिसे अन्यायों का शिकार होना पड़ा था। उन अन्यायों के सम्बन्ध में मुझे कुछ भी मालूम नहीं था; किन्तु एक अमरीकी होने के नाते अप्रत्यक्ष रूप से मैं भी उसके लिए

उत्तरदायी था। पादरी से बातें करते हुए मैंने इस संबंध में अपनी जानकारी का अभिनय किया। इतनी देर तक अन्याय के कारणों की इतनी सुन्दर व्याख्या सुनने के बाद यह समझते हुए कि, वह और कुछ नहीं, गलतफहमी थी, इस संबंध में अपनी अनभिज्ञता दर्शाना मेरी अशिष्टता ही होती। मेरी समझ से आयरलैंड का आर्चबिशप बड़ा सुन्दर नाम था और वह मिनीसोटा का रहने वाला था; मिनीसोटा स्वयं भी बड़ा प्रिय नाम था—आयरलैंड आव मिनीसोटा, आयरलैंड आव विसकॉन्सिन, आयरलैंड आव मिचिगन! किन्तु इसके सुन्दर लगने का कारण यह था कि आयरलैंड का उच्चारण आयलैंड द्वीप या टापू की तरह होता था। पर नहीं—यही कारण नहीं था। उस सौंदर्य में और भी कुछ निहित था। "हॉ, फादर (धर्मपिता)!...यह सच है, फादर!...पर फादर, शायद....!...नहीं फादर!....सम्भव है, हॉ फादर! आप मुझसे इस सम्बन्ध में अधिक जानते हैं, फादर!"

पादरी अच्छा आदमी था; पर मंद-बुद्धि था। अधिकारी गण अच्छे नहीं थे और वे भी मूढ़ थे। राजा अच्छा था; पर वह जड़ था। शराब खराब थी; किन्तु उसमें वह जड़ता नहीं थी। उसमें इतनी तेजी थी कि पीने वाले के दांतों की चमक नष्ट हो जाती थी और तालू में विचित्र तरह की चिकनाहट आ जाती थी।

"और पादरी को जेल में बन्द कर दिया गया था—" रोक्का ने कहा—"उसके पास तीन प्रतिशत ब्याजवाले बांड (तमस्सुक) पाये गये थे। यह फ्रांस की बात है। यहाँ तो उसे गिरफ्तार ही नहीं करते। पॉच प्रतिशत ब्याजवाले बॉण्ड के विषय में तो वह साफ मुकर गया। यह घटना बेज़िअर्स की है। उस समय मैं वहीं था। जब मैंने समाचारपत्र में इस सम्बन्ध में पढ़ा, तो मैं जेलखाने पहुँचा और अधिकारियों से प्रार्थना की कि मैं पादरी से मिलना चाहता हूँ। यह तब तक बिलकुल स्पष्ट हो गया था कि उसने बॉण्ड चुराये थे।"

"मैं नहीं मानता—तुम्हारे एक शब्द पर भी मुझे विश्वास नहीं है।" रिनाल्डी बोला।

"जैसी तुम्हारी इच्छा—" रोक्का ने उत्तर दिया—"किन्तु, मैं यह घटना तो अपने पादरी के लिए सुना रहा हूँ। यह बड़ी जानने लायक बात है। ये पादरी हैं, इसलिए इसकी महत्ता स्वीकार करेंगे।"

पादरी मुस्कराया। "कहते चलो"—उसने कहा—"मैं सुन रहा हूँ।"

"यह सच है कि कुछ बॉण्ड के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सका; किन्तु तीन प्रतिशतवाले सभी बॉण्ड पादरी के ही थे। इतना ही नहीं,

कुछ स्थानीय लिखित बॉण्ड भी उसके पास मिले। मुझे अभी स्मरण नहीं आ रहा है कि, वे क्या थे। हॉ, तो मैं जेलखाने पहुँचा। जरा ध्यान से सुनना; यही इस कहानी की मुख्य बात है—मैं पादरी की कोठरी के सामने जाकर खड़ा हो गया और इस तरह बोला, मानो मैं उसके सामने अपने पापों को स्वीकार करने जा रहा था, "पिता, मुझे क्षमा कर; क्योंकि तूने पाप किया है।"

प्रत्येक व्यक्ति बड़े जोर से हँस पड़ा।

"और उसने क्या कहा ?" पादरी ने पूछा। किन्तु रोक्का ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और मुझे इस मजाक के संबंध में बताने लगा—"तुम इसका अर्थ समझते हो–है न?" ऐसा लगा, जैसे उसका अर्थ समझ में आ जाता, तो वह बड़ा सुन्दर मजाक था। मेरे गिलास में लोगों ने थोड़ी शराब और डाल दी और मैंने उन्हें एक ऐसे अंग्रेज सैनिक की कथा सुनाई, जिसे स्नान करने के फव्वारे के नीचे बैठा दिया गया था। इसके बाद मेजर ने ग्यारह चेकोस्लोवाक (चेकोस्लोवाकिया-निवासी) और हंगेरियन नायक की कहानी सुनाई। थोड़ी और शराब पीने पर मैंने उस जॉकी (घुड़दौड़ में घोड़ा दौड़ानेवाला सवार) की कथा सुनाई, जिसे एक पेनी मिला था। मेजर ने कहा कि इटली में किसी ड्यूक की पत्नी के विषय में एक ऐसी ही कथा प्रचलित थी कि वह रात को सो नही सकती थी। इसी समय पादरी उठ कर चल दिया। मैंने एक और कथा सुनाई कि कैसे एक बार एक घूम-घूम कर सामान बेचनेवाला व्यक्ति पॉच बजे सबेरे, जब उत्तर-पश्चिम की ठण्ढी हवा चल रही थी, अपने व्यापार के लिए मार्सेल्स पहुँचा। तभी मेजर ने कहा कि उसने सुना है, मैं खूब पी सकता हूँ। मैंने इनकार कर दिया। उसने कहा कि उसने जो-कुछ सुना था, वह बिलकुल सच है और बाक्कूस (यूनानियों का मद्य-देवता) की शपथ हम लोग इसकी जाँच करेंगे, यह सच है या नहीं! "नहीं, बाक्कूस नही—" मैंने कहा—"बाक्कूस नहीं !" "हॉ बाक्कूस—" उसने कहा। निश्चय हुआ कि मुझे बास्सी–फिलप्पो–विसेन्जा, के साथ कप के बदले कप और गिलास के बदले गिलास भर-भर कर शराब पीनी होगी। बास्सी बोला—"नहीं, यह कोई जॉच का तरीका नहीं है; क्योंकि मैंने पहले ही उससे दुगुनी शराब पी रखी है।" मैंने कहा, "नहीं, वह सफ़ेद झूठ बोल रहा है। बाक्कूस हों या न हों; किन्तु मैं यह कह सकता हूँ कि फ़िलिप्पों–विसेन्ज़ा–बास्सी अथवा बास्सी–फ़िलिप्पो–विसेन्ज़ा ने शाम में एक बूंद भी शराब नहीं पी है। और हॉ, इस व्यक्ति का नाम क्या है?" वह बोला– "तुम्हारा नाम फ्रेडरिको एनरिको है या एनरिको फ्रेडरिको?" मैंने कहा–

"देखो, हममें से जो सबसे अधिक पियेगा। उसी की जीत मानी जायेगी।" मेजर ने हमें पात्रों में लाल शराब देना प्रारम्भ किया। शराब के इन दौरों की आधी राह में ही मैंने महसूस किया कि मैं ज्यादा और नहीं पी सकूँगा। मुझे स्मरण हो आया कि मुझे कहीं जाना था।

"बास्सी जीता"—मैं बोला—"वह मुझसे अधिक शराब पी सकता है। मुझे अब जाना है।"

"उसे सचमुच जाना है।" रिनाल्डी ने कहा, "उसने किसी को मिलने का समय दिया है। मुझे मालूम है।"

"हाँ, मुझे जाना है।"

"दूसरी रात सही—" बास्सी बोला—"उस रात, जब तुम स्वयं को अधिक समर्थ अनुभव करो।" उसने मेरा कन्धा थपथपाया। मेज पर मोमबत्तियां जल रहीं थीं। सभी अफ़सर बड़े प्रसन्न थे। "अच्छा नमस्ते, दोस्तो!" मैंने कहा।

रिनाल्डी मेरे साथ बाहर आया। हम लोग दरवाजे से निकल करके सड़क पर खड़े हो गए और वह बोला—"तुम्हें वहाँ इस प्रकार नशे की हालत में नहीं जाना चाहिए।"

"मैं नशे में नहीं हूँ, रिनाल्डी; सच!"

"तुम कुछ कॉफी चबा लो, तो अच्छा है!"

"क्या बकवास है!"

"नहीं दोस्त, मैं अभी लेकर आता हूँ। तब तक तुम यहीं टहलो!" कुछ क्षणों बाद वह मुट्ठी भर कॉफी के भुने हुए बीज लेकर लौट आया।

"इन्हें चबा जाओ दोस्त और ईश्वर तुम्हारी सहायता करें।"

"बाक्कूस!" मैं बोला।

"मैं तुम्हारे साथ कुछ दूर तक चलूँगा।"

"विश्वास करो! मैं बिलकुल ठीक हूँ।"

हम दोनों साथ ही शहर के बीच चलते गये और मैं कॉफी चबाता रहा। उस फाटक पर, जहाँसे अंग्रेजों के अस्पताल तक रास्ता जाता था, रिनाल्डी ने मुझसे विदा ली। "नमस्ते।" मैंने कहा "तुम भी अंदर क्यों नहीं आते?" उसने सिर हिलाते हुए कहा—"नहीं, मैं सीधे-सादे सुख-साधन ही अधिक पसन्द करता हूँ।"

"कॉफी के बीजों के लिए धन्यवाद!"

"यह तो कुछ नहीं है, दोस्त, कुछ नहीं!"

मैं अस्पताल के मार्ग पर चल पड़ा। एक कतार से खड़े सरो के वृक्षों की छायाएँ गहरी और स्पष्ट थीं। मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो रिनाल्डी खड़ा हुआ मुझे देख रहा था। मैंने उसकी ओर हाथ हिलाया।

अस्पताल के अतिथि-कक्ष में बैठकर मैं कैथरीन बर्कले की प्रतीक्षा करने लगा। हॉल की ओर से कोई आ रहा था। मैं खड़ा हो गया; किन्तु वह कैथरीन नहीं, मिस फर्ग्यूसन थी।

"हॅलो!" उसने कहा,—"कैथरीन को बहुत दुःख है कि वह आज शाम को आप से मिलने में असमर्थ है। यही कहने के लिए उसने मुझे भेजा है।"

"मुझे बहुत अफसोस है। मैं आशा करता हूँ कि वह बीमार नहीं है।"

"नही; पर वह पूर्णतः स्वस्थ भी नहीं है।"

"क्या आप उससे कह देंगी, मुझे यह सुनकर कितना दुःख हुआ?"

"अवश्य, अवश्य!"

"आपका क्या विचार है? क्या कल उससे मिलने आया जा सकता है?"

"हाँ, आप आ सकते हैं।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद!". मैंने कहा—"अच्छा, नमस्ते।"

मैं द्वार के बाहर आया और अचानक ही मुझे गहरे एकाकीपन और सूनेपन का आभास हुआ। मैंने कैथरीन से मिलने-जुलने को कभी महत्त्व नहीं दिया था। शराब के नशे में तो मैं यहाँ आना भी करीब-करीब भूल गया था। किन्तु अभी, जब उससे मुलाकात नहीं हो सकी, मुझे लगा, जैसे उसके अभाव में मेरा जीवन सूना और व्यर्थ है।

.८.

दूसरे दिन तीसरे पहर हम लोगों ने सुना कि उस रात नदी के पास हमला शुरू होने वाला है और हमें वहाँ चार एम्बुलेंस लेकर पहुँचाना है। यद्यपि इस विषय में निश्चित रूप से किसी को कुछ पता नहीं था; तथापि सभी इस ढंग से बातें कर रहे थे, जैसे उन्हें सब-कुछ ज्ञात हो! मैं पहली मोटर पर सवार था और ज्योंही हम ब्रिटिश अस्पताल के फाटक के पास से निकले, मैंने ड्राइवर से मोटर रोकने के लिए कहा। दूसरी मोटरें भी रुक गयीं। मैं नीचे उतरा और दूसरी मोटरों के ड्राइवरों को आदेश दिया कि वे आगे चलें और कोरमन्स जाने वाली

राह जहाँ से निकलती है, वहाँ तक यदि हम उनसे न आ मिलें, तो वे वहीं हमारी प्रतीक्षा करें। मैं तेजी से सड़क पार करता हुआ अतिथि-कक्ष में पहुँचा और वहाँ मैंने मिस बर्कले के विषय में पूछा।

"वह ड्यूटी पर है।"

"क्या मै उससे पल-भर के लिए मिल सकता हूँ?"

अर्दली कैथरीन को बुलाने गया और उसी के साथ वह आ गयी।

"मैं यह पूछने के लिए आया हूँ कि अब तुम्हारी तबीयत कैसी है? मुझे मालूम हुआ कि तुम ड्यूटी पर हो; फिर भी इसीलिए मैंने तुमसे मिलने की इच्छा प्रकट की।"

"मैं अब पूर्ण स्वस्थ हूँ।" वह बोली,—"मेरे खयाल से कल अधिक गरमी के कारण ही मेरी तबीयत खराब हो गई थी।"

"मुझे जाना है।"

"मैं तुम्हारे साथ मिनिट भर के लिए बाहर चल सकती हूँ।"

बाहर आने पर मैंने पूछा—"अब तो तुम बिलकुल ठीक हो न?"

"हाँ, प्रियतम! क्या तुम आज रात को आओगे?"

"नही; मैं तो इसी समय प्लावा के एक प्रदर्शन में भाग लेने जा रहा हूँ।"

"प्रदर्शन!"

"हाँ, वहाँ जो-कुछ होने जा रहा है, वह मेरी समझ से तो एक प्रदर्शन ही है।"

"और तुम लौट आओगे न?"

"हाँ, कल।"

उसने अपने गले में से कुछ खोला और मेरे हाथ पर रख दिया। "ये सन्त एन्थोनी हैं। इन्हें ले जाओ। और हाँ, कल रात मुझसे अवश्य मिलना।"

"तुम तो कॅथोलिक नहीं हो न?"

"नहीं" उसने कहा—"किन्तु मैंने सुना है कि सन्त एन्थोनी का पास में होना बड़ा लाभदायक होता है।"

"तुम्हारी खातिर मैं इसे सम्हालकर रखूँगा। अच्छा अब, विदा।"

"नहीं, विदा नहीं।" उसने कहा।

"अच्छी बात है।"

"समझदारी से काम लेना—अपना ध्यान रखना। नहीं—नहीं, तुम यहाँ मेरा चुम्बन नहीं ले सकते।" मेरी आँखों में झाँकते हुए वह बोली।

"अच्छी बात है।" मैंने कहा।

विदा होते हुए मैंने पीछे मुड़कर देखा। वह सीढ़ियों पर खड़ी थी। उसने अपना हाथ हिलाया। मैंने अपने हाथ का चुम्बन लेकर हवा में उसकी ओर उछाल दिया। उसने फिर अपना हाथ हिलाया। धीरे-धीरे मैं सड़क पार करते हुए अस्पताल की सीमा से बाहर निकल आया। एम्बुलेन्स में मेरे बैठते ही हम लोग चल पड़े। सन्त एन्थोनी धातु की बनी एक सफेद डिबिया में बन्द थे। मैंने डिबिया खोलकर चेन-सहित उन्हें अपनी हथेली पर उलट लिया।

"सन्त एन्थोनी ?" ड्राइवर ने पूछा।

"हाँ।"

"मेरे पास भी हैं।" कहते हुए उसने स्टीयरिंग व्हील पर से अपना दाहिना हाथ हटाया और अपने फौजी कोट के बटन खोलते हुए कमीज के भीतर से उन्हें निकाल कर बोला—"देखिये।"

मैंने अपने सन्त एन्थोनी को सोने की पतली सांकल-सहित डिब्बी में बन्द कर दिया और उसे अपने वक्ष के पास की जेब में रख दिया।

"आप इसे पहनते नहीं ?"

"नहीं।"

"इसे पहनना अच्छा रहेगा। इसीलिए तो यह बनाया गया है।"

"अच्छी बात है।" मैंने कहा और सोने की साकल के खटके को खोला—सांकल अपने गले में डाल ली और खटका बन्द कर दिया। संत एन्थोनी मेरी वर्दी के ऊपर लटकने लगे। मैंने अपने कोट के बटन खोले, कमीज़ का कालर खोला और सांकल को कमीज़ के भीतर डाल लिया। मोटर में जाते हुए, मुझे अपने वक्ष पर लटकते, धातु की डिब्बी में बन्द उस सन्त की उपस्थिति का भान होता रहा। किन्तु धीरे-धीरे मैं उसे भूल गया। युद्ध में मेरे घायल होने के बाद फिर उस का कोई पता न लगा। कदाचित् वह किसी उपचार-केन्द्र में किसी व्यक्ति के हाथ लग गया।

जब हम पुल पर पहुँचे तो हमने अपनी मोटर की गति बढ़ा दी। कुछ समय बाद ही, हमें सड़क के निचले भाग में आगे बढ़ती हुई अन्य मोटरों के पहियों से उड़ती हुई धूल दिखाई दी। आड़ी-टेढ़ी घुमावदार सड़क पर हमने तीन मोटरें देखीं, जो बहुत छोटी नजर आती थीं। उनके गतिमान पहियों से उड़ने वाली धूल आसपास के वृक्षों को स्पर्श करती हुई चली जा रही थी। हम लोगों ने उन्हें जा पकड़ा, पीछे छोड़ दिया और पहाड़ियों के बीच ऊपर चढ़ती हुई सड़क पर घूम गए। रक्षक के रूप में मोटर चलाना कष्टदायक नहीं होता, बशर्ते कि

आप सबसे आगे वाली मोटर में हों। मैं अपनी सीट पर आराम से बैठ गया और आस-पास के इलाके पर नजर दौड़ाने लगा। हम नदी के किनारे के पास की निचली पहाड़ियों के बीच से गुजर रहे थे। रास्ता ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ता जाता था, त्यों-त्यों उत्तर की ओर काफी दूरी पर स्थित ऊँचे-ऊँचे पर्वत स्पष्ट होते जाते थे। उनके शिखर अभी तक हिमाच्छादित थे। मैंने पीछे मुड़कर देखा। तीनो मोटरें चढ़ाई चढ़ रहीं थीं। धूल से बचाव के लिए उनके बीच पर्याप्त अन्तर था। थोड़ी दूर जाने पर हमें लदे हुए खच्चरों की एक लम्बी कतार मिली। उनके चालक लाल फैज़ (झब्बेदार तुर्की टोपी) टोपियाँ लगाए हुए उनकी बगल में चल रहे थे। वे सब इटालियन निशानेबाज थे।

खच्चरों की कतार के आगे सड़क बिलकुल सूनी थी। पहाड़ियों को पार करते हुए हम आगे बढ़ते गये और एक लम्बी पहाड़ी की ढलान से नीचे उतरते हुए एक नदी की घाटी में पहुँच गए। मार्ग के दोनो ओर वृक्ष थे। दाहिनी ओर की वृक्ष-पंक्ति के बीच से मुझे नदी दिखाई दे गयी—स्वच्छ जल से भरी हुई—तीव्र, उथली नदी। नदी बहुत नीचे थी। उसकी सँकरी पतली धार के दोनो ओर कंकड़-पत्थर और रेत का फैलाव था। कहीं-कहीं उसके कंकरीले तल पर फैले हुए पानी में एक अद्भुत चमक थी। किनारे के समीप ही मैंने कुछ गहरे जलाशय देखे। उनका जल आकाश-जैसा नीलवर्ण था। बीच-बीच में मुझे नदी के ऊपर, उन स्थानों पर, जहाँसे हमारी सड़क से निकले हुए अन्य रास्ते जाते थे, पत्थर के वृत्तखण्डों पर निर्मित पुल दिखाई दिए। तब हम लोगों ने कृषकों के पत्थर के बने हुए घरो को पार किया। खेतों में खड़े उन घरों की दक्षिणी दीवारों तथा खेतो की नीची पथरीली दीवारो से सटे, किसी लम्बी मोमबत्ती की लौ के समान विभिन्न शाखाओंवाले नाशपाती के वृक्ष झूम रहे थे। सड़क बड़ी दूर तक घाटी के बीच दौड़ती चली गयी थी। एक मोड़ के साथ हमने पुनः पहाड़ियों पर चढ़ना प्रारम्भ किया। अखरोट के वनों में आगे-पीछे की ओर चक्कर काटती हुई सड़क बिलकुल सीधी ऊपर चढ़ती गई। और अन्त में एक पर्वतपृष्ठ पर पहुँचकर ही समतल हुई। वृक्षों के झुरमुट से मैं नीचे की ओर देख सकता था। मैंने नीचे—बहुत नीचे—दो देशों की सेनाओं को विभक्त करने वाली नदी की दूरस्थ रेखा को देखा और साथ ही उस सूर्य को देखा, जो नदी के वक्ष पर चमक रहा था। पर्वत-पृष्ठ के शीर्ष का अनुसरण करते हुए ऊबड़ खाबड़ नवीन सैन्यपथ पर हम लोग बढ़ते गए। मेरी दृष्टि उत्तर दिशा में स्थित दो पर्वत-मालाओं पर जा अटकी। हिम रेखा तक हरित-श्यामल तथा उसके

बाद श्वेत रंग में रंगी हुई वे पर्वत-पंक्तियाँ सूर्यकिरणों का स्पर्श पा बड़ी आकर्षक प्रतीत हो रहीं थीं। ज्यों-ज्यों हम पर्वत-पृष्ठ पर ऊपर की ओर बढ़ते गए, मुझे तीसरी पर्वत-माला दिखाई दी—हिमाच्छादित, उच्चतर पर्वत-माला—जो खड़िया के समान शुभ्र-श्वेत थी और जिसके ऊपर कुछ ऐसे विचित्र समतल मैदान थे, जिन्हें देखकर आभास होता था, मानो किसीने उस पर्वत पर हल चलाया हो। इन सबसे बड़ी दूर—सबसे परे—कुछ और शैलशिखर खड़े थे। वे इतने दूर थे कि उन्हें देखकर यह कहना वस्तुतः कठिन था कि मैंने उन्हें सचमुच देखा था। वे सब पर्वत आस्ट्रियनों के अधिकार में थे और उनके समान हमारे पास कुछ भी नहीं था। आगे चलने पर सड़क की दाहिनी ओर एक वृत्ताकार मोड़ था, जहाँ से नीचे देखने पर मैं वृक्षों के बीच नीचे की ओर लुढ़कती हुई सड़क को स्पष्ट देख सकता था। इस राह पर सैनिक-टुकड़ियाँ जा रही थीं—भारवाहक मोटरें तथा पहाड़ी तोपो से लदे टट्टू भी रेंग रहे थे। रास्ते की एक ओर से मोटर दौड़ाते हुए हम ढाल पर से नीचे की ओर बढ़ते गए। नीचे झाँकने पर मुझे काफी निचली सतह पर नदी दिखाई दी। उसी के साथ मैंने किनारे से सटाकर बिछाए गए स्लीपरों की कतार तथा उनपर डाली हुई रेल की पटरियां देखीं। वह पुराना पुल भी दिखायी दे गया, जिस पर होकर रेल की पटरियां नदी के दूसरी ओर चली गयी थीं। इनसे परे, नदी से दूर, एक पहाड़ी की छाँह में, उस नन्हें नगर के टूटे-फूटे ध्वस्त घर दिखाई दे रहे दे, जिस पर हमें अधिकार करना था।

जब हम नीचे उतरे, तब शाम का अंधेरा घिरने लगा था। हम नदी की बगल से जाने वाली बड़ी सड़क पर मुड़ गये और आगे बढ़ते गये!

• ९ •

सड़क पर बड़ी भीड़ थी। उसके दोनों ओर अनाज के पौधों के सूखे डंठलों से बनी टट्टियाँ और पुआल (सूखी घास) की चटाइयाँ लगी थीं। ऊपर भी चटाइयाँ लगा दी गयी थीं। उनके बीच से निकलते समय ऐसा प्रतीत होता था मानो हम किसी सर्कस अथवा किसी देशी गाँव के प्रवेश-द्वार से गुजर रहे हों। चटाइयों से ढँकी उस सुरंग को हमने धीरे-धीरे पार किया और उस खुले क्षेत्र में आये, जहाँ रेल्वे स्टेशन था। यहाँ पर सड़क, नदी के किनारे की सतह से

नीची थी और नदी के किनारे की जमीन में भीतर-ही-भीतर खोदकर खाइयाँ बना ली गई थीं, जिनमें पैदल सेना छिपी हुई थी। इन खाइयों का संबंध सड़क से भी था। अंधेरा बढ़ता जा रहा था। हम अपनी राह तय करते जाते थे। नदी के किनारे चलते-चलते मैंने ऊपर की ओर देखा। निशा के आँचल में मुँह छिपाने की तैयारी करते हुए सूर्य के ठीक सामने कृष्णवर्ण पहाड़ियों के ऊपर शत्रु की गतिविधि का निरीक्षण करनेवाले आस्ट्रियन-यान दिखाई दे रहे थे। हमने एक ईंट के भट्ठे से कुछ आगे अपनी मोटरें रोक दीं। भट्ठियों और कुछ गहरी खाइयों को आवश्यक सामग्री से सजाकर उपचार-केन्द्रों का रूप दे दिया गया था। वहाँ के तीनों डाक्टरों से मैं परिचित था। मैंने मेजर से बातचीत की। उसने मुझे बताया कि जब युद्ध प्रारम्भ हो जायेगा और हमारी एम्बुलेन्स घायलों से भर जायेंगी, तब हम वापस उस चटाइयों से ढँके हुए मार्ग से होकर पर्वत-पृष्ठ के साथवाले मुख्य-पथ तक जायेंगे, जहाँ एक अड्डे पर, घायलों को अन्यत्र ले जाने के लिए दूसरी मोटरें तैयार रहेंगी। मेजर को यह उम्मीद थी कि रास्ता साफ रहेगा और हमें वहाँ तक जाने में कोई असुविधा नहीं होगी। यह सारी हलचल एक ही रास्ते पर थी। रास्ता भलीभाँति ढँक दिया गया था; क्योंकि नदी के उस पार स्थित आस्ट्रियन उसे स्पष्ट देख सकते थे। ईंट के इस भट्ठे में हम लोग, नदी-तट के कारण, बन्दूकों और मशीनगनों की मार से सुरक्षित थे। नदी के ऊपर एक टूटा-फूटा पुल था। बमबारी प्रारम्भ होने पर एक और पुल बनाया जाने वाला था और कुछ सैनिक ऊपर की ओर, नदी के मोड़ के उथले जल से होकर नदी पार करने वाले थे। मेजर एक ठिगना व्यक्ति था। उसकी मूँछें ऊपर की ओर उठी हुई थीं। वह लीबिया के युद्ध में भाग ले चुका था, जहाँ लड़ते-लड़ते वह बुरी तरह आहत हो चुका था। वीरता दिखाने के पुरस्कार-स्वरूप उसे दो पट्टियां मिली थीं जिन्हें वह अपने फौजी कोट पर लगाए हुए था। उसने कहा कि यदि कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया, तो वह मुझे पुरस्कार दिलवायेगा। मैंने उसकी इस उदारता के लिए उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा, मुझे पूर्ण आशा है कि हमारा काम निर्विघ्न समाप्त हो जायेगा। मैंने उससे पूछा कि क्या कहीं ऐसी बड़ी और सुरक्षित खाई है, जहाँ एम्बुलेंस के ड्राइवर ठहराये जा सकें। उसने वैसा स्थान दिखाने के लिए मेरे साथ एक सैनिक भेजा। सैनिक हमें एक खाई तक ले गया, जो बहुत अच्छी थी। ड्राइवरों को वह बड़ी पसन्द आई। मैंने उन्हें वहीं छोड़ दिया। मेजरवाली खाई में वापस जाने पर, उसने अपने अन्य दो

अफसरों के साथ, मुझे शराब पीने के लिए आमंत्रित किया। हमने बड़े प्रेम के साथ रम (शराब) पी। बाहर अंधेरा घना हो रहा था। मैंने पूछा कि हमला कब शुरू होने वाला है। "अंधेरा कुछ और बढ़ते ही," उसने उत्तर दिया। वहाँ से मैं फिर ड्राइवरों के पास पहुँचा। वे खाई में बैठे हुए गप्पें लगा रहे थे। ज्यों ही मैं पहुँचा, त्यों ही वे सब चुप हो गए। मैंने उनमें से प्रत्येक को सिगरेट का एक डिब्बा दिया। वे शिथिलतापूर्वक बांधे गये, मेसीडोनिया सिगरेटों के डिब्बे थे। उनसे तम्बाखू गिरती थी और उन्हें पीने के पहले, उनके दोनों छोरों को मोड़ देना पड़ता था। मॅनेरा ने अपना लाइटर जलाया और उसे सब लोगों की ओर बढ़ा दिया। उसके लाइटर का आकार फिएट् मोटर के रेडिएटर यंत्र के समान था। मैंने उन्हें मेजर के साथ हुई बातचीत कह सुनाई।

"जब हम आ रहे थे, तब हमें वह अड्डा क्यों नहीं दिखाई दिया?" पास्सिनी ने पूछा।

"वह, जहां से हम मुड़े थे, वहाँ से कुछ दूरी पर था।"

"वह सड़क तो फिर गन्दगी से भर जाएगी।" मॅनेरा बोला

"शत्रु अपने बमों से हमारे चिथड़े-चिथड़े कर देंगे।"

"हो सकता है।"

"लेफ्टिनेंट साहब, खाने-पीने का क्या इंतजाम है? हमला शुरू होने पर हमें खाने का मौका नहीं मिलेगा।"

"मैं अभी जाकर देखता हूँ।" मैंने कहा।

"हमारे संबंध में क्या आदेश है? हम यहीं ठहरें या बाहर जाकर इधर-उधर घूम आयें?"

"यहीं ठहरना बेहतर होगा।"

मैं मेजर की खाई में गया। उसने बताया कि मोर्चे का रसोईघर तो काफी दूर पड़ेगा। ड्राइवर यहीं आ जायेंगे और अपने लिए भूना हुआ मांस ले लेंगे। यदि उनके पास खाने-पीने के बर्तन न हों, तो हम उधार दे देंगे। जहाँ तक मुझे मालूम था, उनके पास बर्तन थे। मैं लौटकर ड्राइवरों के पास पहुँचा और उनसे कहा कि रसोईघर से खाना आते ही उन्हें मिल जायेगा। मॅनेरा ने कहा—"आशा है, बमबारी शुरू होने के पहले ही खाना आ जायेगा।" वे सब कारीगर थे और युद्ध से घृणा करते थे।

मैं मोटरों का निरीक्षण करने तथा अन्य गतिविधियों की टोह लेने के लिए बाहर गया। थोड़ी देर बाद खाई में लौटकर मैं उन ड्राइवरों के पास बैठ

गया। हम सब लोग दीवार से पीठ टिकाकर जमीन पर बैठ गये और धूम्रपान करने लगे। बाहर बिलकुल अंधेरा-सा हो चुका था। खाई के भीतर की मिट्टी गर्म और सूखी थी, इसलिए मैंने दीवार से अपने कंधे टिका दिए, और पीठ के सहारे आराम से बैठ गया।

"हमला करने के लिए कौन-सी टुकड़ी जा रही है?" गावुज्ज़ी ने पूछा।

"इटालियन निशानेबाज।"

"सभी इटालियन निशानेबाज हैं?"

"मेरा तो यही अनुमान है।"

"बड़े पैमाने पर हमला करने के लिए तो यहाँ पर्याप्त सेना भी नहीं है।"

"ऐसा कदाचित् इसलिए किया गया है, जिससे शत्रु को पता न लग सके कि वस्तुतः आक्रमण कहाँ से होनेवाला है।"

"क्या इटालियन निशानेबाजों को मालूम है कि असली आक्रमण कौन करेगा?"

"मैं तो ऐसा नहीं समझता।"

"वे सचमुच नहीं जानते—" मॅनेरा बोला "यदि उन्हें मालूम हो जाए तो वे हमला ही नहीं करेंगे!"

"नहीं, वे हमला अवश्य करेंगे" पास्सिनीने कहा—"ये इटालियन निशानेबाज बड़े मूर्ख होते हैं।"

"वे बड़े बहादुर होते हैं और उनमें पर्याप्त अनुशासन भी होता है—" मैं बोला।

"नाप की दृष्टि से वे निस्सन्देह चौड़ी छातीवाले तथा भरे-पूरे शरीर वाले होते हैं—पर होते हैं बिलकुल मूर्ख।"

"नहीं जी, वे तो बड़े लम्बे होते हैं!" मॅनेरा ने कहा। यह वास्तव में एक मज़ाक था। सब हँस पड़े।

"लेफ्टिनेंट साहब! जब उन्होने आक्रमण करने से इनकार कर दिया था और उनके दल के प्रत्येक दसवें आदमी को गोली से उड़ा दिया गया था, तब आप वहाँ थे?"

"नहीं।"

"यह बिलकुल सच है। उन सबको कतार में खड़ा कर दिया गया और उनमें से हर दसवें सैनिक को बाहर खींच कर गोली मार दी गयी। कारबाइन—(छोटी बन्दूक) दल के सैनिकों ने उन्हें गोली मारी थी।"

"छिः, कारबाइन दल के सैनिक!" पास्सिनी ने कहा और फर्श पर थूक दिया—"पर वे प्रथम सैन्यदल के पैदल सैनिक, सब-के-सब छः फुट से ऊंचे और उन्होंने हमला करने से इनकार कर दिया!"

"यदि हर व्यक्ति इसी प्रकार आक्रमण करने से इनकार कर दे, तो युद्ध ही न हो।" मॅनेरा बोला।

"किन्तु, इन प्रथम सैन्य दल के पैदल सैनिकों के साथ यह बात नहीं थी। वे डरते थे। सभी अफसर बड़े उच्च परिवार से सम्बन्धित थे।"

"सुना है, कुछ अफसर अकेले ही आगे बढ़ गए थे।"

"किन्तु, एक सारजेण्ट ने उन अफसरों में से दो को, जो इनकार करने वाले सैनिकों का साथ नहीं दे रहे थे, गोली मार दी थी।"

"कुछ सैनिक भी तो उनका साथ न देकर अलग हो गए थे।"

"जो अलग हो गए थे, उन्हें उस समय कतार में नहीं खड़ा किया गया, जब हर दसवें सैनिक को गोली मारी गई।"

"कारबाइन-दल के सैनिकों द्वारा गोली मारे जानेवालों में एक मेरे शहर का निवासी था।" पास्सिनी बोला—"वह लम्बा चौड़ा और भरे-पूरे शरीरवाला एक चुस्त युवक था और उस सैन्य-दल के बिलकुल उपयुक्त था। वह सदा रोम मे घूमता रहता—हमेशा लड़कियो के साथ ही रहता। कारबाइन-दल के सैनिकों के साथ भी बहुधा दिखाई दे जाता।" वह हॅसा। "अब बेचारे के घर के सामने एक सङ्गीनधारी पहरेदार खड़ा कर दिया गया है और उसके परिवारवालों से किसी को मिलने की इजाजत नही है। उसके पिता को सभी नागरिक-अधिकारों से वंचित कर दिया गया है। वह मतदान तक मे शामिल नहीं हो सकता। कानून भी उसकी रक्षा नहीं करता। कोई भी उनकी सम्पत्ति उनसे छीन सकता है।"

"जो-कुछ उनके परिवारों के साथ हो रहा है, यदि वैसा न हो तो कोई भी सैनिक स्वेच्छा से आक्रमण करने के लिए तैयार न होगा।"

"क्यों नहीं, आल्पिनी सैनिक अवश्य तैयार होंगे। विक्टर इमैनुअल के (व्ही. ई.) सैनिक भी पीछे हटने वाले नहीं है—कुछ इटालियन निशानेबाज भी नही रुकेंगे।"

"ये इटालियन निशानेबाज भी पीठ दिखा चुके हैं और अब उसे ढँकने का प्रयत्न करते हैं।"

"आपको हमें इस प्रकार की बातें करने की स्वच्छंदता नहीं देनी चाहिए, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

"अमर रहे सेना, बने रहें सैन्यदल !" पास्सिनी ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"मुझे मालूम है, तुम लोग कैसी बातें किया करते हो।" मैंने उत्तर दिया—"किन्तु जब तक तुम मोटर अच्छी तरह चलाते हो, शिष्ट व्यवहार करते हो—"

"—और इस तरह खुलेआम बातें नहीं करते कि दूसरे अफ़सर सुन सकें—" मॅनेरा ने वाक्य पूरा किया।

"मेरे विचार से अब हमें इस युद्ध का किसी प्रकार अन्त कर देना चाहिए—" मैंने कहा—"किन्तु यदि केवल एक पक्ष ने लड़ना बन्द कर दिया, तो इसका अन्त नहीं होने वाला है। यदि हम लड़ना बन्द कर दें, तब तो परिणाम और भी बुरा होगा।"

"और बुरा परिणाम क्या हो सकता है।" पास्सिनी ने आदरपूर्वक कहा—"विश्व में युद्ध से बुरी अन्य कोई वस्तु नहीं है।"

"पराजय, युद्ध से भी बुरी है।"

"मैं इस पर विश्वास नही करता।"

पास्सिनी पुनः सम्मान सहित बोला—"आखिर पराजय है क्या? हमारा घर लौट जाना ही तो?"

"नहीं, इतना ही नहीं! पराजय के बाद विजेता तुम्हारे पीछे लग जाते हैं और तुम्हारी बहू-बेटियों का अपहरण कर लेते हैं।"

"मुझे विश्वास नही होता।" पास्सिनी ने कहा—"वे सबके साथ तो ऐसा नही कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति—को स्वय अपने घर की रक्षा करनी चाहिए। उसे चाहिए कि अपनी बहू-बेटियों को घर में सुरक्षित रखे।"

"पर वे तुम्हें फॉसी पर चढ़ा देते हैं। वे आते हैं और तुम्हें फिर से सेना में भर्ती होने के लिए बाध्य करते हैं—वह भी एम्बुलेंस विभाग में नहीं, पैदल सेना में।"

"वे सबको फॉसी पर नहीं चढ़ा सकते।"

"एक बाहरी राष्ट्र किसी व्यक्ति को स्वयं उसके अपने देश में सैनिक बनने पर बाध्य नही कर सकता।" मॅनेरा ने कहा।

"पहली लड़ाई के समय ही सब सैनिक भाग खड़े होंगे।"

"चेकोज़ (चेक जाति के लोग) के समान।"

"मेरी समझ से, पराजित होना क्या होता है, यह तुम्हें नहीं मालूम; तभी तुम सोचते हो कि हार उतनी बुरी नहीं होती।"

"लपटन साहब," पास्सिनी बोला, "जब आप हमे बोलने को मजबूर करते

हैं, तो सुनिये। संसार में युद्ध के समान बुरा और कुछ नहीं होता। हम, एम्बुलेन्स सेना में काम करनेवालों को वस्तुतः इस का तनिक भी अनुभव नहीं होता कि युद्ध कितना भयावह होता है। और जब मनुष्यों को युद्ध की इस भयावहता का अनुभव होता है, तब वे चाह कर भी इसका अन्त करने का कोई रास्ता नहीं खोज पाते; क्योंकि उस समय वे सब उन्मत्त हो जाते हैं—एकदम पागल। ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो कभी अनुभव ही नहीं करते—और कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं, जो अपने अधिकारी-वर्ग से डरते हैं—उनसे भय खाते हैं। इन्हीं मनुष्यों द्वारा तो युद्ध का निर्माण होता है।"

"मैं जानता हूँ कि यह बुरा है और हमें इसका अन्त अवश्य करना चाहिए।"

"इसका अन्त नहीं होता। युद्ध का भी कहीं अन्त होता है?"

"अवश्य होता है।"

पास्सिनी ने इनकार में अपना सिर हिलाया।

"केवल विजय-प्राप्ति से ही युद्ध नहीं जीता जाता। हमारे, सॉन जेब्राइले पर अधिकार कर लेने से ही क्या होता है? यदि कार्सो, मान्फाल्कोन तथा ट्रीस्ट पर ही विजय प्राप्त हो गई, तो उससे क्या? तब—उसके बाद? क्या स्थिति होगी हमारी? क्या आपने आज उन दूरस्थ पर्वतों को देखा था? क्या आप समझते हैं कि हम उन सब पर्वतो पर भी अधिकार कर लेंगे? हॉ, यदि आस्ट्रियन सेना लड़ना बन्द कर दे, तो ऐसा होना सम्भव है। किसी एक पक्ष को युद्ध बन्द करना ही चाहिए। हम ही क्यों लड़ाई बन्द नहीं कर देते? यदि वे (आस्ट्रियन) इटली में घुस भी आये, तो कुछ काल बाद ऊब कर लौट जायेंगे। उनका अपना देश है—अपना घर है। किन्तु नहीं, इसके बजाय हो रहा है युद्ध।"

"तुम तो एक कुशल वक्ता हो।"

"हममें सोचने की शक्ति है—हम पढ़ते भी हैं। हम कोई किसान मज़दूर नहीं हैं। हम कारीगर हैं—यंत्रों से उलझने वाले। किन्तु आज किसान-मज़दूर भी युद्ध में विश्वास नहीं करते। हर व्यक्ति युद्ध से घृणा करता है।"

"प्रत्येक देश में एक ऐसा वर्ग रहता है, जो उसे अपने अधिकार में रखता है। वह वर्ग वस्तुतः बड़ा मूर्ख होता है—बुद्धिहीन। वह न तो कुछ समझता है और न समझ ही सकता है। और उसी के कारण युद्ध भी होता है।"

"और वह वर्ग, युद्ध से पैसे भी खूब बनाता है।"

"बहुत-से लोग ऐसा नहीं करते—" पास्सिनी ने कहा—"वे वास्तव में पहले दरजे के मूर्ख होते हैं। वे सिर्फ मूर्खतावश ही युद्ध छेड़ते हैं—अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।"

"हमें चुप हो जाना चाहिए।" मॅनेरा बोला—"हम बहुत बातें करते हैं, लेफ्टिनेण्ट साहब के सामने भी।"

"ये ऐसी बातें पसन्द करते है।" पास्सिनी ने कहा—"हम इन्हें अपने पक्ष में कर लेंगे—इनके विचार बदल डालेंगे।"

"पर अब हम चुप हो जायें, तो अच्छा है।" मॅनेरा ने कहा।

"क्या अब भी हमें खाना मिल सकेगा, साहब?" गावुज़्ज़ी ने पूछा।

"मैं जाकर देखता हूँ।" मैंने कहा। गोर्डिनी खड़ा हो गया और मेरे साथ ही बाहर आ गया।

"क्या मेरे योग्य कोई कार्य है, लेफ्टिनेंट साहब? क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ?" वह चारों ड्राइवरों में सबसे अधिक शांत स्वभाव का था।

"यदि तुम चाहो, तो मेरे साथ चल सकते हो।" मैं बोला—"हम देखेंगे, क्या हो सकता है।"

बाहर बिलकुल अंधेरा छा चुका था। सर्चलाइट से निकलती हुई प्रकाश-रश्मियाँ उसे विदीर्ण करती हुई इधर-उधर घूम रहीं थीं। उस मोर्चे पर तोप ढोनेवाली गाड़ियों के ऊपर बड़े-बड़े सर्चलाइट बिठाये गए थे। रात में सड़क पर चलते समय कभी कभी, सैन्य-व्यूह के पीछे, उससे बिलकुल सटी हुई, सर्चलाइटवाली गाड़ियाँ देखीं जा सकती थीं। ये गाड़ियाँ सड़क से कुछ हटकर खड़ी रहती थीं और वहीं से एक अधिकारी प्रकाश किरणों को विभिन्न दिशाओं में संचालित करता था। इन प्रकाश-किरणो से जनसमूह भयभीत हो उठता था। हमने ईंट के भट्ठे को पार किया और प्रमुख उपचार–केन्द्र के निकट पहुँचकर रुक गए। केन्द्र के प्रवेशद्वार को वृक्षों की कुछ हरी शाखाओं द्वारा थोड़ा ढँक दिया गया था। उन शाखाओं के धूप में सूखे हुए पत्ते रात्रि के घने अन्धकार में हवा के झोकों का स्पर्श पा खड़खड़ा उठते थे। भीतर प्रकाश हो रहा था। मेजर एक सन्दूक पर बैठा टेलिफोन पर बातें कर रहा था। सेना के उपचार-विभाग के एक कैप्टन ने बतलाया कि आक्रमण का समय एक घण्टा और बढ़ा दिया गया है। उसने मेरी ओर कॉग्नेक (शराब) का एक गिलास बढ़ाया। मैंने लकड़ी की मेजों पर दृष्टि दौड़ाई तथा प्रकाश में चमचमाते हुए औजारों, विभिन्न बर्तनों और डाटलगी शीशियों को देखा।

गोर्डिनो मेरे पीछे खड़ा था। मेजर टेलिफोन पर अपनी वार्ता समाप्त कर वहाँ से उठा। "आक्रमण अभी ही प्रारम्भ होने वाला है।" उसने कहा—"उसका समय फिर एक घण्टा पीछे कर दिया गया है।"

मैंने बाहर की ओर झाँका। सर्वत्र अंधेरा छाया हुआ था और उसके बीच हमारे पीछे की ओर के पर्वतों पर आस्ट्रियन सर्चलाइट का प्रकाश घूम रहा था। क्षणभर सब कुछ शान्त—निःशब्द रहा और तब अचानक ही पीछे की ओर की सब तोपें एक साथ गरज उठीं। बमबारी प्रारम्भ हो गयी थी।

"सेवोइया से हमला हो रहा है।" मेजर बड़बड़ाया।

"मैं खाने के विषय में पूछने आया था।" मैंने कहा, पर मेजर ने सुना नहीं। मैंने अपना कथन दुहराया।

"खाना आया ही नहीं।"

इतने में बाहर ईंट के भट्ठे के पास एक बड़ा बम गिरा। एक दूसरा धमाका हुआ और उसके भीषण विस्फोट में हमें ईंट और मलबे के भड़भड़ाकर गिरने की क्षीण आवाज सुनाई दी।

"यहाँ, खाने के लिए कुछ नहीं है?"

"हमारे पास थोड़ी सी 'मेकरोनी' (पश्चिमी देशों में प्रचलित एक प्रकार का खाद्य पदार्थ) है।" मेजर बोला।

"जो-कुछ मिल सकेगा, मैं वही ले जाऊँगा।"

मेजर ने एक अर्दली को आदेश दिया। वह पीछे की ओर जाकर आँखों से ओझल हो गया और एक बर्तन में बिलकुल ठंढी 'मेकरोनी' ले आया। मैंने वह बर्तन गोर्डिनी को दे दिया।

"क्या आपके पास कुछ पनीर होगा?"

मेजर ने कुढ़ते हुए फिर आदेश दिया। अर्दली एक बार पुनः भीतर की ओर जाकर गायब हो गया और सफेद पनीर का एक चौथाई टुकड़ा लेकर लौट आया।

"बहुत-बहुत धन्यवाद।" मैं बोला।

"अच्छा हो, यदि आप लोग अभी बाहर न जाएँ।"

इतने ही में बाहर प्रवेश-द्वार के निकट किसी चीज़ के नीचे रखने की आवाज सुनाई दी। उन दो मनुष्यों में से, जो उसे वहाँ तक लाए थे, एक ने अन्दर झाँका।

"उसे भीतर ले आओ।" मेजर ने कहा—"तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुम चाहते हो कि हम बाहर आयें और उसे वहाँ से ले आयें?"

टिकठी ढोनेवाले उन दोनों व्यक्तियों ने उस आहत व्यक्ति को कंधो के नीचे हाथ डाल कर और पैर पकड़कर उठाया और उसे भीतर ले आए।

"इसका कोट खोल दो।" मेजर ने आज्ञा दी।

उसने महीन जालीदार कपड़े से चिमटे का एक छोर पकड़कर उठा लिया। दोनों कैप्टनों ने अपने कोट उतार दिए। "तुम दोनों बाहर जाओ—" मेजर ने टिकठी ढोनेवाले उन दोनों व्यक्तियों से कहा।

"चलो।" मैं गोर्डिनी से बोला।

"जब तक यह बमबारी खत्म न हो जाए आप लोगों का यहीं ठहरना उचित है।" मेजर ने पीछे मुड़ कर कहा।

"मेरे आदमी भूखे हैं।" मैंने उत्तर दिया।

"जैसी आपकी इच्छा।"

बाहर आकर हम लोगों ने ईंट के भट्ठे के बीच भागना आरम्भ किया। नदी-किनारे के पास हमसे थोड़ी दूरपर एक गोला गिरा। उसके बाद एक और गोला गिरा। जब तक वह तीव्र वेग से अचानक ही हमारे निकट नहीं आ गया, तब तक हमें उसका पता नहीं चल सका। हम दोनों धरती पर लेट गये और एक तीव्र प्रकाश और बम-विस्फोट तथा उसकी तीखी गंध के बीच हमने उसके उड़ते हुए टुकड़ों की झनझनाहट और नीचे गिरती हुई ईंटो की भड़भड़ाहट सुनी। गोर्डिनी उठा और खाई की ओर भागा। मै भी पनीर के टुकड़े को पकड़े हुए उसके पीछे-पीछे दौड़ा। पनीर की चिकनी ऊपरी सतह ईंटो की धूल से भर गई थी। खाई में पहुँचकर मैंने देखा कि तीनो ड्राइवर दीवार से टिके हुए सिगरेट पी रहे थे।

"लो, देश के नौनिहालो!" मैं बोला।

"मोटरों का क्या हाल है?" मॅनेरा ने पूछा।

"ठीक हैं वे।"

"क्या उन्होने (मेजर आदि ने) आपको यहाँ आते समय बमबारी का भय दिखाया था, लेफ्टिनेण्ट साहब?"

"तुम्हारा अनुमान बिलकुल सच है।" मैंने कहा।

मैंने अपना चाकू निकाला, उसे खोला; उसके फाल को पोछा और उससे पनीर की ऊपरी धूलभरी सतह काटकर फेंक दी। गावुज्ज़ी ने मेकरोनी से भरा बरतन मेरी ओर बढ़ा दिया।

"खाना शुरू कीजिए, साहब!"

"नहीं—" मैंने कहा—"इसे नीचे रख दो। हम सब साथ ही खाएंगे।"

"किन्तु हमारे पास कांटे तो नहीं हैं।"

"क्या मुसीबत है!" मैंने अंग्रेजी में कहा।

मैंने पनीर के टुकड़े किये और उन्हें मिठाइयों पर रख दिया।

"बैठो और खाना शुरू करो—" मैंने कहा। वे आसपास बैठकर मेरी प्रतीक्षा करने लगे। मैंने अंगूठे और उँगलियों से एक 'मेकरोनी' पकड़कर उसे ऊपर उठाया। एक गुच्छा अलग होकर मेरे हाथ में आ गया।

"थोड़ा और ऊपर उठाइए, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

मैंने उसे हाथ की पूरी ऊँचाई तक ऊपर उठाया और आपस में लिपटे हुए रेशे अलग-अलग हो गये। मैंने उन्हें नीचे लाते हुए मुँह में रख लिया। चूसते हुए उनके किनारों को तोड़ा और चबाने लगा। फिर मैंने पनीर का एक टुकड़ा लेकर उसे चबाया और उस पर एक घूँट शराब पी। 'मेकरोनी' का स्वाद ज़ंग खाई हुई किसी धातु के समान लगा। मैंने सारा खाना पास्सिनी की ओर बढ़ा दिया।

"यह तो बिलकुल वाहियात है!" उसने कहा—"यह बहुत दिनों पहले की बनी है। मैंने इसे मोटर में भी खाया था।"

वे सब खा रहे थे। वे सिर को पीछे लटकाये और अपनी ठुड्डियाँ बर्तन से सटाये उसे चूस रहे थे। मैंने एक और ग्रास लिया, थोड़ा पनीर खाया और एक घूँट शराब और पी। इसी समय बाहर कोई ऐसी वस्तु गिरी, जिसने धरती को कँपा दिया।

"चार सौ बीस नम्बर की तोप का गोला!" गाबुज़्ज़ी बोला।

"यहाँ पहाडो में चार सौ बीस नम्बर की तोपें नही हैं।" मैंने कहा।

"उनके पास तो बड़ी-बड़ी स्कोडा तोपें हैं। मैंने उनके मुँह देखे हैं।"

"तीन सौ पच्चीस नम्बर की तोपें!"

हम लोग खाते रहे। अचानक खाँसने का-सा स्वर सुनाई दिया, रेल के इंजन के चलने का-सा तीव्र शोर हुआ और फिर एक विस्फोट की आवाज आयी, जिसने धरती को फिर हिला दिया।

"यह कोई गहरी खाई नहीं है।" पास्सिनी ने कहा।

"वह खाइयों पर फेंका जाने वाला भारी गोला था।" मैंने कहा।

"जी, हां।"

मैंने अपने पनीर के टुकड़े का आखिरी हिस्सा मुँह में रखा और कुछ और शराब पी ली। फिर एक स्वर उठा। वही पहले खाँसने की-सी आवाज; सूं–सूं–सूं

का स्वर और एक चकाचौंध करने वाली चमक—जैसे किसी भाफ की भट्ठी का द्वार खोल दिया गया हो। गगनभेदी स्वर के साथ एक चमक उठी, जो धीरे-धीरे श्वेत से लाल रंग में परिणत होकर हवा के तीव्र झोकों के साथ बढ़ती गई। मैंने साँस लेने का प्रयत्न किया; किन्तु साँस जैसे बाहर आना ही नहीं चाहती थी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो मैं सशरीर उस खाई से बाहर भागा जा रहा हूँ और मेरा शरीर वायु के झोको के साथ दूर-बड़ी दूर-तक उड़ता जा रहा है।

मैं अपने-आप ही बड़ी तेजी के साथ बाहर भागा। मुझे लगा कि मैं मर चुका हूँ, यद्यपि मैं यह जानता था कि स्वयं को मृत समझना मेरी भूल है। और तब मुझे भास हुआ कि मैं तैर रहा हूँ; किन्तु आगे बढ़ने की अपेक्षा मैं पीछे की ओर लुढ़कता गया। मैंने साँस ली और अपने-आपे में आ गया।

धरती फट गई थी और मेरे सिर के सामने लकड़ी की एक टूटी-फूटी धरन पड़ी थी। मैंने सिर को एक झटका दिया। किसी के रोने की आवाज मुझे सुनायी दी। मुझे ऐसा लगा, जैसे कोई चीख रहा था। मैंने हिलने की चेष्टा की; पर हिल न सका। नदी के उस पार और उसके तट पर मशीनगनों और राइफलो से निकली हुई गोलियों की आवाज सुनायी पड़ रही थी। इन सबके बीच एक भीषण बौछार हुई और मैंने रात्रि के समय शत्रु की गतिविधि का पता लगाने के लिए छोड़े जाने वाले तारों-जैसे श्वेत प्रकाशयुक्त गोलों को ऊपर की ओर उठते देखा। गोले ऊपर जाकर फूट जाते और श्वेत किरणों के साथ छितराकर वायु में तैरने लगते। साथ ही कुछ राकेट भी ऊपर जाते हुए दिखाई दिए और बमों का विस्फोट सुनाई पड़ा। क्षणभर में सब-कुछ हो गया। इसके बाद ही मैंने अपने बिलकुल पास किसी को कराहते सुना—"मॉ री ऽऽ! ओ, मॉ मर गया!" मैने अपने शरीर को मोड़-माड़ कर अंततः अपनी टांगों को इधर-उधर खिसकाया, पीछे की ओर मुड़ा और उस व्यक्ति को स्पर्श किया! वह पास्सिनी था। जब मैंने उसे छुआ, तो वह बड़े जोर से चीखा। उसके पैर मेरी ओर थे। अंधकार और प्रकाश के बीच मैंने देखा कि उसके दोनों पैर घुटने के ऊपर से बिलकुल चूर-चूर हो गये थे। उसकी एक टॉग तो बिलकुल कट गई थी और दूसरी स्नायुओं तथा पायजामे से उलझ कर अटकी हुई थी। शेष भाग एक झटके के साथ खिचकर एक ओर छिटक गया था और ऐसा मालूम होता था, जैसे उसका अन्य अवयवो से कोई सम्बन्ध ही नहीं हो। पास्सिनी अपने हाथ को चबाते हुए कराहा—"हाय माँ! अरी माँ, री! भगवान

बचाओ! बचाओ मुझे ! यीसू मुझे मौत दे दे ! मेरी जान ले ले, मसीहा ! माँ री, मर गया ! ओ माँ, आह ! हाय ! हे पवित्र वात्सल्यमयी मरियम, मुझे उठा ले माँ ! बन्द करो। अरे, बन्द करो, बन्द कर दो यह सब ! ईसा, मरियम, बन्द करो, बन्द करो माँ ! ओह ! ओह ! आह !" उसका हृदय-द्रावक प्रलाप धीरे-धीरे क्षीण होता गया। एक घुटन के साथ वह सिसका—"माँ, मॉ री, अरी माँ !" और तब अचानक वह चुप होकर अपनी बाँह चबाने लगा। उसकी टाँग का कटा हुआ भाग खिचकर और लटक गया। "टिकठी !" मैंने अपनी दोनों हथेलियों को सटाकर मुँह के निकट लाते हुए जोर से हॉक लगाई—"अरे कोई है ? टिकठी लाओ–टिकठी !" पट्टी बाँधकर पास्सिनी की टॉगों का रक्त-स्राव बन्द करने की इच्छा से मैंने उसके और पास पहुँचने का प्रयत्न किया; किन्तु मैं हिल भी न सका। दूसरी बार कोशिश करने पर मेरे पैर कुछ खिसके। अपनी भुजाओं तथा कुहनियो के सहारे मैं थोड़ा और पीछे की ओर खिसकने में समर्थ हुआ। पास्सिनी अब बिलकुल चुप हो गया था। मैंने उसके निकट पहुँच कर अपना फौजी कोट खोला और कमीज़ के छोर को फाड़ने की कोशिश की। पर वह फट नहीं रहा था, अतः मैंने उसकी किनारी को दॉतों से फाड़ने की कोशिश की। तभी मुझे उसके पैरों की पट्टियों का ध्यान आया। मेरे पैरों में ऊनी मोजे थे; किन्तु पास्सिनी पट्टियॉ बांधता था। सभी ड्राइवर पट्टियॉ बॉधते थे। पर पास्सिनी की तो अब एक ही टॉग बच गयी थी। मैंने उसी टॉग की पट्टी खोलना प्रारम्भ किया; किन्तु तभी मुझे ऐसा लगा कि अब कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। अभागा पास्सिनी सदा के लिए अपनी यातना से मुक्ति पा चुका था। मैंने उसके हृदय के धड़कन की जॉच की, सॉसो को देखा—ना, कहीं कोई स्पंदन नहीं। वह सचमुच मर चुका था। पर दूसरे तीन एम्बुलेन्स ड्राइवर कहॉ थे ? उनका भी पता लगाना था। मैं सीधा बैठ गया। ज्योही मैं बैठा, त्योंही मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो मेरे सिर के भीतर कोई ऐसी वस्तु चक्कर काट रही है, जो किसी गुड़िया के नेत्रों की गोलियों के समान भारी है तथा जो मेरी ऑखों की पुतलियो को भीतर की ओर बड़ी बेदर्दी के साथ घसीट रही है। मेरी टॉगे गर्म और गीली लग रही थीं। मेरे जूते भी गीले हो रहे थे और उनके भीतरी भाग काफी गर्म थे। मैं जानता था कि मुझे चोट लगी है। मैंने आगे की ओर झुककर अपने घुटने पर हाथ रखा। पर घुटना तो अपने स्थान पर था ही नहीं। मेरा हाथ भीतर तक धॅसता चला गया और मैंने देखा कि घुटना पिंडली में घुस गया था। मैंने कमीज़ से अपने हाथ पोंछ लिये।

उसी समय हवा में तैरता हुआ एक प्रकाश-पुंज बहुत धीमी गति से नीचे उतरा। उसके उजाले में मैंने अपनी टाँग देखी और काफी भयभीत हो गया। "हे ईश्वर!" मैं चिल्लाया—"मुझे किसी तरह इस नरक से निकाल!" मैं जानता था कि वहाँ कम-से-कम तीन व्यक्ति और थे। एम्बुलेंस डाइवरों की संख्या चार थी। पास्सिनी मर चुका था; पर तीन तो अभी और थे। इतने में किसी ने मुझे कंधों के नीचे से पकड़कर उठाया। एक दूसरे व्यक्ति ने मेरे पैर पकड़े।

"तीन व्यक्ति यहाँ और होंगे।" मैं बोला—"एक मर चुका है।"

"मैं मॅनेरा हूँ। हम लोग टिकठी ढूँढ रहे थे; पर मिली ही नहीं। आप कैसे हैं, लेफ्टिनेण्ट साहब?"

"गोर्डिनी और गावुज्ज़ी कहाँ हैं?"

"गोर्डिनी, चिकित्सा-केन्द्रपर पट्टियाँ बँधवा रहा है। गावुज्ज़ी ने आपके पैर पकड़ रखे हैं। मेरी गर्दन को मजबूती से पकड़ लीजिए साहब! क्या आप बुरी तरह आहत हुए हैं?"

"हाँ, टाँगे बुरी तरह जख्मी हो गई हैं। गोर्डिनी की कैसी हालत है?"

"अच्छा है। हमारे ऊपर खाइयों में फेंका जाने वाला भारी गोला गिरा था।"

"बेचारा पास्सिनी मर गया।"

"जी हाँ, वह मर गया।"

तभी हमारे समीप ही एक गोला गिरा। वे दोनों जमीन पर लेट गये और उन्होंने मुझे भी नीचे पटक दिया। "मुझे बहुत अफसोस है, लेफ्टिनेण्ट साहब!" मॅनेरा बोला—"आप मेरी गर्दन थामे रहियेगा।"

"और तुमने मुझे फिर गिरा दिया तो!"

"हम डर गये थे, इसीलिए ऐसा हो गया।"

"तुम दोनों घायल नहीं हुए हो न?"

"अधिक नहीं, थोड़ी-सी चोट अवश्य लगी है।"

"क्या गोर्डिनी मोटर चला सकेगा?"

"कह नहीं सकता।"

चिकित्सा-केन्द्र तक पहुँचने से पहले उन्होंने मुझे एक बार फिर नीचे पटक दिया।

"सुअर के बच्चो!" मैं चिल्लाया।

"मुझे बड़ा अफसोस है, साहब!" मॅनेरा ने कहा।

"अब ऐसा नहीं होगा।"

चिकित्सा-केन्द्र के बाहर, अंधेरे में, हममें से बहुत-से घायल व्यक्ति जमीन

पर डाल दिए गए। वहाँ से उन्हें भीतर ले जाया जा रहा था। किसी घायल को भीतर ले जाते समय या भीतर से बाहर लाते वक्त जब परदा उठता था, तो उस क्षणिक प्रकाश में मुझे कमरे के अंदर का दृश्य दिखायी दे जाता था। मृत सैनिक एक ओर हटा कर रख दिए गए थे। डाक्टर अपनी कमीज़ की बाँहों को कन्धों तक चढ़ाये घायलों की देख-भाल में व्यस्त थे। उनके हाथ कसाइयों की भाँति रक्त से लाल पड़ गये थे। वहाँ पर्याप्त टिकठियाँ भी नहीं थीं। कुछ घायल जोर-जोर से चीख रहे थे; किन्तु बहुत-से शांत पड़े थे। उपचार-केन्द्र के द्वार पर लगी हुई डालियों के पत्ते हवा के झोंकों से हिल-डुल रहे थे। जैसे-जैसे रात घनी होती जा रही थी, ठण्ढ भी बढ़ती जा रही थी। टिकठी-वाहक लगातार आ रहे थे। वे अपनी टिकठियों को नीचे रखकर घायलों को उतारते और खाली टिकठी लेकर दूसरे घायलो को लाने के लिए लौट जाते। यही क्रम लगातार चल रहा था। ज्योंही मुझे चिकित्सा-केन्द्र पहुँचाया गया, त्योंही मॅनेरा चिकित्सा-विभाग के एक सार्जेंट को मेरे पास ले आया और उसने मेरी दोनों टाँगों पर पट्टी बांध दी। सार्जेंट ने मुझे बताया कि घाव में काफी धूल और मिट्टी भर जाने से अधिक रक्तस्राव नहीं हो पाया था। उसने यह भी कहा कि सम्भव हुआ, तो मुझे वहाँ से शीघ्र ही अन्यत्र ले जाया जाएगा। फिर वह भीतर चला गया। "गोर्डिनी मोटर नहीं चला सकता।" मॅनेरा मेरे निकट आकर बोला—"उसका कंधा बिलकुल कुचल गया है और उसका सिर भी जख्मी हो गया है। यद्यपि उसकी हालत बहुत खराब नहीं है; किन्तु कन्धा अकड़ गया है। वह वहाँ ईंट की दीवार के पास बैठा है।"

मॅनेरा और गावुज़्ज़ी घायलों के एक-एक दल को लेकर चले गये। वे बहुत बुरी तरह जख्मी नहीं हुए थे और अभी भी मजे में मोटर चला सकते थे। अंग्रेज सैनिक अपने साथ तीन एम्बुलेन्स लेकर आए थे। प्रत्येक एम्बुलेन्स के साथ दो व्यक्ति थे। गोर्डिनी उनमें से एक ड्राइवर को मेरे पास ले आया। गोर्डिनी के शरीर में जैसे खून रह ही नहीं गया था। वह बिलकुल सफेद पड़ गया था और बीमार लग रहा था।

वह अंग्रेज ड्राइवर मेरे ऊपर झुका।

"क्या आप बुरी तरह आहत हो गये हैं?" उसने पूछा। वह एक भरा-पूरा व्यक्ति था और लोहे के फ्रेमवाला चश्मा पहने था।

"हाँ, टाँगों में काफी चोट आयी है।" मैंने उत्तर दिया।

"मैं आशा करता हूँ कि वह घातक नहीं है। क्या आप सिगरेट पीना पसंद करेंगे?"

"धन्यवाद!"

"मैंने सुना है कि आप को अपने दो ड्राइवरों से भी हाथ धोना पड़ा है।"

"जी हाँ; एक तो मारा गया और दूसरा, जो आपको यहाँ ले आया है, बिलकुल बेकार हो चुका है।"

"कितने दुर्भाग्य की बात है! यदि आपकी इच्छा हो, तो आपकी गाड़ियाँ हम ले जायें।"

"यही मैं भी आपसे पूछने वाला था।"

"हम उनका पूरा ख़याल रखेंगे और उन्हें २०६ नम्बर के बंगले में पहुँचा देंगे। ठीक है न?"

"बिलकुल!"

"वह बड़ा आकर्षक स्थान है। मैंने आपको वहाँ देखा था। लोग कहते हैं कि आप अमरीकी हैं।"

"जी हाँ।"

"मैं अंग्रेज़ हूँ।"

"अच्छा!"

"जी हाँ, अंग्रेज़। आप क्या समझे—मैं इटालियन हूँ? हाँ, हमारी एक टुकड़ी के साथ कुछ इटालियन भी हैं।"

"यदि आप गाड़ियाँ ले जाएँ, तो बड़ा अच्छा हो।" मैंने कहा।

"हम उनकी पूरी देख-भाल करेंगे।" वह सीधा होते हुए बोला—"आपका यह साथी मुझे आपसे मिलाने के लिए बड़ा व्यग्र था।" उसने गोर्डिनी का कंधा थपथपाते हुए कहा। गोर्डिनी मुस्कराया। अंग्रेज़ सैनिक धारा-प्रवाह तथा विशुद्ध इटालियन भाषा में बोला—"अब हर बात की व्यवस्था हो गई है। मैं तुम्हारे लैफ्टिनेण्ट महोदय से भी मिल चुका। हम दोनों मोटरें ले जायेंगे। तुम कोई चिन्ता मत करो।" और वह बड़बड़ाया—"आपको यहाँ से शीघ्र ही छुटकारा दिलाने के लिए मुझे कुछ करना चाहिए। मैं यहाँ के अधिकारियों से मिलता हूँ। हम लोग आपको अपने साथ ही ले जाएँगे।"

वह घायलों के बीच सावधानी से क़दम रखता हुआ भीतर की ओर चला गया। मैंने कमरे के दरवाज़े पर पड़े कम्बल को ज़रा-सा हटते हुए देखा। प्रकाश की एक किरण-सी बाहर निकली और वह भीतर चला गया।

"वह आपकी पूरी देखभाल करेगा, साहब!" गोर्डिनी बोला।

"तुम्हारा क्या हाल है, फ्रेंको?"

"मैं बिलकुल ठीक हूँ, साहब!" वह मेरे पास बैठते हुए बोला। क्षण भर बाद कमरे के दरवाज़े का वह कम्बल का परदा हटा और उसमें से दो व्यक्ति टिकठी लेकर बाहर आये। उनके पीछे वही भरे-पूरे शरीरवाला अंग्रेज़ था। वह उन्हें लेकर मेरे पास आया।

"ये ही वे अमरीकी लैफ्टिनेण्ट हैं।" उसने इटालियन भाषा में कहा।

"मैं कुछ देर बाद जाना पसंद करूँगा।" मैं बोला—"यहाँ मुझसे भी अधिक घायल व्यक्ति पड़े हैं। मैं तो फिर भी अच्छा हूँ।"

"आइये, आइये।" उसने कहा—"व्यर्थ ही नेता मत बनिये।" और तब उसने इटालियन भाषा में उन व्यक्तियों को आदेश दिया—"देखना, इनके पैरों का ख़याल रखना। सावधानी से उठाना। इनके पैरों में बड़ी चोट आयी है। ये राष्ट्रपति विल्सन के धर्मपुत्र हैं।" उन्होंने मुझे उठा लिया और घावों पर पट्टियाँ बाँधनेवाले कक्ष में ले गये। भीतर मेज़ों पर आहत सैनिक लेटे थे और उनकी शल्य-क्रियाएँ चल रही थीं। नाटे कदवाले मेजर ने हम लोगों की ओर कुछ क्रुद्ध दृष्टि से देखा। उसने मुझे पहचान लिया और अपने हाथ का चिमटा मेरी ओर हिलाया।

"क्यों, ठीक तो है न?" वह बोला।

"हाँ, ठीक ही है।" मैंने कहा।

उस लम्बे-चौड़े अंग्रेज़ ने इटालियन भाषा में कहा—"मैं इन्हें भीतर लिवा लाया हूँ। ये अमरीकी राजदूत के इकलौते बेटे हैं। ये उस समय तक यहीं रहेंगे, जब तक आप पहले के आहत सैनिकों से निबट कर इनकी चिकित्सा के लिए तैयार न हो जाएँ। उसके बाद मैं इन्हें आहत सैनिकों की पहली मोटर में अपने साथ ले जाऊँगा।" मेरे ऊपर झुकते हुए उसने कहा—"मैं इनके उच्च अधिकारी से मिलकर आपके आवश्यक काग़ज़ात तैयार करवाता हूँ, जिससे सब-कुछ जल्दी निबट जाये।" वह द्वार से बाहर निकलने के लिए झुका और वहाँ से चला गया। मेजर अपना काम समाप्त कर चिमटे को अब एक बर्तन में डाल रहा था। मेरी आँखें उसी ओर लगी रहीं। अब वह पट्टियाँ बाँध रहा था। काम समाप्त हो जाने पर टिकठी ढोनेवालों ने आहत सैनिक को मेज़ पर से उठा लिया।

"मैं इन अमरीकी लैफ्टिनेन्ट महोदय को देखता हूँ।" एक कैप्टन ने कहा।

मैं मेज़ पर लिटा दिया गया। वह बड़ी सख्त और फिसलन-भरी थी। उससे एक तीखी गन्ध उठ रही थी—कई प्रकार की मिली-जुली गन्ध—रासायनिक द्रव्यों तथा रक्त की तीव्र गन्ध। उन लोगों ने मेरा पतलून उतारा और कैप्टन ने मेरे घावों का परीक्षण करते हुए उस विभाग के सहायक अधिकारी को विवरण लिखवाना आरम्भ किया—"बायीं तथा दाहिनी जाँघों पर, बायें और दाहिने घुटने पर तथा दाहिने पैर पर एक-दूसरे से सटे हुए अनेक बाहरी घाव। दाहिने घुटने और पैर पर गहरे घाव। खोपड़ी फट कर टुकड़े-टुकड़े हो गयी है।" घाव की गहराई का पता लगाने के लिए उसने सलाई डाली—"कष्ट तो नहीं हो रहा है?" वह बोला। "ओह! बड़ी तकलीफ़ है।" मैं कराहा। "सम्भवतः खोपड़ी की हड्डियाँ टूट गयी हैं। ये घाव इन्हें अपना फ़र्ज़ निभाते हुए लगे हैं। ऐसा विवरण आपके हक में सहायक होगा। सैन्य-न्यायालय अब आपके इन घावों को जान-बूझ कर पैदा किये हुए कह कर आपको किसी प्रकार का दंड नहीं दे सकता।" उसने मुझसे कहा।

"क्या आप ब्राण्डी पीना पसद करेंगे? हॉ, आपको इतने सारे घाव कैसे लगे? कैसे हुआ यह सब आखिर? आप क्या कर रहे थे? आत्महत्या करने की कोशिश तो नहीं कर रहे थे?" अपने साथी की ओर मुड़ कर वह बोला—"जरा बदन की ऐंठन दूर करनेवाला द्रव पदार्थ तो ले आइये। हाँ, इनके दोनों पैरों पर क्रास का चिह्न लगा दीजिए। बस ठीक है। धन्यवाद! अब इसे थोड़ा साफ़ करके धो डालता हूँ और फिर पट्टी बाँध देता हूँ। आपका रक्त बहुत जल्दी जमकर सूखते लगता है। सुन्दर-बहुत सुन्दर।" उसने मुझसे कहा।

सहायक अधिकारी ने विवरणपत्रों से सिर उठाते हुए मुझसे पूछा—"आपको किस चीज़ से ये घाव लगे?" कैप्टन बोला—"कौन-सी चीज़ थी वह, जिसने आपको जख्मी किया?"

ऑखें बंद किये-किये मैंने उत्तर दिया—"खाइयों पर बरसाया जानेवाला एक बड़ा-सा बम था वह।"

कैप्टन अपना काम कर रहा था। मुझे असह्य तकलीफ़ हो रही थी। अपना काम करते हुए उसने मुझसे पूछा—"क्या आप ऐसा निश्चित रूप से कह सकते हैं?"

शान्तिपूर्वक लेटे रहने का प्रयत्न करते हुए तथा माँस काटे जाते समय अपने पेट में एक कंपकंपी-सी अनुभव करते हुए मैंने उत्तर दिया—"मेरा तो ऐसा ही अनुमान है।"

कैप्टन डाक्टर जैसे किसी शोध-कार्य में व्यस्त था। वह मेरे ज़ख्मों की जाँच करता हुआ बोला—"हाँ, शुत्रद्वारा खाइयों पर फेंके गये भारी गोलों के टुकड़े। यदि आपको आपत्ति न हो, तो मैं सलाई भीतर डालकर पता लगाऊँ, यद्यपि यह आवश्यक नहीं हैं। मैं इन सब बातों को बड़े सुन्दर ढंग से रंगकर प्रस्तुत कर दूँगा—क्या यह चुभता है? ठीक है—पर बाद में आपको जो पीड़ा होगी, उसके सामने तो यह चुभन कुछ भी नहीं है। पीड़ा तो अभी वस्तुतः आरम्भ ही नहीं हुई है—अरे, इनके लिए एक गिलास ब्राण्डी लाओ—वह इनका दर्द कुछ कम कर देगी। यदि आपके घावों में खराबी पैदा न हुई, तो आपके लिए चिंतित होने का कोई कारण नहीं है और आजकल तो बहुत कम घाव भयंकर रूप धारण करते हैं। आपके सिर की क्या हालत है?"

"अच्छी नहीं, बड़ी पीड़ा हो रही है—भारी-भारी-सा लग रहा है।" मैंने उत्तर दिया।

"तब तो अधिक मात्रा में ब्राण्डी न पीना ही आपके लिए अच्छा है। अगर आपकी हड्डी टूटी है, तो फिर आपके शरीर को गरम बनाए रखना उतना जरूरी नहीं है। यहाँ कैसा लग रहा है?"

मैं पसीने-पसीने हो गया।

"ओह!" मेरे मुँह से निकल पड़ा।

"मेरा अनुमान है, आपकी हड्डी सचमुच टूट गई है। मैं आपकी खोपड़ी पर पट्टी बाँध देता हूँ। अपने को बहादुर बताने के लिए कहीं अपने सिर को इधर-उधर झटकने का दुस्साहस मत कर बैठियेगा।" उसने पट्टी बाँध दी। ऐसा करते समय उसके हाथ बड़ी कुशलता से चल रहे थे और वह अपने अभ्यस्त हाथों से पट्टी बड़ी मज़बूती और इतमीनान से बाँध रहा था। "अच्छा, भाग्य आपका साथ दे। फ्रांस अमर रहे!" उसने फ्रेंच भाषा में कहा।

"ये अमरीकी हैं।" एक दूसरा कैप्टन बोला।

"मेरे खयाल से आपने इन्हें फ्रांसीसी बताया था। ये फ्रेंच बोलते भी है।" कैप्टन बोला—"मैं इन्हें पहले से जानता हूँ और मैं सदा यही समझता रहा कि ये फ्रेंच हैं।"

उसने कॉग्नेक (शराब) का आधा गिलास खाली कर दिया। "जरा कोई तगड़ी चीज़ लाओ, भाई! वह, बदन की ऐंठन दूर करने वाला द्रव पदार्थ थोड़ा और मँगवा लो।" उसने अपने साथी से कहा। फिर अपना हाथ हिलाते हुए उसने मुझसे विदा ली। मुझे वहाँ से हटा दिया गया। बाहर ले जाए जाते समय मैंने

अपने मुख पर द्वार पर लटकते हुए कम्बल के एक छोर का स्पर्श अनुभव किया। दरवाज़े से बाहर आते ही सहायक सार्जेंट उस स्थान पर आकर, जहाँ मुझे लिटाया गया था, मेरे ऊपर झुक गया। "आपका नाम?" उसने नम्रतापूर्वक पूछा—"पिता का नाम? उपनाम? आपका ओहदा? जन्मस्थान? वर्ग? सेना का नाम?..." और अन्य बहुत-सी बातें। "आपको जो चोट लगी है, उसके लिए मुझे बहुत दुःख है, लैफ्टिनेण्ट! मुझे विश्वास है कि अब आपको थोड़ा आराम होगा। मैं शीघ्र ही आपको अंग्रेज़ी एम्बुलेन्स के साथ यहाँ से भेज रहा हूँ।"

"मैं बिलकुल ठीक हूँ," मैंने कहा—"आपको बहुत-बहुत धन्यवाद!" जिस पीड़ा के विषय में मेजर ने संकेत किया था, वह अब शुरू हो गई थी और जो-कुछ हो रहा था, वह अब बिलकुल नीरस और प्रसंगहीन लग रहा था। कुछ ही देर बाद अंग्रेज़ी एम्बुलेन्स आ पहुँची। मुझे टिकठी पर लिटाकर मोटर के भीतर रख दिया गया। मेरी टिकठी की बगल में एक दूसरी टिकठी रखी थी, जिस पर कोई और लेटा हुआ था। पट्टियों से बाहर झाँकती हुई उसकी मोम-जैसी नाक मुझे दिखाई दे रही थी। वह बड़े ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था। वहाँ और भी टिकठियाँ रखी थीं, जिन्हें उठाकर ऊपर के झूलों में सरका दिया गया था। ऊँचे कद का वही परिचित अंग्रेज़ ड्राइवर चक्कर लगाते हुए आया और उसने भीतर झाँका। "मैं मोटर पूरी सावधानी से ले जाऊँगा।" उसने मुझे आश्वासन दिया—"मुझे आशा है कि आपको पूरा-पूरा आराम मिलेगा।" मुझे एंजिन के चलने की आवाज़ सुनायी दी, फिर मुझे ऐसा लगा कि वह अपने आगे की सीट पर बैठ चुका है। उसने ब्रेक ढीले किये, 'क्लच' दबाया और हम चल पड़े। मैं चुपचाप लेटा रहा। मेरा दर्द बढ़ता जा रहा था।

एम्बुलेन्स चढ़ाई चढ़ने लगी। अन्य सवारियों के बीच वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। कभी-कभी वह रुक जाती, कभी किसी मोड़ पर पीछे हो जाती। अन्त में, हम काफ़ी तेज़ी से चढ़ाई चढ़ने लगे। तभी मुझे कोई वस्तु टपकती-सी प्रतीत हुई। पहले वह धीरे-धीरे गिर रही थी, फिर नियमित रूप से गिरने लगी और अन्त में एक धारा के रूप में टप-टप की आवाज़ के साथ गिरने लगी। मैंने ड्राइवर को पुकारा। उसने मोटर खड़ी कर दी और अपनी सीट के पीछे की ओर बने छिद्र से भीतर की ओर झाँका।

"क्या बात है?"

"मेरे ऊपरवाली टिकठी में लेटे हुए व्यक्ति का रक्त-स्राव हो रहा है।"

"हम, चढ़ाई की ऊपरी सतह से अब अधिक दूर नहीं हैं। मैं अकेला टिकठी बाहर नहीं निकाल सकूँगा।" उसने मोटर चला दी। रक्त की धार बहती रही। अंधेरे में मैं यह भी नहीं देख सका कि वह मेरे सिर के ठीक ऊपर लगे हुए तिरपाल से ही गिर रही थी। मैंने एक ओर सरकने का प्रयत्न किया, जिससे वह मेरे ऊपर न गिरे। ऊपर से गिरने वाला रक्त जहाँ-जहाँ मेरे क़मीज़ के भीतर प्रवेश कर चुका था, वहाँ-वहाँ मुझे गर्म और चिपचिपा लग रहा था। रक्त से भीग जाने के कारण मेरा शरीर ठंडा हो गया। टाँगों के ज़ख़्मों के कारण मैं स्वयं को भी अस्वस्थ पा रहा था। पर थोड़ी देर बाद टिकठी से गिरने वाली रक्त-धार धीमी पड़ गई। धीरे-धीरे रक्त का वह प्रवाह पुनः बूंदों की टपटपाहट में बदल गया। टिकठी पर लेटा हुआ व्यक्ति ज्यों-ज्यों अधिक आराम से लेटने की चेष्टा करता, त्यों-त्यों मुझे तिरपाल के हिलने-डुलने की आवाज़ और उसकी खड़खड़ाट सुनाई देती।

"अब कैसा है वह?" अंग्रेज़ ड्राइवर ने पीछे की ओर मुड़कर पूछा—"हम चोटी के बिलकुल क़रीब पहुँच चुके हैं।"

"मेरा अनुमान है कि वह मर चुका है।" मैंने ज़वाब दिया।

सूर्यास्त के पश्चात्, जिस प्रकार हिमखण्ड से जल-बूंदें टपकती हैं, उसी प्रकार अब अत्यन्त धीमी गति से रक्त की बूंदें गिर रही थीं। मोटर चढ़ाई पर शिखर की ओर बढ़ती जा रही थी और उस गहन निशा में मोटर के भीतर मै काफ़ी ठण्ढ महसूस कर रहा था। शिखर के पड़ाव पर पहुँच कर लोगो ने वह टिकठी बाहर निकाल ली और उसके स्थान पर दूसरी रख दी। फिर हम वहाँ से आगे चल दिये।

.१०.

युद्धक्षेत्रीय अस्पताल के वार्ड में मुझे सूचना दी गई कि तीसरे पहर मुझसे कोई मिलने आ रहा है। उस दिन बड़ी गर्मी थी और कमरे में बहुत-सी मक्खियाँ चक्कर काट रही थीं। मेरे अर्दली ने एक काग़ज़ की पट्टियाँ काटकर उन्हें एक लकड़ी से बाँध दिया और वह उनसे मक्खियाँ भगाने लगा। मैं लेटा-लेटा उनका छत पर बैठना देखता रहा। जब अर्दली मक्खियाँ उड़ाते-उड़ाते सो गया, तो वे फिर नीचे उतर आईं। मैं उन्हें उड़ाता रहा और अन्त में, हारकर उनसे बचने के लिए अपने चेहरे को दोनों हाथों से ढँक कर सो गया। बड़ी

गर्मी पड़ रही थी। जब मैं सोकर उठा, तो मेरी टाँगो में खुजलाहट पैदा हो गयी थी। मैंने अर्दली को जगाया। उसने उठकर मेरी पट्टियों पर खनिज-जल ढालना शुरू किया और स्वभावतः ही मेरा बिस्तर गीला और ठण्ढा हो गया।

वार्ड में, हम लोगों में से जो जागते रहते थे, वे आपस में खूब ज़ोर-ज़ोर से बातें करते थे। हाँ, तीसरे पहर अवश्य ही शांति रहती। प्रातःकाल एक डाक्टर और तीन परिचारक (मेल नर्स) वार्ड का चक्कर लगाते हुए एक-एक कर प्रत्येक रोगी के पास आते, उसे बिस्तर से उठाते और उपचार-कक्ष में ले जाते। उधर हमारे घावों की पट्टियाँ बदली जातीं और इधर बिस्तर झाड़कर फिर से लगा दिये जाते। पट्टियाँ बदलवाने के लिए जाना वस्तुतः बड़ा कष्टदायक था। कई दिनों तक तो मुझे यह भी मालूम न हुआ कि, आहतों को हटाये बिना भी उनके बिस्तर झाड़े और बदले जा सकते थे।

मेरे अर्दली ने जल ढालना बंद कर दिया। मेरा बिछौना ठण्ढा और बड़ा सुखद प्रतीत हुआ। मैंने अर्दली से पैर के तलवे का वह स्थान खुजलाने के लिए कहा, जहाँ खुजलाहट हो रही थी। इतने में ही एक डाक्टर रिनाल्डी को लेकर मेरे पास आया। रिनाल्डी लगभग दौड़कर मेरे पास आया; बिस्तर पर झुका और उसने मेरा चुम्बन ले लिया। मैंने देखा कि वह दस्ताने पहने था।

"कैसी तबीयत है दोस्त ? कैसा लग रहा है ? देखो, मैं तुम्हारे लिए यह लेता आया हूँ।" उसके हाथ में कॉग्नेक (शराब) की बोतल थी। अर्दली उसके लिए एक कुर्सी उठा लाया और वह बैठ गया।

"तुम्हारे लिए एक शुभ समाचार भी लाया हूँ मैं। तुम्हें पुरस्कार मिलेगा। तुम्हें रजत-पदक दिलाने के प्रयत्न हो रहे हैं; किन्तु कदाचित् ताम्र-पदक ही मिले।"

"लेकिन क्यों ?"

"तुम्हें गहरे घाव जो लगे हैं। लोगों का कहना है, यदि तुम यह प्रमाणित कर सको कि तुमने कोई वीरतापूर्ण कार्य किया है, तो तुम्हें रजत-पदक भी मिल सकता है। अन्यथा ताम्र-पदक ही मिलेगा। मुझे सचसच बताओ, क्या हुआ था ? ये घाव कैसे लगे तुम्हें ? क्या तुमने कोई साहसपूर्ण कार्य किया था ?"

"नहीं—" मैंने उत्तर दिया— "जब हम पनीर का आनंद ले रहे थे, तब हमारे ऊपर बम आ गिरा।"

"मज़ाक छोड़ो। तुमने उसके पहले या बाद में कोई-न-कोई बहादुरी का काम अवश्य किया होगा। ज़रा अच्छी तरह याद करो।"

"मैंने कुछ भी नहीं किया।"

"क्या तुम किसी आहत व्यक्ति को अपनी पीठ पर लादकर नहीं ले गये? गोर्डिनी का कहना है कि तुमने बहुत–से व्यक्तियों को अपनी पीठ पर लाद-लाद कर पहुँचाया। किन्तु तुम्हारे पहले पड़ाव का मेजर डाक्टर कहता है कि यह सर्वथा असम्भव है और पुरस्कार के प्रस्ताव-पत्र पर उसके हस्ताक्षर ज़रूरी हैं।"

"मैंने सचमुच ही किसीको अपनी पीठ पर लादकर नही पहुंचाया। मैं तो हिल भी नहीं सकता था।"

"तो उससे क्या होता है।" रिनाल्डी बोला।

उसने अपने दस्ताने उतार दिये।

"मेरे ख़याल से हम लोग तुम्हें रजत-पदक दिलवा सकते हैं। क्या तुमने अन्य सैनिकों का उपचार होने से पूर्व अपना उपचार कराना अस्वीकार नहीं कर दिया था?"

"हॉ, पर अधिक दृढ़ता के साथ नहीं!"

"कोई बात नहीं। ज़रा देखो तो, तुम कितनी बुरी तरह घायल हुए हो। हमेशा सबसे अगली पंक्ति में जाने की इच्छा प्रकट करके तुमने अपने जिस वीरतापूर्ण चरित्र का परिचय दिया है, उस पर भी ग़ौर करो। आक्रमण भी तो सफल रहा।"

"क्या हमारी सेना ने बिना किसी विशेष कठिनाई के नदी पार कर ली?"

"बड़ी सफलतापूर्वक। शत्रु के क़रीब हज़ार सैनिक बन्दी बना लिये गये हैं। फ़ौजी गजट में इसका विस्तृत विवरण दिया गया है। तुमने नहीं देखा?"

"नहीं तो।"

"मैं तुम्हें वह गजट लाकर दिखाऊँगा। हमारा यह अप्रत्याशित और भीषण आक्रमण पूर्णतः सफल रहा।"

"और क्या हालचाल है।"

"सब ठीक है। हम बड़े मज़े में हैं। प्रत्येक व्यक्ति को तुम पर गर्व है। पर यह सब कैसे हुआ, मुझे विस्तार से बताओ । मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हें रजत पदक अवश्य मिलेगा; चलो, शुरू करो—पूरी घटना सुनाओ, मुझे एक-एक बात बताओ।" वह कुछ रुका और सोचने लगा—"हो सकता है, तुम्हें अंग्रेज़ी-पदक भी मिल जाये। वहॉ कोई अंग्रेज़ भी तो था। मैं जाकर उससे मिलूँगा और पूछूँगा कि क्या वह तुम्हारे लिये सिफ़ारिश कर सकता है? उसे इस विषय में कुछ-न-कुछ अवश्य करना चाहिए। क्या तुम्हें बहुत तकलीफ़ होती है?

लो, कुछ शराब पी लो। अर्दली, डाट खोलने के लिए एक पेंच तो ले आओ। काश! तुम देखते कि शल्यक्रिया में मैंने क़रीब दस फुट छोटी आंत निकलवाने में कैसी कुशलता दिखायी थी और अब मैं अपने काम में पहले की अपेक्षा कहीं योग्य हो गया हूँ। उसका पूरा विवरण मैंने "लैन्सेट" (एक पत्र) के लिए लिख छोड़ा है। तुम मेरे लिए उसका अनुवाद कर देना और मैं उसे "लैन्सेट" में भेज दूँगा। मैं दिनोदिन अपने काम में अधिक होशियार होता जा रहा हूँ। कहो दोस्त, कैसा लग रहा है तुम्हें? वह पेंच कहाँ गया, डाट खोलने का? तुम इतने बहादुर और शान्त प्रकृति के हो कि मैं यह भूल जाता हूँ कि, तुम बीमार हो।" वह अपने दस्तानो को बिस्तर की कोर पर झटकारते हुए बोला।

"यह रहा डाट खोलने का पेंच, लैफ्टिनेण्ट साहब!" अर्दली ने कहा।

"बोतल खोलो और एक गिलास ले आओ।" उसने अर्दली से कहा—"लो, इसे पी जाओ दोस्त! तुम्हारे सिर की हालत कैसी है? मैंने तुम्हारे काग़ज़ात देखे थे। तुम्हारी कोई हड्डी नहीं टूटी है। पहले पड़ाव का वह मेजर तो बिलकुल कसाई है—सूअर काटने वाला! उसे क्या मालूम? मैं तुम्हारी चिकित्सा करूंगा और तुम्हें कोई कष्ट नहीं होने दूँगा। मैं कभी किसी को तकलीफ़ नहीं पहुँचाता। बिना कोई तकलीफ़ पहुँचाये उपचार करना ही मैं अब तक सीखता रहता हूँ। प्रति दिन मैं अपना काम निर्विघ्नतापूर्वक और अधिकाधिक अच्छे ढंग से करता जा रहा हूँ। इतना अधिक बोलने के लिए माफ़ करना, मेरे दोस्त! तुम्हें इस तरह घायल देखकर मेरे दुःख की सीमा नहीं है। लो, इसे पी लो। बड़ी अच्छी है यह। पन्द्रह लिरे खर्च हुए हैं इसके लिए। अच्छी होनी ही चाहिए। पॉच तारा छाप शराब है यह। यहॉ से जाने पर मै उस अंग्रेज़ से मिलूँगा। वह तुम्हें अंग्रेज़ी-पदक दिलायेगा।"

"अंग्रेज़ी-पदक इतनी आसानी से नहीं मिलते।"

"तुम बड़े भोले हो। मैं मध्यस्थ अधिकारी को भेजूँगा। वह इन अंग्रेज़ों से अच्छी तरह निबट सकता है।"

"क्या तुम मिस बर्कले से मिले थे?"

"मैं उसे यहॉ ले आऊँगा। मैं अभी जाकर उसे ले आता हूँ।"

"नहीं, तुम मत जाओ।" मैं बोला—"मुझे गोरीज़िया के विषय में बतलाओ। लड़कियॉ कैसी हैं?"

"वहाँ अब कोई लड़की ही नहीं है। गत दो सप्ताह से अधिकारियों ने

उन्हें बदला तक नही है। अब मैं वहाँ नहीं जाता। बड़ा लज्जाजनक-सा प्रतीत होता है। जो वहाँ हैं, वे अब लड़कियाँ थोड़े ही रहीं, वे तो युद्ध की, हमारी पुरानी संगिनी बन चुकी हैं।"

"तो तुम वहाँ बिलकुल नहीं जाते?"

"जाता हूँ, केवल यह देखने के लिए कि वहाँ कोई नई चीज़ तो नहीं आई। थोड़ी देर वहाँ ठहरता हूँ। वे सब तुम्हारे विषय में पूछती रहती हैं। इतने अधिक दिनों तक रहकर वे हम सैनिकों से मैत्री कर लें, यह कितनी अपमानजनक बात है भला!"

"हो सकता है कि लड़कियाँ अब मोर्चे पर जाना पसन्द ही नहीं करती हों।"

"क्यों नहीं! वे अवश्य पसन्द करती हैं। सेना में लड़कियों की कमी भी नहीं है। यह तो अधिकारियों की बदइंतज़ामी का फल है। वे उन्हें पिछली खाइयों में छिपे हुए सैनिकों के मनबहलाव के लिए रखे हुए हैं।"

"बेचारा रिनाल्डी!" मैं बोला—"युद्ध में बिलकुल अकेला, कोई नई लड़की भी पास नहीं, हे परमात्मा!"

उसने स्वयं ही कॉग्नेक का दूसरा गिलास भरा।

"मैं नहीं समझता कि यह तुम्हें किसी प्रकार की तकलीफ़ देगी। इसे पी जाओ, दोस्त!"

मैंने कॉग्नेक पी ली और गले से नीचे तक उसकी जलन महसूस की। रिनाल्डी ने दूसरी बार गिलास भरा। अब वह काफ़ी शान्त हो चुका था। गिलास ऊपर उठाते हुए उसने कहा—"तुम्हारे इन घावों की स्मृति में, जो तुम्हारे साहसिक कारनामों के प्रतीक हैं। और तुम्हें मिलने वाले रजत-पदक के सम्मान में। अच्छा, एक बात बतलाओ, दोस्त! इस गरम मौसम में दिनरात इस तरह यहाँ पड़े पड़े क्या तुम कभी उत्तेजित नहीं हो उठते?"

"कभी-कभी।"

"मैं तो इस प्रकार लेटे रहने की कभी कल्पना भी नहीं कर सकता। मैं तो उस दशा में पागल हो जाऊँगा।"

"तुम तो पागल हो ही।"

"काश! तुम मेरे साथ वापस चल सकते। अब वहाँ साहसिक कार्य कर के बड़ी रात गये लौटने वाला कोई नहीं हैं। हँसी-मज़ाक करनेवाला भी कोई नहीं—न उधार पैसे देने वाला। न कोई सजातीय बन्धु, न कोई कमरे में साथ रहनेवाला ही! तुम ने स्वयं को इस तरह आहत क्यों कर लिया?"

"तुम पादरी से तो हँसी-मज़ाक कर सकते हो।"

"ओह, वह पादरी! मैं उसका मज़ाक बनानेवालों में नहीं हूँ। उसकी हँसी कैप्टन उड़ाया करता है। मैं तो उसे पसन्द करता हूँ। यदि पादरी हो, तो उसी के समान! वह तुम्हें देखने आने वाला है। मिलने से पहले बड़ी-बड़ी तैयारियाँ करने का उसका कुछ स्वभाव है।"

"मैं भी उसे पसन्द करता हूँ।"

"यह तो मैं पहले से ही जानता था। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि तुम दोनों एक ही धातु के बने हो।"

"नहीं, तुम ऐसा नहीं कह सकते!"

"पर, मैं सचमुच कभी-कभी ऐसा सोचता हूँ। एन्कोना ब्रिगेड के प्रथम सैन्यदल के व्यक्तियो के समान ही तुम दोनों में भी समानता है।"

"जहन्नुम में जाओ तुम!"

वह खड़ा हो गया और अपने दस्ताने पहनने लगा।

"मुझे तुम्हें चिढ़ाना बड़ा अच्छा लगता है, मेरे दोस्त! तुम्हारा वह पादरी, तुम्हारी वह अंग्रेज़ लड़की और तुम। तुम तो सचमुच भीतर से बिलकुल मेरी तरह हो।"

"नहीं, मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ।"

"सच, हम दोनों एक-से हैं। तुम बिलकुल इटालियन हो—हू-ब-हू इटालियनो की तरह। ऊपर से आग और धुआँ और हृदय में कुछ नहीं—बिलकुल साफ़-स्वच्छ। तुम अमरीकी हो, यह तो तुम्हारा दिखावा-मात्र है। असल में, हम दोनो एक-से हैं—बिलकुल भाई और एक-दूसरे से स्नेह भी करते हैं।"

"मेरे वहाँ नहीं रहने पर दूसरों के साथ मैत्री बनाये रहना!" मैंने कहा।

"मैं मिस बर्कले को भेज देता हूँ। तुम मुझसे दूर और उसके निकट रहना अधिक पसद करते हो। उसके साथ तुम इस समय की अपेक्षा अधिक निर्दोष और आकर्षक भी लगते हो।"

"ओह, भाड़ में जाओ तुम!"

"मैं भेज दूँगा उसे। तुम्हारी उस सुन्दर, शान्तिमयी देवी को—उस अंग्रेज़ देवी को। हे परमात्मा, उस-जैसी औरत का, सिवा उसकी पूजा करने के, आदमी और करेगा भी क्या? एक अंग्रेज़ स्त्री और भला किस काम के योग्य होती है?"

"तुम एक मूर्ख इटालियन हो!"

"क्या कहा तुमने?"

"मूर्ख इटालियन!"

"और तुम महामूर्ख हो—एक अमरीकी गधे हो!"

"तुम मूर्ख हो—जड़—निर्बुद्धि!" मैंने देखा कि वह शब्द उसके हृदय को लग गया है; फिर भी मैं बोलता रहा—"अज्ञानी, अनुभवहीन और अनुभव-हीनता के कारण जड़बुद्धि।"

"क्या सचमुच? सुनो; मैं तुम्हारी इन सुन्दर स्त्रियों के विषय में—तुम्हारी देवियों के विषय में तुम्हें कुछ बताता हूँ। एक सामान्य स्त्री से और एक ऐसी लड़की से, जो हमेशा अच्छा व्यवहार करती आई है, सम्बन्ध स्थापित करने के बीच केवल एक ही अन्तर है। और वह अन्तर यह है कि ऐसी लड़की से सम्बन्ध रखना सदा दुखदाई होता है। बस, मैं इतना ही जानता हूँ।" उसने अपने दस्तानों को बिस्तर पर झटकारा—"और तुम कभी यह जान भी नहीं पाते कि वह लड़की उस सम्बन्ध को सचमुच पसंद करेगी भी या नहीं!"

"नाराज़ मत होओ।"

"मैं नाराज़ नहीं हूँ। मैं तो तुम्हें केवल बता रहा हूँ दोस्त, और वह भी तुम्हारी भलाई के लिए—तुम्हें तकलीफ़ों से बचाने के लिए।"

"क्या दोनों में, बस, यही एक अंतर है?"

"हाँ, किन्तु तुम्हारे जैसे लाखों मूर्ख इसे नहीं जानते।"

"तो मुझे बताकर तुमने बड़ी दया दिखाई।"

"हम आपस में लड़ेंगे नहीं, दोस्त! मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ।"

"किन्तु मूर्ख मत बनो।"

"नहीं, मैं तुम्हारे समान ही बुद्धिमान बनूँगा।"

"मुझ पर क्रोध मत करो, दोस्त! हँसो। लो, शराब पियो।"

"मुझे अब चल देना चाहिए। सच!"

"तुम, बड़े भले लड़के हो!"

"देखा तुमने। भीतर से हम दोनों एक-से हैं। हम युद्ध-बन्धु हैं—आपस में भाई-भाई। लो, मेरा चुम्बन लो। अच्छा, विदा।"

"तुम बिलकुल मोम-दिल हो।"

"नहीं, मेरा दिल कुछ अधिक प्यार-भरा है।"

मैंने अनुभव किया कि उसकी साँस मेरे मुख का स्पर्श कर रही है। "विदा,

मित्र! मैं तुम्हें देखने शीघ्र ही फिर आऊँगा।" उसने सॉस छोड़ते हुए कहा—"यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है, तो मैं तुम्हारा चुम्बन नहीं लूँगा। तुम्हारी उस अंग्रेज़ बाला को ही भेज दूँगा। अच्छा, विदा दोस्त! कॉग्नेक बिस्तर के नीचे रखी है। बस, जल्दी से अच्छे हो जाओ!"

और वह चला गया।

.११.

पादरी गोधूलि-वेला में आया। उसके आने से पहले मेरे लिए सूप लाया जा चुका था। मैं उसे पी चुका था और कटोरे वहाँ से हटाये जा चुके थे। मैं उस कमरे में लगी बिस्तरों की पंक्तियों तथा सान्ध्य समीर का स्पर्श पा धीमी गति से हिलने वाले वृक्षों की फुनगियों को देखते हुए अपने पलंग पर लेटा था। खिड़की से वायु के झोंके आ रहे थे। सॉझ होने के साथ ही वातावरण में भी नमी व्याप्त हो गयी थी। मक्खियाँ अब छत पर तथा बिजली के लट्टुओं पर जमकर बैठ चुकीं थीं। रात में जब कोई भीतर लाया जाता अथवा कोई और काम होता, तभी बत्तियाँ जलाई जातीं। गोधूलि के बाद अंधकार का आना और उसका फिर वहीं बने रहना मुझे स्फूर्तिजनक बना देता और मैं स्वयं को बहुत युवा अनुभव करने लगता। अंधेरा बने रहने का अर्थ था जल्दी से रात का खाना खाकर नींद की गोद में स्वयं को सौंप देना—बेफ़िक्र और निश्चिंत! तभी अर्दली बिस्तरों के बीच में आकर खड़ा हो गया। उसके साथ कोई और व्यक्ति भी था। वह पादरी था। छोटा-सा, सॉवले मुखवाला, घबराया हुआ सा पादरी मेरे सामने आया।

"कैसी तबीयत है?" उसने पूछा और मेरे बिस्तर के निकट फ़र्श पर कई छोटे-छोटे पैकेट रख दिये।

"ठीक हूँ, धर्मपिता!"

रिनाल्डी के लिए जो कुर्सी लाई गई थी, उसी पर वह बैठ गया और बड़ी आकुलता के साथ खिड़की से बाहर देखने लगा। और तभी ग़ौर से देखने पर मुझे लगा कि वह बहुत थका-थका नज़र आ रहा था।

"मैं घड़ी-भर ही ठहर सकता हूँ।" वह बोला—"काफ़ी देर हो गई है।"

"नहीं, ऐसी तो कोई देर नहीं हुई है। भोजनालय के क्या हाल हैं?"

वह मुस्कराया—"मैं अभी भी वहाँ हँसी का कारण बना हुआ हूँ।" उसके स्वर में भी थकान स्पष्ट थी।

"ईश्वर को धन्यवाद कि वहाँ सब लोग अच्छी तरह से हैं।"

"मुझे बड़ी खुशी है कि तुम अच्छी तरह हो" उसने कहा—"निश्चय ही तुम्हें यहाँ कोई विशेष कष्ट नहीं होगा।" वह बहुत थका हुआ लग रहा था। मैं उसे इस प्रकार थका हुआ देखने का आदी नहीं था।

"नहीं, ऐसी कोई तकलीफ़ नहीं है।"

"वहाँ भोजनालय में मुझे तुम्हारी अनुपस्थिति बहुत खलती है।"

"काश, मैं वहाँ होता! मुझे आपके साथ बातचीत करने में हमेशा ही बड़ा आनन्द आता है।"

"मैं तुम्हारे लिए कुछ छोटी-मोटी चीज़ें लाया हूँ।" वह बोला। उसने नीचे रखे पैकेट उठाये—"यह मच्छरदानी है। यह 'वरमाउथ' की (शराब) बोतल है। तुम्हें 'वरमाउथ' अच्छी लगती है न? ये अंग्रेज़ी पत्र-पत्रिकाएँ हैं।"

"कृपया इन्हें खोलिए।"

वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उन्हें खोल डाला। मैंने मच्छरदानी अपने हाथों में ले ली। वह मेरे देखने के लिए शराब की बोतल अपने हाथ में उठाये रहा और देख लेने पर उसे उसने बिस्तर के बगल में, फ़र्श पर रख दिया। मैंने कुछ अंग्रेज़ी पत्र अपने हाथ में लिये। उन्हें खिड़की से आते हुए धुँधले प्रकाश की ओर घुमाकर मैंने उनके शीर्षक पढ़े। पत्र का नाम था—'विश्व-समाचार'।

"दूसरे पत्र सचित्र हैं।" उसने कहा।

"इन्हें पढ़कर मुझे सचमुच बड़ी प्रसन्नता होगी। आपने इन्हें कहाँ से प्राप्त किया?"

"ये सब मैंने मेस्त्रे से मँगाए हैं। और पत्र भी आने वाले हैं।"

"आपने यहाँ आकर बड़ी कृपा की, धर्मपिता! क्या आप एक गिलास 'वरमाउथ' पीयेंगे?"

"धन्यवाद! तुम रख लो उसे। वह तुम्हारे लिए ही है।"

"नहीं, एक गिलास तो लीजिए।"

"अच्छी बात है। तब मैं तुम्हारे लिए कुछ और बोतलें भेज दूँगा।"

अर्दली गिलास ले आया। उसने बोतल खोली। किन्तु ऐसा करते समय उसका कॉर्क बीच से टूट गया और उसे भीतर ठेल देना पड़ा। मैंने देखा कि पादरी को यह कुछ बुरा लगा; किन्तु उसने कहा—"चलो, ठीक है। कोई बात नहीं।"

"आपके स्वास्थ्य के लिए, धर्मपिता!"

"तुम्हारे स्वास्थ्य-सुधार के लिए।"

इसके बाद वह हाथ में गिलास लिए रहा। हम दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। पहले कभी-कभी हम आपस में बातें किया करते थे। हम दोनों अच्छे मित्र भी थे; पर आज न जाने क्यों, बातें करना कठिन प्रतीत हो रहा था।

"क्या बात है, धर्मपिता! आप बहुत थके हुए लग रहे हैं।"

"मैं थक गया हूँ; परन्तु मुझे इस का कोई अधिकार नहीं है।"

"गरमी भी तो काफ़ी है।"

"नहीं, अभी तो वसंत ही है। असल में, मैं बड़ी खिन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।"

"आप युद्ध से तंग आ गए हैं।"

"नहीं; किन्तु मैं युद्ध से घृणा अवश्य करता हूँ।"

"मैं भी इसे पसंद नहीं करता।" मैंने कहा। वह अपना सिर हिलाते हुए खिड़की के बाहर देखने लगा।

"तुम बुरा तो नहीं मान गये! वस्तुतः तुम मेरा मतलब नहीं समझ पाये। पर तुम्हें मुझे क्षमा कर देना चाहिए। मैं जानता हूँ कि तुम घायल हो।"

"वह तो दुर्घटना-मात्र है।"

"फिर भी, घायल होने पर भी, तुम नहीं समझ पा रहे हो। यह मैं कह सकता हूँ। मैं स्वयं भी निश्चित रूप से समझ रहा हूँ, ऐसा नहीं कह सकता; किन्तु मेरे मन में कुछ खटकता अवश्य है।"

"जब मैं आहत हुआ था, तब हम लोग युद्ध के विषय में ही बातें कर रहे थे। पास्तिनी इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कर रहा था।"

पादरी ने गिलास नीचे रख दिया। वह कुछ और सोच रहा था।

"मैं उन्हें (सैनिकों को) पहचानता हूँ; क्योंकि मैं स्वयं उन्हीं जैसा हूँ।" वह बोला।

"फिर भी आप उनसे अलग हैं।"

"किन्तु वास्तव में, मैं उन्हीं जैसा हूँ।"

"अफ़सर लोग इन बातों को नहीं समझते।"

"कुछ अफ़सर अवश्य समझते हैं। कई अफ़सर तो बड़े कोमल हृदय के होते हैं। युद्ध उन्हें हमसे भी अधिक बुरा लगता है।"

"ऐसे व्यक्ति का स्वभाव बहुधा दूसरों से भिन्न होता है।"

"शिक्षा या सम्पत्ति ही किसी के अफ़सर बनने की योग्यता का मापदण्ड

नहीं है। इनसे परे कुछ और भी होता है। पास्सिनी जैसे मनुष्य यदि शिक्षित या सम्पत्तिशाली होते तो भी वे अफ़सर नहीं बनना चाहते! मैं स्वयं अफ़सर बनना नहीं चाहूँगा।"

"आपका पद तो अफ़सर का है ही। मैं भी एक अफ़सर हूँ।"

"नहीं, मैं सचमुच अफ़सरों-जैसा नहीं हूँ। तुम तो इटालियन भी नहीं हो, विदेशी हो। तुम साधारण मनुष्यों की अपेक्षा अफ़सरों के अधिक निकट हो।"

"दोनों में अन्तर क्या है?"

"मैं आसानी से नहीं समझा सकता। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो युद्ध का निर्माण करते हैं। इस देश में उन जैसे बहुत-से व्यक्ति मौजूद हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं, जो लड़ाई नहीं चाहते।"

"किन्तु पहले वर्ग के मनुष्य उन्हें लड़ने के लिए बाध्य कर देते हैं!"

"हाँ।"

"और मेरे जैसे आदमी उन्हें सहायता देते हैं?"

"तुम विदेशी हो—एक देशभक्त!"

"और वे, जो युद्ध नही चाहते—वे क्या हैं? क्या वे युद्ध को रोक सकते हैं?"

"यह मैं नहीं कह सकता।"

वह फिर खिड़की से बाहर देखने लगा। मैं उसके मुख को बड़े ग़ौर से देख रहा था।

"क्या शान्ति के वे समर्थक कभी युद्ध रोकने में सफल भी हुए हैं।"

"एक तो वे ऐसी घटनाओं को संगठित होकर नहीं रोकते और जब वे संगठित हो जाते हैं, तो उनके नेता उन्हें दूसरों के हाथ बेच देते हैं।"

"यह तो बहुत बुरी बात है।"

"इसमें निराश होने की ज़रूरत नहीं है। किन्तु हाँ, कभी-कभी मुझे भी आशा का कोई कूल-किनारा नहीं दिखाई देता। मैं सदा आशावादी बने रहने का प्रयत्न करता हूँ; पर कभी-कभी वैसा नहीं कर पाता।"

"हो सकता है, युद्ध खत्म हो जाए।"

"मैं भी ऐसी ही आशा करता हूँ।"

"तब आप क्या करेंगे?"

"यदि सम्भव हुआ, तो मै अब्रूज़ी लौट जाऊँगा।" उसका साँवला मुख अचानक एक अपूर्व सुख की अनुभूति से चमक उठा।

"क्या अब्रूज़ी आपको पसंद है ?"

"बहुत !"

"तब वहाँ आपको चले जाना चाहिए।"

"मुझे वास्तव में, बड़ी प्रसन्नता होगी। काश, मैं वहाँ रह सकता—ईश्वर की आराधना कर सकता—उसकी भक्ति और उसकी सेवा में अपने दिन गुज़ार सकता!"

"और लोगों का सम्मान प्राप्त कर सकता।" मैंने कहा।

"हाँ; सम्मान प्राप्त कर सकता। क्यों नहीं ?"

"अवश्य ही, कोई कारण नहीं कि ऐसा न हो!"

"खैर, उससे क्या बनता-बिगड़ता है। किन्तु मेरी जन्मभूमि के लोग इतना समझते हैं कि मनुष्य ईश्वर से प्रेम कर सकता है और भगवान् से प्रेम करना कोई मज़ाक उड़ाने की चीज़ तो नहीं है।"

"मैं समझता हूँ।"

उसने मेरी ओर देखा और मुस्कराया।

"तुम समझते हो; फिर भी ईश्वर से प्रेम नहीं करते ?"

"नहीं।"

"तुम उससे बिलकुल प्रेम नहीं करते ?" उसने पूछा।

"मैं कभी-कभी रात में उससे भयभीत अवश्य हो उठता हूँ।"

"तुम्हें ईश्वर से प्रेम करना चाहिए।"

"मैं इस तरह प्रेम नहीं किया करता।"

"नहीं—" उसने कहा—"तुम प्रेम करते हो। जिसके विषय में तुम मुझसे कई बार रात में बातें कर चुके हो, उससे प्रेम करते हो। पर वह सच्चा प्रेम नहीं है। वह तो केवल वासना है—मोह है। जब तुम प्रेम करते हो, तो अपने प्रेम-पात्र के लिए बहुत-कुछ करना चाहते हो—बलिदान, त्याग, सेवा या इसी प्रकार की अन्य कोई चीज़!"

"मैं प्रेम ही नही करता।"

"एक दिन करोगे। मैं जानता हूँ कि कभी-न-कभी तुम प्रेम करोगे। और तब तुम जीवन में सुखी रहोगे।"

"मैं तो आज भी सुखी हूँ। मैं सदा सुखी रहा हूँ।"

"किन्तु ईश्वर—प्रेम से उत्पन्न सुख एक निराली वस्तु है। वैसा सुख जब तक तुम्हें प्राप्त नहीं होता, तब तक तुम यह नहीं जान सकते कि वह क्या होता है।"

"ख़ैर—" मैं बोला—"यदि वह सुख मुझे कभी प्राप्त हुआ, तो मैं आपको बताऊँगा।"

"मैं कहीं बैठता हूँ, तो काफ़ी देर तक बैठ जाता हूँ और बहुत बातें किया करता हूँ।" वह सचमुच चिंतित प्रतीत हो रहा था कि उसे बड़ी देर हो गई थी।

"बैठिए न। अभी से मत जाइए। स्त्रियों से प्रेम करने के विषय में आपके क्या विचार हैं? यदि मैं किसी स्त्री से सच्चा प्रेम करूँ, तो क्या वह ईश्वर से प्रेम करने के समान ही होगा?"

"इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता। मैंने कभी किसी स्त्री से प्रेम नहीं किया।"

"अपनी माँ से भी नहीं?"

"हाँ, अपनी माँ से मैंने अवश्य प्यार किया होगा।"

"क्या आप शुरू से ही ईश्वर से प्यार करते रहे हैं?"

"हाँ, मैं जब बच्चा था, तभी से।"

"ओह!" मैंने कहा। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या कहूँ। "आप बड़े अच्छे लड़के है!" मेरे मुँह से निकल पड़ा।

"हूँ तो मैं लड़का ही।" उसने उत्तर दिया—"किन्तु तुम मुझे धर्मपिता कहकर पुकारते हो।"

"केवल विनम्रतावश!"

वह मुस्कराया।

"मुझे अब चल देना चाहिए, सच!" उसने कहा—"यदि मैं तुम्हारी कोई सहायता कर सकूँ, तो मुझे बताओ।"

"इसी तरह कभी-कभी मिलने-जुलने के लिए आते रहियेगा।"

"मैं भोजनालय में सबके पास तुम्हारी शुभकामनाएँ पहुँचा दूँगा।"

"आपके इन सुन्दर उपहारों के लिए धन्यवाद।"

"नहीं, नहीं। इसकी कोई आवश्यकता नहीं।"

"फिर कभी आएइगा।"

"ज़रूर—ज़रूर। अच्छा, अब विदा दो।" उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर थपथपाया।

"विदा!" मैंने स्थानीय बोली में कहा।

"ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।" उसने दुहराया।

कमरे में अंधेरा छाया था। मेरे पैरों की ओर, बिस्तर के पास ही, अर्दली बैठा हुआ था। वह उठा और पादरी को पहुँचाने के लिए बाहर तक गया।

मैं पादरी को बहुत चाहता था। मुझे विश्वास था कि वह कभी-न-कभी अब्रूज़ी अवश्य लौट जायेगा। भोजनालय में वह बिलकुल नरक का जीवन बिता रहा था; और उस स्थिति में भी वह प्रसन्न था। अपने जन्मस्थान में उसका जीवन कैसा होगा, इसकी कल्पना मैंने कर ली थी। उसने मुझे बताया था कि काप्रा-कोट्टा में, शहर के नीचे की ओर, एक नदी बहती थी, जहाँ ट्राउट नामक सुन्दर मछलियों की भरमार थी। वहाँ रात में बांसुरी बजाने की मनाही थी। जब वहाँ के युवक–प्रेमी सान्ध्यगीत गाते, तो वे बांसुरी नहीं बजाते थे। मैंने पादरी से इसका कारण पूछा था। उसने बताया था कि युवतियों के लिए रात की निस्तब्धता में बांसुरी का हृदयग्राही स्वर सुनाई देना अच्छा नहीं माना जाता था। अब्रूज़ी के किसान, लोगों को डॉन (स्पेन का एक सम्मानसूचक शब्द) कहकर सम्बोधित करते थे और जब वे मिलते थे, तो सम्मान में अपना टोप उतार लेते थे। पादरी का पिता रोज शिकार खेलने का आदी था और जब भी शिकार पा जाता, भोजन करने के लिए किसानों के घरों में ठहरा करता था। पादरी–परिवार के लोग सदा आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। यदि वहाँ कोई परदेशी शिकार खेलने के लिए जाता था, तो उसे इस बात का प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना पड़ता था कि वह ग़लत निशाना मारने के अपराध में कभी गिरफ्तार नहीं हुआ है। ग्रॉन-सास्सो-द'तालिया (पर्वत का नाम) पर खूब भालू थे; किन्तु वह बहुत दूर था। एक्विला वहाँ का एक सुन्दर नगर था। गरमी में वहाँ की रातें ठण्डी होती थीं। अब्रूज़ी का वसन्त इटली-भर में सबसे सुन्दर माना जाता था। किन्तु वहाँ का सबसे प्रबल आकर्षक था—अखरोट के बनों से होकर बहने वाला एक सुन्दर झरना। वहाँ के पक्षी भी बड़े अच्छे थे; क्योंकि वे अंगूरों से ही अपना पेट भरते थे! किसी यात्री को वहाँ भोजन साथ ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी; क्योंकि वहाँ के किसान अतिथि का बड़ा सम्मान करते थे और आदरपूर्वक अपने घर खाना खिलाते थे।

यही सब सोचता-सोचता कुछ देर बाद मैं सो गया।

•१२•

कमरा लम्बा था। दाहिने हाथ की ओर उसमें खिड़कियाँ थीं। उसके अंतिम छोर पर एक दरवाज़ा था, जो मरहमपट्टी वाले कमरे से सम्बन्धित था। मेरी

पंक्ति में जितने पलंग थे, उन के मुँह खिड़कियों की ओर थे। बिस्तरों की दूसरी पंक्ति खिड़कियों के नीचे थी। उनके मुँह दीवार की ओर थे। बाईं ओर करवट लेकर लेटने पर मरहमपट्टी के कमरे का दरवाज़ा देखा जा सकता था। दूसरे छोर पर एक दूसरा दरवाज़ा था। उस तरफ़ से कभी-कभी लोग भीतर आया करते थे। किसी रोगी के मरते समय उसके पलंग के आसपास पर्दा डाल दिया जाता था, जिससे मरने वाले व्यक्ति को कोई देख न सके। पर्दे के नीचे की ओर फ़र्श पर केवल डॉक्टरों और परिचारकों के जूते तथा उनके पैरों की पट्टियाँ ही दिखाई देती थीं। कभी-कभी कुछ फुसफुसाहट भी सुनाई दे जाती थी। और तब उस परदे के पीछे से पादरी बाहर आता। परिचारक (मेल नर्स) पर्दे से बाहर निकलते और फिर पर्दे के भीतर चले जाते। कुछ समय बाद वे मृत व्यक्ति को कम्बल से ढाँक कर बाहर लाते हुए दिखाई देते। वे उसे लेकर बिस्तरों के बीच के रास्ते से निकल जाते। कोई आता, पर्दे को मोड़ता और वहाँ से हटा ले जाता।

उस दिन प्रातःकाल वार्ड के अधिकारी ने, जो एक मेजर था, मुझसे पूछा कि क्या मुझमें इतनी शक्ति है, जो मैं अगले दिन ही यात्रा कर सकूँ। मैंने उसे बताया कि मैं वैसा कर सकता हूँ। उसने मुझे कहा कि अगले दिन सबेरे ही मुझे जहाज़ पर चढ़ा दिया जायेगा। उसने मुझे यह भी समझाया कि अधिक गर्मी पड़ना प्रारम्भ होने के पहले ही मेरा यात्रा करना ठीक रहेगा।

जब हमें मरहमपट्टी वाले कमरे में ले जाने के लिए बिस्तरों पर से उठाया जाता, तब हम खिड़की से बाहर का दृश्य अच्छी तरह देख सकते थे। बगीचे में हमें हाल ही में बनी हुई क़ब्रें दिखाई देतीं। उस ओर खुलने वाले द्वार के बाहर एक सैनिक बैठा रहता और उन क़ब्रों पर क्रॉस बनाया करता। क्रॉस बनाने के बाद वह उन क़ब्रों पर, उद्यान-भूमि की उस गोद में सोये हुए उन मृतकों के नाम, उनके ओहदे और उनकी सैन्य टुकड़ियों के विवरण अंकित कर देता। इसके सिवा वह वार्ड के रोगियों के सन्देश लाने-ले जाने का कार्य भी करता था। अपने फ़ुरसत के समय में उसने एक खाली आस्ट्रियन कारतूस से मेरे लिए सिगरेट जलाने का एक लाइटर बना दिया था। वहाँ के डाक्टर बड़े अच्छे और बहुत ही योग्य थे। वे सब मुझे मिलान भेजने के लिए उत्सुक थे। मिलान में एक्स-रे की अधिक सुविधाएँ प्राप्त थीं। वहाँ शल्य-क्रिया होने के बाद मैं यान्त्रिक-चिकित्सा भी करा सकता था। मैं स्वयं भी मिलान जाना चाहता था। अधिकारी-वर्ग यह चाहता था कि यथासम्भव हम सब आहत

सैनिक शीघ्र अच्छे होकर युद्ध पर वापस आ जाएँ; क्योंकि आक्रमण आरम्भ होने पर स्वभावतः ही उन्हें आदमियों की ज़रूरत पड़नेवाली थी।

मोर्चे के उस अस्पताल को छोड़ने से पहले, रात में, हमारे भोजनालय के मेजर के साथ रिनाल्डी मुझे देखने आया। उन दोनों ने बताया कि मुझे मिलान में बने एक नये अमरीकी अस्पताल में भेजा जा रहा है। अमेरिका से कुछ चिकित्सक आने वाले थे। वह अस्पताल उनके लिए तथा इटालियन सेना में काम करने वाले अन्य अमरीकी सैनिकों के लिए खोला गया था। रेड-क्रास-दल में भी बहुत-से अमरीकी थे। अमेरिका ने जर्मनी के विरुद्ध तो युद्ध की घोषणा कर दी थी; किन्तु आस्ट्रिया के विरुद्ध नहीं।

इटालियनों को यह विश्वास था कि अमेरिका, आस्ट्रिया के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा करेगा; इसलिए वे किसी भी अमरीकी के आने पर, चाहे वह रेड-क्रास-दल का ही क्यों न हो, बड़े उत्तेजित हो जाते थे।

"क्या तुम्हें विश्वास है कि राष्ट्रपति विल्सन आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करेंगे?" रिनाल्डी और मेजर ने मुझसे पूछा।

"केवल कुछ ही दिनों की देर है।" मैंने उत्तर दिया। हमारी आस्ट्रिया से कौन-सी शत्रुता थी, यह मैं स्वयं नहीं जानता था; किन्तु जब जर्मनी से युद्ध छिड़ गया था, तो आस्ट्रिया के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा करना तर्कसंगत प्रतीत होता था। उन्होंने पूछा कि क्या अमेरिका तुर्किस्तान से भी युद्ध छेड़ेगा?

"यह ज़रा सदेहास्पद है।" मैंने उत्तर दिया—"तुर्किस्तान तो अपने हाथ की चीज़ है।"

किन्तु उन दोनों ने मेरे इस मज़ाक का इतना बुरा अर्थ लगाया और इतने शंकालु हो उठे कि मुझे कहना पड़ा—"हाँ, कदाचित् तुर्किस्तान पर भी हमला बोल दिया जाए।"

"और बल्गेरिया पर?"

हम लोग अब तक कई गिलास ब्राण्डी पी चुके थे। नशे की खुमारी में ही मैं बोला—"हाँ, सचमुच, बल्गेरिया पर भी और जापान पर भी।"

"पर जापान तो इंग्लैण्ड का मित्र है।" वे बोले—"और इन अंग्रेज़ों पर विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"जापानी हवाई द्वीप लेना चाहते हैं।" मैंने कहा।

"हवाई द्वीप कहाँ है?"

"प्रशान्त-महासागर में।"

"जापानी लोग उसे क्यों लेना चाहते हैं?"

"वास्तव में, वे उसे लेना नहीं चाहते।" मैं बोला—"यह सब कोरी गप्प है। जापानी लोग बड़े भले व्यक्ति होते हैं-नन्हें क़द के, नृत्य-प्रिय और गुलाबी नशा लानेवाली शराब के शौक़ीन!"

"फ्रान्सीसियों की तरह।" मेजर बोला।

"फ्रेंच लोगों से हमें नाइस और सेवोइआ प्रदेश मिल जाएँगे। कॉर्सिका और एड्रिआटिक समुद्र के किनारे के इलाके भी प्राप्त हो जाएँगे।" रिनाल्डी ने कहा।

"इटली, रोम का खोया वैभव पुनः प्राप्त कर लेगा।" मेजर बोला।

"मुझे रोम पसन्द नहीं है।" मैंने कहा—"रोम बहुत गर्म स्थान है और यहाँ पिस्सुओं की भरमार है।"

"तुम्हें रोम अच्छा नहीं लगता?"

"हाँ-हाँ, मैं रोम से प्यार करता हूँ। रोम सभी राष्ट्रों की जननी है। मैं रोमुलस द्वारा टाइबर का स्तनपान करना कभी नहीं भूल सकूँगा।"

"क्या?"

"कुछ नहीं।"

"चलो, हम आज की रात रोम चलें और फिर कभी वापस न आयें।"

"रोम बड़ा सुन्दर शहर है।" मेजर ने कहा।

"रोम सब राष्ट्रों की माता है—सब राष्ट्रों का पिता।" मैं बोला।

"रोमा शब्द स्त्रीलिंग है।" रिनाल्डी ने विरोध किया—"रोम माँ हो सकता है—बाप नहीं।"

"तब बाप कौन है? क्या पवित्र-प्रेतात्मा?"

"अपमानजनक बातें मत करो!"

"अपमानजनक बातें नहीं कर रहा हूँ। सच बात जानना चाहता हूँ।"

"तुम शराब के नशे में हो, दोस्त!"

"किसने मुझे इतनी शराब पिला दी?"

"मैंने—" मेजर बोला—"तुम्हें मैंने बहुत शराब पिलाई है; क्योंकि मैं तुमसे स्नेह करता हूँ; क्योंकि अमरीका युद्ध में हमारे साथ है।"

"शुरू से आखिर तक साथ है—पूरी तरह साथ है।" मैंने कहा।

"तुम सबेरे चले जाओगे, मेरे दोस्त।" रिनाल्डी ने कहा।

"हाँ, रोम जाऊँगा।" मैं बोला।

"रोम नहीं, मिलान।"

"मिलान जाओगे, मिलान। स्फटिक-भवन, कोवा, कॉम्पारी, बिफ्फी और गॅलेरिया जैसे सुन्दर स्थलों को देखोगे तुम। भाग्यवान् हो, दोस्त!" मेजर बोला।

"मैं ग्रॉन-इतालिया जाऊँगा।" मैंने कहा—"ग्रॉन-इतालिया, जहाँ मैं जॉर्ज (एक परिचित ख़ानसामा) से पैसे उधार ले सकूँगा।"

"तुम स्काला जाओगे, स्काला!" रिनाल्डी बोला।

"हाँ, अब जाऊँगा, प्रति रात्रि।" मैंने कहा।

"रोज रात को वहाँ जाने लायक पैसे ही नहीं होंगे तुम्हारे पास।" मेजर बोला।

"वहाँ का प्रवेश-शुल्क सचमुच बहुत अधिक है। मैं एक काम करूँगा। अपने पितामह के नाम पर एक दर्शनी हुण्डी लिख दूँगा।" मैं बोला।

"क्या लिख दोगे?"

"दर्शनी हुण्डी। मेरे पितामह को उसका भुगतान करना पड़ेगा, अन्यथा मुझे जेल जाना पड़ेगा। बैंकवाले कनिगह्म महोदय मेरे लिए ऐसी व्यवस्था कर दिया करते हैं। मैं दर्शनी हुण्डियों पर ही तो जीवित रहा रहा हूँ। क्या एक पितामह अपने देशभक्त पोते को, जो इटली को जीवित रखने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा रहा है, कभी जेल जाते देख सकता है?"

"जियो, अमरीकी गैरीबाल्डी, जियो!" रिनाल्डी बोला।

"जीती रहें मेरी दर्शनी–हुण्डियाँ।" मैंने कहा।

"हमें अब चुप हो जाना चाहिए।" मेजर ने कहा—"हमसे चुप रहने के लिए पहले भी कई बार कहा जा चुका है। क्या तुम कल सचमुच जा रहे हो, फेडेरिको?"

"यह एक अमरीकी अस्पताल में जा रहा है। सच!" रिनाल्डी बोला—"सुन्दर नर्सों के बीच। युद्ध-क्षेत्र के दाढ़ीवाले परिचारकों (मेल नर्स) के समान वहाँ परिचारिकाएँ नहीं होंगी।"

"हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ। यह अमरीकी अस्पताल में जा रहा है।" मेजर बोला।

"मुझे उनकी दाढ़ियों से कुछ लेना-देना नहीं है।" मैंने कहा—"यदि कोई दाढ़ी रखना चाहे, तो रखे। हमें उससे भला क्या करना है। आप क्यों नहीं बढ़ाते दाढ़ी, मेजर महोदय?"

"पर वह गैसमास्क में नहीं आ सकती।"

"आ सकती है। गैसमास्क में कुछ भी समा सकता है। मैं तो उसमें एक बार उलटी भी कर चुका हूँ।"

"इतने ज़ोर से मत बोलो, दोस्त!" रिनाल्डी बोला—"हम सब लोग जानते हैं कि तुम मोर्चे पर हो आए हो। लेकिन मेरे भोले दोस्त, जब तुम यहाँ से चले जाओगे, तब मेरा क्या होगा? मैं क्या करूँगा?"

"यह निरी भावुकता है।" मेजर बोला—"हमें अब चल देना चाहिए।"

"सुनो, तुम्हारे लिए मेरे पास एक अद्भुत खबर है। वही अंग्रेज़ युवती—जानते हो न? अरे, वही अंग्रेज़ लड़की, जिससे मिलने तुम रोज रात को उसके अस्पताल जाया करते थे। वह भी मिलान जा रही है। अपनी एक और सहेली के साथ वह अमरीकी अस्पताल में काम करने जा रही है। अमेरिका से अभी परिचारिकाएँ आई नहीं हैं। मैं आज उनके दल के प्रमुख से मिला था। मोर्चे पर यहाँ आवश्यकता से अधिक परिचारिकाएँ हैं। उनमें से कुछ वापस भेजी जा रही हैं। क्यों दोस्त, खबर पसन्द आई?"

"ठीक है।"

"ठीक क्यों न हो? तुम एक बड़े नगर में रहने जा रहे हो और वहाँ तुम्हें अपने आलिंगन में बाँधने के लिए तुम्हारे साथ तुम्हारी वह अंग्रेज़ लड़की भी होगी। वाह री किस्मत! मैं कभी घायल क्यों नहीं होता?"

"शायद कभी तुम भी घायल हो जाओ।" मैंने उत्तर दिया।

"चलो भाई, अब चलें"—मेजर बोला। "हम शराब पीकर शोर मचा रहे हैं और बेचारे फेडेरिको की शांति में विघ्न डाल रहे हैं।"

"बैठो न, अभी से जाने की क्या जल्दी है!"

"नहीं, अब हमें जाना ही चाहिए। अच्छा, नमस्ते। भाग्य तुम्हारा साथ दे, तुम्हारी कामनाएँ पूरी हों!"

"नमस्ते।"

"नमस्ते। जल्दी लौटना दोस्त!" रिनाल्डी ने मेरा चुम्बन लेते हुए कहा—"तुम्हारे शरीर से जन्तु-विनाशक औषध की गन्ध आ रही है। अच्छा, विदा मेरे मित्र!"

"नमस्ते। अनेक शुभकामनाएँ।"

मेजर ने मेरा कन्धा थपथपाया। वे पंजों की उँगलियों पर चलते हुए, जिससे शोर न हो, चुपचाप बाहर चले गए। मैंने अनुभव किया कि मैं गहरे नशे में हूँ, लेकिन शीघ्र ही मुझे नींद आ गई।

अगले दिन सबेरे हम लोग मिलान के लिए रवाना हो गये और अड़तालीस घण्टे बाद वहाँ पहुँचे। हमारी यह यात्रा बड़ी खराब रही। मेस्त्रे के इसी तरफ, एक स्थान पर हमारी गाड़ी बड़ी देर तक बगल की लाइन पर खड़ी कर दी गई और बच्चे आ-आकर डिब्बों के भीतर झाँकने लगे। मैंने एक लड़के से एक बोतल कॉग्नेक (शराब) लाने के लिए कहा। किन्तु लौटकर उसने बतलाया कि वहाँ केवल ग्रेप्पा शराब मिल सकती थी। "तो वही ले आओ—" मैं बोला। जब वह उसे ले आया, तो मैंने बाकी पैसे उसे ही दे दिये। मैंने और मेरे पास बैठे हुए व्यक्ति ने मिलकर शराब पी और फिर सो गये। विसेन्ज़ा पार करने पर मेरी नींद खुली। उठने पर मेरी तबीयत बड़ी खराब महसूस हो रही थी। मैं फ़र्श पर लेटा रहा। किन्तु इसमें घबराने की कोई बात नहीं थी; क्योंकि मेरी बगल का व्यक्ति पहले कई बार बीमार होकर इसी प्रकार फ़र्श पर लेटा रहता था और जानता था कि उससे कुछ होता नहीं है। थोड़ी देर बाद मुझे बड़े ज़ोरों की प्यास मालूम हुई और धीरे-धीरे वह असह्य हो उठी। अतः वेरोना स्टेशन के बाहर, यार्ड में जब गाड़ी रुकी, तो उसके एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर मारने वाले एक सैनिक को मैंने बुलाया। उसने मुझे पीने के लिए पानी ला दिया। मैंने नशे में चूर अपने दूसरे साथी जॉर्जेट्टी को उठाया और उसे भी थोड़ा पानी देने लगा। उसने मुझसे अपने कंधे पर पानी डालने के लिए कहा और फिर सो गया। मैंने सैनिक को एक पेनी इनाम देना चाहा; किन्तु उसने लेने से बिलकुल इनकार कर दिया। उल्टे वह मेरे लिए एक बढ़िया संतरा ले आया। मैं उसे चूसकर उसकी छूँछे बाहर थूकते हुए उस सैनिक को देखता रहा, जो अब एक माल के डिब्बे के सामने एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहरा दे रहा था। थोड़ी देर बाद हमारी गाड़ी एक झटके के साथ वहाँ से चल पड़ी।

द्वितीय खण्ड

.१३.

हम सबेरे के धुँधलके में मिलान पहुँचे। वहाँ हमें माल-गोदाम में उतारा गया। एक एम्बुलेन्स मुझे अमरीकी अस्पताल ले गई। मैं टिकठी पर लेटा था; अतः मोटर में जाते समय मुझे यह नहीं मालूम हो सका कि हम लोग शहर के किस भाग से गुज़र रहे थे। किन्तु जब टिकठी उतारी गई, तो मुझे एक बाज़ार दिखाई दिया। सामने ही मैंने शराब की एक खुली हुई दुकान देखी, जिसमें एक लड़की झाड़ू लगा रही थी। सड़क पर पानी छिड़का जा रहा था और उसमें से सुबह की सोंधी गंध उठ रही थी। टिकठी ढोनेवाले मुझे नीचे छोड़कर भीतर गये। वे जब लौटे, तो उनके साथ एक दरबान भी बाहर आया। उसके मुख पर भूरी-भूरी मूँछें थीं। वह दरबान की टोपी लगाए था और पूरी बाँहों वाली क़मीज़ पहने था। टिकठी लिफ्ट के भीतर नहीं जा रही थी; अतः सब लोग विचार करने लगे कि मुझे ऊपर कैसे ले जाया जाये—टिकठी पर से उतारकर लिफ्ट में अथवा टिकठी-समेत सीढ़ियों पर होकर। मैं उन्हें आपस में बहस करते हुए सुनता रहा। अन्त में उन्होंने मुझे लिफ्ट द्वारा ही ले जाने का निश्चय किया और मैं टिकठी पर से उतार लिया गया।

"आहिस्ते!" मैंने कहा—"सावधानी से ले चलो!"

हम लिफ्ट में समा नहीं रहे थे। मेरी टाँगें मोड़नी पड़ीं और उसके साथ ही उनमें बड़े ज़ोर का दर्द होने लगा। "ज़रा टाँगें सीधी कर दो।" मैं बोला।

"कैसे सीधी करें, लैफ्टिनेण्ट महोदय! यहाँ जगह तो है ही नहीं।" जिस व्यक्ति ने उत्तर दिया, वह मुझे अपनी बाँहों में लपेटे था और मेरी बाँह उसके गले से लिपटी थी। लहसुन और लाल शराब की गंध से भरी हुई उसकी साँस सीधे मेरे मुँह पर पड़ रही थी।

"ज़रा सभ्यतापूर्ण व्यवहार कीजिए।" दूसरा व्यक्ति बोला।

"कुतिया के बच्चे! क्या मैं असभ्य बातें कर रहा हूँ?"

"मैं कहता हूँ, ज़रा सभ्यता से पेश आइए।" वह व्यक्ति बोला, जो मेरे पैर पकड़े था।

मैंने लिफ्ट के द्वार बंद होते हुए देखे। उसकी जाली बन्द हुई और लिफ्टमैन ने चौथी मंज़िल का बटन दबाया। दरबान कुछ चिंतित दिखाई दे रहा था। लिफ्ट धीमी गति से ऊपर उठने लगा।

"वजन अधिक हो गया है क्या?" मैंने उस लहसुन की गंधवाले आदमी से पूछा।

"नहीं।" वह बोला। उसका मुँह पसीने से तर हो रहा था और वह गुरगुरा रहा था। लिफ्ट स्थिर गति से ऊपर उठता हुआ अन्त में खड़ा हो गया। जिस व्यक्ति ने मेरे पैर पकड़ रखे थे, उसने लिफ्ट का दरवाज़ा खोला और हम बाहर निकल आये। हम अब एक बरामदे में थे। उसमें पीतल की मूठवाले बहुत-से दरवाज़े थे। पैरों की ओर से मुझे सँभालनेवाले व्यक्ति ने एक बटन दबाकर घण्टी बजाई। दरवाज़े के भीतर बजती हुई घण्टी का स्वर हमें सुनाई दिया; किन्तु कोई बाहर नहीं निकला। तभी सीढ़ियों पर से दरबान ऊपर आया।

"कहाँ हैं ये लोग?" टिकठी ढोनेवालों ने उससे पूछा।

"मुझे नहीं मालूम।" दरबान बोला—"वे सब नीचे की मंज़िल पर सोते हैं।"

"किसी को बुला दो, ज़ार।"

दरबान ने घण्टी बजाई और फिर द्वार खटखटाया। कोई उत्तर न मिलने पर वह द्वार खोलकर भीतर चला गया। जब वह बाहर निकला, तो उसके साथ चश्मा लगाए हुए एक अधेड़-सी औरत थी। उसके केश खुले हुए थे, आधे झड़ चुके थे और वह एक परिचारिका के कपड़े पहने थी।

"मैं समझ नहीं सकती—" वह बोली—"मैं इटालियन भाषा नहीं समझ सकती।"

"मैं अंग्रेज़ी जानता हूँ।" मैं बोला—"ये लोग मुझे यहाँ किसी कमरे में पहुँचाने के लिए आए हैं।"

"अभी कोई कमरा तैयार नहीं है। हमें यहाँ किसी रोगी के आने की सूचना नहीं मिली है।" अपने खुले केशों का जूड़ा बाँधते हुए उसने मेरी ओर घूरकर देखा।

"इन्हें कोई भी ऐसा कमरा बता दीजिये, जहाँ ये लोग मुझे पहुँचा सकें।"

"यह कैसे हो सकता है।" वह बोली—"यहाँ किसी को पता ही नहीं है कि कोई रोगी आने वाला है। मैं आपको हर किसी कमरे में तो नहीं पहुँचा सकती।"

"कोई भी कमरा काम देगा।" मैंने कहा और दरबान को इटालियन भाषा में आदेश दिया "देखो, कोई कमरा खाली है क्या?"

"सभी कमरे खाली पड़े हैं।" दरबान ने उत्तर दिया—"आप ही पहले रोगी हैं, जो यहाँ लाये गए हैं।" उसने अपनी टोपी हाथ में पकड़ते हुए उस औरत की ओर देखा।

"ईश्वर के लिए, दया करके, मुझे किसी कमरे में पहुँचाइए।" टाँगों के लगातार झुके रहने के कारण दर्द बढ़ता जा रहा था। दरबान दरवाजे में घुसा। सफ़ेद-केशोंवाली वह परिचारिका भी उसके पीछे-पीछे चल दी। दरबान शीघ्र ही लौट आया। "मेरे पीछे आइए" वह बोला। एक लम्बा दालान पार करते हुए वे मुझे एक कमरे में ले गए। कमरे की खिड़कियों पर पर्दे डाल दिए गए थे। वह नये फर्नीचर की गंध से महक रहा था। उसमें एक पलंग पड़ा था। कपड़े रखने की एक आलमारी भी थी, जिसमें एक बड़ा दर्पण लगा था। उन्होंने मुझे पलंग पर लिटा दिया। "मैं चादर नहीं बिछा सकती।" परिचारिका ने कहा—"सब चादरें ताले में बन्द हैं।"

मैं उससे कुछ न बोला। "मेरी जेब में पैसे हैं—" मैंने दरबान से कहा—"बटन लगे हुए नीचे की जेब में।" दरबान ने पैसे निकाले। अपनी-अपनी टोपियाँ हाथों में लिए दोनों टिकठी ढोनेवाले मेरे बिस्तर की बगल में खड़े थे। "इनमें से प्रत्येक को पाँच-पाँच लायर दे दो और पाँच तुम स्वयं रख लो। दूसरी जेब में मेरे विषय के काग़ज़ात हैं। उन्हें निकालकर परिचारिका को दे दो।" मैंने दरबान को आदेश दिया।

टिकठी वाहकों ने फ़ौजी ढंग से सलाम करते हुए मुझे धन्यवाद दिया। मैंने उनसे विदा ली और कहा—"तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद!" उन्होंने मुझे फिर फ़ौजी ढंग से सलाम किया और चले गये।

"उन काग़ज़ात में—" मैंने परिचारिका से कहा—"मेरी बीमारी और उसकी अभी तक क्या चिकित्सा हुई है, इस विषय का पूरा विवरण है।"

परिचारिका ने उन्हें उठाया और अपने चश्मे के भीतर से उन्हें देखना आरम्भ किया। सिर्फ़ तीन ही काग़ज़ थे, जो मुड़े हुए थे। "समझ में नहीं आता, मैं क्या करूँ।" उसने कहा—"मैं इटालियन नहीं पढ़ सकती। डाक्टर के आदेश बिना मैं कुछ कर भी नहीं सकती।" वह रोने लगी और उसी अवस्था में उसने उन काग़ज़ात को अपने लबादे की जेब में रख लिया। "आप अमरीकी हैं?" रोते-रोते ही उसने पूछा।

"जी हाँ। कृपया आप उन काग़ज़ात को पलंग के पास की मेज़ पर रख दीजिये।"

कमरा धुँधला और ठण्ढा था। बिस्तर पर लेटे हुए मैं कमरे की दूसरी ओर स्थित उस बड़े दर्पण को तो देख सकता था; किन्तु उसमें जो छाया पड़ रही थी, उसे नहीं देख पाता था। दरबान पलंग के पास ही खड़ा था। देखने में वह बड़ा सुन्दर था और कोमल हृदय और अच्छे स्वभाव का प्रतीत होता था।

"तुम जा सकते हो।" मैंने उससे कहा। "और आप भी नर्स।" मैंने परिचारिका से कहा—"हाँ, आपका नाम क्या है?"

"श्रीमती वॉकर।"

"आप जा सकती हैं, श्रीमती वॉकर। मैं अब सोना पसंद करूँगा।"

मैं वहाँ अकेला रह गया। कमरा ठंढा था और उसके वातावरण में अस्पताल-जैसी कोई गन्ध नहीं थी। गद्दा मोटा और काफ़ी आरामदेह था। मैं उस पर बिना हिले-डुले, पड़ा रहा। दर्द धीरे-धीरे कम होता जा रहा था, अतः मैं अब कुछ आराम का अनुभव कर रहा था। थोड़ी देर बाद मुझे प्यास लगी और मैंने पानी पीना चाहा। बिस्तर के पास ही मुझे घण्टी की डोरी लटकती दिखायी दी। मैंने घण्टी बजाई; किन्तु कोई आया नहीं। निराश होकर मैं बिना पानी पिये ही सो गया।

जब मैं सोकर उठा, तो मैंने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। खिड़कियों के रोशन-दानों से कुछ प्रकाश-किरणें कमरे में घुस आयी थीं। तभी मेरी नज़र सूनी दीवारों और दो कुर्सियों पर पड़ी। गन्दी पट्टियों में लिपटी हुई मेरी टाँगे बिछौने में बिलकुल सीधी और लम्बी होकर जैसे चिपक गयी थीं। बड़ी सावधानी से मै उन्हें हिलने-डुलने से बचाता रहा। मुझे ज़ोर की प्यास लगी थी। मैंने घण्टी की डोरी तक हाथ बढ़ाया और घंटी बजायी। तुरन्त ही मुझे द्वार खुलने का शब्द सुनाई दिया और मैंने एक परिचारिका को कमरे के भीतर आते देखा। वह जवान और सुन्दर प्रतीत हो रही थी। "सुप्रभात" मैं बोला। "सुप्रभात!" कहते हुए वह पलंग के समीप आ गयी—"हम अभी तक डाक्टर को यहाँ बुलाने में समर्थ नहीं हो सके हैं। वह लेक-कोमो गया है। किसी को इस बात का पता ही नहीं था कि यहाँ कोई रोगी भी आने वाला है। ख़ैर, आपको क्या तकलीफ़ है?"

"मैं युद्धक्षेत्र में आहत हो गया हूँ—मेरे पैरो तथा सिर में कई घाव लगे हैं।"

"आपका नाम क्या है?"

"हेनरी--फ्रेडरिक हेनरी!"

"अभी मैं आपको नहला देती हूँ। पर पट्टियाँ बदलने के विषय में डाक्टर के आने तक कुछ नहीं किया जा सकता।"

"क्या मिस बर्कले यहाँ हैं?"

"नहीं, यहाँ इस नाम का कोई नहीं है।"

"जब मैं यहाँ आया था, तब जो परिचारिका मेरे सामने रोई थी, वह कौन थी?" यह परिचारिका हँस पड़ी—"वह श्रीमती बॉकर है। वह रात की ड्यूटी पर थी और सो गई थी। असल में उसे तनिक भी आशा नहीं थी कि कोई आने वाला है।"

बातें करते-करते वह मेरे कपड़े भी उतारती जा रही थी। पट्टियों के सिवा उसने मेरे शेष कपड़े उतार दिये और मेरे शरीर को बड़े हौले-हौले और सावधानी से पानी से धोकर पोछ डाला। शरीर धुलने पर मुझे बड़ा अच्छा लगा। मेरे सिर पर पट्टी बँधी थी। उसने उसके किनारे-किनारे भी मेरा सारा सिर धो दिया।

"आप कहाँ घायल हुए थे?"

"प्लावा के उत्तर की ओर, इसोन्ज़ो पर।"

"वह कहाँ है?"

"गोरीज़िया के उत्तर में।"

मैंने देखा कि वह उनमें से एक स्थान का भी नाम नहीं जानती थी।

"क्या आपको बहुत दर्द होता है?"

"अभी तो अधिक नहीं है।"

उसने मेरे मुँह में ज्वरमापक-यंत्र रखा।

"इटालियन लोग इसे बाँह के नीचे, काँख में रखते हैं।"

"बोलिये मत।"

उसने ज्वरमापक-यंत्र बाहर निकाला और उसे पढ़कर झटकार दिया।

"कितना तापमान है?"

"आपको यह जानने का अधिकार नहीं है।"

"फिर भी, बतलाइए तो सही।"

"क़रीब-क़रीब सामान्य है।"

"मुझे कभी ज्वर नहीं रहता। मेरी टाँगों में भी पुराना लोहा भरा पड़ा है"

"क्या मतलब ?"

"यही कि उनमें खाई में फेके गए बम के टुकड़े, पुराने पेंच, पलंगों की कमानियाँ और बहुत-सी अन्य वस्तुएँ धँस गई हैं।"

उसने अपना सिर हिलाया और मुस्करा पड़ी—"यदि आपकी टाँगों में कोई बाहरी वस्तु होती, तो उसके कारण सूजन आ जाती और आपको बुख़ार होता।"

"ठीक है।" मैं बोला—"देखें, क्या निकलता है पैरों से।"

वह कमरे से बाहर गई और सुबह वाली उस अधेड़ परिचारिका को लेकर लौट आई। उन दोनों ने मुझे उठाए बिना ही बिस्तर साफ़ किया। यह सब मेरे लिए बिलकुल नया था। और वह कुछ इस आरामदेह ढंग से किया गया था कि मै उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सका।

"यहाँ का अधिकारी कौन है ?"

"मिस वॉन कॅम्पेन।"

"कितनी परिचारिकाएँ हैं यहाँ ?"

"केवल हम दोनो।"

"क्या और नहीं आयेंगी ?"

"कुछ और आनेवाली हैं।"

"वे यहाँ कब पहुँचेंगी ?"

"कह नहीं सकती। बीमार होते हुए भी आप बहुत-से प्रश्न पूछ रहे हैं।"

"मैं बीमार नहीं हूँ—घायल हूँ।" मैंने कहा।

उन्होंने मेरा बिस्तर साफ़-सुथरा बना दिया। साफ़ और धुली हुई चादर पर लेटे-लेटे मैंने एक चादर ओढ़ भी ली। श्रीमती वॉकर बाहर जाकर एक पायजामा और जैकेट ले आई। उसने मुझे वह पहना दिया। साफ़-सुथरे कपड़े पहनकर मुझे बड़ा आराम अनुभव हुआ।

"आप मुझ पर बड़ी कृपालु हैं।" मैंने कृतज्ञता प्रकट की। मिस गेज नामक नर्स खिसियानी-सी हँसी हँस दी।

"क्या मुझे, पीने के लिए थोड़ा पानी मिल सकता है ?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं। उसके बाद आप प्रातःकालीन जलपान करेंगे !"

"नहीं, मुझे जलपान नहीं चाहिए। क्या आप कृपा कर ये खिड़कियाँ खुलवा सकती हैं ?"

कमरे में धुँधला-सा प्रकाश छाया था। जब खिड़कियाँ खोल दी गईं, तो सूर्य

का तीव्र प्रकाश चारों ओर फैल गया। मैंने खिड़की से बाहर की ओर देखा। घरों की खपरैल से ढँकी छतें और आकाश की ओर सिर उठाये उनकी चिमनियाँ चमक रही थीं। मैंने खपरैल की उन छतों को देखा। बगुले के समान श्वेत बादल और गहरा नीला आकाश भी दिखाई दे गया।

"क्या आपको इस बात का पता नहीं है कि दूसरी परिचारिकाएँ कब आने वाली हैं?"

"क्यों? क्या हम लोग आपकी अच्छी तरह देख-भाल नहीं करतीं?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। आप लोग सचमुच बड़ी उदार हैं।"

"क्या आप प्रातःक्रिया से निवृत्त होने के लिए शौचपात्र (बेडपैन) का उपयोग करेंगे?"

"मैं प्रयत्न करूँगा।"

उन्होंने मुझे उठने में सहायता दी और हाथों का सहारा दिया; किन्तु कोई लाभ न हुआ। उसके बाद मैं बिस्तर पर लेटकर खुले हुए दरवाज़े से बरामदे की ओर देखने लगा।

"डाक्टर यहाँ कब आने वाला है?"

"लेक-कोमो से लौटने पर। हमने टेलिफोन द्वारा उससे सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया है।"

"क्या यहाँ और डाक्टर नहीं हैं?"

"इस अस्पताल का डाक्टर वही है।"

मिस गेज एक बर्तन में पानी और एक गिलास ले आई। मैंने तीन गिलास पानी पिया। फिर वे वहाँ से चली गईं। मैं थोड़ी देर तक खिड़की से बाहर देखता रहा और पुनः सो गया। उठने पर मैंने थोड़ा खाना खाया। तीसरे पहर अस्पताल की सुपरिन्टेंडेंट मिस वॉन केम्पेन मुझे देखने मेरे कमरे में आई। न तो उसने मुझे पसन्द किया और न ही वह मुझे अच्छी लगी। वह ठिंगनी और बहुत शंकालु स्वभाव की औरत थी। जिस पद पर वह थी, उसके वह सर्वथा अयोग्य थी। उसने मुझसे कई प्रश्न पूछे और मुझे ऐसा आभास हुआ कि मेरा इटालियन सेना के साथ होना उसे बड़ा अपमानजनक प्रतीत हुआ।

"क्या मैं भोजन के साथ शराब पी सकता हूँ?" मैंने उससे पूछा।

"यदि डाक्टर ने बताया तो।"

"तो क्या उसके पहले मैं नहीं पी सकता?"

"एक बूँद भी नहीं।"

"आखिर आप उसे कब तक बुला रही हैं?"

"हम लोगों ने लेक-कोमो में उसे टेलीफोन किया है।" कहते हुए वह बाहर चली गई और कुछ ही क्षणों बाद मिस गेज कमरे में आयी।

"आपने मिस वान केम्पेन से इतना अभद्र व्यवहार क्यों किया?" मेरे लिए कुछ काम करते हुए उसने बड़ी चतुराई से मुझसे पूछा।

"अभद्र व्यवहार करने का मेरा इरादा बिलकुल नहीं था। पर वह भी तो क्रोध में लाल-पीली हो रही थी।"

"वह बता रही थी कि आप उसके साथ बड़ी अकड़ और अशिष्टता से पेश आए।"

"नहीं, मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। किन्तु आप ही बताइए कि बिना डाक्टर के अस्पताल चलाने का क्या अर्थ है?"

"नहीं, डाक्टर आ रहा है। उसे लेक-कोमो में टेलिफोन कर दिया गया है।"

"वहाँ जाकर वह क्या करता है? झील में तैरता है?"

"नहीं-नहीं, वहाँ उसका रुग्णालय (क्लिनिक) है।"

"तब दूसरा डाक्टर क्यों नहीं रखा जाता?"

"चुप! चुप! ऐसा नहीं कहते। धीरज रखिये, वह अभी आ जायेगा।"

मैंने उससे दरबान को बुला देने के लिए कहा। जब वह आया, तो मैंने इटालियन भाषा में उससे शराब की दुकान पर से सिन्ज़ानो (एक शराब) और किआंटी नामक लाल इटालियन शराब की बोतलें और कुछ सन्ध्याकालीन समाचारपत्र लाने के लिए कहा। वह गया और एक समाचारपत्र में लपेटकर उन्हें ले आया। कमरे में आकर उसने उन पर लपेटा हुआ काग़ज़ निकाल दिया। मैंने उससे बोतल का डाट खोलकर शराब की दोनों बोतलें बिस्तर के नीचे रख कर चले जाने के लिए कहा। अब मैं वहाँ अकेला था। बिस्तर पर पड़े-पड़े मैं थोड़ी देर तक समाचारपत्र पढ़ता रहा। मैंने युद्ध-क्षेत्र के समाचार पढ़े, मृत अफ़सरों तथा उन्हें मिले हुए पुरस्कारों के बारे में पढ़ा। फिर मेरा हाथ बिस्तर के नीचे पहुँचा और मैंने सिन्ज़ानो की बोतल उठा ली। बोतल मैंने अपने पेट पर सीधी खड़ी कर दी, ठण्डे-ठण्डे गिलास को भी पेट पर टिका लिया और एक-एक घूँट गले के नीचे उतारने लगा। शराब पीते हुए मैं बोतल को पेट पर टिका कर उसकी पेंदी से वृत्त बनाता रहा और कमरे से बाहर, मकान की छतों पर धीरे-धीरे बढ़ते हुए अन्धकार के आवरण को देखता रहा। छतों के आसपास चिड़ियाँ चक्कर काट रही थीं। कुछ ऊपर उल्लू उड़ रहे थे। यही सब

देखते हुए धीरे-धीरे मैं सिन्ज़ानो की बोतल खाली करता गया। इसी बीच मिस गेज अपने हाथ में अण्डा मिली हुई कुछ गरम बीअर से भरा गिलास लेकर आई। मैंने उसे अन्दर आते देखकर अपनी शराब की बोतल चुपके से पलंग की दूसरी ओर खिसका दी।

"मिस वान केम्पेन ने इसमें कुछ शरी (शराब) भी डलवा दी है।" वह बोली—"आपको उनके सामने इतना मुँहफट नहीं होना चाहिए था। वे अब युवती नहीं हैं और फिर इस अस्पताल की इतनी बड़ी जिम्मेदारी भी तो उन्हीं पर है। श्रीमती वॉकर काफ़ी बूढ़ी है और उनके किसी काम लायक नहीं है।"

"वह बड़ी अच्छी स्त्री है।" मैंने कहा—"कृपया उसे मेरी ओर से धन्यवाद दे दीजिएगा।"

"मैं अभी आपके लिए रात का भोजन लाती हूँ।"

"कोई बात नहीं।" मैंने कहा—"मुझे भूख नहीं लगी है।"

पर वह भोजन की थाली ले आई और उसे पलंग के पास की मेज़ पर रख दिया। मैंने उसे धन्यवाद देते हुए थोड़ा-सा खाना खाया। बाहर अंधेरा छा गया था। आकाश में शत्रु की गतिविधि का पता लगाने के लिए सर्चलाइट अपनी प्रकाश-किरणें फेंक रहा था। कुछ देर तक उन्हें देखते रहने के बाद मैं सो गया। मुझे गहरी नींद आयी। बीच में केवल एक ही बार मैं उठा। वह भी इसलिए कि मैंने एक भयावह स्वप्न देखा था। डर के कारण मैं पसीने में बिलकुल भीग गया था। किन्तु मैंने उस स्वप्न को भूलने का प्रयत्न किया और थोड़ी देर में ही गाढ़ी नींद में डूब गया। प्रातःकाल का प्रकाश फैलने से बहुत पहले ही मेरी आँखें खुल गईं। मुझे मुर्गे की बांग भी सुनाई दी। अनिद्रित अवस्था में ही मैं प्रकाश होने तक अपने बिस्तर पर पड़ा रहा। मुझे बहुत थकावट महसूस हो रही थी; अतः जब दिन का प्रकाश अच्छी तरह फैल रहा था, तब उठने के बदले मैं फिर सो गया।

. १४ .

जब मैं जागा, तो सूर्य का प्रखर प्रकाश सर्वत्र फैल चुका था। क्षणभर के लिए मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं मोर्चे पर हूँ। मैंने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही अपनी टाँगें फैलाईं और उनमें दर्द होने लगा। मैंने सिर घुमा कर उन्हें देखा।

वे अभी भी गन्दी पट्टियों में लिपटी थीं। किन्तु उन्हें देखकर मुझे याद आ गया कि मैं कहाँ हूँ। मैंने घण्टी की डोरी खींची और बाहर बरामदे में बजती हुई घण्टी की घनघनाहट के साथ ही, मुझे किसी के जूतों के रबर के तलों की आवाज़ कमरे के निकट आती हुई सुनाई दी। वह मिस गेज थी। सूर्य के तीव्र प्रकाश में वह रात की अपेक्षा कुछ अधिक उम्र की लग रही थी और उतनी सुन्दर भी नहीं दीख रही थी।

"नमस्ते!" उसने कहा—"आपकी रात तो अच्छी तरह बीती न?"

"जी हाँ, धन्यवाद!" मैंने उत्तर दिया—"क्या यहाँ कोई नाई मिल सकता है?"

"मैं आपको देखने आई थी; किन्तु उस समय आप बिस्तर में इसे लेकर सोए पड़े थे।"

उसने आलमारी खोलकर उसमें से सिन्ज़ानो (शराब) की बोतल निकाली। वह क़रीब-क़रीब खाली थी। "मैंने बिस्तर के नीचे से दूसरी बोतल भी निकाल कर वहीं रख दी है।" उसने कहा—"आपने मुझसे गिलास क्यों नहीं माँग लिया?"

"मैंने सोचा, शायद आप मुझे शराब न पीने दें।"

"मैं भी आपके साथ थोड़ी पी लेती।"

"आप बड़ी भली युवती हैं।"

"आपके लिए अकेले-ही-अकेले शराब पीना ठीक नहीं है।" वह बोली—"आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।"

"अच्छी बात है।"

"आपकी मित्र मिस बर्कले आ गई है।" उसने कहा।

"सच?"

"हाँ, पर मुझे वह अच्छी नहीं लगती।"

"आप उसे पसन्द करने लगेंगी। वह बड़ी अच्छी लड़की है।"

उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा—"मुझे आशा है कि वह एक अच्छी लड़की सिद्ध होगी। क्या आप ज़रा इस ओर हटेंगे? हाँ, बस। मैं आपको नाश्ते के लिए तैयार कर देती हूँ।"

उसने गरम पानी में साबुन मिलाया और कपड़ा भिगोकर मेरे शरीर को पोंछना शुरू किया। "अपने कंधे ज़रा ऊपर रखिए।" वह बोली—"हाँ, बस!"

"क्या नाश्ता करने के पहले कोई नाई मिल सकता है?"

"मैं दरबान को उसे बुलाने के लिए भेज देती हूँ।" वह बाहर जाकर फिर लौट आई। "वह उसे बुलाने गया है" उसने कहा। और अपने हाथ के कपड़े को पानी के बर्तन में डुबाया।

थोड़ी देर में ही दरबान के साथ नाई आ गया। उसकी आयु पचास वर्ष के आसपास थी। उसकी मूँछें ऊपर की ओर मुड़ी हुई थीं। मेरा शरीर पोंछने का काम खत्म हो गया था, अतः मिस गेज चली गई। नाई ने मेरी दाढ़ी पर साबुन लगाया और दाढ़ी बनाना आरम्भ किया। वह बड़ा गम्भीर दिखाई देता था और गुमसुम बैठा हुआ था।

"क्या बात है? तुम इस तरह गुमसुम क्यों हो? क्या तुम कोई खबर नहीं जानते?" मैंने उसे प्रोत्साहन दिया।

"कैसी खबर?"

"कोई भी। शहर की ही कोई खबर!"

"यह युद्ध का समय है।" वह बोला—"हर स्थान पर शत्रु के कान लगे रहते हैं।"

मैंने अपना सिर उठाकर उसकी ओर देखा।

"कृपया अपना चेहरा स्थिर रखिए।" कहते हुए वह फिर अपने काम में लग गया।

"मैं आपको कुछ नहीं बताऊँगा।" वह बोला।

"पर तुम्हें हो क्या गया है?" मैंने पूछा।

"मैं इटालियन हूँ और मैं अपने शत्रु से कभी बात नहीं करता।"

मैंने उससे बात करने का विचार छोड़ दिया। यदि वह सनकी था, तो जितनी जल्दी उसके छुरे के नीचे से मेरी गर्दन छूट जाती, उतना ही अच्छा था। बीच में एक बार मैंने उसकी ओर दोस्ती की नज़रों से देखा। "सँभलिए!" उसने कहा—"छुरा बड़ा तेज़ है।"

दाढ़ी बन जाने पर मैंने उसका मेहनताना चुकाया और इनाम के रूप में आधा लिरा अधिक दिया, किन्तु उसने उसे वापस कर दिया।

"नहीं, मैं नहीं लूँगा। मोर्चे पर नहीं हूँ, तो क्या हुआ; पर हूँ तो इटालियन ही।"

"तब जाओ, भागो यहाँ से!"

"यदि आपकी आज्ञा हो, तो।" उसने बड़ी विनम्रता से कहा और एक समाचारपत्र के टुकड़े में अपना छुरा लपेट कर चला गया। जाते हुए उसने बिस्तर के पास की मेज़ पर, उसे दिए गए तांबे के पाँच सिक्के रख दिये।

मैंने घण्टी बजाई। मिस गेज भीतर आई। "क्या आप मेहरबानी कर के दरबान को बुलाने का कष्ट करेंगी?"

"अभी लीजिये।"

दरबान आया। मैंने देखा कि वह अपनी हँसी दबाने का प्रयत्न कर रहा था।

"यह नाई कुछ सनकी है क्या?"

"नहीं साहब! उसे थोड़ी ग़लतफहमी हो गई थी। वह कोई भी बात अच्छी तरह नही समझता। जब मैंने उससे आपके विषय में कहा, तो वह समझा कि आप आस्ट्रियन अफ़सर हैं।"

"ओह!" मेरे मुँह से निकला।

"हा, हा, हा, हा!" दरबान की हँसी फूट पड़ी—"बड़ा मज़ेदार आदमी था वह। उसने मुझे बताया था, आपकी ओर से ज़रा-सी भी कोई बात होती कि वह....." उसने अपनी गर्दन पर उँगली फिराते हुए इशारा किया।

"हो, हो, हो!" वह हँसी दबाने का प्रयत्न करते हुए बोला—"जब मैं उससे कहूँगा कि आप आस्ट्रियन नहीं हैं—हो, हो, हो, हो!"

"हः हः हः!" मैंने खीझते हुए कर्कश स्वर में दुहराया। "यदि वह मेरा गला काट देता, तो कितना आनन्द आता—क्यों? हो, हो, हो!"

"नहीं साहब। ना, ना। वह तो आस्ट्रियन नाम सुनकर ही बड़ा डर गया था। हो, हो, हा, हा!"

"हो, हो, हो!" मैं गुर्राया— "चलो, भागो यहाँ से!"

वह बाहर भागा। मैंने सुना, वह बरामदे में खड़ा-खड़ा जी खोलकर हँस रहा था। इतने ही में मुझे अपने कमरे की ओर आती हुई किसी के पैरों की आवाज़ सुनाई दी। मैंने द्वार की ओर देखा। मिस बर्कले अंदर आ रही थी।

वह मेरी ओर आई और पलंग से सटकर खड़ी हो गयी।

"कहो प्रियतम!—" वह बोली। वह बड़ी उल्लसित, तारुण्यपूर्ण और अत्यन्त सुन्दर प्रतीत हो रही थी। मैंने अभी तक इतना सौन्दर्य कहीं नहीं देखा था।

"अरे!" मैंने कहा। उससे साक्षात्कार होते ही उसके प्रति मेरा सुप्त प्रेम जाग उठा। मेरे शरीर का रोम-रोम उल्लसित हो उठा। कैथरीन ने द्वार की ओर देखा। वहाँ कोई नहीं था। वह मेरे बिस्तर पर बैठ गयी, मेरे ऊपर झुकी और मुझे उसने चूम लिया। मैंने उसे अपनी ओर खींच लिया और प्रगाढ़ आलिंगन में कसकर उसका चुम्बन ले लिया। एक लम्बे युग के बाद जैसे उसके हृदय की धड़कनें मुझे सुनायी पड़ीं—बिलकुल पास—अपनी धड़कनों के समीप!

"प्रियतमे !" मेरे मुँह से निकला--"क्या तुम्हारा यहाँ आना आश्चर्य की बात नहीं है ?"

"आना कोई कठिन नहीं था। हाँ, यहाँ टिकना कठिन हो सकता है।"

"नहीं, तुम्हें यही रहना होगा।" मैं बोला—"ओह ! तुम कितनी मोहक हो—बिलकुल स्वप्न-सदृश !" मैं उसे देखकर पागल-सा हो उठा था। मुझे जैसे अपने नेत्रों पर ही विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सचमुच वहाँ आ गई है। इसी अर्द्ध स्वप्नावस्था में मै उसे न-जाने कबतक अपने हृदय से लगाये रहा।

"ऊँ-हूँ ! यह सब नहीं।" वह बोली "तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है।" और वह मुझसे अलग होकर दूर बैठ गई।

"मैं ठीक हूँ। आओ भी। यहाँ आओ, मेरे पास।"

"ना, ना। तुम अभी कमज़ोर हो।"

"मैं बिलकुल तन्दुरुस्त हूँ। मान भी जाओ—इस तरह मुझसे दूर मत बैठो।"

"तुम मुझसे प्रेम करते हो ?"

"मै सचमुच तुमसे प्रेम करता हूँ। मैं तुम्हारे पीछे पागल हो गया हूँ—बिलकुल दीवाना। मान जाओ, प्रिये !"

"हमारे दिलों की धड़कनें सुनते हो तुम ?"

"मैं उनकी परवाह नहीं करता। मैं तुम्हें चाहता हूँ। तुम्हारे लिए मैं अधीर हो उठा हूँ—पूर्णतः उन्मत्त !"

"क्या तुम मुझसे सचमुच प्रेम करते हो ?"

"बार-बार वही बात मत दुहराओ। मान जाओ-कैथरीन मेरी, मान भी जाओ मेरी बात, प्रिये!"

"अच्छा; किन्तु क्षणभर के लिए ही।"

"यही सही।" मैंने अधीरतापूर्वक कहा—"द्वार बन्द कर दो।"

"नहीं-नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुम्हे ऐसा नही....."

"आओ भी। बात मत करो। चलो !"

कथरीन बिस्तर के पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। दरवाज़ा खोल दिया गया।

मेरे अंतर का पशुत्व समाप्त हो चुका था और मैं, स्वयं को पहले की अपेक्षा अधिक स्फूर्तिमय अनुभव कर रहा था।

"अब तो तुम विश्वास करते हो कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ?" उसने पूछा।

"ओह, तुम कितनी मोहक हो—कितनी अच्छी!" मैंने उत्तर दिया—"तुम्हें यहीं रहना पड़ेगा। कोई तुम्हें यहाँ से दूसरी जगह नहीं भेज सकता—मुझसे अलग नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे प्रेम में अपने-आपको बिलकुल भूल चुका हूँ।"

"हमें बहुत सावधान रहना पड़ेगा। अभी-अभी जो कुछ हुआ, वह पूरा पागलपन था। हम हमेशा ऐसा नहीं कर सकते।"

"क्यों नही? हम रात मे वैसा कर सकते हैं।"

"फिर भी हमें बहुत सावधानी बरतनी पड़ेगी। दूसरों के सामने तुम्हें अपने-आप पर पूर्ण नियन्त्रण रखना होगा।"

"मैं इसका ध्यान रखूँगा।"

"तुम्हें ध्यान रखना ही पड़ेगा। तुम कितने मधुर हो! तुम मुझसे प्रेम करते हो। करते हो न?"

"इसे मत दुहराओ। तुम नहीं जानती कि इससे मेरे हृदय पर कितनी चोट पहुँचती है!"

"तब मैं तुम्हारा हृदय नहीं दुखाऊँगी। मैं तुम्हें कोई कष्ट नही देना चाहती। अब मुझे जाना है—प्रियतम! सच!"

"लौटने में देर न करना।"

"समय मिलते ही आऊँगी।"

"अच्छा, विदा।"

"विदा—मेरे प्राण!"

वह बाहर चली गयी। ईश्वर जानता है कि मैं उसके प्रेम में नहीं फँसना चाहता था। मैं किसी के भी प्रेम-जाल में नहीं पड़ना चाहता था। किन्तु ईश्वर यह भी जानता है कि मै उसके प्रेम में बँध चुका था। मिलान के उस अस्पताल के एक कमरे में अपने पलंग पर पड़ा हुआ मैं न-जाने क्या-क्या सोचने लगा। मेरे मानस-पटल पर एक साथ हजारों बातें उभर आयीं और तभी मिस गेज ने कमरे के भीतर पैर रखा।

"डाक्टर आ रहा है।" उसने बताया—"लेक-कोमो से उसने टेलीफोन द्वारा ख़बर भेजी है।"

"यहाँ वह कब तक पहुँचेगा?"

"आज तीसरे पहर तक।"

. १५ .

तीसरे पहर तक कोई विशेष बात नहीं हुई। तभी डाक्टर आया। वह शांत स्वभाव का, दुबला-पतला और ठिंगना व्यक्ति था। ऐसा लगा, जैसे युद्ध ने उसे काफ़ी परेशान कर दिया था। उसने बड़ी कोमलता और शिष्टता के साथ पूर्णतया निर्विकार भाव से मेरी जांघ में से लोहे के अनेक छोटे-छोटे टुकड़े निकाले। मेरे उस अंग को चेतनाशून्य बनाने के लिए उसने एक नयी और स्थानीय औषधि का प्रयोग किया, जिसका नाम 'बर्फ़' के नाम से मिलता-जुलता था। औषधि ने मेरे स्नायुओं को बर्फ़-सा जमाकर चेतनाहीन कर दिया। मुझे उस समय तक दर्द भी नहीं मालूम हुआ, जब तक डाक्टर ने उस चेतनाशून्य भाग के नीचे अपनी सलाई, छुरी या चिमटी नहीं घुसेड़ दी। और तब मेरे लिए यह बताना आवश्यक हो गया कि मेरे शरीर का कौन-सा और कितना भाग चेतनाशून्य था। थोड़े ही समय बाद डाक्टर की ढुलमुल नाज़ुकता समाप्त हो गयी। "यदि एक्स-रे लिया जाये, तो ठीक रहेगा।" वह बोला—"इस प्रकार सलाई डालकर टुकड़ों को ढूँढ़ना विशेष लाभप्रद नहीं होगा।"

बड़े अस्पताल में एक्स-रे लिया गया। जिस डाक्टर ने एक्स-रे लिया, वह उत्साहपूर्ण, कार्यकुशल तथा बड़ा हँसमुख था। एक्स-रे लेने की व्यवस्था रोगी के कंधों को ऊपर की ओर रखते हुए इस तरह की गयी थी, जिससे वह स्वयं भी एक्स-रे यंत्र के भीतर से, अपने शरीर में मौजूद कुछ बड़े-बड़े बाहरी पदार्थों को देख सके। तसवीर के प्लेट बाद में हमारे पास भेजे जानेवाले थे। डाक्टर ने मुझसे अपनी जेबी नोटबुक में अपना नाम, सैन्य दल का नाम तथा अपने कुछ उद्‌गार लिख देने का आग्रह किया।

"आपके शरीर में जो बाहरी वस्तुएँ प्रविष्ट हो गई हैं, वे बड़ी ख़तरनाक, गन्दी तथा घातक हैं" उसने बताया—"ये आस्ट्रियन लोग बिलकुल कुतियों की औलाद हैं।" उसने एक भद्दी-सी गाली देते हुए कहा—"आपने युद्ध में कितने आस्ट्रियनों को मारा?"

मैंने यद्यपि एक भी आस्ट्रियन को नहीं मारा था, किन्तु मैं उसे प्रसन्न बनाए रखना चाहता था। अतः मैंने कह दिया कि मैंने बहुत-से आस्ट्रियनों को मौत के घर भेज दिया था।

मेरे साथ मिस गेज थी। डाक्टर ने उसकी कमर में हाथ डालते हुए कहा—

"बड़ी आकर्षक हो तुम—क्लेयोपेट्रा से भी अधिक सुन्दर! समझ में आया कुछ तुम्हारी ? क्लेयोपेट्रा हो तुम-क्लेयोपेट्रा—मिस्र की प्रसिद्ध सम्राज्ञी। ईश्वर की सौगंध—बिलकुल वैसी हो तुम। सच्च !"

हम एम्बुलेन्स द्वारा अपने छोटे-से अस्पताल में लौट आये। कुछ समय बाद, बड़ी मुश्किल से मुझे उठाकर ऊपर ले जाया गया और अपने पलंग पर लिटा दिया गया। एक्स-रे की तसवीरें उसी दिन तीसरे पहर हमारे पास आ गयीं। हमारे यहाँ के डाक्टर ने कहा था कि वह उन्हें निश्चित रूप से तीसरे पहर तक मंगवा लेगा। और उसने जो कहा था, कर दिखाया। मिस कैथरीन बर्कले ने उन्हें मुझे दिखाया। वे एक लाल लिफ़ाफ़े में बन्द थीं। उसने तसवीरों को बाहर निकाला और उन्हें प्रकाश की ओर लेकर खड़ी हो गयी। हम दोनों ने साथ-साथ उन्हें देखा।

"यह तुम्हारी दाहिनी टाँग है।" उसने उँगली से संकेत किया और उस फोटो को लिफ़ाफ़े में रख दिया। "और, यह बायीं टाँग है।"

"उन्हें बन्द कर के रख दो—" मैं बोला—"और मेरे पास आ जाओ, पलंग पर।"

"नहीं—" उसने कहा—"मैं तो क्षणभर के लिए, तुम्हें केवल ये तसवीरें दिखाने आई थी।"

वह बाहर चली गई और मैं बिस्तर पर पड़ा रहा। बहुत गर्मी थी। और मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे तंग आ गया था। मैंने दरबान को पुकारा और उससे, जितने समाचारपत्र मिल सकते थे, सब ले आने के लिए कहा।

पर दरबान के लौटने से पहले ही मेरे कमरे में तीन डाक्टर आये। मैंने देखा है कि जो डाक्टर चिकित्सा-कार्य को अपना व्यवसाय बना लेते हैं, उनका एक-दूसरे के सम्पर्क में बराबर बने रहने तथा आपस में सलाह-मशविरा करते रहने का स्वभाव बन जाता है। वह डाक्टर, जो आपकी पथरी सफलतापूर्वक बाहर निकालने में असमर्थ है, आपको उस चिकित्सक के पास जाने की सलाह देगा, जिसे आपके गले की गिल्टियाँ अच्छी तरह निकालनी नहीं आती। मेरे सामने उस समय तीन ऐसे ही डाक्टर खड़े थे।

"यही वह युवक है।" अस्पताल के डाक्टर ने अपने नाजुक हाथों से इंगित करते हुए कहा।

"कहिए, कैसे हैं आप?" दाढ़ीवाला, ऊँचा किन्तु क्षीणकाय डाक्टर बोला।

तीसरे डाक्टर ने, जिसके पास मेरे एक्स-रे वाला लाल लिफ़ाफ़ा था, कुछ नहीं कहा।

"पट्टियाँ खोली जाएं?" दाढ़ीवाले डाक्टर ने पूछा।

"क्यों नहीं! नर्स, जरा इनकी पट्टियाँ तो खोल डालो।" अस्पताल के डाक्टर ने मिस गेज को आदेश दिया। मिस गेज ने पट्टियाँ उतार दीं। मैंने सिर झुकाकर अपनी टाँगें देखीं। मोर्चे के अस्पताल में, वे हलाल किये हुए मुर्गे की बासी बोटियों के समान दिखायी देती थीं। अब उनपर पपड़ी जम गई थी। घुटना सूजकर काला पड़ गया था और पिण्डली और भीतर धँस गई थी; किन्तु घाव में मवाद नहीं पड़ा था।

"घाव तो बड़ा साफ़ है।" अस्पताल का डाक्टर बोला—"साफ़ भी और अच्छा भी।"

"हूँ!" दाढ़ी वाले डाक्टर ने कहा। तीसरे डाक्टर ने अस्पतालवाले डाक्टर के कंधों के पीछे से अपना सिर कुछ ऊपर उठाते हुए घाव की ओर देखा।

"ज़रा अपना घुटना हिलाइये तो।" दाढ़ीवाले डाक्टर ने कहा।

"मैं ऐसा कर नहीं पाता—दर्द करता है।"

"जोड़ की परीक्षा ली जाये?" दाढ़ीवाले डाक्टर ने प्रश्न किया। उसकी बाँह पर तीन सितारों के साथ एक पट्टी चमक रही थी। इसका अर्थ था कि वह सेना में प्रथम कप्तान था।

"अवश्य।" अस्पताल के डाक्टर ने उत्तर दिया। उन दोनों ने बड़ी सावधानी से मेरा दाहिना पैर पकड़ कर मोड़ा।

"दर्द करता है!" मैंने कहा।

"हाँ, हॅा, थोड़ा-सा और, डाक्टर!"

"बस, बस, यहीं तक मुड़ सकता है मेरा पैर।" मैं बोला।

"घुटना पूरी तरह नहीं मुड़ता।" प्रथम कप्तान ने कहा और सीधा खड़ा हो गया। "क्या मैं एक्स-रे-प्लेटों को एक बार फिर देख सकता हूँ, डाक्टर?" तीसरे डाक्टर ने एक तस्वीर निकालकर उसे दे दी।

"यह नहीं, बायीं टाँगवाली दीजिए।"

"यह बायीं टॅाग की ही तस्वीर है, डाक्टर।"

"आप ठीक कहते हैं। मैं इसे दूसरी ओर से देख रहा था।" उसने तस्वीर लौटा दी। कुछ देर तक वह दूसरी तस्वीर का निरीक्षण करता रहा। "देखते हैं, डाक्टर!" उसने प्लेट में, प्रकाश के विरुद्ध स्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाली एक वृत्ताकार बाहरी वस्तु की ओर संकेत करते हुए कहा। वे कुछ समय तक उस फोटो के परीक्षण में लगे रहे।

"मैं एक ही बात कह सकता हूँ।" दाढ़ीवाले प्रथम कप्तान ने कहा—"यहाँ प्रश्न समय का है—तीन महीने—या कदाचित् छः महीने भी लग सकते हैं।"

"निश्चय ही। पहले घुटने के जोड़ को तर बनाए रखने वाले द्रव पदार्थ (चरबी या तेल) का पुनर्निर्माण होना आवश्यक है।"

"अवश्य, समय का प्रश्न तो है ही। मैं जान-बूझकर, धातुओं के भीतर धँसे हुए टुकड़ों के आसपास झिल्लीदार आवरण तैयार होने से पहले, वर्तमान स्थिति में, घुटना नहीं चीर सकता।"

"मैं आपसे सहमत हूँ, डाक्टर।"

"छः महीने—किस बात के लिए?" मैंने पूछा।

"आपके घुटने का आपरेशन करने से पहले, उसके भीतर धँसे हुए पदार्थों के आसपास झिल्लीदार आवरण तैयार होना ज़रूरी है और इसको छः महीने भी लग सकते है!"

"मैं इस पर विश्वास नहीं करता।" मैं बोला।

"आप अपना घुटना बचाना चाहते हैं या नहीं, मेरे युवक मित्र?"

"नहीं!" मैंने कहा।

"क्या?"

"मैं उसे कटवा डालना चाहता हूँ," मैंने कहा—" जिससे मैं उसके ऊपर लोहे का हुक पहन सकूँ।"

"क्या मतलब है आपका? कैसा हुक?"

"ये केवल मज़ाक कर रहे हैं।" अस्पताल का डाक्टर बोला। उसने बड़ी कोमलता से मेरा कन्धा थपथपाया—"ये, वास्तव में, अपना घुटना बचाना चाहते हैं। बड़े वीर युवक हैं ये। इनकी वीरता के उपलक्ष्य में इन्हें रजत-पदक भेंट करने का प्रस्ताव रखा गया है।"

"मेरी ओर से सैकड़ों बधाइयाँ।" प्रथम कप्तान ने कहा। उसने मुझसे हाथ मिलाया—"मैं तो यही कहूँगा कि सुरक्षा की दृष्टि से ऐसे घुटने को चीरने से पहले आपके लिए छः मास तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करना ही उचित है। हाँ, आपका और कोई मत हो, तो उसका स्वागत किया जाएगा।"

"आपको अनेक धन्यवाद।" मैंने उत्तर दिया। "मैं आपकी सलाह की क़द्र करता हूँ।"

प्रथम कप्तान ने अपनी घड़ी की ओर देखा।

"हमें अब चलना चाहिए—" वह बोला—"अच्छा, मेरी हार्दिक-शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए।"

"मेरी ओर से भी आपके प्रति हार्दिक शुभकामनाएँ तथा अनेक धन्यवाद!" मैंने आभार प्रदर्शित करते हुए कहा। इसके बाद मैंने तीसरे डाक्टर से हाथ मिलाया। "मेरा नाम केप्टन बारिनी है।" उसने कहा। "मुझे लैफ्टिनेण्ट हेनरी कहते हैं।" मैंने उत्तर दिया। और तीनों डाक्टर कमरे से बाहर चले गये।

"मिस गेज!" मैंने पुकारा। वह भीतर आई। "कृपया एक मिनट के लिए अपने डाक्टर साहब को तो बुलाइए।"

डाक्टर हाथ में अपनी टोपी लिए हुए आया और मेरे पलंग के पास आकर खड़ा हो गया। "आपने मुझे बुलाया?" उसने पूछा।

"जी, हाँ। मैं इस शल्य-क्रिया के लिए छः मास तक नहीं ठहर सकता। हे भगवान्! क्या आप कभी छः माह तक बिस्तर में पड़े रहे हैं डाक्टर?"

"आप दिन-रात बिस्तर में थोड़े ही पड़े रहेंगे। पहले आपको अपने घावों को कुछ महीने तक सूर्य के प्रकाश में खुला छोड़ना पड़ेगा। उसके बाद आप बैसाखियों पर घूम-फिर सकते हैं।"

"छः महीने तक! और उसके बाद शल्य-क्रिया?"

"यही सुरक्षित मार्ग है। पहले भीतर धँसे हुए बाहरी पदार्थों के आसपास झिल्लीदार आवरण का निर्माण होने देने के लिए हमें कुछ समय देना ही पड़ेगा। फिर जोड़ों को तर बनाए रखने वाला द्रव पदार्थ तैयार होगा। और उसके बाद ही घुटना खोलना उचित होगा।"

"क्या आप स्वयं ऐसा ही समझते हैं कि मुझे इतने लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी?"

"हाँ, यही एक ऐसा रास्ता है जिसमें किसी ख़तरे की आशंका नहीं।"

"यह प्रथम कप्तान कौन है?"

"वह मिलान का एक अत्यन्त कुशल चिकित्सक है।"

"वह प्रथम कप्तान है। क्यों?"

"हाँ; किन्तु है वह बहुत होशियार!"

"मैं एक प्रथम कप्तान को इस तरह अपनी टाँगों के साथ खिलवाड़ करने देने की मूर्खता नहीं कर सकता। यदि वह सचमुच कार्यकुशल होता, तो उसे अब तक मेजर बना दिया जाता। ये प्रथम-कप्तान कैसे होते हैं, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ, डाक्टर!"

"वह इतना योग्य है कि मेरी पहचान के जितने भी चिकित्सक हैं, उनकी सलाह की अपेक्षा मैं उसी का निर्णय स्वीकार करूँगा।"

"क्या कोई अन्य चिकित्सक भी मेरे घावों को देख सकता है?"

"क्यों नहीं—यदि आप चाहें, तो ऐसा हो सकता है। किन्तु मैं स्वयं डाक्टर बारेल्ला का ही मत स्वीकार करूँगा।"

"क्या आप किसी दूसरे सर्जन को बुलाकर नहीं दिखा सकते?"

"मैं डा. वॅलेन्टाइनी को आने के लिए कह दूँगा।"

"ये महाशय कौन हैं?"

"बड़े अस्पताल के सर्जन!"

"सुंदर, यह बहुत अच्छा रहेगा! समझे डाक्टर, आप? मैं भला छः माह तक बिस्तर में कैसे पड़ा रह सकता हूँ?"

"आप सदा बिस्तर में कहाँ रहेंगे। पहले आप सूर्य-चिकित्सा प्राप्त करेंगे। बाद में आप कुछ व्यायाम प्रारम्भ कर सकते हैं। उसके बाद जब घावों के निकट आवरण तैयार हो जायेगा, तब हम आपके घाव की शल्य-क्रिया कर देंगे।"

"किन्तु मैं छः माह तक नहीं ठहर सकता।"

अपनी नाजुक उँगुलियों को अपनी टोपी पर फैलाते हुए डाक्टर मुस्कराया—"आप मोर्चे पर लौटने के लिए इतने उत्सुक हैं?"

"क्यों नहीं?"

"बड़ा सुन्दर विचार है आपका।" वह बोला—"आप एक संभ्रांत युवक हैं।" वह मुझपर झुका और उसने मेरे कपाल का बड़ी कोमलता से चुम्बन ले लिया। "मैं बॅलेन्टाइनी को बुलवा भेजूँगा। आप चिंतित और उत्तेजित मत होइए। सुशील बने रहिए।"

"क्या आप कुछ पीना चाहेंगे?" मैंने पूछा।

"नहीं, धन्यवाद! मैं मादक द्रव्यों का कभी सेवन नहीं करता।"

"एक गिलास तो लीजिए।" मैंने गिलास मँगाने के लिए घण्टी बजाकर दरबान को बुलाया।

"नहीं, नहीं, धन्यवाद! वे लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

"नमस्ते—" मैंने कहा।

"नमस्ते!"

दो घण्टे बाद डा. बॅलेन्टाइनी ने कमरे में प्रवेश किया। वह बड़ी जल्दी में प्रतीत होता था। उसकी मूँछों की नोकें सीधी ऊपर उठी हुई थीं। वह मेजर

था। उसका चेहरा साँवला था और वह सदा हँसता रहता था।

"यह बला तुमने कैसे मोल ले ली?" उसने पूछा—"ज़रा मुझे एक्स-रे की तसवीरें तो दिखाओ। हॉ, हॉ, ठीक। अरे, तुम तो बिलकुल एक बकरे-जैसे स्वस्थ दीख रहे हो। यह सुन्दर युवती कौन है?" उसने कैथरीन की ओर संकेत करते हुए कहा—"तुम्हारी प्रेमिका है न? मैंने भी यही सोचा था। यह युद्ध भी कितना नृशंस है? है, न? कैसा लगता है तुम्हें? तुम बहुत अच्छे लड़के हो! मैं तुम्हारा पैर नये-से-भी-नया बना दूँगा। कष्ट हो रहा है क्या? शर्त बद लो, यदि कष्ट होता हो तो। ये डाक्टर भी कैसे हैं? कैसे पसन्द करते हैं ये तुम्हें कष्ट देना? अभी तक इन्होंने तुम्हारे लिए क्या किया? क्या तुम्हारी प्रेमिका इटालियन बोल लेती है? उसे इटालियन सीख लेना चाहिए। कितनी मोहक लड़की है? मैं उसे इटालियन सिखा सकता हैं। मैं स्वयं यहॉ उसका रोगी बन जाऊँगा। मगर नहीं, जब तुम्हारे संतान पैदा होगी, उस समय मैं तुम्हारी प्रेमिका का सब प्रसवकार्य मुफ्त में कर दूँगा, हूँ! क्या यह सारी बातें समझती है? यह तुम्हें बड़ा योग्य व्यक्ति बना देगी—ठीक अपनी ही तरह योग्य और आकर्षक! हॉ, अब ठीक है। कोई हर्ज़ नहीं। कितनी आकर्षक लड़की है! इससे पूछो कि क्या यह आज रात को मेरे साथ भोजन करना स्वीकार करेगी? नहीं, मैं इसे तुमसे अलग नहीं करूँगा।" और तब कैथरीन की ओर उन्मुख होते हुए उसने कहा—"धन्यवाद, अनेक धन्यवाद मिस! बस, ठीक है।"

"बस, मैं इतना ही जानना चाहता था।" उसने मेरा कन्धा थपथपाया—"पट्टियाँ पड़ी रहने दो।"

"क्या आप थोड़ी शराब पीयेंगे, डा. वॅलेन्टाइनी?"

"शराब? शौक से। एक बार नहीं, दस बार। कहाँ हैं बोतलें?"

"अलमारी में। मिस बर्कले निकाल लायेंगी।"

"खुश रहो—जीओ! तुम भी खुश रहो मिस—कितनी प्रिय लड़की है... मैं तुम्हारे लिए इससे भी अच्छी कॉग्नेक लेता आऊँगा।" उसने अपनी मूँछें पोंछते हुए कहा।

"आपका क्या खयाल है? मेरी शल्य-क्रिया कब की जा सकती है?"

"कल सबेरे। उससे पहले नहीं। शल्य-क्रिया के पहले तुम्हारा पेट बिलकुल खाली किया जाना चाहिए—तुम्हारे शरीर में कोई भी विकार नहीं रहे। मैं नीचे, उन वृद्ध देवीजी से मिलकर उन्हें यथोचित आदेश दिए देता हूँ। अच्छा,

नमस्ते! कल सबेरे फिर मिलूँगा। तुम्हारे लिए इससे भी अच्छी फ्रेंच शराब लेता आऊँगा। तुम यहाँ बिलकुल आराम से हो। अच्छा, कल तक के लिए विदा। गहरी नींद सोओ। शीघ्र तुमसे फिर मिलूँगा।" उसने द्वार पर से हाथ हिलाया। उसकी मूँछें सीधी ऊपर उठ गई थीं। उसका साँवला मुख मुस्करा रहा था। उसकी बाँह पर एक नन्हीं डिब्बी के भीतर एक चमकता हुआ सितारा हँस रहा था; क्योंकि वह मेजर था।

• १६ •

उस रात बरामदे की ओर के दरवाज़े से, जहाँ से हम नगर की छतों पर उतरती हुई रात का स्वागत किया करते थे, हमारे कमरे में एक चमगादड़ घुस आया। रात्रि के बिखरे मन्द प्रकाश के सिवा कमरे में अन्य कोई प्रकाश नहीं था, वह पूर्णतः अंधकारमय था। चमगादड़ निडर होकर इस प्रकार चक्कर काटता रहा जैसे वह किसी मुक्त वातावरण में ही हो। हम लेटे हुए उसे देखते रहे और मेरे खयाल से उसने हमें नहीं देखा था; क्योंकि हम बिलकुल दम साधे पड़े थे। जब चमगादड़ उड़ कर कमरे से बाहर निकल गया, तब हमने आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक, शत्रु की गतिविधि का पता लगाने वाली प्रकाश-किरण को घूमते हुए देखा। पर वह प्रकाश-पुंज विशाल गगन का एक चक्कर लगाकर विलीन हो गया और पुनः अंधेरे ने अपनी चादर फैला दी। तभी हवा का एक तेज़ झोंका आया। हमने बगल की छत पर वायुयान पर निशाना साधनेवाले सैनिकों को आपस में बातें करते हुए सुना। ठंड होने के कारण वे बिना आस्तीनवाले लबादे पहने हुए थे। मुझे इस बात की चिन्ता हो रही थी कि कहीं कोई ऊपर, इस ओर न आ निकले। किन्तु कैथरीन ने मुझे बताया कि सब लोग सो चुके थे। थोड़ी देर बाद एक-दूसरे के प्रगाढ़ आलिंगन में हम सो गए और जब मेरी नींद खुली, तो मैंने देखा कि कैथरीन वहाँ नहीं थी। तभी मैंने उसे बरामदे में चलते हुए सुना। द्वार खुला और वह मेरे पलंग पर लौट आई। उसने बताया कि वह नीचे गई थी। सब लोग सो रहे थे। डरने की कोई बात नही थी। वह मिस वॉन कैम्पेन के बंद दरवाज़े के बाहर तक गई थी और उसके गाढ़ी नींद में होने का विश्वास कर के लौटी थी। वह अपने साथ कुछ पतले-कुरकुरे बिस्कुट भी ले आई थी। उन्हें

खाकर हमने थोड़ी शराब पी। हम बहुत भूखे थे; किन्तु उसने मुझसे कहा कि जो-कुछ मैं खाऊँगा, शल्य-क्रिया के लिए उसे सबेरे तो बाहर निकालना ही पड़ेगा, अतः मेरा न खाना ही ज्यादा अच्छा रहेगा। सबेरे जब कुछ-कुछ उजेला छा रहा था, तो मैं सो गया। जब मैं उठा, तो मैंने देखा कि वह फिर चली गई थी। इस बार वह जब कमरे में आयी, तो बड़ी स्फूर्तिमय और आकर्षक लग रही थी। वह पलंग पर बैठ गई। जब उसने मेरे मुँह में तापमापक यंत्र रखा, तब सूर्य की किरणें सर्वत्र फैलने लगी थीं। प्रकाश-किरणों के दिखायी देते ही हमने छत पर पड़ी हुई ओस की बूँदों को देखा और साथ ही बगल की छत से उठकर कॉफी की सोंधी गंध वहाँ तक आ पहुँची।

"यदि हम कहीं घूमने जा सकें, तो कितना आनन्द आये।" कैथरीन ने अपनी इच्छा व्यक्त की—"अगर हमारे पास पहियेदार कुर्सी होती, तो मैं उसमें तुम्हें घुमा लाती।"

"किन्तु मैं उसमें बैठूँगा कैसे?"

"हम सब कर लेंगे।"

"तब हम बाहर उद्यान में जा सकते हैं और वहाँ नाश्ता भी कर सकते हैं।" मैंने खुले हुए द्वार से बाहर झाँकते हुए कहा।

"पर सच तो यह है—" उसने कहा, "कि अब मुझे आपके मित्र डा. वॅलेन्टाइनी से मिलने के लिए आपको तैयार कर देना चाहिए।"

"मेरे विचार से वह बड़े अच्छे स्वभाव का व्यक्ति है।"

"तुमने जितना उसे पसन्द किया है, उतना मैंने नहीं। किन्तु मेरी धारणा के अनुसार भी वह एक अच्छा आदमी है।"

"बिस्तर पर बैठ जाओ, कैथरीन। आओ भी।" मैंने आग्रह किया।

"नहीं, अब नहीं। क्या हमने अभी-अभी एक बड़ी प्यार-भरी रात नहीं बिताई है?"

"क्या तुम आज भी रात की ड्यूटी पर रह सकती हो?"

"आशा तो है। किन्तु आज तुम्हें मेरी ज़रूरत ही नहीं होगी।"

"क्यों नहीं?"

"देख लेना स्वयं। तुमने अभी तक शल्य-क्रिया का अनुभव नहीं किया है। इसी से तुम नहीं जानते कि तुम किस स्थिति में रहोगे।"

"मैं बिलकुल ठीक रहूँगा।"

"तुम अस्वस्थ रहोगे और तब मेरी उपस्थिति तुम्हारे लिए कोई अर्थ नहीं रखेगी।"

"तब, इसी समय आ जाओ।"

"नहीं"—वह बोली—"मुझे अभी तुम्हारा चार्ट तैयार करना है, प्रियतम! और तुम्हारे आपरेशन की सब व्यवस्था भी करनी है।"

"तुम मुझे सच्चे हृदय से प्रेम नहीं करतीं, अन्यथा तुम अवश्य मेरे पास आतीं।"

"तुम कितने भोले हो!" उसने मेरा चुम्बन ले लिया—"चार्ट तो खैर मैं बना लूँगी। तुम्हारा तापक्रम तो सदा सामान्य रहता है। बड़ा प्यारा है तुम्हारा तापक्रम!"

"किन्तु तुम्हारी तो प्रत्येक वस्तु प्रिय है।"

"अरे नहीं, तुम्हारा तापक्रम सचमुच बहुत सुंदर है। मुझे उस पर गर्व है।"

"हो सकता है, हमारी सभी सन्तानों का तापक्रम भी बड़ा अच्छा रहे।"

"यह भी तो हो सकता है कि हमारे बच्चों का तापक्रम पशुओं-जैसा हो!"

"वेलेन्टाइनी के लिए मुझे तैयार करने के लिए तुम्हें क्या-क्या करना है?"

"कुछ विशेष नहीं। किन्तु जो-कुछ करना है, वह बड़ा अप्रिय है।"

"काश! तुम्हें यह सब नहीं करना पड़ता।"

"नहीं-नहीं। मैं किसी दूसरे को तुम्हारा स्पर्श तक नहीं करने देना चाहती। मैं सचमुच मूर्ख हूँ। यदि कोई और तुम्हें छू लेता है, तो मेरे तन-बदन में आग-सी लग जाती है।"

"फर्ग्यूसन के स्पर्श करने पर भी?"

"विशेषतः फर्ग्यूसन, मेज तथा उस दूसरी परिचारिका के द्वारा। क्या नाम है उसका?"

"वॉकर?"

"हाँ-हाँ, वही। अब यहाँ बहुत-सी परिचारिकाएँ हो गई हैं। कुछ और रोगियों का आना आवश्यक है, अन्यथा हम लोगों को यहाँ से जाना पड़ेगा। इस समय यहाँ चार परिचारिकाएँ हैं।"

"शायद कुछ रोगी और आ जाएं। यहाँ इतनी परिचारिकाओं का होना ज़रूरी है। अस्पताल भी तो काफ़ी बड़ा है।"

"मुझे आशा है कि कुछ और रोगी आ जायेंगे। यदि मुझे यहाँ से कहीं और भेज दिया गया, तो फिर मेरा क्या होगा? क्या करूँगी मैं? और यदि

अधिक रोगी यहाँ न भेजे गए, तो अधिकारी-वर्ग निश्चय ही मुझे अन्यत्र भेज देगा।"

"तब मैं भी चल दूँगा।"

"पागल मत बनो। अभी तुम कहीं नहीं जा सकते। मगर हाँ, तुम शीघ्र ही स्वस्थ हो जाओ, प्रियतम! तब हम कहीं और चल देंगे।"

"और उसके बाद?"

"उसके बाद कदाचित् युद्ध भी समाप्त हो जाए। युद्ध हमेशा तो नहीं चल सकता।"

"मैं अच्छा हो जाऊँगा।" मैंने कहा—"बॅलेन्टाइनी मेरी उचित व्यवस्था कर देगा।"

"अपनी ऊपर उठी हुई मूँछों की लाज रखने के लिए उसे कुछ तो करना ही चाहिए। और हाँ प्रियतम, जब तुम्हें बेहोशी की दवा सुंघायी जाए, तब तुम किसी अन्य वस्तु के विषय में सोचना—हम दोनों के विषय में नहीं। जानते हो क्यों? बेहोशी की अवस्था में मनुष्य बहुत बक-झक करने लगते हैं—अपने अनेक भेद खोल देते हैं।"

"तब मैं किसके विषय में सोचूँ?"

"किसी भी विषय में। हमें छोड़कर अन्य किसी के भी बारे में। अपने सम्बन्धियों के विषय में अथवा किसी अन्य लड़की के विषय में।"

"ना!"

"तब अपनी प्रार्थनाएँ ही दुहराना। उससे तुम्हारे अन्तःकरण पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।"

"शायद मैं बड़बड़ाऊँ ही नहीं।"

"यह भी सम्भव है। कई आदमी बेहोशी में नहीं बोलते।"

"मैं भी नहीं बोलूँगा।"

"व्यर्थ की आत्मप्रशंसा मत करो, प्रियतम! कृपा करके ऐसा मत करो। तुम इतने मधुर हो कि तुम्हें स्वयं अपनी प्रशसा करने की आवश्यकता ही नहीं है।"

"अच्छा, मैं एक शब्द भी मुँह से नही निकालूँगा, बस।"

"तुम फिर बहक रहे हो, प्रिय! तुम जानते हो कि तुम्हें आत्मस्तुति नहीं करनी चाहिए। जब डाक्टर लोग तुमसे गहरी साँस लेने के लिए कहें, तो तुम और कुछ नहीं करना—केवल मन-ही-मन अपनी प्रार्थना या कविता-पाठ अथवा कुछ और सोचना प्रारम्भ कर देना। उस स्थिति में तुम बड़े आकर्षक

दिखायी दोगे और मैं तुम पर जी-भरकर अभिमान कर सकूँगी। यों तो मुझे तुम पर गर्व है ही। तुम्हारा तापक्रम कितना सुंदर है? जब तुम एक नन्हे-मुन्ने के समान तकिये के आसपास भुजा लपेटकर नींद में डूब जाते हो और सोचते हो कि तुम्हारे बाहुपाश में तकिया नहीं, मैं हूँ अथवा कोई दूसरी लड़की-कोई सुन्दर इटालियन युवती, तब तुम कितने प्रिय लगते हो!"

"नहीं, दूसरी कोई युवती नही, केवल तुम।"

"हाँ-हाँ, मैं ही—निश्चित रूप से मैं। ओह! मैं तुमसे कितना प्रेम करती हूँ। वॅलेन्टाइनी तुम्हारी टॉग को पुनः सुंदर-स्वस्थ रूप प्रदान कर देगा। मुझे प्रसन्नता है कि मैं यह सब दुःखद दृश्य देखने के लिए वहाँ उपस्थित नहीं रहूँगी।"

"तब क्या तुम आज रात में काम पर रहोगी?"

"हाँ; किन्तु तुम्हें इसकी बिलकुल खबर ही नहीं रहेगी।"

"धीरज रखो, आप ही जान जाओगी!"

"हाँ, अब ठीक है प्राण, तुम अब भीतर-बाहर दोनों ओर साफ़ हो गये। सच बताओ, तुमने आज तक कितनी युवतियो से प्रेम किया है?"

"किसी से नहीं।"

"मुझसे भी नहीं।"

"तुम्हारी बात अलग है-तुमसे मुझे प्रेम है!"

"और कितनी युवतियो से तुम्हें प्रेम है? सच बताना?"

"एक से भी नहीं।"

"तुम कितनों के साथ—क्या कहते हो तुम लोग उसे?—रात बिता चुके हो?"

"किसी के साथ भी नहीं।"

"तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो न?"

"हाँ।"

"ठीक है। इसी प्रकार झूठ बोलते रहो। मैं भी तुमसे यही चाहती हूँ। क्या वे सुंदर थीं?"

"मैं किसी के साथ रहा ही नही।"

"क्या वे बड़ी आकर्षक थीं?"

"मैं भला कैसे कह सकता हूँ?"

"तुम पूर्ण रूप से मेरे हो— केवल मेरे! यह नग्न सत्य है—और यह भी

कि तुम कभी किसी और के नहीं थे। यदि तुम कभी किसी के रहे भी हो, तो मैं उसकी तनिक चिन्ता नहीं करती। मैं तुम्हारी उन लड़कियों से नहीं डरती। किन्तु मुझसे उनके विषय में कभी कुछ मत कहना। एक बात पूछूँ? जब मनुष्य किसी युवती के साथ रात व्यतीत करता है, तब वह युवती उसे यह कब बताती है कि उसे उसका कितना मूल्य चुकाना पड़ेगा?"

"मैं नहीं जानता।"

"तुम सचमुच नहीं जानते? क्या वह कभी यह कहती है कि वह उसे प्यार करती है? मुझे बताओ, प्राण! मैं इसे जानना चाहती हूँ?"

"हाँ, यदि पुरुष उससे यह कहलाना चाहता है, तो वह कह देती है।"

"क्या पुरुष भी कभी यह कहता है कि वह उससे प्रेम करता है? बताओ न? बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रश्न है यह।"

"यदि उसकी इच्छा हुई, तो वह वैसा कह देता है।"

"पर तुमने कभी ऐसा नहीं कहा। है न, सच?"

"हाँ, मैंने कभी नहीं कहा!"

"नहीं, यह सच नहीं है। दया कर सच-सच बताओ।"

"सच ही कह रहा हूँ।" मैं झूठ बोला।

"तुम ऐसा नहीं करोगे।" वह बोली—"मुझे विश्वास है, तुम ऐसा नहीं करोगे। ओह, मैं तुमसे बेहद प्रेम करती हूँ—बेहद, प्रियतम!"

बाहर, सूर्य घरों की छत पर चढ़ चुका था और मैं गिरजाघरों के शिखर को सूर्य के निरभ्र प्रकाश में चमकते हुए देख रहा था। मेरा पेट तथा शरीर का ऊपरी भाग पूरी तरह साफ़ किया जा चुका था। बस, डाक्टर की प्रतीक्षा की जा रही थी।

"और यह भी न?" कैथरीन ने कहा "वह जो—कुछ उससे कहलाना चाहता है, वही वह कह देती है?"

"हमेशा नहीं।"

"किन्तु मैं कह दूँगी। तुम जो कहलाना चाहोगे, वही मैं कह दूँगी—जो तुम्हारी इच्छा होगी, मैं वही करूँगी। और तब किसी अन्य युवती से मिलने की तुम्हारी इच्छा ही नहीं होगी। बोलो होगी, इच्छा?" उसने मेरी ओर बड़े प्रेम से देखा। "मैं तुम्हारी सभी इच्छाओं की पूर्ति करूँगी; तुम्हारे कहने के अनुसार ही आचरण करूँगी और तभी मैं अपने जीवन में पूर्णतः सफल बन सकूँगी। बन सकूँगी न?"

"अवश्य।"

"अब, जब कि तुम पूरी तरह तैयार हो चुके हो, मुझे क्या करने के लिए कहते हो?"

"बिस्तर पर फिर से आ जाओ।"

"अच्छी बात है, आ जाऊँगी।"

"ओह प्रिये, हृदयेश्वरी!" मैं प्रसन्न हो उठा।

"देखा तुमने!" वह बोली—"तुम जो चाहते हो, वही करती हूँ न मैं!"

"तुम सचमुच बहुत प्रिय हो!"

"ना, मुझे स्वयं संदेह है कि मैं इस व्यापार में अभी उतनी कुशल नहीं बन पायी हूँ।"

"तुम अत्यंत मधुर हो!"

"जो तुम चाहते हो, मैं भी वही चाहती हूँ। मुझमें 'मैं' नाम की अब कोई चीज़ नहीं रह गई है। मैंने स्वयं का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया। अब तो जो तुम हो, वही मैं हूँ।"

"मेरी जीवन-सुधा!"

"मैं अच्छी हूँ, हूँ न? क्या हम दोनों की यह एकात्मता, हमारी एकरूपता सुखमय नहीं है? अब तो तुम अन्य किसी युवती को नहीं चाहते? नहीं न?"

"नहीं।"

"देखा तुमने? मैं अच्छी हूँ न? जो तुम चाहते हो, वही करती हूँ मैं।"

. १७ .

शल्य-क्रिया के बाद जब मैं होश में आया, तो मुझे ऐसा आभास हुआ कि मैं अपने आपे से बाहर नहीं हुआ था। कोई भी व्यक्ति वस्तुतः ऐसी स्थिति में मन पर अधिकार नहीं खो बैठता। उस समय केवल गला घुटता-सा प्रतीत होता है—मृत्यु के समय की घुटन नहीं। वह तो केवल रासायनिक द्रव्यों के प्रयोग से उत्पन्न घुटन होती है। इसलिए उसका अनुभव नहीं होता—वह कष्ट-प्रद नहीं प्रतीत होता। बाद में शराब भी पी ली जाये, तो कोई हानि नहीं। हानि केवल इतनी ही होती है कि जब उलटी हो जाती है, तो पित्त को छोड़कर और कुछ बाहर नहीं निकलता और तब तबीयत घबराने लगती है—कुछ भी

अच्छा नहीं लगता। मैंने देखा कि मेरे पलंग के एक किनारे रेत से भरे हुए थैले रखे थे। ये थैले पलंग से लगी हुई नलियों पर रखे थे। थोड़ी देर बाद मिस गेज अंदर आई। "दर्द कैसा है अब?" उसने पूछा।

"पहले से ठीक है।" मैंने उत्तर दिया।

"उसने आपके घुटने की बड़ी आश्चर्यजनक शल्य-क्रिया की।"

"कितना समय लगा?"

"ढाई घण्टे।"

"मैंने कोई मूर्खतापूर्ण बक-झक तो नहीं की?"

"एक शब्द भी नहीं। अब आप बातें मत कीजिए। मौन पड़े रहिए।"

बाद में मैं स्वयं को काफ़ी अस्वस्थ अनुभव करने लगा। कैथरीन का कथन सत्य था। रात में मुझे बिलकुल होश नहीं रहा कि रात की ड्यूटी पर मेरे पास कौन था और कौन नहीं?

अस्पताल में अब तीन और रोगी आ गए थे। जॉर्जिया में, रेड-क्रॉस में काम करनेवाला मलेरिया से पीड़ित एक दुबला-पतला युवक—बड़ा अच्छा व्यक्ति था बेचारा—दूसरा, एक और दुबला-पतला व्यक्ति—न्यूयॉर्क-निवासी, जो मलेरिया तथा पाण्डुरोग से पीड़ित था। तीसरा रोगी एक बड़ा सुंदर लड़का था—उसने एक बम को अपने पास स्मृति के रूप में सहेजकर रखना चाहा था। इस इच्छा से प्रेरित होकर उसने बम का विस्फोट करनेवाली प्रज्वलन-नलिका के पेंच को खोलने का दुस्साहस किया था। बम घातक पदार्थों, धातुओं के टुकड़ों आदि से भरा था और भयानक रूप से विस्फोटक था। विस्फोटक तथा घातक पदार्थों से भरे ऐसे बमों का उपयोग आस्ट्रियन सेना पर्वतीय क्षेत्र में किया करती थी। इसके अग्रभाग में यह विशेषता थी कि बम के फटने पर उसकी नली बाहर आ जाती थी; किन्तु उसका भीषण-विस्फोट किसी वस्तु के संसर्ग में आने पर ही होता था।

परिचारिकाएँ कैथरीन बर्कले को बहुत चाहती थीं; क्योंकि वह अनिश्चित काल तक रात की ड्यूटी करने के लिए तैयार थी। मलेरिया-पीड़ितों की उसे कोई अधिक देख-भाल नहीं करनी पड़ती थी। जिस व्यक्ति ने बम के अग्रभाग को खोलने का प्रयत्न किया था, वह हमारा मित्र बन चुका था; पर वह भी, जब तक आवश्यक न हो, नर्स (मिस बर्कले) को बुलाने के लिए रातमें कभी घण्टी नहीं बजाया करता था। हाँ, ड्यूटी ख़त्म होने पर हम दोनों हमेशा ही साथ रहते थे। मैं कैथरीन से बेहद प्रेम करने लगा था। वह भी मुझसे बहुत प्यार करती

थी। दिन में मैं पड़े-पड़े सो जाया करता। जब मैं जागता रहता तो हम दोनों एक-दूसरे को पत्र लिखा करते और उन्हें फर्ग्यूसन के हाथ भिजवा देते। फर्ग्यूसन बड़ी नेक लड़की थी। मुझे उसके विषय में कुछ अधिक मालूम नहीं था। मैं केवल इतना ही जानता था कि उसका एक भाई ५२-वें सैन्य-दल में था और दूसरा मेसोपोटामिया में। मैं यह भी जानता था कि वह कैथरीन बर्कले के प्रति बड़ी उदार थी।

एक बार मैंने उससे पूछा—"तुम हम लोगों की शादी में आओगी न, फर्गी?"

"तुम दोनों की कभी शादी ही नहीं होगी।" उसने उत्तर दिया।

"होगी—अवश्य होगी।"

"नहीं—नहीं होगी!"

"क्यों नहीं?"

"शादी के पहले ही तुम दोनों झगड़ पड़ोगे।"

"किन्तु हम तो कभी लड़ते ही नहीं हैं।"

"लड़ने का समय अभी आया नहीं।"

"ना, हम कभी नहीं लड़ सकते।"

"तब तुम खत्म हो जाओगे—मर जाओगे! लड़ो या मरो—यही तो आदमी करता है। वह शादी कहाँ करता है।"

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लेना चाहा। "मुझे मत पकड़ो—मत छुओ मुझे!" वह बोली—"मैं रो नहीं रही हूँ। हो सकता है, तुम दोनों नहीं झगड़ो। पर तुम्हारे कारण वह किसी विपत्ति में न फँस जाये, इसका पूरा ध्यान रखना। तुमने उसे ज़रा भी कष्ट पहुँचाया, तो मैं तुम्हारी जान ले लूँगी, समझे?"

"नहीं, मैं उसे कभी कोई तकलीफ़ नहीं दूँगा।"

"अच्छा, तब मैंने जो कहा, उसे भूलना मत। मुझे विश्वास है कि तुम उससे अच्छा व्यवहार करोगे। सुख-शान्ति से जीवन बिताओगे।"

"हम तो अभी भी सुख-शान्ति से रह रहे हैं।"

"तब आगे भी उससे लड़ना मत और उसे किसी गढ़े में न गिरा देना।"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

"अच्छी तरह विचार लो। मैं तुम्हें सावधान किए देती हूँ। मैं नहीं चाहती कि वह किसी युद्ध-कालीन वर्णसंकर सन्तान को लिए-लिए घूमे।"

"तुम बड़ी भली लड़की हो, फर्गी!"

"नहीं, मैं भली नहीं हूँ। मेरी चापलूसी करने का प्रयत्न मत करो। तुम्हारी टाँग कैसी है?"

"अब तो काफ़ी अच्छी है।"

"और सिर, सिर कैसा है?" उसने अपनी उँगलियों से मेरे सिर का स्पर्श किया। उसके स्पर्श में एक विचित्र चेतना थी—ऐसी चेतना, जो पैर के सुन्न हो जाने पर अनुभव होती है।"

"मुझे सिर की कोई विशेष चिन्ता नहीं है।" मैं बोला।

"सिर पर इस तरह का आघात तुम्हें पागल भी बना सकता है। इसकी भी तुम्हें कोई चिंता नहीं है?"

"नहीं।"

"तुम बड़े भाग्यवान् युवक हो! क्या तुमने पत्र पूरा कर लिया? मैं नीचे जा रही हूँ।"

"यह रहा।" मैंने कहा।

"तुम्हें कुछ दिनों के लिए उसे रात की ड्यूटी करने से मना कर देना चाहिए। वह दिनोंदिन अधिक थकावट का अनुभव कर रही है।"

"अच्छी बात है। मैं कहूँगा।"

"मैं उसके स्थान पर रात की ड्यूटी करने को तैयार हूँ; पर वह मुझे करने नहीं देगी। अन्य परिचारिकाओं को तो खुशी है कि उन सबके बदले वह रात-ड्यूटी करती है। तुम्हें कुछ समय तक उसे आराम करने का मौक़ा तो देना चाहिए।"

"अवश्य।"

"मिस वॉन कैम्पेन कह रही थीं कि तुम हमेशा दिन चढ़े तक सोए रहते हो।"

"वह तो कहेगी ही।"

"अच्छा हो, यदि तुम बर्कले को कुछ समय तक रात में अपने से अलग रहने दो।"

"मैं चाहता हूँ कि वह रहे।"

"नहीं, तुम नहीं चाहते। किन्तु यदि तुम उसे अपने से दूर रहने पर राजी कर सके, तो इसके लिए मैं तुम्हारा आदर करूँगी।"

"मैं उसे मजबूर करूँगा।"

"मुझे विश्वास नहीं आता।" उसने पत्र लिया और बाहर निकल गई। मैंने घण्टी बजाई और क्षणभर बाद ही, मिस गेज अन्दर आई।

"क्या बात है?"

"मैं ज़रा आपसे कुछ बात करना चाहता था। क्या आपकी राय में मिस बर्कले का कुछ दिनों तक रात की ड्यूटी छोड़ देना आवश्यक नहीं है? वह काफ़ी थकी-थकी लगती है! उसके स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर पड़ सकता है! आख़िर इतने दिनों तक वही रात-ड्यूटी क्यो कर रही है?"

मिस गेज ने मेरी ओर देखा।

"मैं आपकी मित्र हूँ।" उसने कहा—"आपको मुझसे इस प्रकार बात करना शोभा नहीं देता।"

"क्या मतलब है आपका?"

"मूर्खता मत दिखाइए। क्या आप केवल इतना ही कहना चाहते थे?"

"आप शराब पीना पसंद करेंगी?"

"अच्छी बात है। तब मुझे उठना पड़ेगा।" उसने अलमारी से एक बोतल निकाली और एक गिलास भी ले आयी।

"आप गिलास ले लीजिए।" मैं बोला—"मैं बोतल से पी लूँगा।"

"आपके स्वास्थ्य के लिए।" मिस गेज ने कहा।

"सवेरे देर तक मेरे सोते रहने के विषय में, मिस वॉन कैम्पेन क्या कह रही थी?"

"यों ही, कुछ ख़ास नहीं। वह आपको यहाँ का 'विशेष कृपा-प्राप्त रोगी' कहकर पुकारती है।"

"जहन्नुम में जाये वह!"

"वह बुरी नही है।" मिस गेज ने कहा—"ज़रा अधिक उम्र की और झक्की मिज़ाज की है। उसने आपको शुरू से ही पसन्द नहीं किया।"

"नहीं।"

"पर मैंने पसन्द किया है—मैं पसन्द करती हूँ। मैं आपकी मित्र हूँ। भूलिए मत इसे।"

"आप सचमुच बहुत सुन्दर हैं।"

"नहीं, मैं जानती हूँ कि आप किसे सुन्दर समझते हैं। फिर भी मैं आपकी मित्र हूँ। आपका पैर कैसा है अब?"

"अच्छा है।"

"मैं उस पर डालने के लिए कुछ ठण्डा खनिज-जल ला दूँ। प्लास्तर के भीतर खुजलाहट होती होगी। बाहर गर्मी भी तो है।"

"आप बहुत-बहुत ही अच्छी हैं।"

"क्या पैर में बहुत खुजलाहट हो रही है?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।"

"मैं इन रेत के थैलों को और अच्छी तरह जमा दूँगी।"

उसने मेरे ऊपर झुकते हुए कहा—"आख़िर मैं आपकी मित्र हूँ।"

"मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

"नहीं, आप नहीं जानते; किन्तु किसी दिन जान जाएँगे।"

कैथरीन बर्कले को तीन रात के लिए रात-ड्यूटी से अवकाश मिल गया। उसके बाद वह फिर काम पर आ गई। तीन रात के बाद हम पुनः मिले, तो ऐसा प्रतीत हुआ, मानो हम एक बहुत लम्बे अर्से के बाद मिले हों।

.१८.

वह ग्रीष्म हमारे लिए बड़ी सुखद रही। जब मैं बाहर जाने लायक हो गया, तो हम लोग गाड़ी में बैठकर पार्क की सैर किया करते। अभी तक मुझे उस गाड़ी की याद है। उसके धीरे-धीरे चलने वाले घोड़े और कलफ़दार ऊँचा हैट लगाये मेरे सामने एक ऊँची-सी सीट पर बैठने वाले गाड़ीवान की पीठ, आज भी मेरी आँखों के सामने नाच उठती है। कैथरीन बर्कले मेरे पास ही बैठा करती थी। यदि हमारे हाथ एक-दूसरे से छू जाते या कुहनियाँ ही आपस में स्पर्श कर जातीं, तो हम बड़े उत्तेजित हो जाया करते थे। बाद को जब मैं बैसाखियों पर चलने-फिरने लगा, तो हम बिफ्फी-भोजनालय अथवा ग्रॉन–इतालिया में भोजन करने जाते। वहाँ हम भोजनालय के बाहर बरामदे की मेज़ पर खाना मँगवा लेते। खानसामे भीतर से बाहर और बाहर से भीतर आते-जाते रहते, लोग हमारे पास से गुज़रा करते, और मेजपोशों से ढँकी हुई मेज़ पर ढक्कनदार खूबसूरत बत्तियाँ जगमगाया करतीं। बाद में, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ग्रॉन-इतालिया ही हमारे मनलायक और सबसे अच्छा भोजन-गृह है, अतः हम वहीं जाने लगे। वहाँ का सबसे बड़ा खानसामा जार्ज, हमारे लिए एक मेज़ सुरक्षित रखता। वह बड़ा अच्छा खानसामा था। हम उसे खाना मँगवाने का आदेश देते और जब तक हमारा खाना आता, हम आसपास के व्यक्तियों को देखा करते, धुँधलके में भोजनगृह के बरामदे

पर नज़रें दौड़ाते अथवा एक-दूसरे की ओर निहारते रहते। हम सदा एक बड़ी बाल्टी में बर्फ़ से ठण्डी की गई सफ़ेद-सूखी काफ़ी ही पिया करते। हमने फ्रेसा, बारबेरा तथा दूसरी मीठी और सफ़ेद शराबों का भी स्वाद लिया था; किन्तु काफ़ी ही हमें अधिक पसन्द आई। युद्ध के कारण नौकरों की कमी थी। अतः वहाँ अलग से शराब लाकर देनेवाला खानसामा नहीं था। काफ़ी पीने का एक कारण और भी था कि जब हम जॉर्ज को फ्रेसा-जैसी कोई शराब लाने का आदेश देते, तो वह लज्जित होकर मुस्करा देता था।

"यदि कोई देश झरबेरी के समान स्वाद देनेवाला कोई आसव बनाता है, तो क्या आपकी कल्पना में वह आसव सचमुच शराब है?" एक दिन उसने कहा।

"क्यों नहीं—" कैथरीन बोली—"नाम तो बड़ा प्रिय है।"

"तब देवीजी, यदि आपकी इच्छा है, तो आप उसका स्वाद ले देखिए। किन्तु मुझे लैफ्टिनेंट साहब के लिए मारगॉक्स (शराब) की एक छोटी बोतल ले आने दीजिए।"

"मैं भी आज उसी को चखूँगा, जार्ज।"

"साहब, मैं आपको फ्रेसा-जैसी शराब पीने की सलाह नहीं दे सकता। उसका स्वाद झरबेरी के समान भी नहीं है।"

"शायद हो।" कैथरीन ने कहा—"यदि उसका वैसा ही स्वाद हुआ, तो सचमुच बड़ा मज़ा आयेगा।"

"मैं ले लाता हूँ," जॉर्ज ने कहा—"और जब देवी जी को संतोष हो जायेगा, मैं उसे वापस ले जाऊँगा।"

सचमुच ही, उसमें शराब-जैसा बहुत कम स्वाद था। जॉर्ज ने ठीक कहा था, उसका स्वाद झरबेरी-जैसा भी नहीं था। हमने फिर काफ़ी पीना ही निश्चित किया। एक दिन सन्ध्या समय जब मेरे पास पैसे कम पड़ गए, तो जॉर्ज ने मुझे सौ लायर उधार दिए। "कोई बात नहीं, लैफ्टिनेंट साहब," उसने कहा- "मैं जानता हूँ, कभी-कभी ऐसा हो जाता है। मनुष्य को पैसे कम क्यों पड़ जाते हैं, यह भी मैं समझता हूँ। यदि आपको या आपकी महिला-मित्र को कभी पैसे की आवश्यकता पड़े, तो मैं सेवा में सदा प्रस्तुत रहूँगा।"

भोजन के बाद हम गैलेरिया को पार करते हुए आगे बढ़ जाते। राह के दूसरे रेस्त्रां और बंद दूकानो के बीच से चलते हुए हम एक छोटे-से स्थान पर पहुँचकर रुक जाते, जहाँ सैण्डविच (एक खाद्य-पदार्थ) बिकती थी। ये सैण्डविचें

बकरे की रान, चुकन्दर तथा एन्कोवी नामक मछली की बनी होती थीं। उन पर छोटी-छोटी भूरी, गोल, निकनी तथा चमकदार परतें होतीं और वे छोटी-छोटी खूबसूरत-सी केवल अँगुली के बराबर लम्बी होती थीं। रात में भूख लगने पर खाने के विचार से हम उन्हें खरीद कर ले जाते थे। सैण्डविच खरीदने के बाद हम गैलेरिया से बाहर, गिरजाघर के सामने एक खुली हुई गाड़ी में बैठ कर अस्पताल लौट आते। अस्पताल के दरवाज़े पर दरबान मुझे सहायता देने के लिए बैसाखियाँ लेकर आ जाता। मैं गाड़ीवान को पैसे चुकाता और तब हम लिफ्ट द्वारा ऊपर जाते। कैथरीन एक मंज़िल नीचे, परिचारिकाओं के रहने के कमरो के सामने उतर जाती और मैं ऊपर चला जाता। अपनी मंज़िल पर उतर कर बैसाखियो के सहारे मैं बरामदा पार करता हुआ अपने कमरे में पहुँच जाता। कभी-कभी मैं कपड़े उतारकर सो जाता और कभी एक दूसरी कुर्सी पर टाँगे फैला कर बरामदे में बैठ जाता। बैठे-बैठे मैं छतों पर चहचहाती चिड़ियो को देखा करता और कैथरीन की प्रतीक्षा करता। जब वह मेरी मंज़िल पर आती, तो मुझे ऐसा लगता, मानो वह किसी लम्बी यात्रा से कई दिनो बाद लौटकर आई हो। मैं उसके साथ अपनी बैसाखियों पर बरामदे के चक्कर काटता, उसके पीछे-पीछे बेसिन (बर्तन) लेकर चलता और जब वह रोगियो के कमरो में घुसती और रोगी हमारा मित्र हुआ, तो मैं भी उसके साथ कमरे में चला जाता, अन्यथा कमरे से बाहर खड़ा होकर उसके लौटने की प्रतीक्षा करता। जब वह सब रोगियो के ज़रूरी काम निबटा देती, तो हम दोनों अपने कमरे के सामने, बरामदे मे, बैठ जाते। बाद में, मैं अपने बिस्तर पर चला जाता। जब सब लोग सो जाते और उसे यह निश्चय हो जाता कि अब उसे कोई नही बुलाएगा, तब वह मेरे पास आ जाती। मुझे उसके केशो से खेलना बड़ा प्रिय लगता! वह बिस्तर पर बैठ जाती और तनिक भी नहीं हिलती-डुलती। हाँ, बीच-बीच में मेरा चुम्बन लेने के लिए वह अचानक झुक जाती। उसके केशों से खेलते हुए मैं उनमें लगी हुई पिनों को निकालता और उन्हें चादर पर रख देता। उसकी केश-राशि धीरे-धीरे मुक्त होती जाती। वह मूर्तिवत् बैठी रहती और मैं उसे निहारा करता। पिनें निकलती रहतीं—उसके बँधे केश खुलते जाते और तब अचानक अंतिम दो पिनों के निकलते ही, उसके वे लम्बे-लम्बे केश बिखर जाते। तभी वह अपनी गर्दन झुका देती और हम दोनों के मुख उन घने केशो में छुप जाते। हमें ऐसा लगता, मानो हम किसी तम्बू के भीतर घुस गये हैं अथवा किसी जल-प्रपात के पीछे मुँह छिपाए बैठे हैं।

उसके केशों में आश्चर्यजनक सौन्दर्य था। कभी-कभी मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे खुले हुए द्वार से भीतर प्रवेश कर जानेवाले मन्द प्रकाश में उसे अपने बालों का जूड़ा बाँधते हुए देखा करता। उसके बाल रात में भी ऐसे चमकते, जैसे कभी-कभी उषःकाल में गहन जल-राशि चमका करती है। उसका मुखड़ा बड़ा प्यारा था, शरीर कोमल था और त्वचा मधुर और चिकनी थी। हम दोनो लेटे रहते। मैं अपनी उँगलियो के कोर से उसके कपोलो, उसके कपाल, नयनो की कोर, चिबुक अथवा कण्ठ का स्पर्श करते हुए कहता—"पियानो के परदो-जैसा चिकना।" उत्तर मे वह अपनी उंगली से मेरी ठोढ़ी पर हल्का-सा प्रहार करती और कहती—"एमरी पेपर (एक प्रकार का खुरदरा काग़ज़) के समान चिकनी और 'पियानो के परदो' पर बड़ी कठोरता से चुभनेवाली!"

"क्या यह सचमुच चुभती है?"

"नहीं प्राण, मैं तो यो ही मज़ाक कर रही थी।"

रातें बड़ी प्यारी होती थीं। केवल एक-दूसरे का स्पर्श ही हमारे रोम-रोम में सुख की मादक तरंगो को जन्म देने के लिए पर्याप्त होता था। अनेक लम्बे मधुर क्षणों के सिवा हम अपने प्रेम को स्थायी बनाने के लिए और भी बहुत-से छोटे-छोटे तरीक़े काम में लाते थे। जब हम अलग-अलग कमरो में रहते, तो सदा एक दूसरे के विषय में सोचा करते। इस प्रकार एक-दूसरे को याद करना कभी-कभी सफल होता था और हमारा तत्काल ही मधुर मिलन हो जाता। ऐसा कदाचित् इसीलिए होता था कि हम दोनो की विचारधारा एक ही दिशा में प्रवाहित होती थी।

हम आपस में बातें करते कि हमारा ब्याह तो उसी दिन हो गया था, जिस दिन वह इस अस्पताल में आई थी। उस ब्याह के दिन से हम पीछे खिसकने वाले महीने गिना करते। मैं तो विधिवत् शादी कर लेना चाहता था; किन्तु कैथरीन डरती थी कि यदि हम दोनो का ब्याह होना निश्चित हो गया, तो अधिकारी-वर्ग उसे मुझसे दूर, कहीं अन्यत्र भेज देगा। वह यह भी कहा करती थी कि यदि हम लोकाचार पर अधिक ध्यान देंगे, तो हम अधिकारी-वर्ग की निगाहो में आ जायेंगे और वह हम दोनों को अलग-अलग कर देगा। फिर हमारी शादी भी इटालियन विधान के अनुसार होगी, जहाँ नियमो की भरमार थी—बड़े कठोर नियम थे। पर मै सचमुच विधिवत् शादी करने का इच्छुक था; क्योकि जब मैं इस विषय में सोचता, तो अपनी होनेवाली संतान का भविष्य मेरी आँखों के आगे आ जाता। फिर भी हम आपस में ऐसा ही व्यवहार करते कि

हमारा ब्याह हो चुका है और इस सम्बन्ध मे अधिक नहीं सोचते। तब मुझे लगता कि हमारा अविवाहित रहना ही अधिक आनंदजनक है।

मुझे स्मरण है, एक दिन मैंने कैथरीन से शादी के विषय में बात की थी। कैथरीन ने कहा था—"किन्तु प्रियतम, तब ये लोग मुझे यहाँ से कहीं और भेज देंगे।"

"हो सकता है, वे न भी भेजें।"

"वे निश्चित रूप से भेज देंगे। वे मुझे घर भेज देंगे और तब हम दोनो को युद्ध का अन्त होने तक एक-दूसरे से दूर रहना पड़ेगा।"

"मै छुट्टी लेकर आ जाऊँगा।"

"तुम्हे स्कॉटलैड जाकर लौटने की छुट्टी नहीं मिल सकती। फिर मैं तुमसे दूर रह भी तो नहीं सकूँगी। इस समय शादी होने से हमारा कौन-सा भला होगा? हम तो यों भी शादीशुदा हैं। मेरी शादी अब दुबारा तो हो नही सकती।"

"मैं तुम्हारे हित में ही यह सब करना चाहता था।"

"अब हमारे बीच 'मैं'-'तुम' नाम की कोई वस्तु नहीं रही। मैं तुम हूँ—तुम मैं हो। यह 'मैं' और 'तुम' का भेद मत खड़ा किया करो।"

"मेरा अनुमान था कि लड़कियाँ हमेशा विवाह कर लेना पसन्द करती हैं।"

"अवश्य; किन्तु प्रियतम, मैं तो विवाहित हूँ। मेरा तुमसे विवाह हो चुका है। क्या मैं तुम्हारी योग्य पत्नी नही हूँ?"

"क्यो नही, तुम बड़ी योग्य और सुन्दर पत्नी हो!"

"प्राण! जानते हो न, मुझे विवाह के समय की प्रतीक्षा करने का एक कटु अनुभव प्राप्त हो चुका है।"

"मैं उसके विषय में नहीं सुनना चाहता।"

"तुम जानते हो कि मैं तुम्हें छोड़कर किसी और से प्रेम नहीं करती। यदि किसी और ने मुझसे प्रेम किया था, तो तुम्हें उसका बुरा नहीं मानना चाहिए।"

"क्यों नहीं?"

"जब तुम्हें सब-कुछ प्राप्त हो चुका है, तो फिर उस अभागे से, जो इस दुनिया से उठ चुका है, ईर्ष्या करने से क्या लाभ?"

"कुछ नहीं; किन्तु मैं इस विषय में कुछ सुनना पसन्द नहीं करता।"

"मेरे भोले प्रियतम! मैं जानती हूँ तुम सब तरह की स्त्रियों के सम्पर्क में रह चुके हो; किन्तु उससे मेरे प्रेम में तो कोई अन्तर नहीं पड़ता।"

"क्या हम किसी तरह गुप्त रूप से विवाह नहीं कर सकते? तब यदि मुझे कुछ हो गया या तुम्हें बच्चा पैदा हुआ—तो भी चिंता करने लायक कोई बात नहीं रहेगी।"

"गिरजाघर में अथवा राष्ट्रीय क़ानून के अनुसार, विधिवत् विवाह करने के सिवा हमारे समक्ष अन्य कोई मार्ग नहीं है। गुप्त रूप से तो हम विवाहित बन ही चुके हैं। यदि मैं किसी विशेष धर्म का पालन करती होती, तो उसमें नियमानुसार शादी करना ही मेरे लिए सब-कुछ होता। किन्तु मेरा तो कोई धर्म ही नहीं है।"

"याद है, तुमने मुझे सन्त एन्थोनी दिया था?"

"वह केवल इसलिए कि भाग्य तुम्हारी रक्षा करे। मुझे भी किसी और ने दिया था।"

"तब तुम्हें कोई चिन्ता नहीं है?"

"केवल एक। तुमसे दूर भेजे जाने की। तुम मेरे धर्म हो, देवता हो। मेरे सर्वस्व हो—मेरी एकमात्र सम्पत्ति!"

"तब ठीक है। किन्तु तुम जिस दिन कहोगी, उसी दिन मैं तुमसे विवाह कर लूँगा।"

"ऐसी बातें मत किया करो प्रियतम, कि तुम मुझे एक वफ़ादार औरत बनाना चाह रहे हो। मैं आप ही बड़ी वफ़ादार हूँ। यदि तुम संतुष्ट और प्रसन्न हो और तुम्हें मुझ पर गर्व है, तो तुम्हें किसी चीज़ के लिए लज्जित नहीं होना पड़ेगा। बोलो, क्या तुम सुखी नहीं हो?"

"किन्तु कहीं तुम किसी और के लिए मुझे छोड़ तो नहीं दोगी?"

"नहीं प्राण, नहीं; मैं किसी के लिए भी तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगी। मेरा अनुमान है कि हमारे साथ सभी प्रकार की भयावह घटनाएँ घटेंगी। किन्तु तुम्हें उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

"अच्छी बात है। किन्तु मैं तो तुमसे इतना प्रेम करता हूँ और तुमने निश्चय ही पहले किसी और से भी प्रेम किया है।"

"पर उसका अन्त क्या हुआ?"

"वह मर गया।"

"हाँ, और यदि वह मर न गया होता, तो मैं तुमसे मिलती भी नहीं। मैं बेवफ़ा नहीं हूँ, प्रियतम! मुझमें अनेक दुर्गुण हैं, बहुत-सी कमजोरियाँ हैं—किन्तु मैं हूँ बहुत वफ़ादार। मैं इतनी वफ़ादार रहूँगी कि तुम मुझसे तंग आ जाओगे।"

"मुझे शीघ्र ही मोर्चे पर लौट जाना पड़ेगा।"

"जब तक तुम चले नहीं जाओ, तब तक हम उस विषय में सोचेंगे ही नहीं। देखते हो न प्रियतम, मैं कितनी सुखी हूँ! हमारा समय कितनी सुंदरता से बीत जाता है। मैं एक लम्बे अर्से तक दुःखी रही हूँ और कदाचित् जब मैं तुमसे पहली बार मिली थी, तब क़रीब-क़रीब पागल हो चुकी थी। हाँ, शायद तब मैं पागल ही थी। किन्तु आज हम सुखी हैं—हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और हम इसी प्रकार सुखी बने रहें, तो अच्छा है। तुम सुखी हो। हो न? क्या मैं कोई ऐसा काम करती हूँ, जो तुम्हें अच्छा नहीं लगता? बोलो, तुम्हें प्रसन्न रखने के लिए मुझे क्या करना होगा? मेरे केश खोलकर उन्हें नीचे लहराना तुम्हें पसन्द है? तुम उनसे खेलना चाहते हो?"

"हाँ, तुम बिस्तर पर आ जाओ।"

"अच्छी बात है। लेकिन ज़रा ठहरो, पहले दूसरे रोगियों को एक बार देख आऊँ मैं।"

.१९.

इसी प्रकार ग्रीष्म ऋतु बीत गई। दिन कैसे बीते, वस्तुतः मुझे अच्छी तरह याद नहीं है। हाँ, इतना अवश्य याद है कि दिन में बहुत गर्मी पड़ती थी और समाचारपत्रों में विजय-प्राप्ति के अनेक समाचार पढ़ने को मिला करते थे। मैं अब बहुत स्वस्थ हो गया था। मेरे घाव शीघ्रता से भर रहे थे; फलतः पहले के समान बैसाखियों के सहारे चलने की ज़रूरत नहीं रह गयी थी। मैंने उनसे जल्दी ही पीछा छुड़ा लिया था और अब मैं केवल एक छड़ी के सहारे घूमता रहता था। बाद में, मैं घुटना आसानी से मोड़ सकूँ, इसके लिए बड़े अस्पताल में मेरा उपचार प्रारम्भ हुआ—यांत्रिक-चिकित्सा! काँच के एक सन्दूक में, बैंगनी प्रकाश-किरणें भरकर, उसमें मेरा घुटना रखकर सेंका जाता, उसकी मालिश की जाती और उसे नहलाया-धुलाया जाता। मैं तीसरे पहर अस्पताल जाता था। वहाँ से मैं कॉफे में जाता, कुछ पीता और समाचारपत्र पढ़ता। कॉफे से निकलकर शहर में घूमने के बदले मैं अपने अस्पताल में ही लौट आने का इच्छुक रहता। मेरी केवल एक ही इच्छा रहती थी—कैथरीन को देखने की इच्छा। शेष समय मैं हँसी-ख़ुशी से बिता देता। सबेरे प्रायः सोता

रहता, तीसरे पहर, कभी-कभी घुड़दौड़ देखने चला जाता और यांत्रिक-चिकित्सा के लिए अस्पताल ज़रा देर से पहुँचता। कभी-कभी मैं आंग्ल-अमरीकन क्लब पहुँचकर, खिड़की के सामने, चमड़े की मोटी गद्दीदार कुरसी में बैठा-बैठा पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ा करता। बैसाखियाँ छोड़ने के बाद अधिकारी-वर्ग कैथरीन और मुझे एक साथ नहीं जाने देता था; क्योंकि एक परिचारिका का एक ऐसे रोगी के साथ, जिसे परिचारिका की कोई विशेष आवश्यकता नहीं थी, बिना किसी प्रौढ़ा के, इस प्रकार स्वतंत्रतापूर्वक घूमना उनकी दृष्टि में भद्दा लगता था। इसीलिए तीसरे पहर हम लोग अधिक समय तक साथ नहीं रहते थे। हाँ, यदि फर्ग्यूसन हमारे साथ रहती थी, तो कभी-कभी हम बाहर भोजन करने जा सकते थे। मिस वॉन कैम्पेन ने इसे बिना किसी आपत्ति के स्वीकार कर लिया था कि हम दोनों बड़े गहरे मित्र हैं; क्योंकि कैथरीन उसका बहुत काम कर देती थी। वह समझती थी कि कैथरीन एक बड़े कुलीन और उच्च वंश की लड़की है। मिस वॉन कैम्पेन किसी के वंश के सम्बन्ध में बड़ी सावधानी बरतती थी। वह स्वयं भी एक बड़े उच्च कुल की थी। अब अस्पताल में भी काफ़ी काम बढ़ गया था। परिणामस्वरूप वह सदा व्यस्त रहती थी। उस वर्ष गर्मी बहुत पड़ रही थी। मैं मिलान में बहुत-से लोगों को जानता था; किन्तु, तीसरे पहर के बाद हमेशा अस्पताल लौट जाने की इच्छा प्रबल हो उठती थी। मोर्चे पर हमारी सेना कार्सो की ओर बढ़ रही थी। प्लावा को पार करके उन्होंने कुक को जीत लिया था और अब बेन्सिज़्ज़ा पठार को जीतने की कोशिश कर रहे थे। पर पश्चिमी मोर्चे पर हमारी इतनी अच्छी प्रगति नहीं थी। हमें ऐसा प्रतीत होता था कि एक लम्बे अर्से से युद्ध चल रहा है। यद्यपि हम इस समय युद्धरत थे; किन्तु मेरा ख़याल था कि बहुत बड़ी संख्या में सैनिक इकट्ठा करने और उन्हें युद्ध की शिक्षा देने में कम-से-कम एक वर्ष लग जायगा। अगला वर्ष बड़ा ख़राब वर्ष होगा या सम्भव है, अच्छा भी हो। इटालियन लोग काफ़ी बड़ी सख्या में युद्ध में भाग ले रहे थे। पर मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि इस तरह काम कैसे चलेगा? यदि इटालियनों ने समस्त बेन्सिज़्ज़ा पठार पर क़ब्ज़ा भी कर लिया, मॉन्टे सॉन जेब्राइल भी जीत लिया, तो आस्ट्रियनों के लिए उनसे आगे और भी बहुत-से पहाड़ थे। मैंने उन्हें देखा था। सभी ऊँचे-ऊँचे पहाड़ आगे की ओर ही थे। कार्सो पर वे सचमुच आगे बढ़ रहे थे; किन्तु इसके बाद नीचे की ओर समुद्र के पास दलदल और कीचड़ थी। नैपोलियन आस्ट्रियनों को मैदानों में ही बुरी तरह पराजित कर

सकता था; किन्तु वह उनसे पर्वतों में कभी नहीं लड़ता। वह उन्हें नीचे मैदानों में उतरने देता और तब उन्हें वेरोना के आसपास नाकों चने चबवा देता। तब भी पश्चिमी मोर्चे पर कोई किसी को नाकों चने नहीं चबवा रहा था। कदाचित् युद्ध अब जीतने के लिए नहीं होते थे—शायद वे हमेशा के लिए चला करते थे। सम्भवतः यह दूसरा शतवर्षीय युद्ध था।

मैंने समाचारपत्र को रैक में रख दिया और क्लब छोड़कर चल दिया। सावधानी के साथ मैं सीढ़ियों से नीचे उतरा और वाया मान्ज़ोनी पर चलता गया। ग्रॉम होटल के सामने मुझे वृद्ध मेअर्स और उनकी स्त्री गाड़ी से उतरते हुए दिखाई दिये। वे लोग घुड़दौड़ से लौट रहे थे। श्रीमती मेअर्स बड़े-बड़े स्तनों वाली औरत थी। वह काली साटन के कपड़े पहने हुए थी। मेअर्स महाशय ठिंगने और बूढ़े थे। उनकी मूँछें सफ़ेद थीं और वे छड़ी के सहारे चलते थे।

"कहो कैसे हो। स्वस्थ तो हो?" श्रीमती मेअर्स ने हाथ मिलाया।

"हेलो!" श्री मेअर्स ने कहा।

"घुड़दौड़ कैसी रही?"

"सुन्दर! बड़ी प्यारी दौड़ थी। मैं तीन बार जीती।"

"आपका क्या हाल रहा?" मैंने श्री मेअर्स से पूछा।

"ठीक रहा। मैं एक बार जीता।"

"मैं कभी नहीं जान पाती कि ये कैसे जीतते हैं?" श्रीमती मेअर्स बोली—"ये मुझे कभी नहीं बताते।"

"मैं, बस, जीत जाता हूँ।" मेअर्स ने कहा। वे बड़ी विनम्रता से बातें कर रहे थे—"तुम्हें अब बाहर निकल कर घूमना-फिरना चाहिए।" जब वे किसी से बातें करते, तो ऐसा प्रतीत होता कि वे अपने सामने खड़े हुए व्यक्ति की ओर न देखकर कहीं और देख रहे हैं या फिर ऐसा लगता कि उन्होंने ग़लती से अपने सामने वाले व्यक्ति को कोई और समझ लिया है।

"निकला करूँगा बाहर।" मैंने कहा।

"मैं तुमसे मिलने के लिए अस्पताल आने वाली हूँ।" श्रीमती मेअ बोली—"अपने बच्चों के लिए मेरे पास कुछ सौग़ातें हैं। तुम सब मेरे बच्चे हो। सचमुच, तुम लोग मेरे प्रिय बच्चे ही तो हो!"

"वे सब आपसे मिलकर बड़े प्रसन्न होंगे।"

"मेरे तो प्यारे बच्चे हैं वे। तुम भी। तुम भी मेरे उन बच्चों में से एक हो।"

"मुझे वापस जाना है।" मैंने कहा।

"उन सब प्यारे बच्चों से मेरा प्यार कहना। मुझे तुम सबके लिए बहुत-सी वस्तुएँ लाना है। मेरे पास कुछ सुन्दर मार्साला (सिसली में बनी हुई शेरी के समान शराब) और केक हैं।"

"अच्छा नमस्ते--" मैं बोला—"वे सब आपसे मिलकर वस्तुतः बहुत प्रसन्न होंगे।"

"नमस्ते—" मेअर्स ने कहा—"कभी गेलेरिया की ओर आया करो न! मेरी मेज कहाँ है, यह तो तुम जानते ही हो। हम लोग प्रति दिन सन्ध्या-समय वहीं रहते हैं।"

मैं सड़क पर आगे बढ़ता गया। कोवा से मैं कैथरीन के लिए कुछ खरीदना चाहता था। भीतर जाकर, कोवा में मैंने चॉकलेट का एक पैकेट खरीदा और जब तक वहाँ की लड़की उसे काग़ज़ में लपेटने में लगी रही, मैं शराब पीने के कमरे में घुस गया। वहाँ एक अंग्रेज़ दम्पति तथा कुछ वायुयान-चालक बैठे हुए थे। मैंने केवल मार्टिनी (शराब) ली, उसके पैसे चुकाये, बाहरी काउंटर पर से चॉकलेट का पैकेट उठाया और अस्पताल की ओर चल दिया। सड़क पर, स्काला से आगे, एक छोटे-से उपाहारगृह के बाहर, मेरी जान-पहचान के कुछ व्यक्ति बैठे थे। उनमें से एक वहाँ का उप-न्यायाधीश था, दो संगीत के विद्यार्थी थे और सॉनफ्रान्सिस्को-निवासी एक इटालियन था, एत्तोरे मोरेत्ती, जो इटालियन सेना में था। मैंने उनके साथ कुछ शराब पी। संगीत के विद्यार्थियों में एक का नाम रॉल्फ सिमन्स था और वह एन्रिको-डेल-क्रेडो नाम से गाया करता था। वह कैसा गाता था, यह मैं बिलकुल नहीं जानता था; किन्तु वह कोई बड़ा भारी कार्य करने के लिए सदा तैयार रहा करता था। वह मोटा था और उसकी नाक के आस-पास ऐसा दीखता था, जैसे वह किसी दूकान में रखे-रखे घिस गयी हो। उसका मुँह भी ऐसा लगता था, मानो वह ग्रीष्म-ज्वर से पीड़ित हो। वह पिआसेन्ज़ा में गाकर लौटा था। वहाँ उसने टोस्का (एक धुन) गाया था और सुनने में आया कि उसका गाना बड़ा सुंदर रहा था।

"निश्चय ही, तुमने मुझे कभी गाते हुए नहीं सुना है।" वह बोला।

"यहाँ कब गाने वाले हो तुम?"

"पतझड़ के मौसम में, स्काला में।"

"मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि लोग इस पर बेचें फेकेंगे।" एत्तोरे बोला—"तुमने कुछ सुना, लोगों ने मोडेना में इस पर किस प्रकार बेंचें उछाली थीं?"

"यह सरासर झूठ है।"

"उन्होंने इस पर बेंचें फेंकी थीं।" एत्तोरे बोला—"मैं वहाँ मौजूद था। मैंने स्वयं छः बेंचें फेंकी थीं।"

"तुम फ़िस्को के एक मूर्ख इटालियन हो!"

"यह इटालियन का उच्चारण तक नहीं कर सकता।" एत्तोरे ने कहा—"हर जगह, जहाँ यह जाता है, वहीं इस पर बेंचें उछाली जाती हैं।"

"पिआसेन्ज़ा, उत्तर इटली में गायकों के लिए सबसे कठिन जगह है।" दूसरे ने ज़रा ऊँचे स्वर में कहा—"विश्वास कीजिए, वहाँ के उस छोटे-से संगीत-गृह में गाना बड़ा ही कठिन है।" इस व्यक्ति का नाम एड्गर सौंडर्स था और एडाउआर्डो जिओवान्नी के नाम से गाता था।

"मैं वहाँ जाकर यह देखना पसंद करूँगा कि लोग किस प्रकार तुम्हारे ऊपर बेंचें फेंकते हैं।" एत्तोरे बोला—"तुम इटालियन गाना गा ही नहीं सकते।"

"इस मूर्ख की बातें सुनो—" एड्गर सौन्डर्स बोला—"यह केवल दो ही शब्द बोलना जानता है—बेंच और फेंकना।"

"जब तुम दोनो रेंकने बैठते हो, तो श्रोतागण केवल ये दो ही शब्द जानते हैं।" एत्तोरे बोला—"और जब तुम अमेरिका जाओगे, तो वहाँ, स्काला में प्राप्त सफलता का ढिंढोरा पीटोगे। पर यह जान लो कि स्काला में अपने पहले राग के बल पर तुम टिक नही सकोगे। लोग तुम्हें गाने ही नही देंगे।"

"नहीं, मैं स्काला में गाऊँगा।" सिमन्स बोला—"मैं वहाँ अक्टूबर में टोस्का गाऊँगा।"

"हम वहाँ चलेंगे। चलेंगे न, मैक!" एत्तोरे ने उप-न्यायाधीश से पूछा—"इन्हें अपनी रक्षा के लिए भी तो किसी की आवश्यकता पड़ेगी।"

"हो सकता है, वहाँ इनके बचाव के लिए अमरीकी सेना मौजूद हो!" उप-न्यायाधीश बोला—"क्या तुम और पीना चाहते हो, सिमन्स? सौंडर्स तुम?"

"अच्छी बात है, पिलाओ।" सौंडर्स ने कहा।

"मैंने सुना है कि तुम्हें रजत-पदक मिलने वाला है।" एत्तोरे ने मुझसे पूछा—"तुम्हें यह किस बात का पुरस्कार प्राप्त होने वाला है?"

"मैं नही जानता। मुझे कोई पुरस्कार मिलने वाला है, यह भी मैं नहीं जानता।"

"नहीं, तुम्हें मिलेगा। और दोस्त, तब कोवा की सब लड़कियाँ सोचेंगी कि तुम बड़े सुंदर हो। वे समझेंगी कि तुमने दो सौ आस्ट्रियन सैनिकों को

मौत के घाट उतार दिया था अथवा तुमने अकेले ही दुश्मनों की पूरी खाई पर अधिकार कर लिया था। विश्वास करो, मुझे तो अपने पुरस्कारों की लाज रखने के लिए ही काम करना पड़ता है।"

"तुम्हें कितने पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, एत्तोरे?" उप-न्यायाधीश बोला।

"उसे तो सारे पुरस्कार मिल चुके हैं।" सिमन्स बोला—"यही तो वह व्यक्ति है, जिसके लिए युद्ध हो रहा है।"

"मुझे दो ताम्र-पदक और तीन रजत-पदक प्राप्त हो चुके हैं—" एत्तोरे ने कहा—"किन्तु अभी तक मंज़ूरी केवल एक ही पदक की आयी है।"

"और दूसरे पदकों का क्या हुआ?" सिमन्स ने प्रश्न किया।

"आक्रमण असफल रहा।" एत्तोरे ने उत्तर दिया—"जब आक्रमण सफल नहीं होता, तो पुरस्कार-पदक नहीं दिये जाते।"

"तुम कितनी बार घायल हो चुके हो, एत्तोरे?"

"तीन बार बुरी तरह। मुझे अपने घावों के पुरस्कार-स्वरूप तीन पट्टियाँ प्राप्त हुई हैं। यह देखो।" उसने अपनी क़मीज़ की बाँह नीचे गिराकर पट्टियाँ दिखाईं। ये पट्टियाँ काली पृष्ठभूमि पर तीन समानान्तर रजत-रेखाएँ थीं। कन्धे से क़रीब आठ इंच नीचे की ओर उन्हें क़मीज़ की बाँह पर सी दिया गया था।

"तुम्हें भी तो एक मिली है।" एत्तोरे ने मुझसे कहा—"विश्वास करो, इन्हें लगाकर आदमी बड़ा अच्छा लगता है। मैं पदकों की अपेक्षा इन्हें ही प्राप्त करना अधिक पसंद करूँगा। विश्वास करो दोस्त, जब तुम्हें तीन पट्टियाँ मिल जायें, तो समझना, तुम्हें कुछ मिला है। उस एक घाव के बदले, जो तुम्हें पूरे तीन माह तक अस्पताल में पड़े रहने पर बाध्य करता है, तुम्हें केवल एक पट्टी मिलती है।"

"एत्तोरे, तुम कहाँ आहत हुए थे?" उप-न्यायाधीश ने प्रश्न किया।

एत्तोरे ने अपनी बाँह ऊपर चढ़ा ली। "यहाँ पर—" उसने एक गहरा लाल चिह्न दिखाते हुए कहा—"फिर यहाँ, मेरी टाँग में चोट लगी थी। पट्टियाँ चढ़ी हैं, इसलिए मैं तुम्हें उसे नहीं दिखा सकता। और पाँव में—तीसरा घाव पाँव में है। मेरे पाँव में एक सड़ी हुई हड्डी है, जिससे आज भी दुर्गंध आती है। प्रति दिन सबेरे मैं उसके नये-नये सड़े हुए नन्हें टुकड़े बाहर निकालकर फेंका करता हूँ।"

"तुम किस चीज़ से आहत हुए थे?" सिमन्स ने पूछा।

"एक हथगोले द्वारा। उन आलुओं जैसे दीखनेवाले हथगोलों में से एक मुझे

भी लग गया था। उसने मेरे पैर का एक पूरा हिस्सा ही उड़ा दिया। इन हथगोलों से परिचित हो तुम?" मेरी ओर मुड़कर वह बोला।

"क्यों नहीं।"

"एक कुतिया के बच्चे ने उसे मेरे ऊपर फेंक दिया—मैंने उसे फेंकते हुए देखा था।" एत्तोरे बोला—"हथगोले ने मुझे नीचे गिरा दिया। क्षणभर के लिए मैंने सोचा कि मैं बिलकुल खत्म ही हो गया; किन्तु इन आलुओं-जैसे गोलों में कुछ होता ही नहीं। मैंने उस कुतिया के बच्चे को राइफल की गोली से उड़ा दिया। मैं हमेशा अपने साथ राइफल लेकर चलता हूँ, इसलिए कोई कह भी नहीं सकता कि मैं एक अफ़सर हूँ।"

"वह कैसा दिखाई देता था?" सिमन्स ने पूछा।

"उसके पास बस, वही एक गोला था।" एत्तोरे बोला—"मेरी तो समझ में नहीं आता कि आख़िर उसने उसे फेंका ही क्यों? मेरा अनुमान है कि वह शायद एक-आध गोला फेंकने के लिए उत्सुक था। कदाचित् उसने कभी सच्चा युद्ध देखा ही नहीं था। मैंने उसी क्षण उस पिल्ले को उसकी गुस्ताख़ी की सजा दे दी।"

"जब तुमने उसे मारा, तो वह कैसा दिखाई दे रहा था?" सिमन्स ने दुहराया।

"तुम्हारा सिर। यह भला मैं क्या जानूँ?" एत्तोरे बोला—"मैंने उसके पेट में गोली मार दी, बस! मुझे भय था कि यदि मैंने उसके सिर का निशाना लगाया, तो मेरा निशाना चूक जा सकता है।"

"तुम कितने दिनों से अफ़सर हो, एत्तोरे?" मैंने पूछा।

"दो वर्ष से। मैं अब कैप्टन बनने जा रहा हूँ। तुम कब से लैफ्टिनेण्ट हो?"

"तीसरा वर्ष चल रहा है।"

"तुम कैप्टन नहीं बन सकते; क्योंकि तुम इटालियन भाषा अच्छी तरह नहीं जानते।" एत्तोरे बोला—"तुम उसे बोल तो सकते हो; किन्तु अच्छी तरह पढ़-लिख नहीं सकते। कैप्टन बनने के लिए तुम्हें उसे अच्छी तरह सीखना पड़ेगा। तुम अमरीकी सेना में क्यों नहीं चले जाते?"

"शायद मैं कभी चला जाऊँ।"

"मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मैं भी वहीं भर्ती हो जाऊँ। एक कैप्टन को क्या मिलता है, मैक?"

"मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम। मेरा ख़याल है—दो सौ पचास डॉलर के आसपास।"

"हे भगवान्! दो सौ पचास डालर का मैं करूँगा क्या? तुम जितनी जल्दी हो सके, अमरीकी सेना में चले जाओ, फ्रेड और मेरे लिए भी कुछ प्रयत्न कर दो न!"

"अच्छी बात है!"

"मैं इटालियन भाषा में एक पूरे सैन्य-दल को आदेश दे सकता हूँ। अंग्रेज़ी में आदेश देना भी मैं सरलतापूर्वक सीख जाऊँगा।"

"तुम तो जनरल बनोगे।" सिमन्स बोला।

"नहीं, जनरल बनने की योग्यता मुझमें नहीं है। जनरल को सत्रह सौ साठ बातों की जानकारी रखनी पड़ती है। तुम गधो का खयाल है कि लड़ने में कुछ नहीं रखा है। वस्तुतः तुम लोगों के पास तो दूसरी श्रेणी के नायक बनने योग्य बुद्धि भी नहीं है।"

"ईश्वर को धन्यवाद! कम-से-कम मुझे तो नायक नहीं बनना है।" सिमन्स बोला।

"यदि राज्य ने तुम-जैसे ढीले व्यक्तियों की भी धर-पकड़ शुरू की, तो हो सकता है कि तुम्हें भी बनना पड़े। लड़के, तुम दोनों को तो मैं अपनी टुकड़ी में रखना चाहूँगा। मैक को भी। मैक, मैं तुम्हें अपना अर्दली बना लूँगा।"

"तुम एक महान व्यक्ति हो, एत्तोरे।" मैक बोला—"किन्तु मुझे शंका है कि तुम युद्ध के मैदान में भी इतने ही बहादुर हो!"

"देखना, मैं युद्ध बन्द होने से पूर्व ही कर्नल बन जाऊँगा।" एत्तोरे बोला।

"यदि तुम मारे न गये, तो।"

"नही, मैं मारा नहीं जाऊँगा।" उसने अपनी कॉलर पर लगे हुए सितारों का अँगूठे तथा तर्जनी से स्पर्श किया—"देखा तुमने? मैंने क्या किया? यदि कोई हमसे हमारे मारे जाने की बात करता है, तो हम सदा अपने सितारों का स्पर्श कर लेते हैं।"

"चलो सिम, अब चलें—" सौन्डर्स ने खड़े होते हुए कहा।

"अच्छा।"

"अच्छा, नमस्ते" मैंने कहा—"मुझे भी जाना है।"

उपाहार-गृह की घड़ी में पौने छः बज चुके थे—"ईश्वर तुम्हारा सहायक हो, एत्तोरे!"

"भगवान् तुम्हारा भला करे, फ्रेड!" एत्तोरे बोला "तुम्हें रजत-पदक मिलने जा रहा है, यह बड़ा अच्छा है।"

"मुझे विश्वास नहीं होता कि मिलेगा।"

"मिलेगा, अवश्य मिलेगा, फ्रेड! मैंने सुना है कि तुम्हें निश्चित रूप से रजत-पदक मिलने वाला है।"

"अच्छा, पुनर्मिलन तक विदा—" मैंने कहा—"ज़रा सावधानी रखना एत्तोरे, नहीं तो किसी आफ़त में फँस सकते हो।"

"मेरी चिन्ता मत करो। न तो मैं पीता ही हूँ और न ही मैं किसी के आगे-पीछे भागता हूँ। मै पियक्कड भी नहीं हूँ और वेश्यागामी भी नहीं। मैं जानता हूँ कि मेरा हित किसमें है।"

"अच्छा, आगामी भेंट तक के लिए विदा—" मैं बोला—"मुझे प्रसन्नता है कि कैप्टन के रूप में तुम्हारी पद-वृद्धि होने जा रही है।"

"मुझे पद-वृद्धि के लिए प्रतीक्षा नही करनी है। मैं तो अपनी युद्ध-कुशलता के कारण कैप्टन होने जा ही रहा हूँ। समझे तुम? तिरछी काटती हुई दो तलवारों के साथ तीन सितारे और ऊपर मुकुट। यही होगा तब मेरा रूप।"

"अच्छा, अनेक शुभ कामनाएँ।"

"शुभ कामनाएँ। तुम मोर्चे पर कब लौट रहे हो?"

"बहुत शीघ्र।"

"मैं मिलूँगा फिर तुमसे।"

"विदा!"

"विदा! कोई खोटा रजत-पदक स्वीकार मत कर लेना।"

मैं एक गली में, जो अस्पताल जाने वाले सीधे मार्ग से जाकर मिलती थी, आगे बढ़ा। एत्तोरे तेईस वर्ष का था। उसका पालन-पोषण सॉनफ्रान्सिस्को में उसके चाचा द्वारा हुआ था। जब युद्ध की घोषणा हुई थी, तब वह टोरिनो में अपने मॉ-बाप से मिलने आया था। उसकी एक बहन थी! वह इस वर्ष नार्मल-स्कूल से स्नातिका बनने वाली थी। वह भी अपने चाचा के पास ही अमेरिका में रह रही थी। एत्तोरे वास्तव में एक बहादुर सिपाही था। पर बातूनी भी बड़ा था वह! जिस किसी से मिलता, उसी को अपनी बातों से थका डालता। कैथरीन तो उसके सामने आने में भी घबराती थी।

"हमारे यहॉ भी एक-से-एक सूरमा हैं।" उस दिन एत्तोरे के विषय में बात करने पर वह बोली—"किन्तु प्रियतम, सामान्यतः वे बड़े शांत स्वभाव के होते हैं।"

"मैं एत्तोरे की बातों पर ध्यान नहीं देता।"

"यदि वह इतना घमंडी न होता और सदा बक-बक करके मुझे परेशान न करता, तो मैं भी उसका बुरा न मानती।"

"मैं भी उससे तंग आ जाता हूँ।"

"ऐसा कहकर तुम उदारता प्रकट कर रहे हो, प्रिय! किन्तु इसकी आवश्यकता नहीं है। मोर्चे पर वह क्या करता है, इसकी तुम कल्पना कर सकते हो और जानते हो कि वह उपयोगी व्यक्ति है। किन्तु वह उन व्यक्तियों के समान है, जिन्हें मैं बिलकुल पसन्द नही करती।"

"मैं जानता हूँ।"

"यह तुम्हारी शालीनता है। मैं उसे पसंद करने का प्रयत्न करती हूँ; किन्तु वह बड़ा भयानक है—सचमुच बड़ा भयानक व्यक्ति है!"

"वह आज शाम को कह रहा था कि वह शीघ्र ही कैप्टन बनेगा।"

"सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई।" कैथरीन बोली—"इससे तो उसे प्रसन्न होना चाहिए।"

"क्या तुम नहीं चाहती कि मुझे भी कोई बहुत ऊँचा पद प्राप्त हो?"

"नहीं प्रियतम! मैं केवल इतना ही चाहती हूँ कि तुम्हें कोई इतना ऊँचा पद मिल जाए, जिससे हम लोग उच्च श्रेणी के होटलों में प्रवेश पा सकें।"

"इतना ऊँचा पद तो मेरा अभी भी है।"

"सचमुच बड़ा अच्छा पद है तुम्हारा। मैं नहीं चाहती कि तुम्हें और ऊँचा पद मिले। उससे तुम्हारा दिमाग बदल जायगा। ओह, प्रिय! मैं बड़ी प्रसन्न हूँ कि तुम्हें घमंड नहीं है। यदि तुम घमंडी भी होते, तो भी मैं तुम्हीं से ब्याह करती। किन्तु ऐसा पति प्राप्त होना, जो आत्मप्रशंसक न हो, बड़े ही सुख-सन्तोष की बात होती है।"

हम बरामदे मैं बैठे हुए, धीमे स्वर में बातें कर रहे थे। नीले आकाश में चन्द्रमा के उदय होने की अपेक्षा थी; किन्तु शहर पर कुहासा छाया हुआ था, अतः उसका उदय होना मालूम नही पड़ा। थोड़ी देर बाद बूंदा-बांदी होने लगी। हम भीतर चले आये। बाहर, कुहासा वर्षा में बदल गया और कुछ समय बाद ही बड़े ज़ोर की वर्षा आरंभ हो गयी। हमें छत पर पानी गिरने का भड़-भड़ शब्द सुनाई दिया। मैं उठा और यह देखने के लिए, कि कहीं कमरे में तो बौछारें नहीं आ रही हैं, द्वार तक गया। किन्तु पानी भीतर नहीं आ रहा था। मैं द्वार खुला छोड़कर लौट आया।

"तुम्हारी और किससे भेंट हुई थी?" कैथरीन ने पूछा।

"श्रीमान् और श्रीमती मेअर्स से।"

"वे दोनों भी बड़े विचित्र हैं।"

"आशा तो यही थी कि मेअर्स को अपने नगर के सुधार-गृह में रखा जाएगा; किन्तु अधिकारियों ने उसे मरने के लिए बाहर छोड़ दिया।"

"और बाद में, वह सदा के लिए मिलान में सुख से रहने लगा।"

"मैं नहीं जानता, कितने सुख से रह रहा है वह।"

"मैं तो समझती हूँ, कारावास से मुक्त होने के बाद बड़े आराम से जीवन बिता रहा है वह।"

"श्रीमती मेअर्स कुछ वस्तुएँ लेकर यहाँ आनेवाली है।"

"वह बड़ी आकर्षक सौग़ातें लाया करती है। क्या तुम उसके प्रियजन हो?"

"उनमें से एक।"

"तुम सब उसके प्यारे बेटे हो।" कैथरीन बोली—"वह अपने इन प्रिय बच्चों को अधिक पसन्द करती है। सुनो, बाहर वर्षा हो रही है।"

"बड़े ज़ोर से।"

"तुम सदा मुझसे प्रेम करोगे। करोगे न?"

"अवश्य।"

"और इस वर्षा से तुम्हारे प्रेम में कोई अंतर तो नहीं पड़ेगा?"

"नहीं।"

"तब ठीक है; क्योंकि वर्षा से मुझे डर लगता है।"

"क्यों?" मैं ऊँघते हुए बोला। बाहर लगातार पानी बरस रहा था।

"कह नहीं सकती, प्रियतम, क्यों! पर मै वर्षा से हमेशा डरती रही हूँ।"

"मुझे तो बरसात अच्छी लगती है।"

"मैं भी उसमें घूमना पसंद करती हूँ। किन्तु उससे प्रेम करना मेरे लिए कठिन है।"

"मैं सदा तुमसे प्रेम करूँगा।"

"मैं भी सदा तुमसे प्रेम करूँगी—वर्षा में—बर्फ़ में—ओले गिरने पर भी—और भी जो कुछ आये उसमें—हर हालत में—प्रत्येक परिस्थिति में! इन वर्षा, बर्फ़ और ओलों आदि के सिवा और क्या होता है?"

"मुझे नहीं मालूम। मैं शायद ऊँघ रहा हूँ।"

"तब सो जाओ प्रिय, और मैं तुमसे प्रेम करूँगी। चाहे कैसी ही परिस्थिति क्यों न हो, मुझे चिन्ता नहीं।"

"लेकिन तुम वास्तव में वर्षा से नहीं डरती? है न?"

"जब मैं तुम्हारे साथ रहती हूँ, तब नहीं।"

"क्यों डरती हो उससे?"

"न जाने क्यों!"

"मुझे बताओ, क्यों!"

"मुझे कहने के लिए बाध्य मत करो।"

"बताओ न।"

"ना।"

"अरे, बताओ भी।"

"अच्छा तो सुनो, मैं वर्षा से इसीलिए डरती हूँ कि कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है, मै उसी में मर गयी हूँ।"

"व्यर्थ की बात है।"

"और कभी-कभी उसमें मुझे तुम्हारा मृत शरीर दिखाई देता है।"

"हाँ, इसकी अधिक सम्भावना है।"

"नहीं, नहीं। नहीं, प्रियतम, नही। बिलकुल नहीं हो सकता यह। मैं ऐसा नहीं होने दूँगी, क्योंकि मैं तुम्हें सुरक्षित रख सकती हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं ऐसा कर सकती हूँ। पर आदमी, स्वयं उनसे अपना बचाव नहीं कर सकता।"

"भगवान् के लिए बंद करो इसे! मैं नहीं चाहता कि तुम आज रात एक स्कॉच (स्कॉटलैंडनिवासी) के समान—पागलपन से भरा व्यवहार करो। हम अब अधिक दिनो तक साथ नहीं रहने वाले हैं।"

"जानती हूँ। पर मैं स्कॉच और पागल ही हूँ। हाँ, मैं अपने इस पागलपन को समाप्त कर दूँगी। यह सब व्यर्थ का प्रलाप है।"

"सचमुच, व्यर्थ का प्रलाप ही तो है।"

"हाँ, सब-कुछ निरर्थक है—व्यर्थ! केवल मूर्खता! मैं वर्षा से नहीं डरती। नहीं डरती मैं—नहीं-नहीं, मैं नहीं डरती वर्षा से। आह, हे भगवान्! काश मैं वर्षा से नहीं डरती होती।" वह रो रही थी। मैंने उसे सान्त्वना दी। उसका रोना बन्द हो गया, किन्तु वर्षा बन्द न हुई। बाहर पानी बरसता ही रहा।

• २० •

एक दिन तीसरे पहर हम लोग घुड़दौड़ में गये। फर्ग्यूसन भी गयी और वह लड़का, क्रोवैल राजर्स भी, जिसकी ऑखों में गोले की बत्ती के भीषण विस्फोट से चोट आयी थी। दोनों युवतियॉ दोपहर का भोजन करने के बाद कपड़े वगैरह पहन कर तैयार होने लगी। मै और क्रोवैल, उसके कमरे में पलंग पर बैठे-बैठे घुड़दौड़ के परचे में घोड़ों की पिछली दौड़ो का अध्ययन और होनेवाली घुड़दौड़ के विषय में विचार करने लगे। क्रोवैल के सिर पर पट्टियॉ बँधी थीं। उसे इन घुड़दौड़ों से विशेष दिलचस्पी नहीं थी; फिर भी वह घुड़दौड़ के परचो का हमेशा अध्ययन करता था और कुछ कर गुज़रने के लिए प्रत्येक घोड़े की पूरी खोज-खबर रखता था। उसने बताया कि घोड़ों का समूह तो बिकट था; किन्तु इटली मे वैसे ही घोड़े दौड़ा करते थे। वृद्ध मेअर्स क्रोवैल को बहुत चाहता था और उसे घुड़दौड़ के (टिप्स) पूर्व-संकेत दिया करता था। मेअर्स प्रत्येक घुड़दौड़ में जीतता; किन्तु किसी को पूर्व-संकेत देना उसे पसन्द नहीं था; क्योंकि उससे जीत की रकम कम हो जाया करती थी। घुड़दौड़ में वहॉ बड़ी बेईमानी से काम लिया जाता था। जो व्यक्ति और सभी स्थानो से, घुड़दौड़ खेलने के अयोग्य ठहराये जाकर, निकाल दिए गए थे, वे ही इटली में आकर घुड़दौड़ में भाग लिया करते थे। मेअर्स की सूचना लाभदायक होती थी; किन्तु मैं उससे पूछना घृणास्पद समझता था। पूछने पर कभी-कभी वह उत्तर ही नहीं देता। यदि कोई उससे पूछता, तो उसके मुख पर ये भाव बिलकुल स्पष्ट दिखाई देते कि उसे घुड़दौड़ के विषय में कुछ बतलाते हुए बड़ा कष्ट हो रहा है। किन्तु किसी कारणवश वह हमें संकेत देते समय अपने-आप को खुशनसीब समझता था। क्रोवैल को बतलाते समय तो उसे औरों की अपेक्षा बहुत कम बुरा लगता था। क्रोवैल की ऑखों में चोट लगी थी। एक ऑख तो बुरी तरह जख्मी हो गई थी। मेअर्स की ऑखों में भी कुछ तकलीफ़ थी और शायद इसी से वह क्रोवैल को चाहता था। मेअर्स अपनी पत्नी तक को कभी यह नहीं बताता था कि वह कौन-सा घोड़ा खेल रहा है। वह अपनी ही इच्छा से खेलती और जीतती या हारती—प्रायः हारती ही और लगातर बड़बड़ाया करती।

हम चारों एक खुली हुई गाड़ी में सॉन सिरो (घुड़दौड़ का स्थान) के लिए

चल पड़े। दिन बड़ा सुन्दर था। हम लोग उद्यान से होते हुए, ट्राम-पथ के साथ-साथ, शहर के बाहर पहुँच गये, जहाँ सड़क धूल से भरी हुई थी। मार्ग के दोनों ओर लोहे की चहारदीवारी के भीतर बंगले बने थे। उनके सामने ही बड़े-बड़े बगीचे थे, जिनके बीच में नालियाँ बनी थीं। उन नालियों में पानी बह रहा था। वहाँ तरकारियों के हरे-भरे बगीचे भी थे। उनके पत्तों पर धूल जमी हुई थी। मैदान के पार, खेतों में, किसानों के घर दिखायी दे रहे थे। उनके आसपास हरे-भरे खेत लहलहा रहे थे, जिनमें सिंचाई की नालियाँ बह रही थीं। उनसे उत्तर की ओर पहाड़ खड़े थे। घुड़दौड़ के मैदान में बहुत-सी सवारियाँ जा रही थीं। द्वार रक्षकों ने बिना प्रवेशपत्र के ही हमें भीतर जाने दिया; क्योंकि हम अपने सैनिक वेश में थे। हम गाड़ी में से उतरे, दौड़ का कार्यक्रम खरीदा और भीतरी क्षेत्र को पार करते हुए, घुड़दौड़-पथ के चिकने-मोटे घास पर से होकर उस अहाते के पास पहुँचे, जहाँ दौड़ में भाग लेने वाले घोड़े खड़े थे। खेल देखने के लिए बनाये गये चबूतरे पुराने और लकड़ी के बने थे। दाँव लगाने के खेमे नीचे थे और अस्तबल के पास एक पंक्ति में बने थे। भीतरी क्षेत्र में घेरे के पास सैनिकों का एक समूह खड़ा था। घोड़ों का वह अहाता आदमियों से काफ़ी भर गया था। चबूतरे के पीछे वाले वृक्षों के नीचे एक गोल चक्र में घोड़ों को घुमाया जा रहा था। हमें वहाँ अपने कई परिचित व्यक्ति मिल गये! फर्ग्यूसन और कैथरीन के बैठने के लिए हमने कुर्सियों की व्यवस्था करवा दी और घोड़ों को देखने लगे।

घोड़े सिर लटकाये हुए अपने सईसों के पीछे, एक-के-बाद-एक, चारों ओर का चक्कर लगा रहे थे। क्रोवैल ने एक काले बैंगनी रंग के घोड़े को देखकर कहा, वह कसम खाकर कह सकता है कि उस घोड़े को रंगा गया है। हमने उसे ध्यानपूर्वक देखा और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वैसा होना सम्भव था। उसे उस समय बाहर निकाला गया था, जब जीन कसने की घंटी बजने ही वाली थी। सईस की बाँह पर लगे हुए नम्बर के सहारे हमने कार्यक्रम के काग़ज़ में उस घोड़े को खोज की। सूची में उसका नाम 'जापालाक' दिया गया था और उसे काला बधिया किया हुआ घोड़ा बताया गया था। दौड़ ऐसे घोड़ों की थी, जिन्होंने एक हज़ार लायर अथवा इससे अधिक रकम की दौड़ कभी नहीं जीती थी। कैथरीन को तो विश्वास-सा था कि उस घोड़े का रंग बदल दिया गया है। फर्ग्यूसन बोली कि इस विषय में वह निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकती। मुझे भी उसके विषय में शंका थी। पर हम सबने एकमत होकर उस पर दाँव लगाने का निश्चय किया

और सौ लायर निकाल लिये। किस घोड़े के जीतने पर अनुमानतः कितनी रकम मिलेगी, इस-सम्बन्धी घोषणापत्र से मालूम हुआ कि वह एक के पैंतीस देगा। क्रोवैल टिकिटें खरीदने चला गया। हम लोग जॉकियों (घुड़दौड़ में घोड़े पर सवार रहने वालों) को देखते रहे। उन्होंने एक बार फिर चारों ओर का चक्कर लगाया। उसके बाद वे वृक्षों के बीच से निकलते हुए घुड़दौड़-पथ की ओर चल दिये और धीमी-सरपट चाल से दौड़ प्रारम्भ होने के स्थान पर पहुँच गये।

हम दौड़ ठीक से देखने के लिए चबूतरे पर चढ़ गए। सॉन सिरो में उस समय दौड़ प्रारम्भ होने के स्थान पर कोई ऐसी लचीली रुकावट नहीं थी, जिसके पीछे घोड़े एक पंक्ति में खड़े हो जायें और दौड़ प्रारम्भ होते ही वह रुकावट स्वयं छूटकर एक ओर हो जाए। अतः दौड़ आरम्भ कराने वाले व्यक्ति ने सब घोड़ों को एक पंक्ति में खड़ा कराया। दौड़-पथ के उस किनारे खड़े वे बहुत छोटे दिखायी देते थे। फिर दौड़ आरम्भ करानेवाले ने अपना लम्बा कोड़ा फटकार कर दौड़ शुरू कराई। घोड़े हम लोगों के सामने से निकले। काला घोड़ा उन सबमें काफ़ी आगे था। मोड़ पर पहुँचकर वह दूसरों से बहुत आगे निकल गया। मैंने अपने दूरबीन से घोड़ों को दूसरे छोर पर दौड़ते हुए देखा। काले घोड़े का जॉकी उसे अपनी सीमा में रखने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा था; पर वह उस पर काबू पाने में असमर्थ था। दूसरे मोड़ का चक्कर लगाते हुए घोड़े जब विस्तार में आये, तो काला घोड़ा अन्य घोड़ों से पन्द्रह हाथ आगे था। दौड़ के अन्तिम छोर पर पहुँचने के बाद भी वह आगे की ओर निकल गया और मोड़ का चक्कर काट कर रुक गया।

"आश्चर्यजनक घोड़ा है।" कैथरीन बोली—"हमें अब तीन हज़ार लायर से भी ऊपर मिलेंगे। यह घोड़ा तो वास्तव में अद्‌भुत निकला!"

"मैं आशा करता हूँ कि, हमें पैसे मिलने से पहले उस पर लगा हुआ रंग धुल नहीं जायेगा।"

"है, बड़ा प्यारा घोड़ा!—" कैथरीन बोली—"मालूम नहीं, श्री मेअर्स ने इस पर दाँव लगाया है या नहीं?"

"क्या आपने जीते हुए घोड़े पर दाँव लगाया था?" मैंने श्री मेअर्स से पूछा। उसने सिर हिलाकर हामी भरी।

"मैंने नहीं लगाया।" श्रीमती मेअर्स ने कहा—"मेरे बच्चो, तुमने किस पर दाँव लगाया था?"

"जापालाक पर।"

"सच ? वह तो एक के पैंतीस दिलायेगा।"

"हमें उसका रंग पसंद था।"

"मुझे पसंद नहीं आया। मैंने सोचा कि यह तो बिलकुल बीमार-सा लगता है। लोगो ने मुझे उस पर दॉव लगाने की सलाह भी नहीं दी।"

"वह कुछ ज़्यादा पैसे नहीं दिलाएगा।" मेअर्स ने कहा।

"घुड़दौड़-पत्रक के विवरणों में उसे एक के पैंतीस दिलानेवाला बताया गया है।" मैं बोला।

"पर उससे अधिक रकम-प्राप्ति की आशा मत करो। आख़िरी क्षण," मेअर्स बोला—"लोगों ने उसके ऊपर बहुत-सा पैसा लगा दिया था।"

"कौन हैं वे ?"

"कैम्पटन और उसके गुट के व्यक्ति। देखना तुम। वह एक के दो भी नहीं दिलायेगा।"

"तब हमें तीन हज़ार लायर नहीं मिलेंगे—" कैथरीन ने कहा—"इस तरह की धोखेबाज़ी से भरी घुड़दौड़ मुझे ज़रा भी पसंद नही है।"

"हमें दो सौ लायर तो मिलेंगे ही।"

"उससे क्या होनेवाला है ? उससे हमारा कौन-सा लाभ होगा भला ? मैं तो समझी थी कि हमें तीन हज़ार मिलेंगे।"

"यह तो बड़ा कुटिलतापूर्ण और निन्दनीय व्यापार है।" फर्ग्यूसन ने कहा।

"है ही—" कैथरीन बोली—"यदि कुटिलतापूर्ण न होता, तो हम उस पर एक पैसा भी न लगाते। पर तीन हज़ार लायर प्राप्त कर के मैं वास्तव में, बड़ी प्रसन्न होती।"

"चलो, नीचे चलकर कुछ पिएँ और देखें कि आख़िर क्या दिया जानेवाला है।" क्रोवैल बोला। जहॉ भुगतान के नम्बर लगाये जाते थे, हम वहॉ पहुँचे। भुगतान करने की घण्टी बजी। हमने देखा कि जापालाक के नाम के सामने भुगतान-अङ्क १८·५० लिखा था। इसका अर्थ था कि दस लायर की बाज़ी पर जितनी रकम लगानी पड़ती है, उस से भी कम रकम मिलनेवाली थी।

हम चबूतरे के नीचे के उपाहारगृह में गये। वहॉ हमने व्हिस्की और सोड़ा अलग-अलग लिया। वहीं हम अचानक दो इटालियनों से टकरा गये। उन्हें हम पहचानते थे। जब हम युवतियों (कैथरीन और फर्ग्यूसन) के पास लौटे, तो उप-न्यायाधीश मैक एडम्स और वे दोनों इटालियन भी हमारे साथ चले आए। वे दोनों इटालियन बड़े व्यवहारकुशल थे। मैक एडम्स कैथरीन से

गप्पें लड़ाने लगा। हम पुनः दाँव लगाने चल दिए। मेअर्स चबूतरे के पास खड़ा था।

"इससे पूछो तो सही, यह कौन-सा घोड़ा खेल रहा है?" मैंने क्रोवैल से कहा।

"कहिए श्री मेअर्स, आप कौन-से घोड़े के जीतने की आशा करते हैं?" क्रोवैल ने पूछा। मेअर्स ने कार्यक्रम का काग़ज़ निकाला और अपनी पेन्सिल से पाँचवें नम्बर की ओर संकेत किया।

"यदि हम भी इसी घोड़े पर दाँव लगाएं, तो आप बुरा तो नहीं मानेंगे?" क्रोवैल ने पुनः प्रश्न किया।

"लगाओ, लगाओ। पर मेरी स्त्री से मत कहना कि मैंने तुम्हें यह संकेत दिया है।"

"क्या आप कुछ पीना पसंद करेंगे?" मैंने पूछा।

"नहीं, धन्यवाद। मैं कभी शराब नहीं पीता।"

हमने पाँचवें घोड़े के नाम से उसके प्रथम आने के लिए सौ लायर लगाये और दूसरे नम्बर पर आने के लिए सौ लायर और लगा दिये। उसके बाद हमने दुबारा अलग-अलग सोड़ा और व्हिस्की पी। मुझे यह सब बड़ा अच्छा लग रहा था। दो अन्य इटालियनों ने भी हमारे साथ शराब पी। उन दोनों को अपने साथ लेकर हम युवतियों के पास लौट आए। ये इटालियन भी बड़े सभ्य थे। इनका व्यवहार भी उन्हीं दो इटालियनों के सदृश था, जो पहली बार हमारे साथ आये थे। थोड़ी देर बाद, कोई भी बैठा नहीं रह सका। मैंने कैथरीन को टिकिटें दे दीं।

"यह कौन-से घोड़े का टिकिट है?"

"मुझे नहीं मालूम। श्री मेअर्स की पसन्द है।"

"क्या तुम्हें इसका नाम तक नहीं मालूम?"

"नहीं, कार्यक्रम के काग़ज़ से तुम उसके नाम का पता लगा सकती हो। मेरे ख़याल से पाँचवाँ नम्बर है उसका।"

"तुम्हारे विश्वास की भी हद हो गई।" वह बोली।

पाँच नम्बर जीता तो अवश्य; पर उसने धेला भी नहीं दिया। श्री मेअर्स तो नाराज हो गए।

"केवल बीस लायर अधिक प्राप्त करने के लिए आपको दो सौ लगाने पड़े।" वह बोला—"दस के बदले केवल बारह लायर्स। व्यर्थ है बिलकुल। मेरी स्त्री बीस लायर हार गई।"

"मैं तुम्हारे साथ नीचे चलूँगी।" कैथरीन मुझसे बोली। वे इटालियन भी खड़े हो गए। हम सीढ़ियों पर से नीचे उतरे और घोड़ों के अहाते के पास पहुँचे।

"क्या तुम्हें यह सब पसंद है?" कैथरीन ने पूछा।

"हाँ, मुझे तो पसंद है।"

"मेरे भी ख़याल से है तो ठीक—" वह बोली—"किन्तु प्रियतम, मैं एक बारगी इतने आदमियों से मिलना पसंद नहीं करती।"

"हम बहुत-से आदमियों से तो नहीं मिले।"

"नहीं; किन्तु वे मेअर्स और वह बैंकवाला आदमी, उसकी पत्नी और लड़कियाँ—"

"वह मेरी दर्शनी-हुण्डियों को भुना देता है।" मैंने कहा।

"ठीक है; पर वह नहीं तो कोई और भुना देगा। और वे चारों इटालियन—ओफ! कितने त्रासदायक हैं वे!"

"हम यहीं ठहरें और घेरे की इस ओर से घुड़दौड़ देखें, तो?"

"यह तो बड़ा सुन्दर रहेगा। और हाँ, प्रियतम, हम एक ऐसे घोड़े पर दाँव लगाएं, जिसके विषय में हमने अभी तक कुछ सुना ही न हो।—जिसपर श्री मेअर्स कभी दाँव न लगाएँ।"

"अच्छी बात है।"

हमने लाइट फॉर मी नामक घोड़े पर दाँव लगाया, जो पाँच घोड़ों की दौड़ में चौथा आया। हम घेरे पर झुक गए और अपने सामने से खुरों की आवाज़ के साथ दौड़ते हुए घोड़ों का निकलना देखते रहे। सामने ही बड़ी दूरी पर हमें पहाड़ दिखाई दे रहे थे और वृक्षों तथा खेतों से परे मिलान नगर भी नज़र आ रहा था।

"मुझे अब बड़ा भला लग रहा है।" कैथरीन ने कहा। पसीने में लथपथ और भीगे हुए घोड़े अब फाटक पार करते हुए पीछे लौट रहे थे। उनके जॉकी उन्हें शान्त रखने का प्रयत्न कर रहे थे और उन पर सवार, वृक्षों की ओर चले जा रहे थे, ताकि वहाँ पहुँचकर वे उन पर से उतर सकें।

"क्या तुम कुछ पीना पसन्द करोगे? हम एक-एक गिलास यहीं पी लें और फिर इन घोड़ों को देखें।"

"अच्छी बात है। मैं ले आता हूँ।" मैं बोला।

"नहीं, नौकर ले आयेगा।" कैथरीन बोली। उसने अपने हाथ से इशारा

किया और अस्तबल की बगल में बने पैगोडा-बार (मदिरालय) का एक नौकर हमारी ओर आया। हम लोहे की एक गोल टेबल के निकट पड़ी कुर्सियों पर बैठ गए।

"क्या हम दोनों का अकेले साथ रहना तुम्हें अधिक पसन्द नहीं है?"

"है, अवश्य है।" मैंने उत्तर दिया।

"जब वहाँ वे सब लोग बैठे हुए थे, तो मुझे बड़ा सूना-सूना लग रहा था।"

"यह बड़ी सुंदर जगह है।" मैं बोला।

"हाँ, यह सचमुच एक सुन्दर स्थान है।"

"और बड़ा ही अच्छा।"

"मैं तुम्हारे आनन्द में बाधक होकर, उसे बिगाड़ना नहीं चाहती, प्रियतम! जब तुम चाहोगे, तभी मैं लौट पड़ूँगी।"

"नहीं," मैंने कहा—"हम यहीं ठहरेंगे और यहीं शराब पियेंगे। बाद में हम नीचे जायेंगे और खाई कूदने की घुड़दौड़ देखने के लिए पानी की खाई के निकट जाकर खड़े रहेंगे।"

"तुम मेरे प्रति कितने उदार हो!" वह बोली।

कुछ समय तक अकेले रहने पर हम प्रसन्नतापूर्वक पुनः अपने अन्य साथियों से जा मिले। हमारा समय बड़े आनन्द में कटा।

. २१ .

सितम्बर में ठंडी रातें आरम्भ हो गईं। धीरे-धीरे दिन भी ठंडे होने लगे। उद्यान के वृक्षों के पत्तों का रंग बदलने लगा। हमने अनुभव किया कि गरमी अब खत्म होने को आ गयी है। युद्ध बड़े भयानक रूप से चल रहा था। सेनाएँ सॉन-जेब्राइली पर अभी तक अधिकार नहीं कर सकी थीं। बेन्सिज्जा-पठार का युद्ध समाप्त हो चुका था। आधा महीना बीतते-बीतते सॉन-जेब्राइली का युद्ध भी समाप्त होने को आया। हम उसे जीत नहीं सके। एत्तोरे मोर्चे पर लौट गया। घोड़े रोम भेज दिए गये और घुड़दौड़ समाप्त हो गई। क्रोवैल भी अमेरिका वापस भेजे जाने के लिए, रोम चला गया। युद्ध के विरुद्ध, नगर में दो बार विप्लव हुआ। ट्यूरिन में तो बड़ा भयानक विप्लव हुआ था। क्लब

में मुझे एक अंग्रेज़ मेजर ने बताया कि बेन्सिज्जा-पठार तथा सॉन-जेब्राइली के युद्ध में इटालियनो को अपने एक लाख पचास हज़ार सैनिकों से हाथ धोना पड़ा था। उसने कहा कि इसके सिवा कार्सो पर भी चालीस हज़ार व्यक्ति हताहत हुए थे। हम लोग शराब पीते जा रहे थे और वह बातें कर रहा था। उसने कहा कि इस वर्ष का युद्ध तो वस्तुतः यहीं समाप्त हो गया है। वह बोला कि इटालियनों ने इतनी तेज़ी से आगे बढ़ना शुरू किया कि उन्हें लेने के देने पड़ गये।

"फ्लैण्डर्स में भी हमारा आक्रमण बिलकुल व्यर्थ सिद्ध होने जा रहा है—" उसने कहा—"यदि शत्रु इसी प्रकार हमारे सैनिकों को मारते गये, जिस प्रकार उन्होने इस पतझड़ में किया है, तो आगामी वर्ष हमारी मित्र-सेनाओं को वे अच्छी तरह भून कर रख देंगे।"

वह बोला—"यों तो हम अभी भी समाप्त हो चुके हैं—किन्तु जब तक हम इसे स्वीकार नहीं करते, तब तक कोई बात नहीं है। जो राष्ट्र सब से अन्त में यह अनुभव करेगा कि वह समाप्त हो चुका है—वही युद्ध में जीतेगा।"

हमने दुबारा शराब पी। उसने मुझसे पूछा—"क्या आप किसी सैन्याधिकारी के कार्यालय में हैं?"

मैंने कहा—"नहीं।"

"मैं तो हूँ।" उसने उत्तर दिया।

हम क्लब में पीछे की ओर, चमड़े के एक बड़े सोफ़े पर अकेले बैठे हुए थे। उसके जूते चिकने और चमकदार थे। वे बड़े सुंदर थे। उसने मुझे बताया—"आजकल जो कुछ हो रहा है, वह बड़ा वाहियात है!—अधिकारी लोग केवल सैन्य-दल और अपनी सैन्य-शक्ति के विषय में ही सोचते रहते हैं। वे सैन्य-दलों के प्रश्न को लेकर ही झगड़ते रहते हैं, और जब उनके पास पर्याप्त सैनिक हो जाते हैं, तो वे उन्हें युद्ध में ले जाकर मार डालते हैं। वे अब सब-कुछ हार-से चुके हैं। युद्ध तो साहब, जर्मनो ने जीते। भगवान् की सौगंध! वे सच्चे सैनिक हैं। पहले के हूण भी सच्चे सैनिक थे—किन्तु एक दिन वे भी पराजित हो गये। हम सब भी बाज़ी हार-सी चुके हैं!"

"और रूस? रूस के विषय में क्या कहते हैं आप?" मैंने पूछा। उसने उत्तर दिया—"वे तो पहले ही परास्त हो चुके हैं। शीघ्र ही उनका पतन होगा। आस्ट्रियनों का भी शीघ्र ही पतन होगा। हॉ, यदि उनके पास कुछ हूण सैन्यदल होते, तो वे अवश्य जीत जाते।"

मैंने उससे पूछा कि उसकी क्या धारणा है? क्या वे इस पतझड़ में हमला

करेंगे? वह बोला—"अवश्य! इटालियन लोग परास्त हो चुके हैं। सब जानते हैं कि वे हौसला हार चुके हैं। वे पुराने हूण, उनकी सन्तानें—आस्ट्रियन लोग टेन्टिनो को पार करके नीचे उतरेंगे और विसेन्जा पहुँचकर, रेल की लाइनें तोड़ देंगे, तब इटालियन लोगो की क्या हालत होगी? कहाँ जायेंगे वे?"

मैंने कहा—"सन् सोलह में भी उन्होंने ऐसा प्रयत्न किया था।"

"जर्मनों के साथ नहीं।"

"हाँ।" मैंने कहा।

"किन्तु अब वे शायद ऐसा नहीं करेंगे—" उसने कहा—"यह तो बहुत आसान तरीक़ा है। वे तो कोई जटिल तरक़ीब से काम लेंगे और तब बुरी तरह परास्त हो जायेंगे।"

"मुझे अब जाना है।" मैंने कहा। मुझे अस्पताल लौटना था।

"अच्छा, नमस्ते।" उसने कहा। और फिर बड़े उल्लास के साथ बोला—"भाग्य आपका हर प्रकार से साथ दे!" संसार के प्रति वह जितना निराश था, व्यक्तिगत जीवन में वह उतना ही प्रफुल्ल था।

मैंने नाई की दूकान पर पहुँच कर दाढ़ी बनवाई और अस्पताल की ओर बढ़ा। मेरी टाँग अब काफ़ी अच्छी हो गयी थी। तीन दिन पहले डाक्टरो ने उसकी परीक्षा की थी। बड़े अस्पताल में उपचार बन्द होने से पूर्व मुझे अभी भी कुछ और चिकित्साएँ करानी थीं। मैं एक गली में से चला जा रहा था। चलते हुए मैं कोशिश करता था कि मुझे लंगड़ाकर न चलना पड़े। एक पुलिया के नीचे, मार्ग के पास एक बूढ़ा आदमी काले काग़ज़ पर बाह्याकृतियाँ (रेखाचित्र) काट रहा था। मैं रुककर उसे देखने लगा। दो लड़कियाँ वहाँ बैठी अपनी बाह्याकृतियाँ बनवा रही थीं। उसने एक साथ उन दोनों की बाह्याकृतियाँ काटीं। वह बड़ी शीघ्रता से उनकी ओर देखदेख कर चित्र काटता जा रहा था। काम करते समय उसका सिर एक ओर को झुका था। लड़कियाँ मूर्खों के समान दाँत निकाले हँस रही थीं। उस बूढ़े कलाकार ने वे बाह्याकृतियाँ मुझे दिखाईं, उन्हें सफ़ेद काग़ज़ पर चिपकाया और उन लड़कियो को दे दिया।

"बड़ी सुन्दर हैं।" वह बोला—"आप भी अपनी एक बाह्याकृति बनवाइए न, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

लड़कियाँ आगे निकल गयी थीं और रास्ते में अपनी बाह्याकृतियाँ देख-देखकर हँसती जा रही थीं। वे देखने में वस्तुतः सुन्दर थीं। उनमें से एक मेरे अस्पताल से आगे, एक शराब की दूकान पर काम करती थी।

"अच्छी बात है।" मैंने उस वृद्ध से कहा।

"अपनी टोपी उतार लीजिए।"

"नहीं, इसके साथ ही बनाओ।"

"तब उतनी सुंदर आकृति नहीं आ सकेगी।" बूढ़े ने कहा—"किन्तु"—उसका चेहरा खिल उठा—"वह एक सैनिक के अधिक उपयुक्त अवश्य होगी।"

उसने काले काग़ज़ पर आकृति काटनी आरम्भ की; आकृति कट जाने पर दोनों तहों को अलग किया और उन पार्श्व-चित्रों को एक कार्ड पर चिपकाकर मुझे दे दिया।

"कितने पैसे हुए?" मैंने पूछा।

"पैसे की कोई बात नहीं है।" उसने अपना हाथ हिलाते हुए कहा—"यह तो मैंने आपकी ख़ातिर यों ही बना दिया।"

"कृपया कुछ तो लीजिये।" मैंने कुछ सिक्के निकालते हुए कहा।

"नहीं। मैंने अपनी प्रसन्नता के लिए ही तो आपकी आकृति बनायी है। पैसे अपने पास ही रखिए। अपनी प्रेमिका को कोई उपहार ले दीजियेगा।"

"अच्छा, अगली भेंट तक के लिए नमस्ते और अनेक धन्यवाद!"

"नमस्ते, जब तक कि आप उसे लेकर फिर कभी इस ओर न आयें।"

मैं अस्पताल पहुँचा। कुछ पत्र आ कर पड़े हुए थे—एक सरकारी तथा कुछ अन्य पत्र। चिकित्सा समाप्त होने के बाद स्वास्थ्य सुधारने के लिए मुझे तीन सप्ताह की छुट्टी मिली थी और फिर मोर्चे पर लौट जाने का आदेश था। छुट्टी चार अक्टूबर से, जब मेरी चिकित्सा समाप्त होनेवाली थी, प्रारम्भ हो रही थी। तीन सप्ताह का अर्थ था इक्कीस दिन, याने पच्चीस अक्टूबर तक। मैंने अस्पताल में लोगों को बता दिया कि मै ज़रा बाहर जा रहा हूँ और तब थोड़ी दूर सड़क पर चलकर अस्पताल के पास ही एक रेस्तराँ में, रात का खाना खाने के लिए घुस गया। वहीं मैंने अपने पत्र पढ़े और उन्हें समाप्त करने पर "कैरियरे डेल्ला सॅरा" (एक समाचार पत्र) मेज़ पर से उठाकर पढ़ने लगा। एक पत्र मेरे पितामह के पास से आया था। पत्र में कुछ पारिवारिक समाचार थे, राष्ट्र-सेवा-सम्बन्धी कुछ उत्साहजनक बातें थीं, दो सौ डालर की हुण्डी थी और कुछ समाचारो की कतरनें! दूसरा पत्र हमारे भोजनालय के उस पादरी ने भेजा था—बिलकुल नीरस-सा पत्र। एक पत्र मेरी जान-पहचान के एक व्यक्ति का था, जो फ्रेंच सेना में वायुयानचालक था। वह कुछ दिन पहले एक क्रोधित जनसमूह द्वारा किसी कारणवश घेर लिया गया था; उसका पत्र तत्सम्बन्धी

विवरण से भरा था। एक पत्र रिनाल्डी का भी था। उसने मुझसे पूछा था कि मैं मिलान में और कबतक बना रहूँगा। अन्य समाचार भी उसने पूछे थे। लौटते समय कुछ ग्रामोफोन-रेकार्ड ले आने के लिए भी लिखा था। रेकार्डों की सूची भी भेजी थी। मैंने भोजन के साथ किआन्हटी शराब की एक छोटी बोतल खाली कर दी। बाद में, कॉफी के साथ एक गिलास कॉग्नेक ली। समाचार-पत्र पूरा पढ़ डाला, अपने पत्रों को जेब में रखा और समाचारपत्र को वेटर के लिए कुछ इनाम के साथ, मेज़ पर रखकर बाहर आ गया। अस्पताल पहुँचकर मैं अपने कमरे में गया। वहाँ मैंने अपने कपड़े उतारे; पायजामा और लबादा (ड्रेसिंग गाउन) पहना और बगमदे की ओर खुलने वाले दरवाज़े का पर्दा गिरा कर पलंग पर बैठ गया। मैंने श्रीमती मेअर्स द्वारा अस्पताल में "अपने प्रिय बच्चों" को भेंट किए गए समाचारपत्रों के ढेर में से बोस्टन के पत्रों को उठाया और उन्हें पढ़ने लगा।

'शिकागो व्हाइट सॉक्स' दल अमरीकी लीग की विजय-पताका जीतने जा रहा था और "न्यूयार्क-जाइन्ट्स" नेशनल लीग का नेतृत्व कर रहे थे। गोलन्दाज बेब रुथ उस समय बोस्टन की ओर से खेल रहा था। समाचार-पत्र बिलकुल बेकार थे—अधिकाश समाचार स्थानीय और बासे थे और युद्ध के समाचार तो कई दिनों पहले के थे। अमेरिका-से सम्बन्धित समाचारों में सैनिक शिक्षण-केन्द्र-सम्बन्धी समाचारों की भरमार थी। यह प्रसन्नता की ही बात थी कि मैं शिक्षण-केन्द्र में नही था। समाचारपत्रों में केवल बेसबॉल (एक खेल) सम्बन्धी समाचार ही ऐसा था, जो मेरे पढ़ने योग्य था। पर मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। एक साथ बहुत-से समाचार-पत्र पढ़ना और वह भी पूरी दिलचस्पी के साथ—मेरे लिए तो असम्भव ही था। फिर समाचारपत्र पढ़ने का वह कोई विशेष अवसर भी नहीं था। पर मैं उन्हें थोड़ी देर तक उलटता-पलटता रहा। मैं सोच रहा था कि क्या सचमुच अमेरिका युद्ध में कूद पड़ेगा—क्या वह अपने प्रमुख खेलकूद-संघो को बन्द कर देगा? नहीं, कदाचित् अमेरिका ऐसा नहीं करेगा। मिलान में अभी भी घुड़दौड़ें हुआ करती थीं और युद्ध, जैसा चल रहा था, उससे अधिक भयानक रूप नहीं धारण कर सकता था। हाँ, फ्रांस में घुड़दौड़ बन्द कर दी गई थी। हमारा घुड़दौड़वाला घोड़ा 'जापालाक' वहीं का था।

कैथरीन नौ बजे के पहले ड्यूटी पर नहीं आने वाली थी। जब वह ड्यूटी पर आयी, तो मैंने अपनी मंज़िल की ओर आते हुए सीढ़ियों पर उसके पदचाप

सुने। एक बार मैंने उसे बरामदे में, अपने सामने से, निकलते हुए भी देखा। अन्य कमरों का चक्कर लगाने के बाद अन्त में वह मेरे कमरे में आयी। "मुझे देर हो गई, प्रियतम!" वह बोली—"काम बहुत था। कैसे हो तुम?"

मैंने उसे अपने पत्रों और छुट्टी के विषय में बताया।

"तब तो बड़ा अच्छा है—" उसने कहा—"तुम अपनी छुट्टी बिताने कहाँ जाना चाहते हो?"

"कहीं नहीं। मैं यहीं रहना चाहता हूँ।"

"पागल मत बनो। छुट्टी बिताने के लिए तुम कोई स्थान तय कर लो। मैं भी तुम्हारे साथ वहाँ चलूँगी।"

"यह कैसे सम्भव हो सकता है?"

"मैं नहीं जानती। किन्तु मैं चलूँगी अवश्य।"

"तुम सचमुच बड़ी अद्भुत हो!"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। किन्तु जब जीवन में खोने-लायक कुछ नहीं होता, तो उसे निभाना कठिन नहीं होता।"

"क्या मतलब?"

"कुछ खास नहीं। मैं केवल यही सोच रही थी कि जीवन में जो कठिनाइयाँ कभी पहाड़-जैसी दिखाई दे रही थीं, वे सचमुच बहुत छोटी थीं।"

"मेरा खयाल है कि यहाँ से निकलकर मेरे साथ चलने की व्यवस्था करना तुम्हारे लिए कठिन होगा।"

"नहीं, प्रियतम, नहीं! यदि आवश्यकता हुई, तो मैं नौकरी ही छोड़ दूँगी। किन्तु यहाँ तक नौबत नहीं आने पायेगी।"

"कहाँ जाना चाहिए हमें?"

"मुझे इसकी कोई चिंता नहीं है। जहाँ भी तुम चलना चाहो। कहीं भी, जहाँ हम किसी को नहीं जानते हों—कोई हमें न जानता हो।"

"हम कहाँ जाते हैं, इसकी भी तुम्हें कोई फ़िक्र नहीं है?"

"नहीं। मुझे हर स्थान पसन्द आएगा।"

मुझे लगा, जैसे वह किसी उलझन में थी; किन्तु वह अडिग प्रतीत हो रही थी।

"क्या बात है, कैथरीन?"

"कुछ नहीं। कोई बात नहीं है।"

"नहीं, कुछ है तो अवश्य।"

"नहीं, नहीं। सचमुच कुछ नहीं।"

"मैं जानता हूँ—कुछ है ज़रूर। मुझे बताओ, प्रिये! मुझसे तो सब-कुछ कह सकती हो तुम।"

"पर कोई बात भी तो हो।"

"बोलो, बोलो भी।"

"नहीं, मैं कहना नहीं चाहती। मेरा विचार है कि मैं अपनी बात बता कर तुम्हें भी दुःखी और चिन्तित कर दूँगी।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा।"

"सच? तुम्हें ऐसा विश्वास है? मुझे तो चिन्ता नहीं है इसकी; किन्तु कहीं तुम व्यर्थ ही चिंतित न हो उठो! इसीका डर है मुझे।"

"यदि तुम्हें चिन्ता नहीं है, तो मुझे भी नहीं होगी।"

"पर मैं कहना नहीं चाहती।"

"कह दो, कह भी दो।"

"क्या मुझे कहना ही पड़ेगा?"

"हाँ।"

"मैं माँ बनने वाली हूँ, प्रियतम! क़रीब क़रीब तीन महीने बीत चुके हैं। तुम्हें चिन्ता तो नहीं हुई? क्यों? नहीं-नहीं, परमात्मा के लिए तुम चिन्ता मत करो। तुम्हें चिन्ता करनी ही नहीं चाहिए।"

"अच्छा।"

"ठीक है न?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं।"

"मैंने हर सावधानी बरती; किन्तु कोई फल नहीं हुआ—कोई अन्तर नहीं पड़ा।"

"मुझे बिलकुल चिन्ता नहीं है।"

"मेरे वश की बात नहीं थी, प्रियतम! मुझे उसकी चिन्ता भी नहीं हुई। तुम्हें भी चिन्ता नही होनी चाहिए।"

"मैं केवल तुम्हारे ही विषय में चिन्तित हूँ।"

"यही तो! यही तो तुम्हें नहीं करना चाहिए। लोगों को बच्चे पैदा हुआ ही करते हैं। बच्चे हरएक के यहाँ होते हैं। यह तो स्वाभाविक है।"

"तुम बड़ी आश्चर्यमयी हो!"

"नहीं, मैं वैसी नहीं हूँ। किन्तु तुम्हें इसका ख़याल नहीं करना चाहिए,

प्रियतम! मैं प्रयत्न करूँगी और तुम्हें किसी कष्ट में नहीं डालूँगी। मैं जानती हूँ कि मैं पहले ही तुम्हारे लिए काफ़ी तकलीफ़ पैदा कर चुकी हूँ। किन्तु क्या मैं अभी तक एक अच्छी लड़की के समान नहीं रहती आई हूँ? तुम्हें तो यह कभी मालूम भी नहीं हुआ। बोलो, मालूम हुआ कभी?"

"नहीं।"

"ऐसा तो होगा ही। तुम्हें बस चिंतित भर नहीं होना चाहिए। पर मैं देख रही हूँ कि तुम चिंता कर रहे हो। बन्द करो इसे। अभी, इसी समय छोड़ दो चिंता करना। क्या तुम कुछ पीना नहीं पसंद करोगे? मैं जानती हूँ कि शराब सदा तुम्हारे मन को उल्लसित कर देती है, प्राण।"

"नहीं, मैं यों भी प्रसन्न हूँ। और फिर तुम भी कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं हो।"

"नहीं, मैं नहीं हूँ। यदि तुम अपनी छुट्टी बिताने के लिए किसी स्थान का चुनाव कर लो, तो मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए सारी तैयारी कर लूँ। अक्टूबर का मौसम वस्तुतः बड़ा आनंदमय रहेगा। हमारा समय बड़ी मौज़ में कटेगा, प्रियतम! और उसके बाद जब तुम मोर्चे पर चले जाओगे, तब मैं तुम्हें प्रतिदिन पत्र लिखा करूँगी।"

"तब तुम कहाँ रहोगी?"

"अभी तो नहीं कह सकती; किन्तु किसी सुंदर स्थान में ही रहूँगी। इस विषय में मैं पूरी सावधानी बरतूँगी—तुम चिंता न करो, मैं सब ठीक कर लूँगी।"

कुछ देर तक हम मौन बैठे रहे। हम में से कोई एक शब्द भी नहीं बोला। कैथरीन बिस्तर पर बैठी थी। मैं उसके मुख पर आँख गड़ाए था; पर हमने आज एक-दूसरे का स्पर्श तक नहीं किया। हम उसी तरह से एक-दूसरे से अलग बैठे हुए थे, जैसे कमरे में किसी के प्रवेश करते ही लोग सचेत हो जाते हैं और सँभलकर बैठ जाते हैं। कैथरीन ने अपना हाथ बढ़ाया और मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"तुम नाराज़ नहीं हो। नहीं हो न, प्रियतम?"

"नहीं।"

"और तुम्हें ऐसा तो प्रतीत नहीं होता कि, तुम्हें किसी जाल में फँसाया गया हो!"

"हो सकता है, ऐसा कुछ आभास होता हो। किन्तु तुमने मेरे साथ छल किया—ऐसा तो मैं सोच भी नहीं सकता।"

"मेरा मतलब यह नहीं था कि मैंने तुम्हें छला है। मूर्ख मत बनो। मेरा मतलब था— कहीं तुम स्वयं को किसी जाल में फँसा हुआ तो नहीं अनुभव करते हो!"

"तुम सदा यह अनुभव करती रही हो कि तुम्हें छला गया है—तुम्हारे शरीर से छल किया गया है।"

बड़ी देर तक वह कुछ सोचती रही—गुमसुम। बिना हिलेडुले, बिना अपना हाथ छुड़ाए वह मौन बैठी रही।

"'सदा' सुंदर शब्द नहीं है। तुमने उसका उचित प्रयोग नहीं किया।"

"मुझे दुःख है, इसका।"

"ठीक है। किन्तु तुम जानते हो कि मैं आज तक कभी माँ नहीं बनी। मैंने कभी किसी से प्रेम भी नहीं किया। जैसा तुमने चाहा, वैसा ही मैंने, तुम्हारे साथ स्वयं को बनाने का प्रयत्न किया है। तुम्हारी इच्छा के अनुरूप ही अपने-आपको ढालने की कोशिश की है। और तुम, इस पर भी 'सदा' शब्द का प्रयोग करते हो!"

"मैं अपनी इस ग़लती के लिए अपनी जीभ तक कटाने को तैयार हूँ।" मैंने कहा।

"ओह, प्रियतम!" अपने भाव-जगत से लौटती हुई-सी वह बोली—"तुम्हें मेरी बातों का ख़याल नहीं करना चाहिए।" हम मानों पुनः एकसाथ हो गये थे। वह आत्म-चेतना की भावना तिरोहित हो चुकी थी— "हम दोनों तो एक ही हैं। हमें जान-बूझकर एक-दूसरे को ग़लत नहीं समझना चाहिए।"

"नहीं, हम ग़लत नहीं समझेंगे।"

"पर अकसर लोग एक-दूसरे को ग़लत समझ बैठते हैं। वे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और जान-बूझकर ग़लत समझ लेते हैं। और तब वे लड़ बैठते हैं—वे अचानक अलग-अलग हो जाते हैं—उनका प्रेम समाप्त हो जाता है!"

"पर हम कभी नहीं लड़ेंगे।"

"हमें लड़ना भी नहीं चाहिए; क्योंकि इस विश्व में केवल हम दो, एक साथ हैं—एक ओर हैं—और शेष समस्त विश्व दूसरी ओर! यदि हम दोनों के बीच कुछ हुआ, तो दुनिया हमें जीवित नहीं रहने देगी।"

"दुनिया हमारा कुछ नहीं कर सकेगी।" मैंने कहा—"क्योंकि तुम बड़ी बहादुर हो और जो बहादुर हैं, उन्हें कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।"

"मर तो जाते हैं, बहादुर!"

"पर केवल एक ही बार।"

"कह नहीं सकती। किसने कहा ऐसा?"

"कायर व्यक्ति हज़ार बार मरता है; किन्तु बहादुर केवल एक बार—यही न?"

"हाँ! किसने कहा था यह?"

"मुझे स्वयं नहीं मालूम।"

"ख़ैर, किसी ने भी कहा हो। किन्तु जिसने ऐसा कहा, वह कदाचित् स्वय बहुत कायर था।" वह बोली—"कायरों के विषय में तो वह बहुत-कुछ जानता था; किन्तु बहादुरो के बारे में उसे कुछ नहीं मालूम था। यदि बहादुर व्यक्ति बुद्धिमान होता है, तो शायद दो हज़ार बार उसकी मौत होती है। हाँ, वह बेचारा कभी उसका ज़िक्र नहीं करता।"

"मैं कह नहीं सकता। बहादुरों के मन में क्या है, इसका पता लगाना बड़ा कठिन है।"

"हाँ, इसी तरह तो वे अपना अस्तित्व बनाए रखते हैं।"

"तुम्हें इस विषय का पूर्ण ज्ञान है। तुम इस सम्बन्ध में अधिकारपूर्वक कुछ कह सकती हो।"

"तुम ठीक कहते हो, प्रियतम! मैंने तुमसे इसी की अपेक्षा की थी।"

"तुम वस्तुतः बहादुर हो!"

"नहीं, मैं बहादुर नहीं हूँ—" उसने कहा—"किन्तु मैं बहादुर बनना अवश्य चाहूँगी।"

"मैं भी बहादुर नहीं हूँ—" मै बोला—"मैं जानता हूँ कि मेरी क्या स्थिति है। मैं इतना बाहर रह चुका हूँ—मैंने इतनी दुनिया देखी है कि मैं अपनी असलियत जान गया हूँ। मै ठीक उस खिलाड़ी की तरह हूँ, जो दो सौ तीस बार गेद मारने पर भी यह जानता है कि वह किसी काम का आदमी नहीं है।"

"यह दो सौ तीस बार गेद मारनेवाले खिलाड़ी की क्या बात है? सुनने में तो बड़ी प्रभावशाली लगती है।"

"नहीं, मेरा मतलब बेस बॉल के खेल में गेद मारने वाले एक सामान्य खिलाड़ी से है।"

"फिर भी, है तो वह गेद मारने वाला।" उसने मुझे उकसाते हुए कहा।

"मेरा अनुमान है कि हम दोनों ही अपने-अपने घमण्ड में खोये हैं।" मैंने कहा—"फिर भी तुम हो बहादुर!"

"नहीं, किन्तु मैं बहादुर बनूँगी, इस की मुझे आशा अवश्य है।"

"हम दोनों ही बहादुर हैं—" मैं बोला—"और मैं तो बहुत बहादुर हूँ—विशेषतः उस समय, जब मैं शराब पी लेता हूँ।"

"हम सचमुच बड़े अच्छे हैं।" कैथरीन ने कहा। वह आलमारी तक गयी और मेरे लिए कॉग्नेक (शराब) तथा एक खाली गिलास ले आई। "लो शराब पिओ, प्रियतम!" उसने कहा—"तुम मेरे प्रति बड़े उदार रहे हो।"

"अभी मुझे पीने की इच्छा नहीं है।"

"एक गिलास तो लो।"

"अच्छी बात है।" मैंने पानी पीने वाले गिलास में एक-तिहाई कॉग्नेक उड़ेली और पी गया।

"यह बहुत अधिक थी।" उसने कहा—"मैं जानती हूँ कि ब्रांडी बहादुर व्यक्तियों के पीने के लिए ही बनाई गई है; पर तुम्हें सीमा से बाहर नहीं पीना चाहिए।"

"युद्ध के बाद हम कहाँ रहेंगे?"

"कदाचित् वृद्ध व्यक्तियो के लिए बनाए गये किसी निवासस्थान में!" वह बोली—"पिछले तीन वर्षों से मैं मूर्खों की भाँति यही आशा करती आयी हूँ कि इस बार क्रिसमस में युद्ध समाप्त हो जायेगा। किन्तु अब मैं भविष्य की कल्पना करती हूँ और सोचती हूँ कि युद्ध समाप्त होने तक हमारा बेटा लेफ्टिनेण्ट-कमाण्डर बन जायेगा।"

"हो सकता है, वह प्रधान सेनापति भी हो जाये।"

"यदि यह शत-वर्षीय युद्ध हुआ, तो उसे दोनों पदों के लिए प्रयत्न करने का सुयोग प्राप्त हो जायेगा।"

"क्या तुम कुछ नहीं पीओगी?"

"नहीं। शराब तो सदा तुम्हें ही सुख पहुँचाती है, प्रियतम! मुझे तो वह केवल नशे में डुबो देती है।"

"क्या तुमने कभी ब्रांडी नहीं पी?"

"नहीं प्राणेश, मै बड़े पुराने युग की पत्नी हूँ।"

मैंने नीचे फ़र्श की ओर हाथ बढ़ाकर बोतल उठाई और दूसरा गिलास भरा।

"यदि मैं एक बार तुम्हारे साथियों को देख आऊँ, तो अच्छा होगा—" कैथरीन बोली—"जब तक मैं नहीं लौटूँ, तब तक शायद तुम समाचारपत्र पढ़ते रहोगे।"

"क्या तुम्हारा जाना आवश्यक है?"

"अभी नहीं, तो बाद में जाना ही है।"
"तब, अभी ही हो आओ।"
"मैं तुरंत ही वापस आ जाऊँगी।"
"तब तक मैं समाचारपत्र पूरा पढ़ लूँगा।" मैंने कहा।

.२२.

उस रात अचानक ठंढ बढ़ गई और दूसरे दिन वर्षा भी होने लगी। बड़े अस्पताल से लौटते समय मूसलाधार बारिश हो रही थी और इस अस्पताल के अपने कमरे तक आते आते मैं पूरा भीग चुका था। मेरे कमरे से बाहर बरामदे पर बड़े ज़ोर से पानी गिर रहा था। हवा के ज़ोर से पानी के तेज़ झोंके काँच के दरवाज़ों से आ-आकर टकरा रहे थे। मैंने अपने कपड़े बदले और एक गिलास ब्राडी पी ली; किन्तु उसका स्वाद कुछ अच्छा नहीं लगा। उसी रात मैं बीमार पड़ गया और प्रातःकाल नाश्ते के बाद मेरा जी मचलाने लगा।

"इस विषय में तो कोई शंका ही नही है।" अस्पताल के सर्जन ने कहा—"इनकी ऑखों की पुतलियों के आसपास के सफ़ेद भाग को देखो, मिस।"

मिस गेज ने मेरा निरीक्षण किया। उन लोगों ने मुझे एक शीशे में अपना चेहरा दिखाया। मेरी ऑखों की पुतलियों के पास की सफ़ेदी पीलेपन में बदल गई थी। मुझे पाण्डुरोग हो गया था। मैं दो सप्ताह तक उससे पीड़ित रहा। इसी कारण हम दोनों (कैथरीन और मैं) स्वास्थ्य सुधारने के लिए जो छुट्टी मुझे मिली थी, उसे साथ-साथ नहीं बिता सके। हमने लागो-मेज्ज़िओर पर पालान्ज़ा नामक स्थान पर जाने की योजना बनाई थी। पतझड़ के मौसम में जब पत्ते बदलते हैं, तो वहाँ का दृश्य बड़ा सुन्दर लगता है। वहाँ घूमने लायक कई स्थान हैं और वहाँ की झील में आप ट्राउट नामक मछलियों का शिकार भी खेल सकते हैं। स्ट्रेसा की अपेक्षा पालान्ज़ा जाना ही ज़्यादा अच्छा था; क्योकि पालान्ज़ा में कम आदमी रहते हैं। मिलान से स्ट्रेसा पहुँचना इतना आसान है कि वहाँ जाने पर सदा अपनी पहचान के कुछ व्यक्ति अवश्य मिल जाते हैं। पालान्ज़ा में छोटा-सा सुन्दर गॉव भी है और वहाँ आप नाव खेते हुए उन छोटे-छोटे द्वीपों को जा सकते हैं, जहॉ मछुए रहते हैं। सबसे बड़े द्वीप पर, वहाँ एक रेस्तरॉ भी है। किन्तु हम पालान्ज़ा भी नहीं जा सके।

पांडुरोग का मरीज़ बनकर एक दिन जब मैं अपने बिस्तर पर पड़ा था, तब अचानक ही मिस वॉन कैम्पेन कमरे में आयी। उसने आते ही आलमारी खोली और उसे वहाँ रखी हुई खाली बोतलें दिखायी दे गयीं। मैंने दरबान के हाथ खाली बोतलों की एक बड़ी-सी गठरी नीचे भेजी थी। निश्चय ही, मिस वॉन ने उसे बाहर ले जाते हुए देख लिया होगा और इसीलिए कुछ और बोतलों का पता लगाने की इच्छा से ऊपर आ गयी थी। आलमारी में बहुत-सी बोतलें वरमाउथ की थीं। इसके सिवा मार्साला और काप्री की बोतलें, किआन्हटी की खाली कुप्पियाँ तथा कॉग्नेक की भी कुछ बोतलें थीं। दरबान वरमाउथ की बड़ी-बड़ी बोतलें और घास से ढँकी किआन्हटी की कुप्पियाँ तो उठा ले गया था; किन्तु ब्रांडी की खाली बोतलें बाद में ले जाने के विचार से वहीं छोड़ गया था। ये सब ब्रांडी की बोतलें थीं। उनमें एक बोतल भालू की आकृति की थी, जिसमें पहले क्यूमेल (शराब) भरी थी। मिस वॉन कैम्पेन इन बोतलों को देखकर रुष्ट हो गयी। विशेषतः भालू की आकृति वाली बोतल को देखकर तो उसे और भी क्रोध हो आया। उसने उसे उठा लिया। उस आकृति में भालू पंजों को ऊपर उठाए अपने कूल्हों पर बैठा था। बोतल के कॉच से बने हुए सिर में डाट लगा था और उसकी पेंदी में कुछ चिपचिपे टुकड़े दिखाई दे रहे थे। मैं लेटा-लेटा हँस पड़ा।

"उसमें क्यूमेल थी।" मैं बोला—"सबसे अच्छी क्यूमेल इन भालू की आकृति वाली बोतलों में ही आती है। ये बोतलें रूस से आती हैं।"

"और ये सब ब्राण्डी की बोतलें हैं। हैं न?" मिस वॉन कैम्पेन ने पूछा।

"मैं सब बोतलें तो नहीं देख सकता—" मैंने उत्तर दिया—"पर शायद वे ब्राण्डी की ही हों।"

"यह सब कितने दिनों से चल रहा है?"

"मैंने स्वयं ही उन्हें खरीदा और स्वयं यहाँ लाया हूँ।" मैंने कहा—"मेरे पास हमेशा इटालियन अफ़सर मिलने के लिए आते-जाते रहते हैं। ब्राण्डी मैंने उन्हीं को पिलाने के लिए रखी थी।"

"और तुम स्वयं उसे नहीं पीते रहे हो?" उसने कहा।

"नहीं, मैंने स्वयं भी पी है।"

"ब्राण्डी—" वह बोली—"ग्यारह खाली बोतलें ब्राण्डी की—और यह भालू की आकृति वाली बोतल का पेय पदार्थ!"

"क्यूमेल!"

"मैं इन्हें यहाँ से हटाने के लिए किसी आदमी को भेजती हूँ। क्या तुम्हारे पास इतनी ही खाली बोतलें हैं?"

"इस समय तो इतनी ही हैं।"

"और जब तुम्हारे पाण्डुरोग से पीड़ित होने की बात मुझे मालूम हुई, तो मुझे तुम पर दया आ रही थी। पर तुम्हारे ऊपर दया करना!—ना, तुम उसके उपयुक्त पात्र नहीं हो!"

"बहुत-बहुत—धन्यवाद!"

"मेरे विचार से मोर्चे पर न लौटने की तुम्हारी इस इच्छा के लिए तुम्हें दोष नहीं दिया जा सकता। किन्तु मेरा ख़याल था कि इस के लिए मादक-द्रव्यों का सेवन करके पाण्डुरोग पैदा करने की अपेक्षा तुम किसी अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण उपाय का सहारा लोगे।"

"क्या!"

"मोर्चे पर न जाने के लिए मादक—द्रव्यों के सेवन से पांडुरोग से पीड़ित होने की चाल! सुन लिया न तुमने?"

मैं कुछ नहीं बोला।

"जब तक तुम यहाँ पड़े रहने का कोई अन्य मार्ग न ढूँढ निकालो, मेरा विचार है कि पाण्डुरोग से मुक्त होते ही तुम्हें मोर्चे पर जाना पड़ेगा। मेरी समझ से, स्वेच्छा से पैदा किया हुआ पाण्डुरोग तुम्हें स्वास्थ्य सुधारने की छुट्टी प्राप्त करने का अधिकार नहीं दे सकता है।"

"क्या आप ऐसा ही सोचती हैं?"

"हॉ!"

"आपको कभी पाण्डुरोग हुआ है, मिस वॉन कैम्पेन?"

"नहीं; किन्तु मैंने इसके अनेक मरीज़ों को देखा है।"

"क्या आपने इस बात पर भी कभी ध्यान दिया है कि इस रोग के पीड़ित व्यक्ति कैसा महसूस करते हैं?"

"मेरा अनुमान है कि मोर्चे पर जाने की अपेक्षा यह रोग पाल लेना अधिक सुखद होता है।"

"मिस वॉन कैम्पेन!" मैं बोला—"क्या आप ऐसे किसी व्यक्ति को जानती हैं, जिसने अपने गुप्तांगों पर आघात पहुँचाकर स्वयं को अपंग बनाने का प्रयत्न किया हो?"

मिस वॉन कैम्पेन मेरे इस प्रश्न को टाल गई। उसके सामने दो ही मार्ग थे—प्रश्न को टाल देना अथवा कमरा छोड़कर चली जाना। कमरा छोड़कर जाने के लिए वह तैयार नहीं थी; क्योंकि आरम्भ से ही वह मुझसे घृणा करती आ रही थी और आज उसे पूरा-पूरा बदला चुकाने का सुयोग मिला था।

"स्वेच्छा से घाव पैदा कर के मोर्चे से बच निकलने वाले अनेक सैनिकों को मैंने देखा है।"

"मेरा प्रश्न यह नहीं था। मैंने स्वेच्छा से उत्पन्न किए हुए घाव भी देखे हैं। मैंने आपसे पूछा था कि क्या आप ऐसे किसी व्यक्ति को जानती हैं, जिसने अपने गुप्तांगों पर आघात पहुँचाकर स्वयं को अपङ्ग बनाने का प्रयत्न किया हो? उसमें भी पाण्डुरोग से मिलती-जुलती पीड़ा की अनुभूति होती है। यह एक ऐसी पीड़ा है, जिसका अनुभव, मेरे ख़याल से, बहुत ही कम स्त्रियों ने किया होगा। इसीलिए मैंने आपसे पूछा था कि आप कभी पांडुरोग से पीड़ित हुई हैं? मिस वॉन कैम्पेन, क्योंकि..." मिस वॉन कैम्पेन कमरा छोड़कर चली गयी। बाद में मिस गेज आयी।

"तुमने वॉन कैम्पेन से क्या कह दिया? वह बड़ी रुष्ट थी।"

"हम लोग पीड़ा से होने वाली अनुभूतियों की आपस में तुलना कर रहे थे। मैं तो उससे यह कहनेवाला था कि उसने कभी प्रसव के समय होने वाली पीड़ा का अनुभव नहीं किया है.....।"

"तुम निरे मूर्ख हो!" गेज बोली—"वह तुम्हारा नाश करने पर तुली हुई है।"

"उसने पहले ही मेरा सब-कुछ समाप्त कर दिया है।" मैं बोला—"उसने मेरी छुट्टी ख़त्म कर दी और सम्भव है कि अब वह मुझे सैन्य-न्यायालय से दंड दिलवाने का प्रयत्न करे। वह बड़ी नीच है!"

"तुम उसे कभी अच्छे नहीं लगे।" गेज बोली—"पर बात क्या थी?"

"उसका कहना है कि मोर्चे पर मुझे लौटना न पड़े, इसलिए जान-बूझ कर मैंने शराब पी-पीकर पाण्डुरोग पैदा कर लिया।"

"छिः!" गेज ने कहा—"मैं कसम खाकर कह सकती हूँ कि तुमने शराब नहीं पी। हर व्यक्ति कसम खा सकता है कि तुमने शराब नहीं पी।"

"वह इन बोतलों को देख गई है।"

"मैंने तुमसे हज़ार बार कहा था कि इन बोतलों को यहाँ से हटाओ। कहाँ हैं वे?"

"आलमारी में।"

"क्या तुम्हारे पास कोई सूटकेस है?"

"नहीं, उन्हें थैले में बन्द कर दो।"

मिस गेज ने उन बोतलों को थैले में अच्छी तरह बन्द कर दिया। "मैं इन्हें दरबान को दे दूँगी।" वह बोली और द्वार की ओर बढ़ी।

"ठहरो!" मिस वॉन कैम्पेन अचानक ही आ पहुँची—"उन बोतलों को मैं ले जाऊँगी।" वह अपने साथ एक नौकर भी लाई थी। "इन्हें ले जाओ!" उसने नौकर को आदेश दिया। "इन के विषय में अपनी रिपोर्ट लिखते समय मैं ये बोतलें डाक्टर को दिखाना चाहती हूँ।"

वह बरामदा पार करती हुई नीचे चली गयी। नौकर भी थैला लेकर उसके पीछे-पीछे चला गया। उसे मालूम था कि उस थैले में क्या है।

और इन सारी बातों का कोई विशेष परिणाम नहीं निकला। हुआ सिर्फ़ इतना ही कि मुझे अपनी छुट्टी से हाथ धोना पड़ा।

.२३.

जिस रात मैं मोर्चे पर लौटने वाला था, मैंने दरबान को ट्यूरिन से आने वाली गाड़ी में मेरे लिए जगह रोक रखने को भेजा। गाड़ी आधी रात के समय मिलान से रवाना होने वाली थी। वह ट्यूरिन में ही बनती थी। साढ़े दस बजे रात के लगभग वह मिलान पहुँचती थी और छूटने का समय होने तक स्टेशन में ही पड़ी रहती थी। जगह पाने के लिए लोगों को गाड़ी आने से पहले ही प्लेटफार्म पर प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। दरबान ने अपने एक मित्र को साथ ले लिया। उसका मित्र एक मॅशीनगन-चालक था। उन दिनों वह छुट्टी पर था और इस समय एक दर्जी की दूकान पर काम करता था। दरबान को विश्वास था कि वे दोनों मिलकर जगह अवश्य रोक रखेंगे। मैंने उन्हें प्लेटफार्म-टिकट के लिए पैसे दिए। अपना सामान भी उनके हाथ भिजवा दिया। सामान के नाम पर मेरे साथ एक बड़ा थैला, जो कंधे से लटकाया जा सकता था और दो मसक थे।

पाँच बजे के क़रीब मैंने अस्पताल के सब लोगों से विदा ली और बाहर आया। दरबान मेरा सामान अपने घर ले गया। मैंने उससे कह दिया कि मैं

आधी रात से कुछ पहले स्टेशन पर पहुँच जाऊँगा। उसकी स्त्री मुझे "सॅन्योरिनो" (मास्टर या बेटा) कहकर पुकारती थी। मेरे विदा लेते समय वह रोने लगी। उसने अपनी आँखे पोछते हुए मुझसे हाथ मिलाया और फिर रोने लगी। मैंने उसकी पीठ थपथपाई। वह पुनः रो पड़ी। वह मेरे फटे हुए कपड़े वगैरेह सी दिया करती थी। वह एक नाटी, मोटी और फूले हुए चेहरे वाली स्त्री थी। उस के बाल सफ़ेद हो चुके थे। जब वह रोती थी, तो उसका चेहरा बड़ा विचित्र दिखता था।

मैं नुक्कड़ पर पहुँचा। वहाँ शराब की एक दूकान थी। उसी में बैठकर मै खिड़की से बाहर की ओर देखने लगा। बाहर अंधेरा छाया हुआ था। ठंड काफ़ी थी और कुहासा भी। मैने अपनी कॉफी और ग्रेप्पा (शराब) के पैसे चुकाए और खिड़की से आने-जाने वाले व्यक्तियो को देखता रहा। तभी मैने कैथरीन को आते हुए देखा और खिड़की पर आवाज़ कर उसका ध्यान अपनी ओर खींचा। उसने आँखे ऊपर उठाईं, मुझे देखा और मुस्कराई। मैं उससे मिलने के लिए बाहर आ गया। वह एक गहरे नीले रंग का लबादा पहने हुए थी और एक नरम फेल्ट-हैट लगाए थी। हम दोनों साथ-साथ चलने लगे। फुटपाथ पर चलते-चलते, शराब की दूकानो को पार करते हुए, हम बाज़ार के चौक पर आ पहुँचे। उसे भी पीछे छोड़ कर हम सड़क पर बढ़ते गए और मेहराबों के बीच के मार्ग से निकलकर गिरजाघर के चौक पर पहुँच गये। चौक पर ट्रामों की पटरियाँ थीं और उनके आगे गिरजाघर था। वह कुहासे में सफ़ेद और गीला दीख रहा था। हमने ट्रामों की पटरियाँ पार कीं। बाईं ओर दूकानें थीं। उनकी खिड़कियो में प्रकाश जगमगा रहा था। उसी दिशा में 'गैलेरिया' का प्रवेशद्वार खड़ा था और पूरा चौक कुहरे से ढँका था। हम जब गिरजाघर के प्रवेशद्वार के समीप पहुँचे, तो वह बहुत बड़ा दिखाई दिया। उसके पत्थर गीले हो रहे थे।

"क्या तुम भीतर चलोगी?"

"नही—" कैथरीन बोली। हम आगे बढ़ते गए। सामने ही एक दीवार के पत्थर के आधार-स्तम्भ की छाया में हमें एक सैनिक, एक युवती के साथ खड़ा दिखाई दिया। सैनिक ने पत्थर के सहारे उस लड़की को खड़ा कर दिया था और उसे अपने से कसकर चिपकाए हुए था। उसने उसके शरीर के चारों ओर अपना लबादा लपेट दिया था।

"ये भी हमारी ही तरह हैं।" मैंने कहा।

"ना, हमारी तरह कोई भी नहीं है।" कैथरीन बोली।

"काश, उन्हें अपनी कामना-तृप्ति के लिए कोई ऐसा स्थान मिल जाता, जहाँ वे जा सकते।"

"किन्तु उससे उन्हें कोई लाभ नहीं होता।"

"कह नहीं सकता। पर प्रत्येक व्यक्ति के पास कोई-न-कोई ऐसा स्थान तो होना ही चाहिए, जहाँ जाकर वह अपनी तृप्ति कर सके।"

"वे गिरजाघर में जा सकते हैं।" कैथरीन बोली।

हम अब गिरजाघर पार कर चुके थे। चौक के दूसरे छोर से आगे निकल जाने पर हमने फिर गिरजाघर की ओर देखा। कुहासे में लिपटा, वह बड़ा सुन्दर दिखाई दे रहा था। हम चमड़े के सामान की एक दूकान के सामने जाकर खड़े हो गये। दूकान की खिड़की में घुड़-सवारी के जूते, कंधे से लटकाया जानेवाला थैला और बर्फ़ पर फिसलते समय पहने जानेवाले जूते रखे थे। प्रत्येक वस्तु प्रदर्शन के लिए एक-दूसरे से अलग-अलग, सजाकर रखी गई थी। घुड़-सवारी के जूते और बर्फ़ पर फिसलने वाले जूते दो ओर थे और बीच में था, कंधे से लटकाया जानेवाला थैला। उनका चमड़ा काला था। तेल लगाये जाने के कारण वे इतने चिकने दिखाई दे रहे थे, जैसे कई दिनों तक उपयोग में आयी हुई घोड़े की जीन। ऊपर बिजली की बत्ती का प्रकाश पड़ रहा था और वे बहुत चमक रहे थे।

"हम लोग भी कभी बर्फ़ पर फिसलेंगे।"

"दो माह बाद, म्यूरेन में बर्फ़ पर फिसलना शुरू होगा।" कैथरीन बोली।

"फिर हम वहीं चलेंगे।"

"अच्छी बात है।" वह बोली। हम दूसरी दूकानों की खिड़कियों को देखते हुए आगे बढ़ते गये और अन्त में एक गली में मुड़ गये।

"मैं इस रास्ते कभी नहीं आई।"

"मैं बराबर इसी रास्ते अस्पताल जाया करता था।" मैं बोला। वह एक सकरी गली थी। हम उसकी दाहिनी ओर से चलने लगे। बहुत-से लोग आ-जा रहे थे। गली के दोनों ओर काफ़ी दूकानें थीं और उनकी खिड़कियों से भीतर का प्रकाश स्पष्ट दिखायी दे रहा था। हमने एक खिड़की में रखे हुए पनीर की थप्पी पर नजर दौड़ाई और फिर मैं एक हथियारों की दूकान के सामने जाकर खड़ा हो गया।

"ज़रा भीतर चलो। मुझे एक बन्दूक ख़रीदनी है।"

"किस तरह की बन्दूक ?"

"एक पिस्तौल।" हम अन्दर गये। मैंने अपना कमर-पट्टा खोला और पिस्तौल की खाली पेटी के साथ उसे मेज़ (काउंटर) पर रख दिया। मेज़ के पीछे दो स्त्रियाँ खड़ी थीं। उन्होंने हमें बहुत-सी पिस्तौलें लाकर दिखाईं।

"देखिये, पिस्तौल इस पेटी में ठीक से आ जाये।" मैंने पिस्तौल रखने की पेटी को खोलते हुए कहा। पेटी भूरे चमड़े की बनी थी। शहर में पहनकर निकलने के विचार से ही मैंने वह पुरानी पेटी ख़रीदी थी।

"क्या इन लोगों के पास अच्छी पिस्तौलें हैं ?" कैथरीन ने पूछा।

"सभी क़रीब-क़रीब एक-सी हैं। क्या मैं इसकी जाँच कर के देख सकता हूँ ?" मैंने उस स्त्री से पूछा।

"निशाना मारने की जगह तो अभी हमारे यहाँ नहीं है।" वह बोली—

"पर विश्वास रखिये, यह चीज़ बड़ी अच्छी है। इससे कभी आपका निशाना ग़लत नहीं होगा।"

मैंने उसे मोड़ा और उसका घोड़ा पीछे की ओर दबाया। उसका स्प्रिंग कड़ा था; किन्तु अच्छी तरह काम करता था। मैंने उसे परखा और पुनः मोड़ा।

"यह उपयोग में आ चुकी है।" वह स्त्री बोली—"पहले यह एक अफ़सर के पास थी, जो एक कुशल निशानेबाज़ था।"

"क्या आप ही ने यह पिस्तौल उसे बेची थी ?"

"जी, हाँ।"

"तब यह आपके पास वापस कैसे आ गई ?"

"उसके अर्दली के द्वारा।"

"हो सकता है, मेरी पुरानी पिस्तौल भी आपके ही पास हो।" मैं बोला—"कितनी क़ीमत है इसकी ?"

"पचास लायर। बहुत सस्ती है।"

"अच्छी बात है। मुझे दो अतिरिक्त क्लिप और कारतूसों की एक पेटी और चाहिए।" वह उन्हें मेज़ के नीचे से निकालकर ले आई।

"क्या आपको तलवार की भी ज़रूरत है ?" उसने पूछा—"मेरे पास कुछ बहुत अच्छी और सस्ती तलवारें हैं।"

"मैं मोर्चे पर जा रहा हूँ।" मैं बोला।

"ओह, हाँ; तब आपको तलवार की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।" वह बोली।

मैंने कारतूसों और पिस्तौल का मूल्य चुकाया। मैगज़ीन भर कर उसे अपने

स्थान पर बिठा दिया। पिस्तौल मैंने पेटी में डाल दी और अतिरिक्त क्लिपों में गोलियाँ भर लीं। फिर मैंने बकसुए लगाकर पेटी को पट्टे पर कसकर बाँध लिया। पिस्तौल काफी भारी प्रतीत हुई। फिर भी मैंने सोचा कि ऐसी ही पिस्तौल ख़रीदनी चाहिए, जो ज़्यादा प्रचलित हो! उसके कारतूस सरलता से मिल सकते हैं।

"अब हम शस्त्रों से पूर्ण सुसज्जित हैं।" मैंने कहा—"यही एक ऐसी वस्तु थी, जिसे खरीदने की मुझे हमेशा याद रखनी पड़ती थी। मेरी पुरानी पिस्तौल अवश्य ही किसी को अस्पताल के रास्ते पर पड़ी मिली होगी।"

"मुझे विश्वास है कि वह काफ़ी अच्छी पिस्तौल है!" कैथरीन बोली।

"क्या उसके साथ और भी कुछ गायब हुआ था?" दूकान की उस स्त्री ने पूछा।

"याद नही आता मुझे।"

"पिस्तौल के साथ छोटी-सी रस्सी की ख़ूबसूरत मुठिया भी है।" वह बोली।

"ऐसा ही कुछ मेरी नज़रों से भी गुज़रा था।" स्त्री मेरे हाथों और कुछ बेचना चाहती थी।

"आपको सीटी की आवश्यकता तो नहीं है?"

"नहीं।"

उसने नमस्ते की और हम बाहर फुटपाथ पर आ गये। कैथरीन ने खिड़की की ओर देखा। स्त्री ने बाहर झाँका और हमें देखते पा कर सम्मान प्रदर्शित करते हुए थोड़ी झुकी।

"ये लकड़ी में जड़े हुए छोटे छोटे कॉच वहाँ क्यों रखे हैं?"

"वे पक्षियों को आकर्षित करने के लिए हैं। लोग उन्हें बाहर, मैदानों में ले जाकर, बड़े वेग से गोलाकार घुमाते हैं। चंडूल पक्षी उन्हें देखकर बाहर निकलते हैं और तब इटालियन लोग उनका शिकार करते हैं।"

"इटालियन सचमुच ही बड़े तीक्ष्ण बुद्धिवाले हैं।" कैथरीन ने कहा—"क्या अमेरिका के लोग चंडूलों का शिकार नहीं करते, प्रियतम?"

"नहीं, कुछ खास नहीं।"

हम लोग सड़क पार करके दूसरी ओर से चलने लगे।

"मुझे अब कुछ ठीक लग रहा है।" कैथरीन बोली—"जब हमने घूमना शुरू किया था, तब मेरी तबीयत ठीक नहीं थी।"

"जब हम दोनों साथ होते हैं, तब हमें हमेशा ही अच्छा लगता है।"

"हम सदा साथ रहेंगे।"

"हाँ, सिवा इसके कि आज रात ही मैं तुमसे दूर जा रहा हूँ।"

"इस सम्बन्ध में मत सोचो, प्रियतम।"

हम सड़क पर चलते गये। कुहरे ने सड़क पर लगी बत्तियों के प्रकाश को पीले रंग में बदल दिया था।

"तुम थक तो नहीं गए हो?" कैथरीन ने पूछा।

"तुम्हारा क्या हाल है?"

"मुझे तो कुछ नहीं हुआ है। घूमने में भी एक अनोखा आनंद है।"

"किन्तु हमें अधिक नहीं घूमना चाहिए।"

"नहीं–नहीं।"

हम एक गली में मुड़ गए। उसमें बत्तियाँ नहीं थीं; पर हम गली में चलते गये। एक स्थान पर मैं रुक गया और कैथरीन को अपनी ओर खींच कर मैंने उसका चुम्बन ले लिया। चुम्बन लेते समय, मुझे ऐसा लगा कि उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया और मेरा लबादा खींच कर उसे अपने चारों ओर लपेट लिया। लबादे में हम दोनों ही छिप गए। उस सूनी-सी गली में हम दोनो एक ऊँची दीवार से सटकर खड़े हो गये।

"चलो, हम कहीं एकान्त में चलें।" मैं बोला।

"अच्छी बात है।" कैथरीन तैयार हो गयी। हम उस समय तक उस गली में चलते गए, जब तक वह नहर की बगल की एक चौड़ी सड़क से जाकर नहीं मिल गई। उसके दूसरी ओर ईंट की एक दीवार तथा बहुत-से मकान थे। सड़क पर कुछ आगे की ओर हमने एक ट्राम को पुल पार करते देखा।

"हमें पुल पर कोई किराए की गाड़ी मिल जाएगी।" मैंने कहा और हम किसी सवारी की राह देखते हुए कुहरे में, उस पुल पर खड़े रहे। घर जाते हुए लोगों से भरी कई ट्राम गाड़ियाँ भी हमारे सामने से निकल गईं। एक गाड़ी दिखाई भी दी; किन्तु उसमें कोई बैठा था। कुहरा धीरे-धीरे वर्षा का रूप धारण करता जा रहा था।

"या तो हम पैदल चले चलें या फिर कोई ट्राम ही पकड़ लें।" कैथरीन ने कहा।

"अभी कोई-न-कोई गाड़ी आती ही होगी।" मैं बोला।

"यहाँ से बहुत-सी गाड़ियाँ निकला करती हैं।"

"एक आ भी रही है।" उसने कहा।

गाड़ीवान ने अपना घोड़ा रोका और 'मीटर' (जिसमें किराये की रकम स्वयं अंकित हो जाती है) नीचे गिरा दिया। गाड़ी की छत उठी हुई थी और गाड़ीवान के कोट पर पानी की बूंदें नज़र आ रही थीं। उसका कलफ़ किया हुआ हैट गीला होने के कारण चमक रहा था। हम अपने स्थान पर पीछे की ओर खिसक कर और बिलकुल सट कर बैठ गए। गाड़ी की छत उठी होने के कारण भीतर बिलकुल अंधेरा छा गया था।

"तुमने उसे कहाँ ले जाने के लिए कहा है?"

"स्टेशन पर। स्टेशन के उस पार एक होटल है, जहाँ हम लोग ठहर सकते है।"

"क्या हम इसी हालत में वहाँ जा सकते हैं? बिना सामान के?"

"हाँ।" मैंने उत्तर दिया।

वर्षा के कारण कई गलियों से होते हुए स्टेशन तक जानेवाला मार्ग काफ़ी लम्बा प्रतीत हो रहा था।

"क्या हम खाना नहीं खाएँगे।" कैथरीन बोली—"मुझे तो वहाँ हुँचते-पहुँचते भूख लग आएगी।"

"हम अपने कमरे में ही खाना मँगवा लेंगे।"

"मेरे पास पहनने तक को कुछ नहीं है। रात का पहना जानेवाला लबादा भी नहीं।"

"हम रास्ते में खरीद लेंगे।" कहते हुए मैंने गाड़ीवान को आदेश दिया—"मॉन्ज़ोनी की ओर से चलो।" उसने अपना सिर हिलाया और अगले नुक्कड़ पर बायीं ओर मुड़ गया। बड़ी सड़क आते ही कैथरीन लबादे की दूकान खोजने लगी।

"वह रही एक दूकान।" उसने कहा। मैंने गाड़ीवान को रुकने का आदेश दिया। कैथरीन नीचे उतरी और सड़क पार करती हुई दूकान में घुस गई। मैं गाड़ी में ही बैठा उसके लौटने की प्रतीक्षा करता रहा। बाहर वर्षा हो रही थी। मुझे भीगे हुए पथ और हाँफते हुए गीले घोड़े के शरीर से निकलने वाली गन्ध का अनुभव हो रहा था। कैथरीन एक पुलिन्दा लेकर वापस लौटी। गाड़ी में उसके बैठते ही गाड़ीवान ने गाड़ी चला दी।

"मैंने व्यर्थ ही अधिक पैसा खर्च कर डाला, प्रियतम!" वह बोली—"किन्तु लबादा है बड़ा अच्छा।"

होटल पहुँचने पर मैंने कैथरीन से गाड़ी में ही बैठे रहने के लिए कहा

और स्वयं उतरकर मैनेजर के पास पहुँचा। होटल में बहुत-से कमरे खाली थे। मैं लौटकर गाड़ी के निकट पहुँचा, किराया चुकाया। कैथरीन और मैं साथ-साथ होटल में घुसे। बटनों से लैस होटल की पोशाक में एक छोटे लड़के ने हमारे कपड़े का पुलिंदा सँभाल लिया। मैनेजर बड़े सम्मान के साथ झुकता हुआ हमें लिफ्ट की ओर ले गया। होटल में चारों ओर लगे लाल रेशमी परदे तथा पीतल की चीज़ें चमक रही थीं।

मैनेजर हमारे साथ ही लिफ्ट में हमारे कमरे तक आया।

"मोशियों तथा मादाम (महाशय और महाशया) के लिए भोजन की व्यवस्था उनके कमरे में ही की जाये?"

"हाँ, क्या आप ऊपर ही खाना भिजवा देंगे?" मैने कहा।

"भोजन के साथ आप क्या कोई विशेष खाद्य पदार्थ लेना पसंद करेंगे? मांस अथवा सूफ्ले (अंडे से बना एक खाद्य पदार्थ)?"

हर मंज़िल पर एक हल्की-सी आवाज़ करता हुआ लिफ्ट तीन मंज़िलें पार कर गया और फिर एक 'खटाक्' की आवाज़ के साथ रुक गया।

"किस चीज़ का मांस खिलायेंगे आप?"

"आपको तीतर या जंगली मुर्गे का मांस मिल सकता है।"

"तो जंगली मुर्गे का मॉस भिजवाइये।" मैंने कहा। हम बरामदे से गुज़र रहे थे। वहाँ बिछी हुई दरी कई जगह से फटी और पुरानी थी। एक-एक कर हम कई दरवाज़ों के पास से निकलते गये और अन्त में, मैनेजर एक द्वार के सामने रुका। उसने ताला खोला।

"लीजिए, यह रहा आपका कमरा। बड़ा सुन्दर कमरा है।"

होटल की पोशाक में सज्जित उस छोटे लड़के ने कमरे के बीच में रखी हुई मेज़ पर वह पुलिन्दा रख दिया। मैनेजर ने खिड़कियों में लगे परदे ऊपर की ओर खिसका दिये।

"बाहर कुहरा छाया है—" वह बोला। कमरा लाल रेशमी परदों से सजाया गया था। उसमें बहुत-से दर्पण लगे थे, दो कुर्सियाँ थीं और एक बड़ा बिस्तर था, जिस पर साटन की चादर बिछी हुई थी। एक ओर एक दरवाज़ा था, जो स्नानागार में खुलता था।

"मैं नीचे जाकर आपका खाना भेज रहा हूँ।" मैनेजर ने कहा। वह सम्मानपूर्वक थोड़ा झुका और चला गया।

मैंने खिड़की पर जाकर बाहर की ओर झाँका, और मोटे रेशमी परदों को

गिराने वाली रस्सी खींची। परदे गिर गये। कैथरीन बिस्तर पर बैठी हुई काँच के टुकड़ों से बने झाड़-फ़ानूस की ओर देख रही थी। उसने अपनी टोपी उतार ली थी। प्रकाश में उसके केश चमक रहे थे। वह एक दर्पण के सामने खड़ी हो गई। उसने अपने केशों पर अपने हाथ रखे। मुझे उसका प्रतिबिम्ब तीन अन्य दर्पणों में भी दिखाई दिया। वह प्रसन्न नहीं दीख रही थी। उसने अपना लबादा उतारा और धीरे-से बिस्तर पर गिरा दिया।

"क्या बात है, प्रिये?"

"आज से पहले मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं भी एक वेश्या के समान हूँ।" वह बोली। मैं खिड़की के पास गया, परदा हटाया और बाहर देखने लगा। मुझे स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि कैथरीन मेरे यहाँ आने का इतना गहरा अर्थ लगायेगी।

"कौन कहता है कि तुम वेश्या हो!"

"मैं यह जानती हूँ, प्रियतम! किन्तु इस तरह अपने-आपको वेश्या समझना बड़ा बुरा लगता है।" उसका स्वर शुष्क और भावनाहीन था।

"वास्तव में, यही सब से अच्छा होटल था, जहाँ हम ठहर सकते थे।" मैं बुझे हुए स्वर में बोला और फिर खिड़की से बाहर देखने लगा। चौक के उस ओर स्टेशन की बत्तियाँ जगमगा रही थीं। सड़क पर गाड़ियाँ आ-जा रही थीं और सामने के बगीचे में वृक्ष गुमसुम खड़े थे। होटल की बत्तियाँ नीचे की गीली ज़मीन में प्रतिबिम्बित होकर चमक रही थीं। "हाय रे दुर्भाग्य! क्या अब मुझे व्यर्थ के वाद-विवाद में भाग लेना पड़ेगा?" मैं सोच रहा था।

"यहाँ आओ, यहाँ।" कैथरीन बोली। उसके स्वर की शुष्कता नष्ट हो चुकी थी। "आओ भी, मैं फिर से अपने आपे में आ गयी हूँ।"

मैंने पलंग की ओर देखा। कैथरीन मुस्करा रही थी।

मैं खिड़की से हटकर बिस्तर पर पहुँचा। मैंने उसे अपने आलिंगन में लेते हुए चूम लिया—"तुम मेरी बड़ी अच्छी संगिनी हो!"

"मै निश्चय ही तुम्हारी हूँ।" वह बोली।

भोजन करने के बाद हम काफ़ी स्वस्थ हो गये। थोड़ी देर बाद ही हमारे बीच जैसे एक अलौकिक सुख की तीव्र लहर-सी दौड़ गई और उसके बाद हमें ऐसा लगा कि होटल का वह कमरा हमारा घर ही हो। अस्पताल में भी मेरा कमरा मेरा अपना घर ही था। उसी प्रकार यह कमरा भी हमारे अपने घर की तरह लगा।

भोजन के समय कैथरीन ने अपने कंधों पर मेरा फौजी कोट डाल लिया था। हम बड़े भूखे थे, खाना भी काफ़ी अच्छा था। हमने बड़े प्रेम से खाना खाया और काप्री तथा सन्त-एस्तेफ़े (शराब) की एक-एक बोतल ख'ली कर दी। ज्यादा शराब मैंने ही पी। कैथरीन ने तो थोड़ी-सी शराब ली और उससे उसे बड़ा सुख मिला। हमारे खाने में जंगली मुर्गे का मांस, सूफ्ले के आलू (अण्डों के सफेद भाग और आलुओं को तलकर बनाया गया एक खाद्य पदार्थ), प्यूरी दा मॉरों (अखरोट का शोरवा), सलाद था। बाद में खाने के लिए, कुछ फल तथा मिठाइयाँ भी थीं।

"कमरा अच्छा है—" कैथरीन बोली "—और बड़ा प्यारा! मिलान में हम अगर सदा इसी कमरे में रहे होते, तो कितना आनन्द आता।"

"कमरा है तो बड़ा विचित्र; पर अच्छा है।"

"पाप वस्तुतः बड़ी अद्‌भुत चीज है!" कैथरीन बोली—"जो लोग पाप करते हैं, उन्हें कदाचित् वह बहुत अच्छा लगता है। इस कमरे में लगे लाल रेशमी परदे सचमुच सुन्दर हैं। और ये दर्पण भी बड़े आकर्षक हैं।"

"तुम कितनी अच्छी हो!"

"मैं नहीं जानती कि सबेरे उठने पर यह कमरा कैसा लगता होगा; फिर भी कमरा है बड़ा सुन्दर।" मैंने सन्त एस्तेफ़े का दूसरा गिलास भरा।

"मै चाहती हूँ कि हम कोई ऐसा कार्य करते, जो सचमुच पाप कहा जा सकता।" कैथरीन ने कहा—"हम जो कुछ करते हैं, वह बिलकुल निर्दोष और सरल होता है। मुझे विश्वास नहीं होता कि हम कोई ऐसा भी कार्य करते हैं, जो ग़लत हो—जो बुरा कहा जा सके।"

"तुम्हारा हृदय वस्तुतः विशाल है।"

"मुझे एक भूख-सी सताया करती है--बड़ी भयङ्कर भूख--एक प्रकार की अतृप्ति!"

"बड़ी भोली हो तुम।" मैंने कहा।

"भोली तो हूँ ही। तुम्हें छोड़कर अन्य कोई भी आज तक मुझे नहीं पहचान सका।"

"एक बार, जब मैं पहले-पहल तुमसे मिला था, तो दोपहर के बाद दिनभर यही सोचता रहा था कि किस प्रकार हम दोनों एक दिन होटल कॅबोर में जाएँगे और वहाँ हमें कैसा लगेगा।"

"तुम्हारा ऐसा सोचना तो भयानक धृष्टता थी। पर यह होटल कॅबोर तो नहीं है? क्यों, नहीं है न?"

"नहीं। वहाँ हमें प्रवेश ही नहीं मिलता।"

"कभी-न-कभी तो मिलेगा। किन्तु प्रियतम, यही हम दोनों में अन्तर है। मैंने इस तरह की कोई बात सोची भी नहीं आज तक।"

"कभी नहीं सोची? बिलकुल नहीं?"

"बहुत कम।" उसने कहा।

"तुम सचमुच ही बड़ी अच्छी हो!"

मैंने गिलास में एक बार और शराब भरी।

"मैं बस एक सीधी-सादी युवती हूँ।" कैथरीन ने कहा।

"पहले मैं तुम्हारे विषय में ऐसा नहीं सोचता था। मेरी धारणा थी कि तुम एक पागल लड़की हो।"

"थी भी मैं कुछ पागल-सी। किन्तु मेरी सनक कभी किसी के लिए समस्या नहीं बनी। मैंने तुम्हें भी तो कभी किसी उलझन में नहीं डाला। बोलो, क्या यह सच नहीं है, प्रियतम?"

"शराब बड़ी सुंदर वस्तु है।" मैंने कहा—"उसे पीकर मनुष्य अपने तमाम दुःखों को भूल जाता है।"

"है तो सुन्दर—" कैथरीन बोली—"किन्तु उसे पी-पी कर ही मेरे पिता बुरी तरह वातरोग से पीड़ित हो गये हैं।"

"क्या तुम्हारे पिता हैं?"

"हाँ—" कैथरीन बोली—"उन्हें वातरोग हो गया है; किन्तु तुम्हें उनसे मिलने की कभी ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। क्या तुम्हारे पिता नहीं है।"

"नहीं।" मैं बोला—"सौतेले पिता अवश्य हैं।"

"क्या मैं उन्हें पसंद कर सकूँगी।"

"तुम्हें भी उनसे मिलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

"हमारा जीवन कितने सुख से बीत रहा है।" कैथरीन ने कहा— "मुझे तो अब अन्य किसी वस्तु में आनन्द ही नहीं आता। तुम्हारे प्रणय-बंधन में बँधकर मैं बहुत सुखी हूँ। मैंने जीवन में सब कुछ पा लिया है।"

खानसामा आया और सारी चीज़े उठाकर ले गया। कुछ क्षणों तक हम बिलकुल मौन बैठे रहे। बाहर वर्षा हो रही थी और हमें उसकी आवाज़ स्पष्ट सुनाई दे रही थी। इसी बीच नीचे, सड़क पर, एक मोटर का हार्न बज उठा।

"मैं सदा—

अपने पीछे सुना करता हूँ
समय के उड़ते हुए रथ का स्वर

जो—

मेरी ओर शीघ्रता से बढ़ा आ रहा है।"

मैं यह गीत गुनगुनाने लगा।

"मुझे याद है, यह कविता—" कैथरीन बोली—"यह मार्वेल की लिखी हुई है। किन्तु इस कविता का विषय तो एक लड़की है, जो एक मनुष्य के साथ नहीं रहना चाहती।"

मेरा मस्तिष्क उस वक्त काफ़ी स्थिर और सुलझा हुआ था। अतः मैंने कैथरीन से कुछ गम्भीर बातें करने का निश्चय किया।

"संतानोत्पत्ति के लिए तुम कहाँ जाओगी?"

"कह नही सकती। किन्तु किसी अच्छे स्थान का ही चुनाव करूँगी, जहाँ मैं जा सकूँ।"

"और उसका प्रबन्ध कैसे करोगी?"

"जितने अच्छे ढंग से मुझसे सम्भव हो सकेगा। तुम कोई चिन्ता मत करो, प्रियतम। युद्ध का अन्त होने के पहले हमारे न जाने कितने बच्चे हो जाएँगे।"

'मेरे जाने का समय हो रहा है।"

"जानती हूँ। यदि तुम चाहो, तो "समय हो रहा है" को "समय हो गया है" भी कह सकते हो।"

"नहीं, नहीं।"

"तब चिन्ता मत करो, प्रियतम? अभी तक तो तुम बिलकुल निश्चिंत थे और अब चिन्ता कर रहे हो।"

"अच्छी बात है, मैं चिन्ता करना छोड़ देता हूँ। तुम पत्र तो जल्दी-जल्दी लिखोगी न?"

"प्रति दिन लिखूँगी। क्या अधिकारी-वर्ग तुम्हारे पत्र पढ़ लेते हैं।"

"वे अंग्रेज़ी इतनी अच्छी तरह नहीं पढ़ सकते कि हमारा पत्र पढ़कर हमें कोई हानि पहुँचा सकें।"

"मैं अपने पत्रो को इस तरह घुमा-फिरा कर लिखूँगी कि वे समझ ही नहीं सकें।" कैथरीन ने कहा।

"किन्तु इतना घुमा-फिरा कर मत लिखना कि मैं भी न समझ सकूँ।"

"नहीं-नहीं। बस, थोड़ा-सा घुमा-फिरा कर लिखूँगी।"

"अब हमें यहाँ से चलने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।"

"अच्छी बात है, प्रियतम।"

"मैं अपने इस सुन्दर घर को छोड़ना नहीं चाहता।"

"छोड़ना तो मैं भी नहीं चाहती!"

"किन्तु हमें जाना ही पड़ेगा।"

"तब चलो। पर हम अपने इस घर में अधिक समय तक कभी नहीं रह सके।"

"कभी-न-कभी रहेंगे ही।"

"जब तुम वापस आओगे, तब मैं तुम्हारे लिए एक सुन्दर घर तैयार रखूँगी।"

"हो सकता है कि मैं पहुँचने के साथ ही वापस भी आ जऊँ।"

"हाँ, शायद तुम्हारे पैर में थोड़ी चोट लग जाये और तुम घायल हो जाओ।"

"या शायद कान के नीचे के भाग में ही कोई चोट लग जाए।"

"नहीं, मैं चाहती हूँ कि तुम्हारे कान बिलकुल वैसे ही रहें, जैसे अभी हैं।"

"और मेरे पैर चाहे बिगड़ जायें?"

"तुम्हारे पैर तो पहले ही घायल हो चुके हैं।"

"अब हमें जाना ही चाहिए, प्रिये। सच!"

"अच्छी बात है। चलो, तुम आगे-आगे चलो।"

.२४.

लिफ्ट द्वारा उतरने के बदले हम सीढ़ियों से होकर नीचे चले। सीढ़ियों पर बिछी हुई दरी फटी-पुरानी थी। भोजन के पैसे मैंने तभी चुका दिए थे, जब वह ऊपर भेजा गया था। जो खानसामा भोजन लाया था, वह इस समय द्वार के पास एक कुर्सी पर बैठा था। हमें देखते ही वह जल्दी से खड़ा हो गया और झुककर उसने सम्मान प्रदर्शित किया। मैं उसके साथ बग़ल के एक कमरे में गया। वहाँ मैंने अपने कमरे का किराया चुकाया। हम जब होटल में आये थे, तो मैनेजर ने मित्र के रूप में हमारा स्वागत किया था और पेशगी किराया लेने से इनकार कर दिया था; किन्तु जब वह आराम करने चला गया, तो उसने इस डर से उस खानसामा को द्वार पर बैठा दिया, कि मैं कहीं बिना पैसा चुकाए न चला

जाऊँ। मेरा अनुमान है कि उसके अन्य 'मित्रों' के साथ भी उसका इसी प्रकार का बर्ताव रहा होगा। युद्ध के समय में आदमी के मित्र भी तो बहुत हो जाते हैं।

मैंने ख़ानसामा से हमारे लिए एक गाड़ी ले आने के लिए कहा। उसने मेरे हाथ से कैथरीन के कपड़ों का पुलिन्दा ले लिया और छाता लेकर बाहर चला गया। हमने खिड़की से देखा कि वर्षा के बीच वह सड़क पार कर रहा था। हम उस बगल के कमरे में खड़े होकर खिड़की से बाहर देखते रहे।

"कैसा लग रहा है केट, तुम्हें?"

"नींद आ रही है।"

"मुझे कुछ खाली-खाली-सा लग रहा है। भूख भी मालूम हो रही है।"

"क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है?"

"हाँ है। मेरी मसक में!"

मैंने गाड़ी आते हुए देखी। वह सड़क के निकट आकर खड़ी हो गयी। उसमें जुते हुए घोड़े का सिर वर्षा के कारण नीचे झुका हुआ था। ख़ानसामा गाड़ी से नीचे उतरा। उसने छाता खोला और भीतर की ओर आया। दरवाज़े पर ही हमारी उससे भेंट हो गयी। हम दोनों छाते में सिर छुपाये, पानी में नहाये रास्ते को पार करते हुए, सड़क की पटरी के किनारे खड़ी हुई गाड़ी के निकट पहुँचे। बरसात का पानी नालियों से होकर बहता जा रहा था।

"आपका पुलिन्दा भीतर सीट पर रखा है।" ख़ानसामा बोला। वह उस समय तक छाता ताने खड़ा रहा, जब तक हम दोनों गाड़ी में न बैठ गये और मैंने उसे इनाम न दे दिया।

"अनेक धन्यवाद। आपकी यात्रा सुखद हो!" वह बोला। कोचवान ने रास खींची और घोड़ा चल पड़ा। ख़ानसामा छाता लेकर होटल की ओर मुड़ गया। सड़क पर आगे बढ़ती हुई हमारी गाड़ी बायीं ओर मुड़ी और स्टेशन के ठीक सामने पहुँच कर रुक गयी। रेलगाड़ी के बाहर, प्रकाश के नीचे दो सैनिक पहरेदार खड़े थे। उनके हैट के ठीक ऊपर बत्ती चमक रही थी। स्टेशन के प्रकाश में ऊपर से गिरती पानी की धार स्पष्ट दिखाई दे रही थी। स्टेशन की छत के नीचे से एक कुली निकलकर हमारे पास आया।

"नहीं!" मैं बोला—"धन्यवाद, मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

वह लौटकर पुल की छत के नीचे छिप गया। मैं कैथरीन की ओर मुड़ा। उसका चेहरा गाड़ी की छत के साये में था।

"अब हमें एक-दूसरे से विदा होना है।"

"क्या मैं स्टेशन के भीतर नहीं चल सकती?"

"नहीं। अच्छा विदा, केट!"

"क्या तुम कोचवान को अस्पताल का नाम बता दोगे?"

"हाँ, हाँ।"

मैंने कोचवान को अस्पताल का पता बताया और कैथरीन को वहाँ पहुँचा देने के लिए कहा। उसने सिर हिला कर स्वीकार कर लिया।

"अच्छा, नमस्ते।" मैं बोला—"अपनी और नन्हीं कैथरीन की अच्छी तरह देख-भाल करना!"

"विदा, मेरे सर्वस्व!"

"विदा, प्राण।" मैं बोला और वर्षा की बौछारों के बीच गाड़ी से नीचे उतर पड़ा। कैथरीन बाहर की ओर झुकी और प्रकाश में उसका सुंदर मुख और भी आकर्षक हो उठा। मुस्कराते हुए उसने अपना हाथ हिलाया। गाड़ी चल पड़ी। कैथरीन ने ढँके हुए स्थान की ओर संकेत किया। मैंने उस ओर देखा। वहाँ केवल वही ढँका हुआ स्थान था, जहाँ वे दो सैनिक पहरेदार खड़े थे। और तब मेरी समझ में आया कि वह मुझे वर्षा में भीगने के बजाय साये मे चले जाने के लिए कह रही थी। मैं भीतर जाकर खड़ा हो गया और गाड़ी की ओर देखता रहा। गाड़ी अब एक मोड़ पार कर रही थी। मैं धीरे-धीरे कदम बढ़ाता हुआ स्टेशन में घुसा और पटरियों को पार करके रेलगाड़ी के पास पहुँच गया।

दरबान प्लेटफार्म पर खड़ा मेरी राह देख रहा था। मैं उसके पीछे-पीछे, लोगों की भीड़ को चीर कर, एक ओर से अपना मार्ग बनाता हुआ, एक डिब्बे में घुस गया और उस ओर बढ़ा, जहाँ एक कोने में मॅशीनगन-चालक बैठा हुआ था। मेरा थैला और मसकें उसके सिर के ठीक ऊपर, सामान रखने के तख्ते पर रखी हुई थीं। बेंचों के बीच के रास्ते में बहुत-से आदमी खड़े थे। जब मैं भीतर घुसा तो डिब्बे के सब लोगों की नजरें मुझ पर जम गईं। गाड़ी में बहुत भीड़ थी और प्रत्येक व्यक्ति जगह के लिए झगड़ने पर उतारू था। मुझे बैठने के लिए स्थान देने के विचार से मॅशीनगन-चालक उठ खड़ा हुआ। किन्तु मेरे बैठते ही किसी ने मेरा कंधा थपथपाया। मैंने घूम कर देखा। कन्धा थपथपाने वाला, तोपखाने का एक लम्बा और दुबला–पतला कैप्टन था। उसके जबड़े के पास किसी चोट का एक लाल-सा निशान था।

"कहिये, क्या कहना चाहते हैं आप?" मैंने पूछा। मुड़कर मैंने अपना मुँह

ठीक उसके सामने कर लिया था। वह मुझसे ऊँचा था। उसका दुबला-पतला मुँह उसकी आगे की ओर झुकी हुई टोपी में छिपा हुआ था। उसके घाव का निशान नया था और चमक रहा था। डिब्बे का प्रत्येक व्यक्ति उस वक्त मेरी ओर देख रहा था।

"आप ऐसा नहीं कर सकते!" वह बोला—"आप किसी सैनिक द्वारा अपने बैठने के लिए जगह नहीं रुकवा सकते।"

"पर मैंने ऐसा किया है। अब बोलिए।"

उसने थूक निगला और मेरी ओर देखा। मॅशीनगन-चालक उस जगह के सामने खड़ा हो गया। दूसरे व्यक्ति भी कॉच के पीछे से देखने लगे। पर डिब्बे के किसी व्यक्ति ने कुछ नहीं कहा।

"आपको ऐसा करने का कोई अधिकार नही है। मैं यहॉ आपके आने से दो घंटे पहले से खड़ा हूँ।"

"आप चाहते क्या हैं?"

"वह स्थान।"

"और वही मुझे भी चाहिए।"

मैंने गौर से उसके चेहरे की ओर देखा। मुझे यह समझते भी देर न लगी कि सारा डिब्बा मेरे विरुद्ध है। मैं लोगों को इसके लिए दोष नहीं दे सकता था। उनका कहना भी सच था। किन्तु मुझे भी जगह की ज़रूरत थी और फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा।

"क्या दुर्भाग्य है!" मैंने सोचा।

"आप ही बैठ जाइये, कैप्टन महोदय!" अन्त में, मैं बोला। मॅशीनगन-चालक एक ओर हट गया और वह लम्बा-सा कैप्टन वहॉ बैठ गया। उसने मेरी ओर देखा। उसके मुखपर झुँझलाहट के भाव स्पष्ट थे। पर जगह उसे मिल गई थी। "मेरा सामान उठा लो।" मैंने मशीनगन-चालक से कहा और हम बेंचों के बीच के खाली स्थान पर जाकर खड़े हो गये। गाड़ी खूब भरी हुई थी और मुझे मालूम था कि अब जगह मिलने की आशा करना व्यर्थ है। मैंने दरबान और मॅशीनगन-चालक को दस-दस लायर इनाम में दिये। वे डिब्बे में से निकल कर बाहर प्लेटफार्म पर आ गये। जाते-जाते उन्होने खिड़कियो में झॉककर देखा; पर कहीं भी खाली जगह नहीं दिखाई दी।

"हो सकता है, कुछ लोग ब्रेस्सिआ में उतर जायें।" दरबान बोला।

"ना, ब्रेस्सिआ में और भी लोग चढ़ेंगे।" मॅशीनगन-चालक ने कहा। मैंने

उनसे विदा ली। हमने हाथ मिलाये और तब वे दोनों चले गये। जाते हुए उन्हें बड़ा दुःख हो रहा था। जब गाड़ी चली, तो डिब्बे में बहुत-से व्यक्ति खड़े थे। गाड़ी धीरे-धीरे प्लेटफार्म को पीछे छोड़ने लगी। मैं स्टेशन पर और माल-गोदाम में जगमगाती हुई बत्तियों को देखता रहा। वर्षा अभी भी हो रही थी। थोड़ी ही देर में सब खिड़कियाँ गीली हो गयीं और बाहर का दृश्य दिखाई देना बंद हो गया। बाद में, मैं बेंचों के बीच की खाली जगह में, फ़र्श पर ही सो गया। सोने के पहले मैंने अपनी पाकेट-बुक में अपने सब काग़ज़ और पैसे रख लिये और उसे क़मीज़ और पायजामे के भीतर कमर पर दबा लिया। वह मेरी 'ब्रीचेस' के भीतरी ओर दब गई। फिर मैं सारी रात इतमीनान से सोता रहा। बीच में जब ब्रेस्सिआ और वेरोना पर और लोग गाड़ी में चढ़े, तब थोड़ी देर के लिए मेरी नींद खुली। पर तुरंत ही मैं फिर सो गया। सोते समय एक मसक के ऊपर मेरा सिर था और दूसरी को मैं अपनी भुजाओं में लिपटाये हुए था। पर मेरा थैला मुझे चुभ रहा था। नींद में भी मुझे लोगों के आने-जाने का भान होता रहा। अगर वे लाँघ कर नहीं जाते, तो मुझे कुचल देते। खाली जगह में फ़र्श पर सब तरफ़ आदमी सो रहे थे। अन्य बहुत-से लोग खिड़कियों की छड़ें पकड़ कर खड़े थे या दरवाज़ों के सहारे बाहर की ओर झुके हुए थे। गाड़ी पूरे सफ़र में भरी ही रही और उस भीड़ में कहीं कोई कमी नहीं हुई

तृतीय खंड

.२५.

पतझड़ की ऋतु थी। वृक्ष पत्र-विहीन हो गये थे। सड़कें कीचड़ से भर गयी थीं। मैं एक मोटर में यूडाइन से गोरीज़िया गया। मार्ग में हम कई मोटरों को पीछे छोड़ आगे बढ़ते गये। रास्ते-भर मैं आसपास के इलाके का दृश्य देखता रहा। शहतूत के वृक्ष बिलकुल ठूँठ-से खड़े थे। खेत मटमैले दीख रहे थे। सड़क पर एक कतार में खड़े वृक्षों की पत्तियाँ उन्हें आवरण-हीन कर और स्वयं भी जैसे उनके बिछोह को सहन न कर सकने के कारण मुरझाई हुई बिखरी पड़ी थीं। सड़क पर कुछ मज़दूर काम कर रहे थे। वृक्षो की कतार के बीच-बीच में गिट्टियों के ढेर पड़े थे। मज़दूर उनसे गिट्टियाँ उठाते और सड़क पर कहीं-कहीं बने हुए गड्ढों में डाल देते। वे उन गड्ढों को भरकर सड़कों की मरम्मत कर रहे थे। हमने देखा कि शहर पर कुहासा छाया था। कुहासे ने पर्वतों को पूर्णतः ढँक लिया था। नदी पार करते समय हमने देखा कि उसमें काफ़ी पानी आ गया था और पर्वतो में वर्षा हो रही थी। हम शहर में घुसे। कारखानों को पीछे छोड़ते हुए हमने मकानों को पार किया और बंगलों के बीच से आगे बढ़ते गए। मैंने देखा कि बमबारी से और भी बहुत-से घर नष्ट हो गए थे। एक संकरी गली में हमें ब्रिटिश-रेड-क्रॉस की एक मोटर मिली। उसका चालक टोपी लगाए हुए था। उसका मुख दुबला था और वह काफ़ी साँवला पड़ गया था। मैं उसे नहीं जानता था। शहर के एक बड़े चौक पर मेजर के घर के सामने मैं मोटर से उतर गया। मोटर-चालक ने मुझे मेरा थैला पकड़ा दिया। मैंने उसे पीठ पर लादा, दोनों मसकों को लटका लिया और अपने बंगले की ओर चल पड़ा। घर—अपने चिर-परिचित वातावरण में—लौटने पर जिस आनंद और उत्साह का अनुभव होता है, उसका मुझ में सर्वथा अभाव था।

मैं वृक्षों के बीच से बंगले की ओर देखता हुआ, उस ओर जाने वाली उस गीली—ठंडी सड़क पर आगे बढ़ता गया। बंगले की सब खिड़कियाँ बन्द थीं;

किन्तु दरवाज़ा खुला हुआ था। भीतर जाकर मैंने देखा कि उस सूने-से कमरे में मेजर एक मेज़ पर झुका हुआ बैठा था। उसके सामने, दीवार पर, नक्शे और टाइप किए हुए कुछ काग़ज़ लगे थे।

"ओहो!" वह बोला—"कहो, कैसे हो?" वह पहले की अपेक्षा अधिक बूढ़ा और कमज़ोर दीख रहा था।

"ठीक हूँ।" मैं बोला—"अपनी बताइये—क्या हालचाल हैं?"

"अब तो सब-कुछ समाप्त हो गया है।" उसने उत्तर दिया—"अपना थैला वगैरह उतारो और आराम से बैठ जाओ।" मैंने अपना थैला और दोनों मसकें उतारकर फ़र्श पर रख दीं और टोपी थैले पर। फिर दीवार के पास से दूसरी कुर्सी उठा लाया और उसकी मेज़ की बगल में बैठ गया।

"इस वर्ष गर्मी का मौसम बड़ा ख़राब रहा—" मेजर बोला—"क्या अब तुम पूरी तरह स्वस्थ हो गये हो?"

"जी, हाँ।"

"तुम्हें पुरस्कार मिले या नहीं?"

"मिल गये। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद!"

"ज़रा दिखाओ तो उन्हें।"

मैंने अपना फ़ौजी कोट उतारा और पुरस्कार में प्राप्त वे दो फ़ीते उसे दिखाई दे गये।

"क्या तुम्हें पदकों की पेटियाँ नहीं मिलीं?"

"जी नहीं, केवल उनसे सम्बन्धित पत्र प्राप्त हुए हैं।"

"तो पेटियाँ भी बाद में आ जाएँगी। उनके आने में कुछ समय लगता है।"

"मेरे लिए क्या आदेश है?"

"गाड़ियाँ सब बाहर हैं। छः गाड़ियाँ उत्तर में केपोरेट्टो मे हैं। तुम जानते हो न, केपोरेट्टो कहाँ है?"

"हाँ," मैंने उत्तर दिया। एक घाटी के बीच में, आकाश की ओर सिर उठाए घण्टाघर वाले एक नन्हें-से श्वेत नगर के रूप मे मुझे उसका स्मरण था। वह एक साफ़-सुथरा और छोटा-सा शहर था और उसके चौक में एक सुन्दर फव्वारा था।

"काम आजकल वहीं से हो रहा है। फिर इन दिनों तो बहुत-से सैनिक बीमार हैं। लड़ाई भी तो बन्द हो गई है।"

"दूसरी मोटरें कहाँ हैं?"

"दो तो पहाड़ों में हैं और चार अभी भी बेन्सिज्जा पर हैं। दूसरी दो उपचार-टुकड़ियाँ तृतीय सैन्यदल के साथ कार्सो में हैं।"

"फिर आप मुझसे क्या काम लेना चाहते हैं?"

"यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो बेन्सिज्ज़ा चले जाओ और वहाँ की गाड़ियों की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लो। जिनो वहाँ बहुत दिनों से है। तुमने तो वह स्थान अभी तक देखा भी नहीं है। है न?"

"जी हाँ, नही देखा।"

"बड़ी बुरी लड़ाई हुई थी वहाँ। हमें वहाँ तीन मोटरों से हाथ धोना पड़ा।"

"हाँ, मैंने उसके विषय में सुना था।"

"रिनाल्डी ने तुम्हें लिखा था न?"

"और रिनाल्डी कहाँ है?"

"यहीं, इसी अस्पताल में है। गर्मी और पतझड़ के मौसम में वह दिनरात काम करता रहा है।"

"मैं जानता हूँ, यह सच है।"

"यह युद्ध बड़ा बुरा रहा!" मेजर ने कहा—"कितना बुरा था यह युद्ध! तुम सम्भवतः इसका अनुमान भी नहीं लगा सकते। अक्सर मैं यही सोचता रहा हूँ कि जब तुम घायल हुए थे, तब तुम्हारा भाग्य सचमुच तुम्हारे साथ था।"

"मैं जानता हूँ, मैं वास्तव में भाग्यशाली था।"

"आगामी वर्ष तो इससे भी खराब वर्ष होगा।" मेजर ने कहा—"शत्रु शायद अभी ही आक्रमण कर दे। ऐसा सुना तो है कि वे आक्रमण करने वाले हैं। किन्तु मैं विश्वास नहीं करता। अब बहुत देरी हो चुकी है। तुमने नदी तो देखी होगी?"

"जी हाँ, उसमें काफ़ी पानी चढ़ आया है।"

"मुझे विश्वास नही है कि अब आक्रमण हो। वर्षा आरम्भ हो गई है। शीघ्र ही बर्फ़ गिरना भी शुरू हो जाएगा। तुम्हारे देश के क्या समाचार है? क्या युद्ध में तुम्हारे सिवा अन्य अमरीकी भी शामिल होंगे?"

"मेरे देश में तो एक करोड़ व्यक्तियों की सेना तैयार की जा रही है।"

"उनमें से शायद कुछ सैनिक हमें भी मिल जायें—मुझे तो इसकी आशा है। किन्तु फ्रेंच लोग शायद उन्हें बीच में ही रोक लेंगे। हमें यहाँ के लिए एक भी सैनिक नहीं मिलेगा। अच्छा, आज रात तुम यहीं ठहरो। सबेरे छोटी मोटर

लेकर चले जाना और जिनो को वापस भेज देना। मैं तुम्हारे साथ कोई ऐसा व्यक्ति भेज दूँगा जिसे रास्ता मालूम हो। जिनो तुम्हें सब-कुछ बता देगा। शत्रु अभी भी थोड़ी-बहुत बमबारी कर रहा है; पर लड़ाई एक तरह से बंद हो चुकी है। तुम बेन्सिज्ज़ा देखना चाहोगे न?"

"मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। मैं आपके पास पुनः लौटकर बहुत प्रसन्न हूँ, मेजर साहब!"

वह मुस्कराया—"तुम ऐसा कहकर केवल अपना सौजन्य प्रदर्शित कर रहे हो। मैं तो सचमुच इस युद्ध से बड़ा तंग आ चुका हूँ। यदि मैं यहाँ से सिर्फ़ एक बार अपनी जान छुड़ा सकता, तो यह निश्चित है कि मैं यहाँ वापस नहीं आता।"

"क्यो, इतना बुरा है यह युद्ध?"

"हाँ, इतना बुरा है, बल्कि और भी खराब। जाओ, जाकर हाथ-मुँह धोओ और अपने मित्र रिनाल्डी से मिल लो।"

मैं बाहर निकला और सीढ़ियो पर से अपना थैला ऊपर ले आया। रिनाल्डी कमरे में नहीं था; किन्तु उसका सामान वहीं था। मैं बिस्तर पर बैठ गया। मैंने अपनी पट्टियाँ खोलीं और दाहिने पैर का जूता निकाला। फिर मैं बिस्तर पर लेट गया। मैं काफ़ी थक गया था। मेरे दाहिने पैर में चोट भी लग गई थी। पर एक पैर का जूता उतारकर बिस्तर पर लेटना मूर्खतापूर्ण दिखाई देता था। अतः मैंने उठकर अपना दूसरा जूता भी खोल कर फ़र्श पर डाल दिया और पुनः बिस्तर पर बिछे हुए कम्बल पर लेट गया। कमरे की खिड़कियाँ बन्द थीं और मुझे बड़ी घुटन-सी प्रतीत हो रही थी। किन्तु मैं इतना थका हुआ था कि उठकर खिड़की खोलने की मुझे हिम्मत नहीं हो रही थी। बिस्तर पर लेटे-लेटे ही मैंने देखा कि मेरा सारा सामान कमरे के एक कोने में रखा हुआ था। बाहर अंधेरा बढ़ता जा रहा था। मैं चुपचाप बिस्तर पर लेटा कैथरीन के विचारो में खोया था और रिनाल्डी की राह देख रहा था। मैं रात में सोने के पहले के कुछ क्षणो को छोड़कर शेष समय में कैथरीन की याद नहीं करना चाहता था; किन्तु इस समय मैं थका हुआ था और मेरे पास कोई काम भी नहीं था, अतः मैं उसी की याद में डूबा रहा। कुछ देर बाद ही रिनाल्डी आ गया। वह ठीक वैसा ही दिखाई दे रहा था, जैसा पहले था। हाँ, शायद अब कुछ दुबला हो गया था।

"कहो दोस्त!" वह बोला। मैं उठकर बिस्तर पर बैठ गया। वह मेरे पास

आया, बिस्तर पर बैठ गया और मुझसे लिपट गया—"मेरे प्यारे दोस्त!" उसने मेरी पीठ पर मानो अपना स्नेह प्रदर्शित करने के लिए एक करारी धौल जमायी। मैंने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये।

"दोस्त मेरे!" वह बोला—"ज़रा अपना घुटना तो दिखाओ।"

"मुझे अपनी ब्रीचेस निकालनी पड़ेगी।"

"तो निकाल लो दोस्त, निकाल भी लो। यहाँ सब मित्र हैं। मैं तो देखना चाहता हूँ कि वहाँ के चिकित्सकों ने कैसी चिकित्सा की है।" मैं खड़ा हुआ, अपनी ब्रीचेस उतारी और घुटने पर बँधे हुए पट्टे खोल डाले। रिनाल्डी फ़र्श पर बैठ गया और उसने मेरा घुटना आगे-पीछे मोड़कर देखा। घाव के निशान पर उसने अपनी उँगली फिराई और अपने अँगूठे तथा उँगलियों से मेरे टखने को धीरे-धीरे ठकठकाया।

"क्या तुम्हारा घुटना बस, इतना ही मुड़ता है?"

"हाँ।"

"तब तुम्हें मोर्चे पर वापस भेजकर उन्होंने भयंकर अपराध किया है। उन्हें तुम्हारा घुटना पूरी तरह मुड़ने के बाद तुम्हें भेजना चाहिए था।"

"फिर भी यह पहले की अपेक्षा बहुत ठीक है। पहले तो यह काठ के समान बिलकुल कठोर हो गया था।"

रिनाल्डी ने उसे कुछ और मोड़ा। मैं उसके हाथों की ओर देखता रह गया। उसके हाथों में एक कुशल सर्जन की योग्यता थी। मैंने उसके सिर पर दृष्टि दौड़ाई। उसके केश चमक रहे थे और उसने बड़ी ख़ूबसूरती से माँग निकाली थी। देखते-देखते उसने मेरा घुटना बहुत ज़्यादा मोड़ दिया।

"ओह!" मैं चीख उठा।

"तुम्हें इसकी यांत्रिक-चिकित्सा अभी और करानी चाहिए।" रिनाल्डी ने कहा।

"अब तो पहले से काफ़ी अच्छा है यह।"

"वह तो दिख ही रहा है, दोस्त! यह एक ऐसी वस्तु है, जिसे मैं तुमसे अधिक समझता हूँ।" वह उठकर बिस्तर पर बैठ गया—"हाँ, तुम्हारे घुटने का उपचार ठीक हुआ है।" उसने घुटने को अच्छी तरह जाँच कर कहा।

"और बातें तो बताओ मुझे।"

"वैसे, कहने लायक तो कुछ भी नहीं है।" मैंने उत्तर दिया—"मेरे दिन बड़ी शान्ति से बीते।"

"तुम तो एक विवाहित व्यक्ति के समान बातें कर रहे हो।" वह बोला—"आख़िर तुम्हें हो क्या गया है?"

"कुछ तो नहीं।" मैंने कहा—"हाँ, तुम्हें कुछ ज़रूर हो गया है!"

"यह युद्ध मुझे मारे डाल रहा है—" रिनाल्डी बोला—"इसने मेरे जीवन में बड़ी मनहूसियत पैदा कर दी है।" उसने अपने घुटने पर दोनों हाथ मिलाकर रखते हुए कहा।

"ओह!" मैंने एक लम्बी साँस छोड़ी।

"क्यों, क्या बात है? क्या मैं मानवीय-प्रवृत्तियों से भी स्वयं को वंचित रखूँ?"

"नहीं। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे दिन अच्छी तरह बीते हैं। बताओ तो, कैसे बीते भला?"

"पूरे गर्मी और पतझड़ के मौसम में मैं दिन-रात शल्य-क्रियाएँ करता रहा हूँ। दिन-रात काम, काम और काम! हरएक का काम करता हूँ मैं। कठिन शल्य-क्रिया के सब रोगी अस्पताल में मेरे ऊपर छोड़ दिए जाते हैं। भगवान् की सौगन्ध दोस्त! मैं बड़ा कुशल सर्जन बनता जा रहा हूँ।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

"मैं कभी कोई अन्य बात सोचता भी नहीं हूँ। सच, भगवान् कसम! मैं कभी नहीं सोचता—बस, शल्य-क्रिया करता रहता हूँ—सिर्फ़ शल्य-क्रिया!"

"फिर तो बड़ा अच्छा है।"

"पर दोस्त, अब तो यह भी ख़त्म हो चुका है। अब मैं शल्य-क्रिया भी नहीं करता। मुझे बड़ा बुरा लगता है अब—बिलकुल नरक जैसा। बड़ी भयंकर लड़ाई है यह। सच—विश्वास करो मुझ पर और अब जब तुम आ गये हो, मुझे उत्साहित करो—प्रेरणा दो मुझे! क्या तुम ग्रामोफोन के रेकार्ड लाये हो?"

"हाँ।"

वे काग़ज़ में लिपटे हुए, कार्ड-बोर्ड के एक डिब्बे में बन्द थे। डिब्बा मेरे थैले में रखा था और मैं इतना थका हुआ था कि उठकर उन्हें थैले से निकालना मुझे बड़ा कठिन लग रहा था।

"क्या तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा है, दोस्त?"

"बड़ा बुरा लग रहा है मुझे तो।"

"यह युद्ध बड़ा भयानक है!" रिनाल्डी बोला—"चलो, हम दोनों थोड़ी शराब पीकर ही स्वस्थ हो लें। तब हम बाहर चलेंगे और जंगल से कुछ

लकड़ियाँ यहाँ मँगवायेंगे! तुम्हारी तबीयत बहल जायेगी और फिर हमें काफ़ी अच्छा मालूम होगा।"

"मुझे पाण्डुरोग हो गया था—" मैं बोला—"मैं शराब नहीं पी सकता।"

"ओह, तुम अपनी कैसी बुरी हालत बनाकर मेरे पास लौटे हो, मेरे दोस्त! इतनी बुरी हालत में और बढ़ा हुआ यकृत् लेकर आये हो यहाँ! यह युद्ध वस्तुतः बड़ी बुरी वस्तु है। आख़िर हमने इसे आरम्भ ही क्यों किया?"

"ख़ैर, हम शराब पियेंगे। मैं शराब में बिलकुल खो जाना तो नहीं चाहता; किन्तु तुम्हारे साथ थोड़ी-सी पी लूँगा।"

रिनाल्डी उठकर कमरे से होता हुआ शराब रखने की तिपाई के पास पहुँचा और वहाँ से दो गिलास और एक बोतल कॉग्नेक लेकर लौट आया।

"यह आस्ट्रियन कॉग्नेक है।" वह बोला—"सात तारों की छाप वाली। सॉन जेब्राइले के युद्ध में केवल इन्हीं पर अधिकार कर पाये हम लोग।"

"क्या तुम वहाँ थे?"

"नहीं, मैं कहीं नहीं गया। जब तक लड़ाई चलती रही, यहीं रहकर मैं शल्य-चिकित्सा करता रहा। देखो दोस्त, यह तुम्हारा सवेरे दाँत साफ़ करने के समय काम आनेवाला पुराना गिलास है। मैंने इसे अपने पास रख लिया था, जिससे यह मुझे तुम्हारी याद दिलाता रहे।"

"नहीं, जिससे तुम्हें हमेशा अपने दाँत साफ़ करने की याद दिलाता रहे।"

"नहीं, मेरे पास अपना भी तो है। मैंने इसे अपने पास इसीलिए रखा था कि मुझे तुम्हारी याद आती रहे। उस समय की याद—जब तुम प्रातःकाल अपने दाँतों से 'विला-रोस्सा' के सुखद क्षणों के स्वाद को घिस-घिस कर मिटाने का प्रयत्न करते थे, कसमें खाते थे; एस्पिरिन (सिरदर्द की गोलियाँ) चबाया करते थे और वेश्याओं को गालियाँ देते थे। हर बार, जब मैं इस गिलास को देखता हूँ, मुझे ऐसा लगता है, जैसे कि तुम—तुम अपने दाँत साफ़ करने का ब्रश लेकर अपनी अंतरात्मा भी साफ़ करने की कोशिश कर रहे हो।" वह मेरे बिस्तर पर आ गया—"एक बार मेरा चुम्बन तो लो और कहो कि तुम नाराज़ नहीं हो!"

"मैं कभी तुम्हारा चुम्बन नहीं ले सकता। तुम तो एक बन्दर हो!"

"मैं जानता हूँ—तुम एक सुन्दर, सुशील आंग्ल-सेक्सन युवक हो। मालूम है मुझे। तुम में अपने किये पर पछताने की आदत है—यह मैं जानता हूँ। मैं उस समय की प्रतीक्षा करूँगा, जब मेरा यह आंग्ल-सेक्सन दोस्त दाँत घिसने के ब्रश से वेश्यालय के दाग़ मिटाने का प्रयत्न करेगा।"

"गिलास में थोड़ी कॉग्नेक डालो।"

हमने गिलास एक दूसरे से छुलाये और उन्हें खाली कर दिया। रिनाल्डी मेरे ऊपर हँस पड़ा।

"मैं तुम्हें खूब शराब पिलाऊँगा, तुम्हारा यकृत् निकाल दूँगा और उसके स्थान पर नया इटालियन यकृत् बैठाकर तुम्हें फिर से आदमी बना दूँगा।"

मैंने और कॉग्नेक के लिए अपना गिलास आगे बढ़ा दिया। बाहर अब अंधेरा छा गया था। कॉग्नेक से भरा गिलास लिये-लिये मैंने उठकर खिड़की खोली। वर्षा बन्द हो गई थी। कमरे की अपेक्षा बाहर अधिक ठंड थी और वृक्षों पर कुहासा छाया था।

"देखो, कॉग्नेक खिड़की से बाहर मत फेंक देना।" रिनाल्डी ने कहा—

"यदि तुम नहीं पी सकते, तो मुझे दे दो उसे।"

"जाओ और जाकर अपने-आपको शराब में डुबा लो।" म बोला।

रिनाल्डी से पुनः मिलकर मैं बड़ा प्रसन्न था। मुझे चिढ़ाते-सताते हुए उसने मेरे साथ पूरे दो वर्ष व्यतीत किये थे और उसका चिढ़ाना मुझे हमेशा अच्छा लगता था। हमने एक-दूसरे को भलीभाँति समझ लिया था।

"क्या तुम्हारा विवाह हो गया?" उसने बिस्तर पर से पूछा। मैं दीवार के सहारे खिड़की के निकट खड़ा था।

"अभी तक तो नहीं।"

"किसी से प्रेम करने लगे हो?"

"हाँ।"

"उस अंग्रेज़ लड़की से तो नहीं?"

"हाँ।"

"दोस्त, वह तुम्हारे प्रति भली तो है?"

"क्यों नहीं?"

"मेरा मतलब है—वह सचमुच तुम्हारे प्रति भली है न?"

"चुप रहो।"

"चुप रहूँगा। अवश्य चुप रहूँगा। तुम भी देख लेना कि मैं कितने कोमल स्वभाव का व्यक्ति हूँ। क्या वह—"

"रिनी!" मैंने कहा—"दया करके चुप हो जाओ अब। यदि तुम मेरे मित्र बने रहना चाहते हो, तो अब एक शब्द भी मत बोलना।"

"मित्र बनने का प्रश्न ही नहीं उठता, दोस्त! मैं तो तुम्हारा मित्र हूँ ही।"

"तब बिलकुल चुप रहो।"

"अच्छी बात है।"

मैं बिस्तर पर पहुँचा और रिनाल्डी के पास बैठ गया। वह हाथ में अपना गिलास लिये फ़र्श की ओर देख रहा था।

"तुम जानते हो, ऐसी बातें करना कितना बुरा है, रिनी?"

"जानता हूँ। अवश्य जानता हूँ। मेरा समस्त जीवन ही पवित्र विषयों के विरुद्ध संघर्ष करने में बीता है। हाँ, उन विषयों पर तुमसे मेरी बहस बहुत कम हुई है। मेरी समझ से पवित्र विषयों की, तुम्हारे पास भी तो कमी नहीं होगी।" वह फ़र्श की ओर देखते हुए बोला।

"तुम्हारे पास नहीं है क्या?"

"नहीं।"

"एक भी विषय ऐसा नहीं है, जिस पर तुम अपने विचार पवित्र रख सको?"

"नहीं।"

"तब क्या मैं तुम्हारी माँ के विषय में कोई ऐसी-वैसी बात कह सकता हूँ—तुम्हारी बहन के विषय में अनर्गल प्रलाप कर सकता हूँ? बोलो, बक सकता हूँ मैं?"

"और अपनी बहन के बारे में भी। है न?" रिनाल्डी ने शीघ्रतापूर्वक उत्तर दिया। हम दोनों हँस पड़े।

"तुम बहुत चालाक हो!" मैंने कहा।

"हो सकता है, मैं ईर्षालु होऊँ।" रिनाल्डी बोला।

"नहीं, तुम वैसे नहीं हो।"

"मैं उस अर्थ में नहीं कह रहा हूँ। मेरा मतलब कुछ और है। क्या तुम्हारा कोई विवाहित मित्र भी है?"

"हाँ!" मैंने कहा।

"मेरा कोई ऐसा मित्र नहीं है।" रिनाल्डी बोला—"यदि कोई विवाहित जोड़ा आपस में प्रेम करता है, तो मेरी उनसे मित्रता नहीं निभ सकती।"

"क्यों नहीं?"

"तब वे लोग मुझे पसंद नहीं करते।"

"क्यों नहीं पसंद करते?"

"मैं उनके लिए साँप के समान खतरनाक हो उठता हूँ। विवेक-रूपी सर्प!"

"तुम व्यर्थ ही बातों को उलझा रहे हो। विवेक तो था सेब का फल।"

"नहीं, सर्प ही विवेक था।" वह अधिक प्रसन्न दीख रहा था।

"जब तुम इतने गम्भीर विचारों में नहीं उलझे रहते हो, तब तुम्हारी हालत अच्छी रहती है!" मैंने कहा।

"मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, दोस्त—" वह बोला—"जब मैं स्वयं में खोया हुआ एक महान इटालियन विचारक बन जाता हूँ, तब तुम मेरा ध्यान भंग कर देते हो। किन्तु मैं बहुत-सी ऐसी बातें जानता हूँ, जो कह नहीं सकता। मुझे तुमसे अधिक ज्ञान है, मेरे दोस्त!"

"हाँ, मैं मानता हूँ।"

"किन्तु तुम्हारा जीवन मुझसे अधिक सुखद होगा। अपने पश्चात्ताप के क्षणों के साथ भी तुम्हारा जीवन मुझसे कहीं अच्छा बीतेगा।"

"मैं इसे नहीं मानता।"

"विश्वास करो, सच कह रहा हूँ मैं। मैं तो तभी सुखी रहता हूँ, जब काम में डूबा रहता हूँ। मेरा यह स्वभाव बन गया है।" वह पुनः फ़र्श की ओर देखने लगा।

"तुम इस पर क़ाबू पा लोगे।"

"नहीं। मुझे इसके अलावा केवल दो बातें और पसन्द हैं। उनमें से एक मेरे कार्य के लिए बहुत बुरी है और जो दूसरी चीज़ है, उसकी जीवन-अवधि आधे घण्टे या सिर्फ़ पन्द्रह मिनट की होती है—कभी-कभी तो उससे भी कम।"

"और कभी-कभी बहुत ही थोड़े समय की!"

"शायद। मैंने बहुत तरक्की की है, मेरे दोस्त! तुम्हें मालूम नहीं है; किन्तु मेरे जीवन में केवल वे ही दो चीज़ें हैं और मेरा काम—बस!"

"और भी चीज़ें मिल जायेंगी तुम्हें।"

"नहीं। कोई भी वस्तु हमें मिला नहीं करती। हमारे पास जो कुछ है, उसे साथ लेकर ही हम पैदा होते हैं। हाँ, उसकी जानकारी हमें नहीं होती। कोई नयी वस्तु हमें कभी प्राप्त नहीं होती। सब-कुछ अपने पास लेकर ही हमारे जीवन का प्रारम्भ होता है। तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए कि तुम लैटिन नहीं हो।'

"लैटिन नाम की तो कोई चीज़ नहीं है। 'लैटिन विचारधारा' कहो। तुम्हें अपनी खामियों पर इतना नाज़ है!"

रिनाल्डी ने ऊपर देखा और हँस पड़ा।

"इस सम्बन्ध में हम अब बातें नहीं करेंगे, दोस्त! मैं इतना सोच-सोचकर थक गया हूँ।" जब वह भीतर आया था, तभी थका हुआ दिखाई देता था।

"खाना खाने का समय भी हो गया है। मुझे प्रसन्नता है कि तुम लौट आये हो। तुम मेरे सबसे अच्छे मित्र और 'युद्ध-बन्धु' हो।"

"और हम 'युद्ध-बन्धु' भोजन कब करेंगे?" मैंने पूछा।

"बस, अभी। आओ, तुम्हारे यकृत्-सुधार के लिए हम एक बार और शराब पी लें।"

"सन्त पॉल की भाँति।"

"ना, तुम ग़लत कह रहे हो। उसका सम्बन्ध शराब और पेट से था। तुम भी अपना पेट ठीक रखने के लिए थोड़ी शराब ले लो।"

"अच्छा, जो-कुछ तुम्हारी बोतल में बची है, वही।" मैं बोला—"और जिसके लिए तुम कहो, उसी के लिए!"

"तुम्हारी प्रेयसी को समर्पित!" रिनाल्डी ने अपना गिलास बढ़ाते हुए कहा।

"अच्छी बात है।"

"मैं उसके विषय में कभी कोई गन्दी बात नहीं कहूँगा।"

"व्यर्थ ही अपने दिमाग पर ज़्यादा ज़ोर मत डालो।"

उसने कॉग्नेक समाप्त कर दी। "मैं बड़ा पवित्र-हृदय हूँ।" वह बोला—"बिलकुल तुम्हारी ही तरह, दोस्त। मैं भी किसी अंग्रेज़ लड़की से ही मित्रता करूँगा। यों सच तो यह है कि तुम्हारी उस मित्र से पहले मेरी ही जान-पहचान हुई थी। किन्तु वह मेरे लिए कुछ ऊँची थी। ऊँची लड़की को बहन ही बनाना चाहिए।" उसने एक उद्धरण का हवाला दिया।

"तुम्हारा मन बड़ा पवित्र और सुन्दर है!" मैंने कहा।

"है न? इसीलिए तो लोग मुझे 'पुण्यात्मा रिनाल्डो' कहकर पुकारते हैं।"

"पुण्यात्मा नहीं, 'पापात्मा रिनाल्डो'!"

"आओ दोस्त, चलें। जब तक मेरा मस्तिष्क विकार-रहित है, तब तक हम नीचे जाकर खाना खा आएँ।"

मैंने हाथ-मुँह धोए, बालों में कंघी की और सीढ़ियाँ उतरते हुए हम नीचे पहुँचे। रिनाल्डी कुछ नशे में था। जब हम भोजन करने के कमरे में पहुँचे, तो मालूम हुआ, खाना अभी तैयार नहीं था।

"मैं जाकर बोतल ले आता हूँ।" रिनाल्डी बोला। वह फिर सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर चला गया और मैं वहीं मेज़ पर बैठ गया। रिनाल्डी जब बोतल

लेकर वापस आया, तो उसने गिलास में आधी दूर तक शराब भर दी।

"यह तो बहुत अधिक है।" कहते हुए मैंने गिलास उठाया और मेज़ पर रखी हुई बत्ती के प्रकाश के सामने ले जाकर उसे देखा।

"खाली पेट के लिए अधिक नहीं है। बड़ी गज़ब की चीज़ है यह। सारे पेट को जलाकर खाक कर देती है। तुम्हारे लिए कोई भी चीज़ इससे अधिक खराब नहीं हो सकती।"

"अच्छी बात है।"

"दिनों-दिन अपने हाथों अपना नाश!" रिनाल्डी बोला—"यह पेट को बिलकुल ख़राब कर देती है। इसे पीकर हाथ काँपने लगते हैं—एक सर्जन के लिए बिलकुल उपयुक्त है यह।"

"क्या तुम मेरे लिए भी इसकी सिफ़ारिश करते हो?"

"हृदय से। मैं और कोई शराब नहीं पीता। पी लो इसे दोस्त! पी भी लो और फिर अपने बीमार होने की प्रतीक्षा करो।"

मैंने गिलास आधा खाली कर दिया। तभी मुझे भोजन के बड़े कमरे में अर्दली के चिल्लाने की आवाज़ सुनायी दी—"शोरबा! शोरबा तैयार है!"

मेजर अन्दर आया। उसने सिर हिलाकर हमें नमस्ते की और बैठ गया। मेज़ के निकट उस तरह बैठने पर वह बहुत छोटा दिखाई दे रहा था।

"क्या हम सब इतने ही लोग हैं?" उसने पूछा। अर्दली ने शोरबे का बर्तन नीचे रख दिया और चम्मच से एक रकाबी में शोरबा उड़ेला।

"हाँ, हम सभी यहाँ मौजूद हैं—" रिनाल्डी बोला—"बस, पादरी को छोड़कर। यदि उसे मालूम हो जाता कि फेडेरिको यहाँ आ गया है, तो वह भी आ पहुँचता।"

"वह है कहाँ?" मैंने पूछा।

"३०७ नम्बर के अस्पताल में।" मेजर ने कहा। वह शोरबा पीने में व्यस्त था। बीच-बीच में वह अपनी ऊपर उठी हुई भूरी मूँछें पोंछता और अपने मुँह को साफ़ करता जाता था।

"मेरा ख़याल है कि वह आ जाएगा। मैंने कुछ लोगों के हाथ उसके पास तुम्हारे यहाँ आने का समाचार भिजवा दिया है।"

"भोजनालय में पहले के शोरगुल के स्थान पर यह चुप्पी मुझे खल रही है।" मैंने कहा।

"हाँ, बिलकुल सुनसान-सा हो गया है आजकल।" मेजर बोला।

"कहो तो, मैं शोर मचाऊँ।" रिनाल्डी ने कहा।

"थोड़ी शराब पिओ, एन्रिको!" मेजर ने कहा। उसने मेरा गिलास भर दिया। इतने में मैकरोनी आ गयी और हम सब उसे खाने में जुट गये। हमारा खाना ख़त्म हो ही रहा था कि पादरी आ गया। वह हमेशा की तरह ही था—ठिंगना, भूरा और गठीले बदनवाला। मैं उसे देखकर खड़ा हो गया। हम दोनो ने हाथ मिलाये और उसने मेरे कंधे पर अपना हाथ रख दिया।

"ज्योंही मैंने सुना कि तुम लौट आये हो, त्योंही चल पड़ा।" वह बोला।

"बैठ जाओ—" मेजर ने कहा—"तुम्हें कुछ देर हो गई।"

"नमस्ते!" रिनाल्डी ने अंग्रेज़ी में कहा। अभिवादन का यह तरीक़ा यहाँ के लोगों ने पादरी का मज़ाक उड़ाने वाले उस कैप्टन से सीख लिया था, जो थोड़ी-थोड़ी अंग्रेज़ी जानता था। "नमस्ते, रिनाल्डी।" पादरी ने उत्तर दिया। अर्दली ने उसके सामने शोरबा लाकर रख दिया; किन्तु पादरी ने पहले मैकरोनी खाने की इच्छा व्यक्त की।

"कैसे हो तुम अब?" उसने मुझसे पूछा।

"बिलकुल ठीक!" मैंने उत्तर दिया—"यहाँ का क्या हाल है?"

"थोड़ी शराब लो, पादरी!" रिनाल्डी बोला—"अपने पेट को ठीक रखने के लिए। सन्त पॉल का कथन है यह, जानते हो न?"

"हाँ, जानता हूँ।" पादरी नम्रतापूर्वक बोला और रिनाल्डी ने उसका गिलास भर दिया।

"वह सन्त पॉल!" रिनाल्डी ने उसे चिढ़ाना आरम्भ किया—"वही तो सब झगड़ों का जन्मदाता है!" पादरी मेरी ओर देख कर मुसकराया। मैंने देखा कि चिढ़ाने का अब उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था।

"वह सन्त पॉल—" रिनाल्डी बोलता रहा—"वह पक्का घुमक्कड़ और पियक्कड़ था और जब उसका नशा उतर जाता था, तो वह इसे बेकार बताया करता था। जब उसकी मज़े उड़ाने की उम्र ख़त्म हो गयी, तो उसने हम लोगों के लिए नियम बनाये—उनके लिए, जो अभी भी युवा हैं—जिनके ख़ून में अभी भी गरमी है। क्यों सच है न, फेडेरिको?"

मेजर मुसकराया। अब हम धीमी आँच में पकाया हुआ मांस खा रहे थे।

"शाम हो जाने के बाद मैं कभी किसी सन्त के विषय में बातें नहीं करता।" मैंने कहा। पादरी ने मांस की रकाबी से अपना सिर ऊपर उठाया और मेरी ओर देखकर मुसकराया।

"देखो इसे, यह भी पादरी से मिल गया है।" रिनाल्डी ने कहा—"अरे भाई, पादरी को चिढ़ाने वाले वे पुराने और अनुभवी व्यक्ति सब कहाँ चले गये? केवेलकान्टी कहाँ है? सॅसारे कहाँ है? और ब्रन्डी? क्या इस पादरी का मुझे अकेले ही मज़ाक उड़ाना पड़ेगा?"

"पादरी अच्छा आदमी है।" मेजर ने कहा।

"आदमी तो अच्छा है—" रिनाल्डी बोला—"पर है तो आख़िर पादरी ही। मैं इस भोजनालय में वही आनन्दमय वातावरण फिर लाने का प्रयत्न कर रहा हूँ, जो पहले था। फेडेरिको को सुखी बनाना चाहता हूँ मैं। किन्तु—यह पादरी भी—जहन्नुम में जाओ तुम!"

मेजर ने उसकी ओर देखा और समझ गया कि वह नशे में है। उसका दुर्बल मुख सफ़ेद पड़ गया था। उसके भाल के श्वेतपन के विरुद्ध उसकी केश-पंक्ति बड़ी काली दिखाई दे रही थी।

"कोई बात नहीं, रिनाल्डी!" पादरीने कहा—"कोई बात नहीं।"

"जहन्नुम में जाओ तुम।" रिनाल्डी चिल्लाया—"और जहन्नुम में जाए यह सब-कुछ।" वह कुर्सी से अपनी पीठ टिकाकर बैठ गया।

"रिनाल्डी बड़ा कठिन परिश्रम करता रहा है और अब वह थक चुका है।" मेजर ने मुझसे कहा। वह मास खा चुका था और अब रकाबी में बचे हुए शोरवे को रोटी के टुकड़े से पोंछ रहा था।

"मैं इसकी रत्ती-भर भी परवाह नहीं करता।" रिनाल्डी मानो मेज़ से बातें करने लगा—"यह सब—कुछ जहन्नुम में जाये।" उसने बड़ी उद्दण्डतापूर्वक मेज़ के चारो ओर दृष्टि दौड़ाई। उसकी आँखें निस्तेज थीं और मुँह पीला पड़ गया था।

"ठीक है।" मैं बोला—"जहन्नुम में जाए यह सब-कुछ!"

"नहीं—नहीं—" रिनाल्डी बोला—"तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुम नहीं कर सकते ऐसा। मैं कहता हूँ, ऐसा कर ही नहीं सकते तुम। तुम नीरस हो—बिलकुल खोखले! इसके सिवा और कुछ है ही नहीं। मैं कहता हूँ, और कुछ है ही नहीं—रत्ती-भर भी नहीं! मैं जानता हूँ मेरा दिमाग कब काम करना बन्द कर देता है।"

पादरी ने सिर हिलाकर संकेत किया और अर्दली आकर पके हुए मांस की रकाबी उठाकर ले गया।

"तुम मांस क्यों खा रहे हो?" रिनाल्डी ने पादरी की ओर मुड़कर कहा—"क्या तुम नहीं जानते कि आज शुक्रवार है?"

"गुरुवार है आज तो।" पादरी ने उत्तर दिया।

"बिलकुल झूठ, आज शुक्रवार है। तुम हमारे प्रभु यीशु का मांस खा रहे हो। भगवान् का मांस है यह। मैं अच्छी तरह जानता हूँ। यह मृत आस्ट्रियन का मांस है। वही तो खा रहे हो तुम।"

"यह सफ़ेद मांस अफ़सरों का है।" पुराने मज़ाक को पूरा करते हुए मैं बोला।

रिनाल्डी हँस पड़ा। उसने अपना गिलास पुनः भर लिया।

"मेरी बातों का बुरा मत मानना—" वह बोला—"मैं कुछ पागल-सा हो गया हूँ।"

"तुम्हें छुट्टी ले लेनी चाहिए।" पादरी ने कहा।

मेजर ने उसकी ओर देखते हुए अपना सिर हिलाया। रिनाल्डी ने पादरी की ओर देखा।

"तुम्हारे विचार से मुझे छुट्टी पर चले जाना चाहिए?"

मेजर ने पादरी की ओर देखते हुए अपना सिर हिलाया। रिनाल्डी पादरी को देख रहा था।

"जैसी तुम्हारी इच्छा हो—" पादरी ने उत्तर दिया—"यदि तुम नहीं चाहते हो, तो मत लो छुट्टी।"

"तुम्हारा नाश हो!" रिनाल्डी बोला—"तुम सब लोग मुझसे पीछा छुड़ाना चाहते हो। मैं जानता हूँ, प्रति रात्रि लोग मुझसे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। मैं भी उनसे झगड़ बैठता हूँ। यदि मुझे उपदंश रोग हो गया है, तो उससे क्या? प्रत्येक व्यक्ति को है यह। सारी दुनिया के साथ यही बात है।" एक वक्ता की भाँति वह बोला—"आरम्भ होता है यह एक नन्हीं-सी फुन्सी से और तब कन्धों के बीच में बड़ी चकती दिखाई देती है। फिर—फिर कुछ नहीं दिखाई देता—कुछ भी नहीं। हम बस, आँखें मूँदकर पारे में विश्वास करने लगते हैं।"

"अथवा सालव्हरसान (एक औषधि) में।" मेजर शांतिपूर्वक बीच में ही बोल उठा।

"वह भी तो पारे से ही निर्मित पदार्थ है।"—रिनाल्डी ने कहा। वह बड़ा उत्तेजित दीख रहा था—"मैं ऐसी दो-दो उपयोगी औषधियों के नाम जानता हूँ। सौम्य और वयोवृद्ध पादरी! तुम्हें वह औषधि नहीं मिलेगी। हाँ, इस नन्हें-मुन्ने को मिल जायेगी। यह तो एक औद्योगिक संयोग है—बिलकुल सीधा-सादा औद्योगिक संयोग!"

अर्दली मिठाइयाँ और कॉफी ले आया। मिठाई, सूखी चटनी और एक प्रकार की काली-सी रोटी से बनी थी। कमरे में रखी बत्ती से धुआँ निकल रहा था—काला धुआँ, जो बत्ती के काँच में ऊपर को इकट्ठा होता जा रहा था।

"यह बत्ती उठा लो और दो मोमबत्तियाँ ले आओ।" मेजर ने आदेश दिया। अर्दली रकाबियों में दो मोमबत्तियाँ जलाकर ले आया और बत्ती बुझाकर उसे वहाँ से ले गया। रिनाल्डी अब शान्त हो चुका था। अब वह काफ़ी स्वस्थ प्रतीत हो रहा था। हम लोग बातें करते रहे और कॉफी पीने के बाद बरामदे में चले आये।

"तुम पादरी से बातें करना चाहते हो न। मुझे ज़रा शहर जाना है।" रिनाल्डी ने कहा—"नमस्ते।"

"नमस्ते, रिनाल्डो!" पादरी ने उत्तर दिया।

"मैं तुमसे फिर मिलूँगा, फ्रेडी।" रिनाल्डी ने कहा।

"अच्छा—" मैं बोला—"जल्दी लौटना।" उसने मुँह बनाते हुए मुझे चिढ़ाया और दरवाज़े से बाहर निकल कर चला गया।

मेजर हम सबके साथ खड़ा था। "उसे बहुत काम करना पड़ता है, अतः वह काफ़ी थक गया है।" मेजर ने कहा—"उसे यह शंका भी हो गई है कि वह उपदंश रोग से पीड़ित है। मैं विश्वास तो नहीं करता; किन्तु सम्भव है, उसे यह रोग हो भी। अपना उपचार वह स्वयं ही कर रहा है। अच्छा, नमस्ते। तुम सबेरे सूर्योदय के पहले ही यहाँ से चल दोगे न, एन्रिको?"

"हाँ।"

"तब विदा—" उसने कहा—"भाग्य तुम्हारा साथ दे! पेडुज्ज़ी तुम्हें सबेरे जगा देगा। वह भी तुम्हारे साथ जायेगा।"

"विदा, मेजर साहब!"

"विदा! लोग आस्ट्रियनों के आक्रमण की चर्चा करते हैं, किन्तु मुझे उस पर विश्वास नहीं है। मुझे इसकी तनिक भी आशा नहीं है। और यदि आक्रमण हुआ भी, तो यहाँ नहीं होगा। जिनो, तुम्हें सब कुछ बतलाएगा। हाँ, अब टेलिफोन भी अच्छी तरह काम करता है, समझे!"

"मैं आपको नियमित रूप से टेलिफोन करता रहूँगा।"

"हाँ, इतनी कृपा करना। अच्छा, नमस्ते! रिनाल्डी का इतना ब्राण्डी पीना किसी प्रकार कम कराओ।"

"मैं प्रयत्न करूँगा।"

"नमस्ते, पादरी महोदय!"

"नमस्ते, मेजर साहब!"

वह धीरे-धीरे अपने आफिस की ओर चला गया।

. २६ .

द्वार पर पहुँचकर मैंने बाहर की ओर देखा। वर्षा तो थम गई थी; किन्तु कुहासा अभी तक छाया हुआ था।

"ऊपर चलें?" मैंने पादरी से पूछा।

"मैं थोड़ी देर ही यहाँ रुक सकता हूँ।"

"तब हम ऊपर ही चलें।"

सीढ़ियाँ चढ़कर हम कमरे में पहुँचे। मैं रिनाल्डी के बिस्तर पर लेट गया। अर्दली ने मेरे लिए खाट बिछा दी थी। पादरी उस पर बैठ गया। कमरे में अंधेरा था।

"अच्छा," वह बोला—"अब बताओ कि सचमुच तुम्हारी हालत कैसी है?"

"मैं बिलकुल अच्छा हूँ। हाँ, थक अवश्य गया हूँ।"

"थक तो मैं भी गया हूँ; किन्तु मेरी थकावट का कोई कारण नज़र नहीं आता।"

"युद्ध की क्या हालत है?"

"मेरे विचार से शीघ्र ही उसका अन्त हो जाएगा। मुझे ऐसा ही प्रतीत होता है। क्यों? यह तो मैं स्वयं भी नहीं जानता।"

"किन्तु आपकी इस धारणा का आधार क्या है?"

"तुम जानते हो, तुम्हारा मेजर कैसा है? भला व्यक्ति है? अधिकांश व्यक्ति आजकल ऐसे ही बन गये हैं।"

"मुझे स्वयं भी ऐसा ही लगता है।" मैं बोला।

"गरमी का यह मौसम बड़ा भयानक रहा है।" पादरी ने कहा। जब मैं यहाँ से गया था, उस समय उसकी जो स्थिति थी, उस की अपेक्षा आज वह अपने सम्बन्ध में अधिक दृढ़ प्रतीत होता था—"यह सब कैसे हुआ है, इस पर तुम शायद विश्वास भी न करो। तुम तो केवल इतना ही जानते हो कि तुम युद्ध

में गए थे और युद्ध क्या होता है! गरमी के इस मौसम में बहुत-से लोग अच्छी तरह समझ गये हैं कि युद्ध सचमुच क्या होता है। जिन अफ़सरों के विषय में मैं यह सोचा करता था कि वे युद्ध की भयानकता को कभी नहीं समझ सकेंगे, वे भी अब जान गये हैं कि युद्ध कितना भयानक होता है।"

"फिर क्या होगा अब?" मैंने कम्बल पर हाथ मारते हुए कहा।

"यह तो मैं नहीं जानता; किन्तु मेरा अनुमान है कि युद्ध बहुत दिनों तक चलेगा नहीं।"

"तब क्या होगा?"

"होगा क्या, लड़ाई बन्द हो जायेगी।"

"कौन बन्द करेगा लड़ाई?"

"दोनों पक्ष।"

"ईश्वर करे, ऐसा ही हो।" मैं बोला।

"तुम्हें विश्वास नहीं है?"

"दोनों पक्ष लड़ना बन्द कर देंगे, इस पर मुझे विश्वास नहीं होता।"

"वास्तव में मैं भी ऐसा नहीं सोचता। इतनी अधिक आशा की भी नहीं जा सकती। किन्तु जब मैं लोगों के हृदय-परिवर्तन पर ध्यान देता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि यह युद्ध अधिक दिनों तक नहीं चल सकता।"

"ग्रीष्म ऋतु के इस युद्ध में जीत किसकी हुई थी?"

"किसी की भी नहीं।"

"नहीं, जीत आस्ट्रियनों की हुई।" मैंने कहा—"उन्होंने इटालियन सेनाओं को सॉन जिग्राइले पर क़ब्ज़ा नहीं करने दिया और इसका मतलब है उनकी जीत। वे युद्ध बन्द नहीं करेंगे।"

"युद्ध के सम्बन्ध में जैसा हम अनुभव करते हैं, वैसा ही यदि वे भी अनुभव करने लगें, तो निश्चय ही वे लड़ना बन्द कर देंगे। उनके ऊपर भी तो वही बीती है, जो हमारे ऊपर बीती है।"

"किन्तु जब किसी की जीत होती रहती है, तो वह लड़ना कभी बन्द नहीं करता।"

"तुम तो मुझे निरुत्साहित कर रहे हो।"

"मैं वही तो कह सकता हूँ, जो मैं सोचता हूँ।"

"तब क्या तुम सोचते हो कि यह युद्ध अनिश्चित काल तक चलता ही रहेगा? क्या यह कभी समाप्त ही नहीं होगा?"

"कह नहीं सकता। मैं तो केवल इतना ही जानता हूँ कि जब आस्ट्रियन लोग एक बार जीत चुके हैं, तो वे युद्ध बन्द नहीं करेंगे। 'केवल हारने पर ही, हम क्रिश्चियन (धर्मभीरु) बनते हैं'।"

"बोसनियन्स को छोड़कर, सभी आस्ट्रियन भी तो क्रिश्चियन हैं।"

"मैं शाब्दिक अर्थ में 'क्रिश्चियन' का प्रयोग नहीं कर रहा हूँ। मेरा मतलब है...जैसे आदम को ही ले लो।"

वह चुप रहा।

"हम सब अभी इसीलिए विनम्र बन रहे हैं कि हम बुरी तरह हार चुके हैं। यदि सन्त पीटर ने आदम को स्वर्ग के बगीचे में ही बचा लिया होता, तो वे इस दुनिया में कैसे आते?"

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे आते ही!"

"मैं ऐसा नहीं समझता।" मैंने कहा।

"तुम तो मुझे निराशावादी बना रहे हो।" वह बोला—"मुझे विश्वास है कुछ-न-कुछ अवश्य होगा और मैं यही प्रार्थना भी करता हूँ। मैंने इसका बहुत निकट से अनुभव किया है। यह मेरी अंतरात्मा की आवाज़ है।"

"कुछ-न-कुछ अवश्य हो सकता है—" मैं बोला—"किन्तु वह हमारे विरुद्ध ही होगा—हम पर ही बीतेगी। यदि शत्रु-पक्ष भी वैसा ही अनुभव करने लगे, जैसा हम कर रहे हैं, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। किन्तु उन्होंने हमें पराजित किया है। वे विजेता हैं—निश्चय ही वे कुछ और सोचते होंगे।"

"बहुत-से सैनिक भी हमेशा इसी प्रकार सोचते हैं। उन्होंने युद्ध की भीषणता का नग्न रूप देखा है। और उन्होंने ऐसा केवल इसलिए नहीं सोचा कि उन्हें पराजित होना पड़ा था।"

"पराजित तो वे आरम्भ में ही हो गये थे। जब उन्हें अपने खेतों से बलपूर्वक ले जाकर सैनिक बनाया गया था, तभी वे वस्तुतः पराजित हो चुके थे। एक किसान-सैनिक को, आरम्भ में ही पराजित होना पड़ता है; इसीलिए तो वह औरों से अधिक बुद्धिमान होता है। उसके हाथ में अधिकार दो—शक्ति दो और तब देखो, वह कितना बुद्धिमान है।"

उसने कुछ न कहा। वह कुछ सोच रहा था।

"अब मैं स्वयं ही हतोत्साहित हो चुका हूँ—" मैंने कहा—"इसीलिए मैं इन बातों पर कभी विचार नहीं करता। मै कभी सोचता ही नहीं हूँ। फिर भी जब मैं बोलना आरम्भ करता हूँ, तो ऐसी बातें कह जाता हूँ, जो बिना किसी

पूर्व-विचार के मेरे मस्तिष्क में भरी रहती हैं।"

"मैंने तो किसी घटना की आशा की थी।"

"पराजय की?"

"नहीं, इससे भी अधिक कुछ और की।"

"इससे अधिक और कुछ नहीं है—है, सिर्फ़ विजय! और विजय, पराजय से भी बुरी हो सकती है।"

"मैंने बहुत समय तक विजय की आशा की थी।"

"मैंने भी।"

"और अब मैं नहीं जानता, क्या होगा।"

"दो में से एक बात तो होगी ही। विजय या पराजय!"

"और मैं विजय में विश्वास नहीं करता अब।"

"विश्वास तो मैं भी नहीं करता। किन्तु पराजय में भी मेरा विश्वास नहीं है। यद्यपि पराजय, विजय से अच्छी हो सकती है।"

"तब तुम किसमें विश्वास करते हो?"

"अभी तो चुपचाप सो जाने में—" मैंने उत्तर दिया। सुनकर वह खड़ा हो गया।

"मुझे दुःख है कि मैंने तुम्हारा इतना समय लिया। किन्तु मुझे तुम्हारे साथ बातें करने में आनंद आता है।"

"यदि हम पुनः इस विषय में चर्चा करें, तो वह काफ़ी सुंदर रहेगा। सोने के सम्बन्ध में मैंने जो-कुछ अभी कहा, उसका कोई खास महत्त्व नहीं था।"

हम दोनों ने खड़े होकर अंधेरे में ही हाथ मिलाये।

"मैं आजकल ३०७ नम्बर में सोता हूँ।" वह बोला।

"कल तड़के ही मैं पड़ाव पर जा रहा हूँ।"

"जब तुम लौट कर आओगे, तब मैं तुमसे मिलूँगा।"

"फिर दोनों घूमने जायेंगे और घंटो बातें करेंगे।" मैं उसे दरवाज़े तक पहुँचाने गया।

"नीचे तक चलने की ज़रूरत नहीं।" उसने कहा—"बड़ी प्रसन्नता की बात है कि तुम लौट आये हो। यद्यपि तुम्हारे लिए यह अधिक प्रसन्नता की बात नहीं है।" उसने मेरे कंधे पर अपना हाथ रख दिया।

"नहीं, मुझे यह कोई इतना बुरा नहीं लगता।" मैं बोला—"अच्छा, नमस्ते।"

"नमस्ते। अनेक शुभकामनाएँ।"

"मेरी भी शुभकामनाएँ!" मैंने कहा। मुझे बुरी तरह नींद सता रही थी।

. २७ .

जब रिनाल्डी कमरे में आया, तो मेरी नींद खुल गई। किन्तु वह जब कुछ नहीं बोला, तो मैं फिर सो गया। सवेरे, अंधेरे में ही, मैंने अपनी वर्दी पहनी और चल पड़ा। जब मैंने कमरा छोड़ा, तब भी रिनाल्डी सो रहा था।

बेन्सिज़्ज़ा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। अतः नदी के किनारे-किनारे—जहाँ मैं घायल हुआ था—उस ढालू सड़क पर, ऊपर की ओर जाना, मुझे बड़ा नया लगा। जहाँ हमें जाना था, वहाँ आस्ट्रियन लोग रह चुके थे। सड़क बिलकुल नयी और ढलुवीं थी। बहुत-सी मोटरें उस पर आ-जा रही थीं। कुछ आगे जाकर राह चौरस हो गयी थी। कुहासे में लिपटे घने वन और ढालू पहाड़ियाँ मुझे दिखाई दीं। ऐसे वन भी थे, जिन पर बड़ी जल्दी अधिकार कर लिया गया था और जो नष्ट-भ्रष्ट होने से बच गये थे। उनसे आगे, जहाँ रास्ता पहाड़ियों द्वारा सुरक्षित नहीं था, चटाइयाँ लगाकर उसे दोनों ओर से तथा ऊपर से ढँक दिया गया था। एक ध्वस्तप्राय ग्राम में जाकर सड़क समाप्त हो गयी थी। पर सैन्यदल उससे भी आगे, ऊपर की ओर थे। आसपास बहुत-से तोपखाने थे। उस गाँव के अधिकाश घर बुरी तरह नष्ट-भ्रष्ट हो चुके थे; फिर भी वहाँ की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। प्रत्येक स्थान पर मार्गदर्शक संकेत-पट लगा दिये गये थे।

जिनो हमें वहाँ मिल गया। उसने हमें पीने के लिए कुछ कॉफी लाकर दी। बाद में, उसके साथ जाकर मैंने कई व्यक्तियों से मुलाक़ात की और पड़ावों का निरीक्षण किया। जिनो ने बताया कि बेन्सिज़्ज़ा से आगे, नीचे की ओर, रॅव्हने में कुछ ब्रिटिश एम्बुलेन्स कार्य कर रही हैं। उसने उन अंग्रेज़ों की बड़ी प्रशंसा की। "इस क्षेत्र में अभी भी छिटपुट गोलाबारी होती रहती है"—उसने बताया—"किन्तु उससे अधिक व्यक्ति घायल नहीं होते। हाँ, वर्षा आरम्भ हो जाने के कारण अब बहुत-से लोग बीमार अवश्य हो सकते हैं।"

युद्ध-विषयक अन्य जानकारी देते हुए जिनो बोला—"आस्ट्रियनों की ओर से आक्रमण होने की सम्भावना है; किन्तु मैं इस पर विश्वास नहीं करता। आक्रमण की बात तो हमारी ओर से भी है; किन्तु अभी तक यहाँ कोई नया सैन्यदल नहीं बुलाया गया है, अतः इस बात में भी मुझे कोई तथ्य नज़र नहीं आता।"

फिर उसने खाने के सम्बन्ध में बताया—"खाने-पीने की चीज़ों की बड़ी कमी है यहाँ। गोरीज़िया पहुँचकर जब मैं जी-भर कर खाऊँगा, तो सचमुच बड़ा मज़ा आयेगा। आपने रात को क्या खाया था?" उसने मुझसे पूछा। मैंने उसे अपने रात के खाने के बारे में बताया। सुनकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ—"वाह, तब तो बड़ा आनन्द आया होगा!" खाने में डोल्चे (मीठी रोटी) का नाम सुनकर जिनो विशेष प्रभावित हुआ। डोल्चे का मैंने कोई विशद वर्णन नहीं किया था—केवल इतना ही कहा था कि मैंने रात डोल्चे खाया था, किन्तु उसके मन में सम्भवतः यह धारणा घर कर गयी कि डोल्चे मीठी रोटी न होकर, बड़े परिश्रम से बनाया हुआ कोई अत्यंत स्वादिष्ट पदार्थ है।

"क्या आप जानते हैं कि मुझे कहाँ भेजा जायेगा?" उसने पूछा।

"नहीं, मुझे नहीं मालूम।" मैंने नकारात्मक उत्तर देते हुए कहा—"मुझे तो केवल इतना ही मालूम है कि केपोरेट्टो में भी अपनी कुछ एम्बुलेन्स हैं!"

"तब तो शायद मुझे वहीं जाना होगा।" वह बोला।

केपोरेट्टो एक छोटा-सा स्थान था। जिनो को उसके एक ओर, दूर खड़ा, आकाश को छूने का प्रयास करता हुआ पहाड़ बड़ा भला लगता था। जिनो बड़े अच्छे स्वभाव का व्यक्ति था और वहाँ सब लोग उसे चाहते थे। उसने मुझे बताया कि सॉन जेब्राइले में हम वस्तुतः बुरी तरह पराजित हुए थे। लोम से आगे की ओर किए गए आक्रमण का भी बड़ा भयानक अन्त हुआ था।

"हमारी टुकड़ियों से आगे, हम से थोड़ी ऊँचाई पर—टॅनोवा पर्वत-पृष्ठ से सटे हुए वनो में—आस्ट्रियनो ने भारी तोपें रख छोड़ी हैं।" उसने मुझे बताया—"वहाँ से वे रात में बुरी तरह रास्तों पर बमबारी किया करते हैं।" उसने यह भी बताया कि वहाँ जलसेना का भी एक तोपखाना है, जिससे संकट और भी बढ़ गया है। "आप उन्हें उनकी चौरस नलियों के कारण आसानी से पहचान सकेंगे।" वह बोला—"पहले उन तोपों के चलने का तीव्र स्वर सुनायी देता है और क्षणभर बाद ही एक कर्कश ध्वनि आरम्भ हो जाती है। सामान्यतः एक-के-बाद-एक करके एक ही बार में दो तोपें दागी जाती हैं। उनके बमों का विस्फोट होने पर भारी संख्या में उनके टुकड़े इधर-उधर छितरा जाते हैं।" उसने मुझे बम का एक टुकड़ा दिखाया। वह धातु का एक फुट लम्बा, चिकना और टेढ़ा-मेढ़ा कटा हुआ टुकड़ा था और रांगा, तांबा तथा सुरमा के मिश्रण से बना प्रतीत होता था।

"मेरी समझ से ये गोले अधिक ख़तरनाक नहीं हैं।" जिनो ने कहा—

"किन्तु वे मुझे बहुत भयभीत कर देते हैं। ऐसी आवाज़ करते हैं, मानो सीधे सिर पर ही गिरकर फूटेंगे। पहले एक गड़गड़ाहट होती है, फिर एक कर्कश स्वर सुनायी देता है और तब भयंकर विस्फोट होता है। यदि ये गोले मनुष्य को केवल डराकर मारने के लिए बनाए गये हैं, तो फिर उनसे घायल न होने से भी क्या!"

जिनो ने मुझे बताया कि हमारे विरुद्ध, शत्रु की सेना में, इस समय क्रोट्स (क्रोशिया की एक जाति) और कुछ मोद्यार (हंगेरी की एक जाति) सैनिक भी थे। हमारे सैनिक अभी भी आक्रमण करने की अवस्था में थे; किन्तु यदि आस्ट्रियनों ने आक्रमण किया, तो घेरा बाँधने के लिए न तो हमारे पास नाम-मात्र को तार ही था और न पीछे हटने के लिये स्थान। पठार से आगे निकले हुए कुछ कम ऊँचे पहाड़ों की कतार चली आयी थी, उनमें आक्रमण के समय बचाव के लिए कई उपयुक्त स्थान थे; पर उन्हें बचाव के मोर्चों का रूप देने के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं की गयी थी।

"ख़ैर, बेन्सिज्ज़ा के विषय में आपने क्या सोच रखा था?" उसने पूछा।

"मेरा अनुमान था कि बेन्सिज्ज़ा पठार के समान पर्याप्त चौरस स्थान होगा। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि वह इस प्रकार कटा-फटा इलाका होगा।" मैंने उत्तर दिया।

"है तो ऊँचा पठार ही; किन्तु काफ़ी कटा-फटा और ऊबड़-खाबड़।"

हम लोग फिर उस तहखाने में लौट आये, जहाँ जिनो रहता था। मैंने कहा कि मेरे विचार से तो छोटे छोटे पर्वतों की एक लम्बी कतार के बजाय एक ऐसे पर्वत-पृष्ठ को, जो शीर्ष पर चौरस हो और जिसके बीच में कुछ गहराई हो, अपने अधिकार में रखना अधिक सरल तथा उपयोगी होगा। "मैदान की अपेक्षा पर्वत पर आक्रमण करना कुछ अधिक कठिन तो होगा नहीं।" मैंने कहा।

"यह तो उस पर्वत पर निर्भर है।" उसने उत्तर दिया—"सॉन जेब्राइले को ही देखिए।"

"ठीक है।" मैंने कहा—"सॉन जेब्राइले में तो हमारे सैनिकों को असली कठिनाई का सामना वस्तुतः पहाड़ की चोटी पर करना पड़ा था, जहाँ चौरस स्थान था। चोटी तक तो वे बड़ी सरलता से पहुँच गये थे।"

"ना, उतनी सरलता से नहीं।" वह बोला।

"हाँ, उतनी सरलता से नहीं।" मैंने कहा—"किन्तु उस पहाड़ की स्थिति ही भिन्न है। अन्य पहाड़ों की तुलना में उसमें एक विशेषता है। उसे, वास्तव

में, एक पहाड़ की अपेक्षा सुदृढ़ क़िला कहना अधिक उपयुक्त होगा। आस्ट्रियन लोग वर्षों से उसकी क़िलाबन्दी कर रहे थे।" क़िलाबंदी से मेरा अर्थ था कि युद्ध-काल में आस्ट्रियन सेना की ओर से वहाँ हमेशा कुछ न-कुछ होता रहता था।

सुरक्षा पक्ति के रूप में पर्वत-श्रेणियों पर अधिकार बनाए रखना कोई अर्थ नहीं रखता था; क्योकि हमारे ही विरुद्ध बड़ी सरलता से उनका उपयोग किया जा सकता था। युद्ध की दृष्टि से वही स्थान उपयुक्त होता है, जहाँ इधर-उधर हिलने-डुलने की गुंजाइश हो और एक पहाड़ इसके लिए अधिक उपयुक्त नहीं होता। इतना ही नहीं, पहाड़ पर से सैन्यदल हमेशा नीचे की ओर आवश्यकता से अधिक गोलियाँ चलाया करते हैं। इसके सिवा पहाड़ पर यदि अगल-बगल की सैन्य-टुकड़ियों को घुमाने की ज़रूरत पड़ गयी, तो दल का सबसे अच्छा सैनिक पहाड़ के सबसे ऊँचे शिखर पर ही रह जायेगा। "इसी से पहाड़ों में लड़ाई करने में मैं विश्वास नही करता।" मैंने जिनो से कहा—"मैंने इस सम्बन्ध में काफ़ी सोचा है—एक पक्ष ने एक पहाड़ पर क़ब्ज़ा कर लिया और दूसरे पक्ष ने दूसरे पहाड़ पर; किन्तु जब 'सचमुच' युद्ध आरम्भ होता है, तो दोनों दलों को पहाड़ छोड़कर नीचे ही उतरना पड़ता है।"

"यदि कोई देश पहाड़ों की गोद में ही बसा हो, तो वह क्या करेगा?" उसने पूछा।

"मैंने इस समस्या का हल अभी ढूँढ़ा नहीं है।" मैंने कहा। हम दोनों ही हँस पड़े। "किन्तु—" मैंने कहा—"पहले की लड़ाइयों में आस्ट्रियन लोग हमेशा वेरोना के आसपास के चौरस मैदान में ही बुरी तरह पराजित होते थे। शत्रु उन्हें पर्वतों से नीचे, मैदान में, उतरने देता था और वहीं उन्हें पराजित करता था।"

"ठीक है—" जिनो बोला—"किन्तु उन्हें इस तरह पराजित करनेवाले फ्रांसीसी लोग थे। जब आप किसी दूसरे के देश में जाकर लड़ते हैं, तो आप अपनी सैन्य-समस्याओ को आसानी से हल कर सकते हैं। सच तो यह है कि इस सम्बन्ध में आपके सामने कोई समस्या ही नहीं उठती; क्योंकि आप पूरी तैयारी कर के ही आक्रमण करने जाते हैं।"

"हाँ।" मैंने इसे स्वीकार करते हुए कहा—"और जब देश अपना होता है, तो हम इस सम्बन्ध में इतनी सावधानी नहीं बरत पाते–उतनी कुशलता और वैज्ञानिक ढंग से सैन्य-संचालन नहीं कर पाते।"

"किन्तु रूसियों ने नेपोलियन को जाल में फँसाने के लिए अपने देश का इसी प्रकार उपयोग किया था।"

"ठीक है; किन्तु उनके पास एक विशाल भूखंड था। यदि हम नेपोलियन को फँसाने के लिए इटली में पीछे की ओर हटने का प्रयत्न करें, तो अपने-आप को ब्रिण्डिसी में पायेंगे।"

"बड़ा भयानक स्थान है वह—" जिनो बोला—"क्या आप वहाँ कभी गये हैं?"

"ठहरने की दृष्टि से नहीं।"

"मैं एक देशभक्त हूँ।" जिनो बोला—"किन्तु मैं ब्रिण्डिसी या टारण्टो से कभी प्रेम नहीं कर सकता।"

"क्या तुम्हें वेन्सिज़्ज़ा से प्रेम है?" मैंने पूछा।

"यहाँ की धरती पवित्र है—"उसने कहा—"किन्तु मेरी इच्छा है कि यहाँ पर आलू की खेती और अधिक हो। आप जानते हैं, जब हम यहाँ आये थे, तो हमें यहाँ आस्ट्रियनों द्वारा लगाये गये आलुओं के खेत दिखायी दिये थे।"

"क्या सचमुच यहाँ खाद्यान्न की कमी रही है?"

"स्वयं मुझे तो यहाँ कभी पर्याप्त खाना नहीं मिला। पर मैं खाता भी बहुत हूँ और यहाँ पर कभी भूखा नहीं मरा। भोजनालय की स्थिति सामान्य है। मोर्चे पर के सैन्यदलों को काफ़ी अच्छा भोजन मिलता है; किन्तु उनके सहायतार्थ रखे गए व्यक्तियों को उतना अच्छा और पर्याप्त खाना नहीं मिलता। कहीं कुछ गड़बड़ी अवश्य है। भोजन तो पर्याप्त मिलना ही चाहिए।"

"ये बेईमान कहीं दूसरी जगह खाना बेच दिया करते हैं।"

"हाँ, यही बात है। मोर्चे पर के सैन्यदलों को तो वे जितना अधिक दे सकते हैं, उतना देते हैं; किन्तु पिछली पंक्तियों के लोगों को भोजन की बहुत कमी रहती है। आस्ट्रियनों के द्वारा उगाये गये सब आलू और वनों से प्राप्त अखरोट वे साफ़ कर चुके हैं। अधिकारियों को चाहिए कि वे पिछली पंक्ति-वालों को भी पर्याप्त भोजन दें। फिर हम लोग बहुत खानेवाले भी हैं। मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि खाद्यपदार्थों की यहाँ कोई कमी नहीं है। सैनिकों के लिए भोजन की कमी होना तो बहुत बुरी बात है। भोजन की कमी आपकी विचारधारा में क्या अंतर पैदा कर सकती है क्या आपने कभी इस पर भी ध्यान दिया है?"

"हाँ," मैंने उत्तर दिया—"उस स्थिति में युद्ध में विजय प्राप्त नहीं हो सकती। हाँ, हार अवश्य हो जाती है।"

"हार के विषय में हमें बातें नहीं करनी चाहिए। उस विषय में काफ़ी

बातचीत हो चुकी है। जो कुछ इस ग्रीष्म ऋतु में हुआ है, उसका कुछ-न-कुछ उद्देश्य तो होगा ही—वह व्यर्थ नहीं हो सकता।"

मैंने कुछ नहीं कहा। 'पवित्र', 'श्रेष्ठ' तथा बलिदान-जैसे शब्द या "व्यर्थ है"-जैसे कथन का प्रयोग मुझे सदा बड़ी उलझन में डाल देते थे। हम ऐसे शब्दों को कई बार सुन चुके थे। कभी-कभी बरसते पानी में, इतनी दूरपर खड़े होने के बावजूद कि कानों को कुछ सुनाई न पड़े—सिर्फ़ ज़ोर से चिल्लाने पर ही आवाज़ सुनायी दे–हमने ऐसे शब्दो को सुना था। कई दिनों से लगे हुए पुराने पोस्टरों पर विज्ञप्तियाँ चिपकाने वाले व्यक्तियों के द्वारा चिपकाये गये नए पोस्टरों में भी मैंने इन शब्दों को पढ़ा था। किन्तु आज तक मैंने पवित्र नाम की कोई वस्तु नहीं देखी थी। श्रेष्ठ समझी जाने वाली चीज़ों में मुझे कोई श्रेष्ठता नज़र नही आती थी और बलिदान तो बिलकुल वैसा ही हुआ करता था जैसा शिकागो के कसाईखानों में होता है। अंतर केवल इतना था कि यहाँ वधित मनुष्य के मांस का कोई अन्य उपयोग न करके उसे गाड़ दिया जाता था। बहुत-से शब्द ऐसे थे, जिन्हें सुनना भी कोई व्यक्ति पसंद नहीं कर सकता था और अंततः किन्ही नामों में यदि कोई प्रतिष्ठा की भावना थी भी, तो वे थे स्थानो के नाम। इसी प्रकार कुछ अंक और कुछ तिथियाँ भी ऐसी थीं, जिनमें प्रतिष्ठा निहित थी। यदि कोई कुछ कह सकता था, तो इन्हीं तिथियों, अंकों और स्थानों के नामों को लेकर। और, इनका आप कोई भी अर्थ निकलवा सकते थे। गाँवों के नाम, सड़कों की संख्या, नदियों के नाम अथवा सैन्यदलों की संख्या और तिथियों के प्रत्यक्ष नाम के निकट महिमा, सम्मान, साहस अथवा साधुत्व-जैसे अव्यावहारिक शब्द पूर्णतः महत्त्वहीन थे। जिनो देशभक्त था, इसलिए वह ऐसी बातें कह देता था, जिनपर कभी-कभी हम एकमत नहीं होते थे। किन्तु वह बड़ा भला व्यक्ति था और मैं उसके देश-प्रेम की भावना समझ सकता था। जन्म से ही वह स्थिर चित्तवाला व्यक्ति था। पेडुज़्ज़ी के साथ ही मोटर में बैठकर वह भी गोरीज़िया लौट गया।

उस दिन, दिन-भर तूफ़ान का ज़ोर रहा। उसी के साथ वर्षा हुई। चारों ओर पानी तथा कीचड़ भर गया और टूटे-फूटे घरों का प्लास्तर भूरा और गीला हो गया। शाम को जाकर वर्षा बन्द हुई। पड़ाव नम्बर दो से मैंने आसपास के पतझड़-ग्रस्त, रिक्त तथा भीगे हुए प्रदेश पर नजरें दौड़ायीं। पहाड़ों की चोटियों पर मेघ छाए हुए थे।रास्ते को ढँकने के लिए लगायी गयी घास की चटाइयाँ गीली हो रही थीं और उनसे पानी टपक रहा था। अस्त होने से पहले

पश्चिमगामी सूर्य पर्वत-पृष्ठ से पत्रविहीन वनों में अंतिम बार चमक रहा था। पर्वत-पृष्ठ के उस बन में बहुत-सी आस्ट्रियन तोपें थीं; किन्तु बहुत कम तोपें ही दागी जाती थीं।

अचानक ही मैंने मोर्चे की सैन्य-पंक्तियों के पास के खेत में बने एक नष्ट-भ्रष्ट घर के ऊपर आकाश में, बम-विस्फोट से उठने वाले धुएँ के अनेक वृत्ताकार छल्ले देखे। धुएँ के वे छल्ले बड़े मुलायम थे और उनके बीच में कुछ पीली और सफ़ेद-सी चमक थी। पहले वह चमक दिखाई दी, उसके बाद सुनाई दिया विस्फोट और फिर धुएँ का एक गोला टेढ़े-मेढ़े ढंग से ऊपर उठकर धीरे-धीरे क्षीणकाय होता हुआ वायु में विलीन होकर बहने लगा। टूटे-फूटे घरों की ईंटों और पत्थरो के अवशेषो में भी लोहे के टुकड़ों से भरे बहुत-से गोले पड़े थे। उन घरों से आगे सड़क पर भी, जहाँ हमारा पड़ाव था, बहुत-से गोले गिराए गए थे। किन्तु उस शाम शत्रु ने हमारे पड़ाव के क्षेत्र में बमबारी नहीं की। हमने दो मोटरें भरीं और भीगी हुई चटाइयों से ढँकी सड़क की ढाल पर चल पड़े। चटाइयों के बीच के छेदों से सूर्य की अंतिम किरणें झाँक रही थीं। पहाड़ियों के पीछे खुले हुए रास्ते पर हमारे पहुँचने से पहले ही सूर्यास्त हो गया। हम उस खुले हुए रास्ते पर आगे बढ़ते गए और थोड़ी दूर बाद सड़क ज्योंही एक कोने में मुड़कर चटाइयों से बनी एक मेहराबदार चौकोर सुरङ्ग में घुसी, त्योंही वर्षा पुनः प्रारम्भ हो गई।

रात में हवा बड़े ज़ोरों से बहने लगी और सबेरे तीन बजे, मूसलाधार वर्षा के बीच, बमबारी शुरू हो गई। पहाड़ी चरागाहों और वनखंडों को पार करते हुए क्रोशियन सैनिकों ने हमारी सेनाओं की (सबसे अगली) पंक्तिपर आक्रमण कर दिया। हमारे सैनिक वर्षा और अंधकार में ही उनसे जूझ पड़े। दूसरी पंक्ति के भयभीत सैनिकों के प्रत्याक्रमण ने शत्रु को पीछे हटा दिया। अगली पंक्ति पर सर्वत्र बड़ी भीषण बमबारी हुई। उस के साथ ही वर्षा में, बहुत-से रॉकेट छोड़े गये। मशीनगनों और राइफलों ने भी खूब गोलियाँ उगलीं। शत्रु-दल के सैनिक पीछे हट गये और फिर लौट कर उस क्षेत्र में नहीं आये। मोर्चे पर शान्ति छा गई; किन्तु वहाँ से काफ़ी दूर, उत्तर की ओर, वायु के तीव्र झोकों तथा वर्षा के बीच हमें भयानक बमबारी की आवाज़ सुनाई दी।

घायलों का पड़ाव पर आना आरम्भ हो गया। कुछ घायल टिकठियों पर लाए जा रहे थे—कुछ पैदल आ रहे थे और कुछ लोगों को मैदानों के उस ओर से आए हुए सैनिक अपनी पीठ पर लाद कर ला रहे थे। वे सब सिर से-पैर तक

पानी में तर-बतर हो रहे थे और बड़े भयभीत थे। उपचार-केन्द्र के तहखाने के भीतर से टिकठियों पर लादकर बाहर लाये गये घायल सैनिकों से हम लोगों ने दो मोटरें भर लीं। ज्योंही मैंने दूसरी मोटर का द्वार बंद कर के उसकी कुण्डी चढ़ाई, त्योंही मुझे प्रतीत हुआ कि मेरे चेहरे पर छाई वर्षा की बूंदें बर्फ़ में बदल गयी हैं। वर्षा के साथ ही बर्फ़ के भारी टुकड़े भी शीघ्रता से गिरने आरम्भ हो गये थे।

सूर्योदय हुआ। तूफ़ान अभी भी पूरे ज़ोर पर था; किन्तु बर्फ़ गिरना बंद हो गया था। भूमि पर गिरने के साथ ही बर्फ़ पिघलने लगा था और वर्षा फिर शुरू हो गयी थी। सूर्योदय के कुछ समय बाद ही शत्रुओं का दूसरा आक्रमण हुआ; किन्तु वह पूर्णतया असफल रहा। हमें तो आशा थी कि दिन-भर आक्रमण होते रहेंगे; किन्तु इसके विपरीत, सूर्य के पश्चिम में ढलने तक कोई हमला नहीं हुआ। और तब, दक्षिण की ओर, वनों से आच्छादित लम्बे पर्वत-पृष्ठ पर, जिस-की ओर आस्ट्रियनों ने अपनी तोपों का मुँह घुमा दिया था, बमबारी आरम्भ हो गई। बमबारी की आशंका तो हमें अपने क्षेत्र में भी थी; किन्तु वहाँ बमबारी हुई नहीं। धीरे-धीरे अंधेरा होता जा रहा था। गाँव के पीछे की ओर के मैदान से तोपें दागी जा रही थीं और दूर दिशा की ओर जाते हुए गोलों का स्वर उन्हें अपने से दूर पा हमें संतोष दे रहा था।

तभी हमें समाचार मिला कि दक्षिण का आक्रमण बेकार हो गया। उस रात शत्रु सैन्यदल ने पुनः आक्रमण नहीं किया; किन्तु हमें खबर मिल गयी कि उत्तर की ओर की हमारी पंक्तियों को तितर-बितर कर वे आगे बढ़ आए हैं। रात में ही आदेश मिला कि हमें पीछे हटने की तैयारी कर लेनी चाहिए। पड़ाव पर के एक कैप्टन द्वारा मुझे यह सूचना प्राप्त हुई। उसे सैन्यदल से ही यह समाचार मिला था। पर थोड़ी देर बाद ही वह टेलिफोन पर बातें करके लौटा, तो मालूम हुआ कि पीछे हटने की बात कोरी गप्प थी। सैन्य-दल को असल में यह आदेश मिला था कि चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए; किन्तु उन्हें बेन्सिज़्ज़ा पर अपना अधिकार बनाए रखना है। मैंने कैप्टन से उत्तर में, शत्रुओं द्वारा हमारी सैन्यपंक्तियों को भेदकर आगे बढ़ने के समाचार के सम्बन्ध में पूछा। उसने बताया कि सैन्यदल में ही उसने सुना था कि आस्ट्रियन सैन्यदल, हमारी सत्ताईसवीं सैन्यपंक्ति को तोड़कर केपोरेट्टो की ओर कुछ आगे बढ़ आया है और उत्तर की ओर दिन-भर भीषण युद्ध होता रहा है।

"यदि उन बेवकूफों ने शत्रु को बढ़ आने दिया, तो फिर हमारी मौत है।" उसने कहा।

"आक्रमणकारी जर्मन हैं।" एक मेडिकल अफ़सर ने कहा। 'जर्मन' एक ऐसा शब्द था, जिससे भय-सा लगता था। हम जर्मनों से कोई सरोकार नहीं रखना चाहते थे।

"जर्मन सेनाओं की यहाँ पन्द्रह टुकड़ियाँ हैं।" मेडिकल अफ़सर बोला— "वे हमारी सुरक्षा-पंक्तियों को तोड़ चुके हैं और अब हम सब बुरी तरह मारे जायेंगे।"

"सैन्यदल में इस बात की ज़ोरदार चर्चा है कि यह मोर्चा किसी भी तरह हमें बनाए रखना है। ऐसी ख़बर है कि सुरक्षापंक्ति अभी पूरी तरह नहीं टूटी है। हम मॉन्टे मेज़्ज़िओर से लेकर पहाड़ों के उस ओर तक का मोर्चा अपने हाथ में बनाए रखने में कामयाब हो सकते हैं।"

"ये सब ख़बरें मिलती कहाँ से हैं?"

"सैन्यदल से।"

"पीछे हटने की बात भी तो सैन्य-दल से ही मालूम हुई थी?"

"हम यों तो सैन्यदल के अन्तर्गत कार्य करते हैं—" मैंने कहा— "किन्तु यहाँ मैं आपके अन्तर्गत कार्य कर रहा हूँ। फिर यह स्वाभाविक ही है कि जब आप मुझे यहाँ से चले जाने के लिए कहेंगे, मैं चला जाऊँगा। किन्तु सुनी-सुनाई बातो पर कार्य करने की अपेक्षा यदि आप सीधे अफ़सरों से ही आदेश प्राप्त करें, तो मेरी समझसे यह ज्यादा अच्छा होगा।"

"आदेश यही है कि हमें यहीं ठहरना है। आप घायलों को यहाँ से उस केन्द्र पर ले जायें, जहाँ से उन्हें अलग-अलग अस्पतालों में भेजा जाता है।"

"कभी-कभी हमें उन्हें ऐसे केन्द्रों से मोर्चे के अस्पतालों में भी ले जाना पड़ता है—" मैं बोला—"मैंने सेना का पीछे हटना आज तक नहीं देखा है। कृपया मुझे बताइए कि पीछे हटने की स्थिति में सब घायलों को स्थानान्तरित कैसे किया जाता है?"

"सभी को स्थानान्तरित नहीं किया जाता। जितने घायल ले जाये जा सकते हैं, उतने साथ ले लिये जाते हैं और बाकी वहीं छोड़ दिए जाते हैं।"

"मोटरों में मुझे क्या भरकर ले जाना होगा?"

"अस्पताल की चीज़ें।"

"अच्छी बात है।" मैं बोला।

दूसरी रात हमारा पीछे हटना आरम्भ हो गया। हमने सुना कि उत्तर की ओर जर्मनों और आस्ट्रियनों ने हमारी सुरक्षा पंक्तियों को छिन्न-भिन्न कर दिया था। वे घाटियों से नीचे, सिविडेल और यूडाइन की ओर बढ़ रहे थे। पीछे हटने का हमारा काम व्यवस्थापूर्ण था; किन्तु एक अजीब-सी उदासी छायी थी। भयावह रात्रि में, वर्षा के बीच, भीड़ से भरी सड़क पर, मंद गति से पानी में भीगते हुए सैन्यदलों को हम पीछे छोड़ते गये। तोपें, बन्दूकें और गाड़ियों को खींचते हुए घोड़े, खच्चर और ट्रक सभी मोर्चे से दूर चली जा रही थीं। जितनी असुविधा आगे बढ़ने में होती है, उतनी ही इस समय भी थी।

उस रात हमने मोर्चे के अस्पतालों को खाली करने में सेना की सहायता की। ये अस्पताल पठार के उन गॉवों में स्थापित किए गये थे, जहॉ युद्ध के कारण कम-से-कम बरबादी हुई थी। युद्ध-क्षेत्र के इन अस्पतालों से घायलों को हटाकर हम उन्हें नदी-तट पर स्थित प्लावा नामक स्थान में ले गये। दूसरे दिन, दिन-भर बरसते हुए पानी में हम अस्पतालों और प्लावा के उस उपचार-केन्द्र के रोगियों को स्थानान्तरित करने में लगे रहे। वर्षा लगातार होती रही और अक्टूबर मास की उस वर्षा में, बेन्सिज्ज़ा पर तैनात सेना, पठार से नीचे उतर कर, नदी पार करने लगी। उसने नदी के उस क्षेत्र को पार कर लिया, जहॉ वसन्त में हमारी महान विजय आरम्भ हुई थी। दूसरे दिन दोपहर को हम गोरीज़िया पहुँचे। उस समय वर्षा थम गयी थी। सारा शहर लगभग खाली पड़ा था। ज्योंही हम रास्ते पर आगे बढ़े, हमने देखा कि सैनिकों के चकले की लड़कियॉ एक मोटर में लादी जा रही थीं। कुल सात लड़कियाँ थीं। उनके सिर पर हैट थे। वे कोट पहने हुए थीं और उनके हाथ में सूटकेस थे। उनमें से दो लड़कियॉ रो रही थीं। शेष लड़कियों में से एक हमें देखकर मुसकराई और हमारी ओर जीभ निकाल कर उसे ऊपर-नीचे हिलाते हुए हमें चिढ़ाने लगी। उस लड़की के होठ मोटे और भरे हुए थे और ऑखें काली थीं।

मैंने मोटर रोक दी और उतर कर चकले की व्यवस्थापिका से मिला। "अफ़सरों के चकले की लड़कियाँ तो आज बड़े सवेरे ही चली गयीं—" उसने बताया।

"ये कहाँ जा रही हैं?" मैंने पूछा।

"कोनेग्लिआनो।" वह बोली।

उनकी मोटर चल पड़ी। मोटे होंठों वाली लड़की ने फिर हमारी ओर जीभ

निकाली। व्यवस्थापिका ने हाथ हिलाया। वे दो लड़कियाँ—जो रो रही थीं, रोती रहीं। दूसरी लड़कियाँ बड़ी दिलचस्पी के साथ शहर की ओर देख रही थीं। मैं अपनी मोटर में बैठ गया।

"हम इन्हीं के साथ चलें?" बोनेलो ने कहा—"हमारी यात्रा बड़ी सुन्दर रहेगी।"

"हमारी यात्रा तो यों भी सुन्दर रहेगी।" मैंने कहा।

"जी हाँ, दुनिया-भर की तकलीफ़ों का सामना करना पड़ेगा हमें।"

"मेरा मतलब भी यही था।" मैं बोला और हम सड़क पर मोटर दौड़ाते हुए बंगले के निकट पहुँच गये।

"मेरी बड़ी इच्छा है कि जब इन लड़कियों के पास वहाँ के डेढ़े-कट्टे सैनिक पहुँचें, तब मै वहाँ मौजूद रहूँ।"

"क्या आपको यह विश्वास है कि वे उनके पास जायेंगे ही?"

"इसमें कोई शक नहीं। द्वितीय सैन्यदल का प्रत्येक सैनिक उस व्यवस्थापिका को पहचानता है।"

हम अब बंगले की सीमा में प्रवेश कर चुके थे।

"वे लोग उसे 'मदर-सुपीरियर' कहकर पुकारते हैं।" बोनेलो ने कहा—"लड़कियाँ नयी हैं; किन्तु उस व्यवस्थापिका को सब जानते हैं। ये लड़कियाँ तो हमारे पीछे हटने के कुछ ही समय पूर्व यहाँ लाई गई होंगीं।"

"उनके भी दिन आयेंगे।"

"हाँ, उनका ज़माना भी आयेगा। पर मैं बिना कुछ खर्च किए ही एक बार उनके साथ मौज़ उड़ाना चाहूँगा। खैर, उस चकले में पैसे तो बहुत लिए जाते हैं। यह सरकार भी हमारे साथ बड़ा निर्दयतापूर्ण व्यवहार करती है।"

"मोटर बाहर निकाल लो और कारीगरों से कहो कि वे उसके पुर्जों की अच्छी तरह जाँच कर लें।" मैंने कहा—"तेल बदल दो और गति-नियंत्रक यन्त्र की देखभाल कर लो। मोटर में पानी भी भर दो और तब थोड़ी देर के लिए सो जाओ।"

"जी, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

बंगला खाली पड़ा था। रिनाल्डी अस्पताल के सामान के साथ जा चुका था। मेजर, कर्मचारियों की मोटर में अस्पताल के कर्मचारियों को साथ लेकर चला गया था। मेरे लिए खिड़की में एक सूचना लिखकर छोड़ दी गई थी। उसमें लिखा था कि बरामदे में इकट्ठी की गई चीज़ों को मोटरों में लादकर मैं

पोर्डेनन रवाना हो जाऊँ । कारीगर पहले ही चले गए थे। मैं पुनः गैरेज में पहुँचा। जब मैं वहाँ था, तभी दो मोटरें और आ गयीं। उनके चालक नीचे उतरे। वर्षा फिर आरम्भ हो गयी थी।

"मुझे बड़ी नींद आ रही है। इतने ज़ोरों की नींद कि मैं प्लावा से यहाँ आते समय रास्ते में तीन बार सो चुका हूँ।" पिआनी ने कहा।

"अब हमें क्या करना है, साहब?"

"देखो, तेल बदल दो। पुर्ज़ों में ग्रीज़ लगा दो। मोटरों में पानी भर लो और तब उन्हें सामने की ओर ले जाकर, वहाँ जो कूड़ा-करकट लोग छोड़ गये हैं, उसे लाद लो।"

"क्या उसके बाद हम लोग यहाँ से चल देंगे?"

"नहीं, यात्रा आरम्भ करने से पहले हम लोग तीन घण्टे तक सोयेंगे।"

"भगवान् भला करे। सोने के नाम पर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।" बोनेलो ने कहा—"अन्यथा मैं मोटर चलाते समय अवश्य सो जाता।"

"तुम्हारी मोटर कैसी है, आयूमो।" मैंने पूछा।

"बिलकुल ठीक है, साहब।"

"मेरे लिए मोटर साफ़ करने के समय के कपड़े ले आओ। तेल आदि देने में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

"नहीं, नहीं, आप ऐसा मत कीजिये, लेफ्टिनेण्ट साहब!" आयूमो ने कहा—"कुछ ऐसा ज्यादा काम तो है नहीं। आप जाकर अपना सामान बाँधिए।"

"मेरा सब सामान बँध चुका है।" मैं बोला—"मैं जाकर उन वस्तुओं को बाहर निकालता हूँ, जो वे लोग हमारे लिए छोड़ गए हैं। ज्योंही मोटरें तैयार हो जाएँ, उन्हें उसी ओर ले आना।"

मोटरें घुमाकर बंगले के सामने की ओर ले आयी गयीं। बरामदे में अस्पताल की सामग्री का जो ढेर पड़ा था, उसे हमने मोटरों में लादना प्रारम्भ किया। जब सब सामान भर दिया गया, तो बरसते हुए पानी में, वृक्षों के नीचे, बंगले की सड़क पर, तीनों मोटरें खड़ी कर दी गयीं। हम लोग बंगले के भीतर पहुँचे।

"रसोईघर में जाकर आग जला लो और अपने कपड़े सुखा लो।" मैंने कहा।

"मुझे सूखे कपड़ों की कोई चिन्ता नहीं है।" पिआनी बोला—"मैं तो सोना चाहता हूँ।"

"देखो, मैं तो मेजर के पलंग पर सोने जा रहा हूँ।" बोनेलो ने कहा।

"मुझे इसकी भी चिन्ता नहीं है कि मैं कहाँ सोनेवाला हूँ!" पिआनी ने कहा।

"लो, इस कमरे में दो बिस्तर पड़े हुए हैं।" मैंने दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

"मुझे तो आज तक कभी मालूम ही नहीं हो पाया कि इस कमरे में क्या था।" बोनेलो बोला।

"यह पहले उस मछली-जैसे मुँहवाले व्यक्ति का कमरा था।" पिआनी ने कहा।

"तुम दोनो वहीं सो जाओ।" मैं बोला—"मैं तुम्हें जगा दूँगा।"

"यदि हम बहुत देर तक सोते रह गये, तो फिर आस्ट्रियन लोग ही हमें आकर जगायेंगे, लेफ्टिनेंट साहब!" बोनेलो ने कहा।

"मैं देर तक नहीं सोऊँगा।" मैंने कहा—"आयूमो कहाँ है?"

"वह रसोईघर की ओर गया है।"

"अच्छा, अब सो जाओ।" मै बोला।

"मुझे तो नींद आ जाएगी।" पिआनी ने कहा—"मैं दिन-भर बैठे-बैठे ऊँघता रहा हूँ। सारे दिन मेरी आँखें झपकती रही हैं और मेरा सिर नीद के बोझ से झुकता रहा है।"

"अपने जूते निकाल लो।" बोनेलो ने कहा—"याद रखो, उस मछली-सी सूरतवाले का बिस्तर है, यह।"

"मुझे उस मनहूस सूरत की परवाह नहीं।" पिआनी बिस्तर पर लेट गया। कीचड़-भरे जूते पहने ही उसने बिस्तर पर अपने पैर फैला दिये। सिर उसने अपने हाथों पर रख लिया। मैं रसोईघर में पहुँचा। आयूमो ने अँगीठी में आग जलाकर उसके ऊपर पानी से भरी पतीली चढ़ा दी थी।

"मैंने सोचा कि मैं कुछ मेकरोनी (एक किस्म का खाद्य पदार्थ) ही चढ़ा दूँ।" उसने कहा—"जब हम सोकर उठेंगे, तब हमें भूख लग आयेगी।"

"क्या तुम्हें नींद नही आ रही है, बारटोलोमिओ?"

"कोई खास नहीं। जब पानी उबलने लगेगा, तो मैं उसे यों ही छोड़ दूँगा। आग धीरे-धीरे कम होकर बुझ जाएगी।"

"तुम थोड़ी-सी नींद ले लो, तो ठीक रहेगा।" मैंने कहा—"और तब हम थोड़ा पनीर और बन्दर का मांस खा लेंगे।"

"यह तो बड़ा अच्छा रहेगा।" उसने कहा—"उन दोनों कारीगरों के लिए कोई गरम वस्तु ही ठीक रहेगी। जाइये, आप सो जाइए, साहब! मेजर के कमरे में एक बिस्तर पड़ा है, आप वहीं सो जाइये।"

"नहीं, मैं ऊपर अपने पुराने कमरे में जा रहा हूँ। क्या तुम कुछ पीना पसंद करोगे, बारटोलोमिओ?"

"अभी नहीं, साहब। जब हम यहाँ से चलने लगेंगे, तब। शराब पीने से इस समय मुझे कोई विशेष लाभ भी नहीं होगा।"

"यदि तुम तीन घण्टे बाद जाग जाओ और मैं तुम्हें उठाने न आऊँ, तो तुम आकर मुझे जगा देना। जगा दोगे न?"

"पर मेरे पास कोई घड़ी नहीं है, लेफ्टिनेंट साहब।"

"मेजर के कमरे में दीवार पर एक घड़ी है।"

"अच्छी बात है। तब जगा दूँगा।"

मैं भोजन करने के कमरे में गया। वहाँ से बरामदा पार करता हुआ, मैं संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ता गया और उस कमरे में घुसा, जहाँ मैं रिनाल्डी के साथ रहता था। बाहर वर्षा हो रही थी। खिड़की में खड़े होकर मैं बाहर झाँकने लगा। अंधेरा-सा छा गया था। तीनों मोटरें वृक्षों के नीचे एक कतार में खड़ी थीं। वर्षा में नहाये हुए वृक्षों से पानी टपक रहा था। वातावरण में ठंड थी। पानी की बूँदें वृक्षों की शाखाओं में झूल-सी रही थीं। मैं रिनाल्डी के बिस्तर पर पहुँचा और उस पर लेट कर नींद लाने का प्रयास करने लगा।

यात्रा आरम्भ करने के पहले रसोईघर में जाकर हमने कुछ खाया-पिया। एक बर्तन में प्याज और डब्बे में बंद मांस के टुकड़ों को 'मेकरोनी' के साथ मिलाकर एक नयी चीज़ तैयार कर ली गयी थी। बंगले के तहखाने में छोड़ दी गयी शराब की दो बोतलें भी हम पी गये। बाहर काफ़ी अंधेरा हो चुका था। वर्षा अभी भी हो रही थी। पिआनी खाने की मेज़ के निकट बैठे-बैठे ऊँघ रहा था।

"आगे बढ़ने की अपेक्षा पीछे हटना ही मैं अच्छा समझता हूँ।" बोनेलो ने कहा—"पीछे हटते समय हमें बारबेरा (शराब) तो पीने को मिलती है।"

"बारबेरा तो हम अभी पी रहे हैं। हो सकता है, कल हमें बरसात का पानी पीना पड़े।" आयमो बोला।

"हमारा कल का सूर्य यूडाइन में उगेगा। तब हम शैम्पेन (शराब) पियेंगे। यूडाइन वह स्थान है, जहाँ आलसी लोग रहते हैं। पिआनी, उठो भाई! कल हमें यूडाइन में शैम्पेन पीने का सौभाग्य प्राप्त होनेवाला है!"

"मैं सोया नहीं हूँ, जगा हूँ।" पिआनी ने कहा। उसने अपनी रकाबी में मेकरोनी और मांस डाल लिया—"क्या तुम कहीं से टमाटर की चटनी नहीं पा सके, बारटो?"

"ना, टमाटर की चटनी थी ही नहीं।" आयूमो ने उत्तर दिया।

"यूडाइन में हम शैम्पेन पियेंगे—" बोनेलो ने कहा और उसने स्वच्छ लाल रंग की बारबेरा शराब से अपना गिलास भर लिया।

"क्या आपने पूरा खाना खा लिया साहब?" आयूमो ने पूछा।

"हाँ, मैंने काफ़ी खा लिया है। मुझे ज़रा वह बोतल उठा दो तो, बारटोलोमिओ!"

"मेरे पास मोटर में पीने के लिए एक बोतल अलग से रखी है।" आयूमो ने कहा।

"तुमने नींद ली या नहीं?"

"मुझे अधिक सोने की ज़रूरत नही पड़ती। थोड़ी नींद मैं ले चुका हूँ।"

"कल हम लोग राजा के बिस्तर पर सोयेंगे।" बोनेलो बोला। उसे यह सब बहुत अच्छा लग रहा था।

"मैं तो रानी के साथ सोऊँगा।" बोनेलो ने कहा और उसने यह जानने के लिए मेरी ओर देखा कि उसका वह मजाक मुझे कैसा लगा।

"चुप रहो।" मैंने उसे डाँटा—"तुम ज़रा-सी शराब में ही बहकने लगते हो।" बाहर अब ज़ोरों की वर्षा हो रही थी। मैंने अपनी घड़ी की ओर देखा—साढ़े नौ बज चुके थे।

"चलने का समय हो गया है।" कहते हुए मैं खड़ा हो गया।

"आप किसकी मोटर में चलेंगे, साहब?" बोनेलो ने पूछा।

"मैं आयूमो के साथ बैठूँगा। उसके बाद तुम्हारी मोटर रहेगी और तुम्हारे पीछे पिआनी की। हम कोर्मन्स जाने वाले रास्ते पर चलेंगे।"

"मुझे डर है कि मैं रास्ते में ही सो जाऊँगा।" पिआनी ने कहा।

"अच्छी बात है। तब मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। हमारे पीछे बोनेलो रहेगा और उसके पीछे आयूमो।"

"हाँ, यही सबसे अच्छा रहेगा।" पिआनी बोला—"क्योंकि मैं इतना ऊँघने वाला जो ठहरा।"

"मैं मोटर चलाऊँगा, इसी बीच तुम थोड़ी देर सो रहना।"

"नहीं, जब तक मुझे यह मालूम रहता है कि यदि मैं सो जाऊँगा, तो मुझे कोई जगा देगा, तब तक मैं अच्छी तरह मोटर चला सकता हूँ।"

"तो, मैं तुम्हें जगा दिया करूँगा। बत्तियाँ बुझा दो, बारटो।"

"जलने भी दीजिए।" बोनेलो ने कहा—"अब इस स्थान का हमारे लिए कोई उपयोग नहीं है।"

"मेरे कमरे में ताला लगा हुआ मेरा एक बक्स पड़ा है।" मैं बोला—"क्या तुम उसे नीचे लाने में मेरी सहायता करोगे, पिआनी?"

"हम लोग उसे उठा लायेंगे।" पिआनी बोला—"चलो आल्डो, हम उसे ले आयें।" वह बोनेलो के साथ बरामदे की ओर चला गया। मुझे उनके सीढ़ियाँ चढ़ने की आवाज़ सुनाई दी।

"यह बड़ी अच्छी जगह थी--" बारटोलोमिओ आय्मो ने कहा। उसने अपने सामान के थैले में शराब की दो बोतलें और पनीर का आधा टुकड़ा डाल लिया—"इसके समान हमें फिर कोई जगह नहीं मिलनेवाली है। इस तरह पीछे हटकर हम लोग कहाँ जायेंगे, लेफ्टिनेण्ट साहब?"

"सुनने में आया है कि सैनिक तो टॅग्लिआमेण्टो से आगे जायेंगे और अस्पताल और उससे सम्बन्धित टुकड़ी पोर्डेनन में रहेगी।"

"पोर्डेनन से यह शहर कहीं अच्छा है।"

"पोर्डेनन के सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं जानता हूँ।" मैंने कहा—"मैं तो बस अभी हाल ही वहाँ से गुज़रा था।"

"वह कोई ख़ास अच्छी जगह नही है।" आय्मो ने कहा।

.२८.

हमारी मोटरें शहर को पार करती हुई आगे बढ़ने लगीं। वर्षा की तेज़ बौछारों के बीच सारा शहर सूना था और सर्वत्र अंधेरा छाया था। यदि कहीं कोई हलचल थी, तो वह बड़ी सड़क पर आगे बढ़नेवाली सैन्य-पंक्तियों और तोपें ढोनेवाली गाड़ियों की थी। बहुत-सी ट्रकें तथा मोटरें दूसरी छोटी सड़कों पर से चली जा रही थीं। ये सड़कें आगे चलकर बड़ी सड़क से मिल गयी थीं। जब हम चमड़ा पकाने के कारख़ानो को पार करते हुए बड़ी सड़क पर आये, तो उस पर सैन्यदल, ट्रकें, घोड़ा-गाड़ियाँ और तोपें ढोनेवाली गाड़ियाँ

कतार में धीरे-धीरे, रेंगती हुई, आगे बढ़ रही थीं। हम भी उस वर्षा में मन्द, किन्तु अनवरत गति से आगे खिसकते गये। हमारी मोटर का 'रेडिएटर-कैप' आगे जानेवाली ट्रक के पीछे के हिस्से को लगभग छू रहा था। ट्रक पर बहुत ज्यादा सामान लदा था और उसे तिरपाल से ढँक दिया गया था, जो पानी से तरबतर हो चुका था। अचानक ट्रक रुक गई और पीछे-पीछे चलने-वाली हमारी लम्बी कतार भी रुक गयी। कुछ क्षणों बाद ट्रक फिर चल पड़ी। हम थोड़ा और आगे बढ़े और फिर रुक गये। मैं मोटर से उतर गया। दूसरी मोटरों तथा गाड़ियों के बीच से निकल कर घोड़ों की भीगी हुई गर्दनों के नीचे से राह बनाते हुए मैं आगे बढ़ता गया। पर रास्ता काफ़ी दूर तक रुका हुआ था। अतः मैंने सड़क छोड़ दी और खाई पर पड़े हुए लकड़ी के तख्ते पर होकर उसे पार करता हुआ मैदान में उतर गया। बरसते पानी में सड़क पर वृक्षों के साये में रुके सैन्य-दल को दूर ही से देखता हुआ, मैदान-ही-मैदान मैं उससे आगे निकल गया। लगभग एक मील तक मैं इसी प्रकार चला गया। यद्यपि इन रुकी हुई सवारियों से आगे, दूसरी ओर से मैं कुछ सैन्य-टुकड़ियों को आगे बढ़ते हुए अवश्य देख रहा था; फिर भी मोटरों और ट्रकों की वह लम्बी कतार एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सकी थी। मैं पुनः अपनी मोटरों के पास लौट आया। मेरी समझ से यह रुकावट यूडाइन तक इसी प्रकार चलने वाली थी। पिआनी स्टीयरिंग व्हील पर सिर रखकर सो गया था। मैं मोटर में चढ़कर उसके पास बैठ गया और स्वयं भी सो गया। कई घंटों के बाद अचानक मैंने आगे-वाली ट्रक रवाना होने की आवाज़ सुनी। मैंने पिआनी को जगाया और हमारी मोटर आगे बढ़ी। हम कुछ देर तक चलते और फिर रुक जाते। रुकने और धीरे-धीरे आगे बढ़ने का हमारा यह क्रम इसी प्रकार चलता रहा। वर्षा अभी भी हो रही थी।

सैन्यदल की वह लम्बी कतार रात में फिर रुक गयी और रात-भर आगे नहीं बढ़ी। मैं नीचे उतरा और आयुमो तथा बोनेलो को देखने के लिए पीछे पहुँचा। बोनेलो के साथ मोटर में इंजीनियर-दल के दो सार्जेंट बैठे हुए थे। ज्योंही मैं वहाँ पहुँचा, वे तनकर सीधे बैठ गये।

"किसी पुल को सुधारने के लिए ये रुक गए थे।" बोनेलो ने कहा—"इन्हें अपनी टुकड़ी का पता नहीं चल रहा है, इसलिए मैंने इन्हें मोटर में बैठा लिया है।"

"यदि लेफ्टिनेण्ट महोदय की अनुमति हो, तो।"

"हाँ, हाँ, कोई बात नहीं।" मैंने कहा।

"हमारे लेफ्टिनेण्ट साहब अमरीकी हैं।" बोनेलो ने कहा—"वे किसी भी व्यक्ति को मोटर में बैठा लेते हैं।"

एक सार्जेंट मुसकराया। दूसरे सार्जेंट ने बोनेलो से पूछा कि क्या मैं उत्तर या दक्षिण अमेरिका में बसा हुआ इटालियन हूँ?

"नहीं, वे इटालियन नहीं हैं। वे उत्तर अमेरिका में रहनेवाले अंग्रेज़ हैं।"

दोनो सार्जेंट बड़ी शिष्टता से बातें कर रहे थे; किन्तु बोनेलो के इस कथन पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ। मैं उन्हें वहीं छोड़कर आयमो के पास पहुँचा। वह अपनी सीट के कोने में दो लड़कियों के साथ, पीछे की ओर टिककर बैठा धूम्रपान कर रहा था।

"बारटो, बारटो!" मैंने उसे आवाज़ दी। वह हँस पड़ा।

"इनसे बातें कीजिये, लेफ्टिनेंट साहब।" उसने कहा—"मैं इनकी बोली ही नहीं समझ पा रहा हूँ। ए!" उसने लड़की की जाँघ पर अपना हाथ रखते हुए उसे दोस्ती की भावना से दबाया। लड़की ने दुशाला कसकर अपने चारों ओर लपेट लिया और अपनी जाँघ पर से उसका हाथ हटा दिया। "ए!" वह बोला—"इन्हें अपना नाम बताओ और यह भी बताओ कि तुम यहाँ क्या करती हो।"

लड़की ने बड़े क्रोध से मेरी ओर देखा। दूसरी लड़की अपनी निगाहें झुकाए बैठी रही। जिस लड़की ने मेरी ओर देखा था, उसने किसी अपरिचित भाषा में कुछ कहा, जिसका एक शब्द भी मेरी समझ में नहीं आया। वह लड़की मोटी और काली थी तथा उसकी उम्र सोलह वर्ष के आसपास थी।

"बहन है तुम्हारी?" मैंने दूसरी लड़की की ओर इशारा करते हुए पूछा।

उसने अपना सिर हिलाया और मुस्करा दी।

"अच्छी बात है।" कहते हुए मैंने उसका घुटना थपथपाया और मुझे लगा कि मेरे स्पर्श करते ही वह तनकर बैठ गई और मेरी ओर कठोरतापूर्वक देखने लगी। उसकी बहन ने आँख उठाकर ऊपर देखा भी नहीं। वह उससे एक वर्ष छोटी दिखाई दे रही थी। आयमो ने बड़ी लड़की की जाँघ पर अपना हाथ रखा; पर लड़की ने उसे झटक दिया। आयमो हँस पड़ा।

"अच्छा आदमी है।" उसने अपनी ओर संकेत करते हुए कहा।

"अच्छा आदमी है।" उसने इस बार मेरी ओर संकेत किया—"चिन्ता मत करो।"

लड़की ने क्रोधावेश में उसे देखा। उन दोनों लड़कियों की जोड़ी दो बनैले पक्षियों-सी थी।

"यह जब मुझे बिलकुल नहीं चाहती तो मेरे साथ मोटर में चल ही क्यों रही है?" आयूमो ने जैसे स्वयं से प्रश्न किया—"जिस क्षण मैंने इन्हें चढ़ने का संकेत किया, ये सीधे मोटर में आकर बैठ गयीं।" वह लड़की की ओर मुड़ा—"चिन्ता मत करो।" उसने कहा। एक गन्दे शब्द का प्रयोग करते हुए वह बोला—"—की कोई आशंका नहीं है।—के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं है।" वह उस शब्द को समझ गई और बस, सब कुछ समझ गई। भयभीत दृष्टि से उसने उसकी ओर देखा और अपने दुशाले को अपने शरीर पर कसकर लपेट लिया।

"मोटर बिलकुल भरी हुई है।" आयूमो ने कहा—"—की कोई आशंका नहीं। —के लिए कोई स्थान नहीं।" जितनी बार उसने उस गन्दे शब्द का प्रयोग किया, लड़की अधिक कठोर होती गयी। अन्त में, सीधे तनकर बैठते हुए उसने एक बार उसकी ओर देखा और रो पड़ी। मैंने उसके होठों को बड़बड़ाते हुए देखा। उसके फूले हुए मोटे गालों पर से आँसू लुढकने लगे। उसकी बहन ने बिना ऊपर सिर उठाये ही उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। वे दोनों एक दूसरे से सटकर बैठ गईं। बड़ी लड़की, जो बड़ी क्रुद्ध हो उठी थी, अब सिसकियाँ भरने लगी।

"शायद मैंने उसे डरा दिया है।" आयूमो बोला—"पर उसे डराने का मेरा बिलकुल उद्देश्य नहीं था।"

बारटोलोमिओ अपना सैनिकों का थैला उठा लाया। उसने उसमें रखा हुआ पनीर निकाला और उसके दो टुकड़े कर के उसे देते हुए बोला—

"लो, यह लो। चुप हो जाओ अब।"

बड़ी लड़की ने हाथ के इशारे से पनीर का टुकड़ा अस्वीकार कर दिया। वह रोती ही रही; किन्तु छोटी लड़की ने दोनों टुकड़े ले लिये और तुरंत ही खाना प्रारम्भ कर दिया। थोड़ी देर बाद उसने दूसरा टुकड़ा अपनी बहन को दे दिया। अब वे दोनों मिलकर खाने लगीं। बीच-बीच में बड़ी बहन अभी भी थोड़ी सिसकियाँ भरती जा रही थी।

"कुछ देर बाद वह आप ही स्वस्थ हो जायेगी।" आयूमो ने कहा।

उसके दिमाग में अचानक ही एक विचार उठा।

"कुमारी हो?" उसने अपने पास बैठी हुई लड़की से पूछा। उस लड़की ने बड़े उत्साह से अपना सिर हिलाते हुए 'हाँ' का संकेत किया।

"यह भी कुमारी है?" उसकी बहन की ओर संकेत करके उसने प्रश्न किया। दोनों लड़कियों ने स्वीकारात्मक ढंग से सिर हिलाया। बड़ी बहन अपनी बोली में कुछ बड़बड़ाई।

"ठीक है।" बारटोलोमिओ ने कहा "ठीक है—ठीक है।"

दोनों लड़कियाँ कुछ प्रफुल्लित नज़र आयीं। मैंने मोटर के कोने में पीछे की ओर टिककर बैठे हुए आयूमो के साथ उन लड़कियों को वहीं छोड़ दिया और पिओनी की मोटर के निकट लौट आया। सवारियों की वह लम्बी कतार अभी हिली भी नहीं थी; किन्तु सैनिक-टुकड़ियों का उनकी बगल से निकलकर आगे बढ़ने का क्रम जारी था। वर्षा अभी भी पूरे वेग पर थी। मैंने सोचा कि सवारियों की इस कतार का इस प्रकार बार-बार रुकने का कारण यह भी हो सकता है कि शायद किसी मोटर के तार के गीले हो जाने के कारण उसमें कुछ खराबी पैदा हो जाती हो। किन्तु अधिक संभावना इस बात की थी कि घोड़े अथवा चालकगण बीच-बीच में सो जाया करते थे और सबको रुक जाना पड़ता था। पर शहरों में तो प्रत्येक व्यक्ति के जागते रहने पर भी यातायात रुक सकता है। सवारियों की इस लम्बी कतार में मोटरें और घोड़ा-गाड़ियाँ थीं। उन सवारियों को आपस में एक-दूसरे से कोई सहायता नहीं मिलती थी और न किसानों की गाड़ियों से ही कोई विशेष मदद मिलती थी। बारटो के साथ बैठी हुई लड़कियों की वह जोड़ी सुन्दर थी। पर सेना के पीछे हटने के समय उस स्थान पर दो कुमारियों का होना उचित नहीं था—सही अर्थों में कुमारियाँ, जो कदाचित् बड़ी धार्मिक विचारों की थीं। यदि युद्ध नहीं होता, तो इस समय शायद हम सब अपने बिस्तरों में सोए होते। और, मैं जैसे बिस्तर में अपना सिर छिपाकर सो गया। बिस्तर और एक कठोर तख़्ता—तख्ते के समान ही कठोर बिस्तर! कैथरीन भी अपने पलंग पर चादर ओढ़े सो रही होगी। दो मुलायम चादरें—एक नीचे और एक ऊपर। वह किस करवट सोई होगी भला? कदाचित् वह सोई न भी हो। हो सकता है, वह मेरे विषय में कुछ सोचते हुए लेटी हो। पश्चिमी पवन! मेरी ओर प्रवाहित हो। इस दिशा में बह। और सचमुच, पश्चिमी पवन मेरी ओर प्रवाहित हुआ। नन्हीं-नन्हीं बूँदें नहीं, मूसलाधार वर्षा लेकर वह आया। पानी बरसता रहा, रात-भर वर्षा हुई। उसने वर्षा को जैसे झकझोर कर रात—भर बरसने के लिए बाध्य कर दिया। उसकी ओर देखो तो, ज़रा। हे भगवान्! काश! मैं अपनी प्रियतमा कैथरीन को अपने आलिंगन में लिये अपने बिस्तर में सोया

होता। कैथरीन—मेरे प्रेम की प्रतिमा! मेरा मधुर प्यार कैथरीन—मधुमय रस की वर्षा-सी कदाचित् यहाँ बरस पड़े। पश्चिमी पवन! मेरी प्रेममयी कैथरीन का संदेश पुनः मेरी ओर प्रवाहित कर। और लो, हम सब पवन के झंझावात में ही तो थे। हर व्यक्ति पश्चिमी पवन के जाल में फँसा हुआ था। और थोड़ी-सी वर्षा उस के वेग को शान्त करने में असमर्थ थी।

"रात-भर के लिए विदा, कैथरीन, विदा प्रियतमे!" मैं ज़ोर से चिल्लाया —"मेरा अनुमान है कि तुम आराम से सो रही हो। यदि इस प्रकार सोने में तुम्हें तकलीफ़ होती हो प्रिये, तो करवट बदल कर लेट जाओ।" मैंने कहा— "मैं तुम्हारे लिए थोड़ा ठण्डा पानी ले आता हूँ। कुछ समय बाद सवेरा हो जायेगा और तब तुम्हें इतनी तकलीफ़ नहीं होगी। मुझे बड़ा दुःख है कि तुम्हें उस आनेवाले शिशु के कारण इतना कष्ट हो रहा है। सोने का प्रयत्न करो, प्राण!"

स्वप्निल स्मृति जैसे स्पष्टतर होती जा रही थी।

"मैं तो अभी तक सो ही रही थी—" वह बोली—"तुम नींद में बड़-बड़ा रहे थे। तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?"

"क्या तुम सचमुच मेरे पास हो?"

"निस्संदेह, मैं तुम्हारे पास ही तो हूँ। मैं तुमसे दूर नहीं जाऊँगी। विछोह की इस स्थिति से हमारे बीच कोई दूरी नहीं आ सकती।"

"तुम कितनी प्रिय और मधुर हो! तुम रात में भी मुझसे दूर नहीं रहोगी। है न?"

"निश्चय ही, मैं तुमसे अलग नहीं रहूँगी। मैं तो सदा तुम्हारे साथ हूँ। जब तुम चाहते हो, तभी मैं तुम्हारे पास आ जाती हूँ...।"

"——" पिआनी बोला—"हमारा चलना फिर शुरू हो गया है।"

"मैं नशे में था।" मैंने कहा और अपनी घड़ी पर दृष्टि डाली। सुबह के तीन बज गये थे। मैं अपनी सीट के पीछे की ओर से बारबॅरा (शराब) की एक बोतल निकालकर ले आया।

"आप ज़ोर-ज़ोर से बड़बड़ा रहे थे।" पिआनी बोला।

"संभव है, मैं अंग्रेज़ी में एक स्वप्न देख रहा था।" मैं बोला।

वर्षा का वेग धीमा पड़ गया था। हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। पर सूर्य निकलने के पहले ही हमारा चलना फिर रुक गया। जब उजेला हुआ, तो मैंने देखा कि हम मैदान के बीच एक छोटे-से टीले के पास खड़े थे। पीछे की ओर

हटते हुए हम जिस मार्ग पर चल रहे थे, वह सामने बड़ी दूर तक फैला हुआ दिखायी दे रहा था। हर वस्तु उस सड़क पर बिलकुल स्थिर होकर खड़ी थी। केवल पैदल सेना उस स्थिर कतार के बीच से निकलती हुई आगे बढ़ती जा रही थी। हमने फिर चलना शुरू किया; किन्तु जिस गतिसे हम आगे बढ़ रहे थे, दिन के उजाले में उसे देखकर मुझे विश्वास हो गया कि यदि हम सचमुच यूडाइन पहुँचना चाहते हैं, तो हमें कहीं-न-कहीं इस बड़ी सड़क को छोड़कर आसपास के इलाके से गुज़रनेवाले किसी अन्य मार्ग का सहारा लेना पड़ेगा।

रात में आसपास के इलाकों से आनेवाले रास्ते से बहुत-से किसान अपनी गाड़ियाँ लेकर हमारी इस लम्बी कतार में शामिल हो गए थे। उन गाड़ियों में उनकी गृहस्थी का सामान लदा था। गाड़ियों में लगी चटाइयों के बीच से कहीं-कहीं कुछ दर्पण बाहर निकलकर दिन की रोशनी में चमक रहे थे। कुछ गाड़ियों में मुर्गी के बच्चे और बत्तखें बँधी हुई थीं। हमारी मोटर के आगे-वाली गाड़ी में एक कपड़ा सीने की मशीन रखी-रखी भीग रही थी। किसानों ने अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को ही सँभालकर रखा था। कुछ गाड़ियों में वर्षा की बौछारों से अपने-आपको बचाती हुई औरतें एक-दूसरे से सटकर बैठी थीं। कुछ स्त्रियाँ गाड़ियो के साथ-साथ पैदल चल रही थीं। वे यथासम्भव गाड़ियों के जितने पास हो सकता था, उतने पास ही रहती थीं। हमारे इस काफ़िले में कुछ कुत्ते भी आ गए थे, जो गाड़ियों के नीचे, उन्ही के साथ-साथ आगे बढ़ रहे थे। रास्ता कीचड़ से भर गया था। बगल की खाइयाँ पानी से लबालब भर गयी थीं। उनसे परे रास्ते के दोनों ओर पंक्ति-बद्ध खड़े हुए वृक्ष तथा खेत बहुत गीले दिखायी दे रहे थे। खेतों की ज़मीन इतनी नरम हो गयी थी कि उसे पार करने का प्रयत्न करना दुःसाहस प्रतीत होता था। मैं मोटर से नीचे उतरा और पैदल ही सड़क पर आगे बढ़ते हुए किसी ऐसे स्थान को खोजने लगा, जहाँ सुविधापूर्वक खड़ा होकर मैं आसपास का कोई ऐसा उपमार्ग ढूँढ़ निकालूँ, जिस पर चलकर हम उस प्रदेश को पार कर लें।

मैं जानता था कि उस इलाके में बहुत-से उपमार्ग थे; किन्तु मैं ऐसा रास्ता नहीं अपनाना चाहता था, जिस पर चलकर हम लोग कहीं के न रहें। उस इलाके से हम लोग पहले भी कई बार निकल चुके थे। किन्तु जब भी हम निकले थे, तब बड़ी सड़क पर मोटर में तीव्र गति से जाते हुए ही हमने उस इलाके को पार किया था। और ऐसी हालत में स्वभावतः ही उन उपमार्गों को हम शीघ्रता से पीछे छोड़ते जाते थे। वे सब एक-से ही दिखाई देते थे और उनके

विषय में मुझे कुछ भी याद नहीं था। पर मैं जानता था कि यदि हमें यहाँ से निकलना है, तो कोई अन्य मार्ग ढूँढ़ना ही पड़ेगा। आस्ट्रियन सेना इस समय कहाँ थी, इसका किसी को पता नहीं था। यह भी कोई नहीं जानता था कि अभी कहाँ क्या हो रहा था; किन्तु यह निश्चित था कि यदि वर्षा बन्द हो गई और हमारी इस सैन्य-पंक्ति पर दुश्मन के वायुयानों ने आकर बमबारी शुरू कर दी, तो सब-कुछ समाप्त हो जायेगा। उस सड़क पर सवारियों का आना-जाना बिल-कुल ठप कर देने के लिए केवल इतना ही पर्याप्त था कि कुछ चालक अपनी मोटरें छोड़कर भाग जायें अथवा कुछ घोड़े मार डाले जायें।

वर्षा में अब उतना ज़ोर नहीं रहा था और मेरा अनुमान था कि कुछ समय बाद ही वर्षा बंद हो जाएगी। मैं सड़क के किनारे-किनारे आगे बढ़ता गया और अन्त में, एक उपमार्ग के पास पहुँच कर रुक गया। वह छोटी-सी सड़क उत्तर की ओर जाती थी। दो खेतों के बीच से गुज़रते हुए इस रास्ते के दोनों ओर झाड़ियाँ थीं। मैंने इसी रास्ते से जाना उचित समझा और बड़ी तेज़ी से अपनी मोटरों की ओर लौटा। पिआनी से मैंने उस रास्ते पर मोटर घुमाने के लिए कहा और बोनेलो तथा आयूमो को भी यही आदेश देने के लिए उनकी ओर बढ़ गया।

"यदि उस सड़क के ज़रिये हम किसी निश्चित दिशा में आगे नहीं बढ़ सके, तो हम फिर पीछे लौटकर इसी कतार में मिल जायेंगे।" मैंने कहा।

"इनका क्या होगा?" बोनेलो ने पूछा। उसके पास ही सीट पर उसके दो सार्जेंट साथी बैठे हुए थे। यद्यपि उन्होंने अपनी दाढ़ियाँ नहीं बनाई थीं, पर सुबह के उस उजाले में वे सेना के आदमियों की तरह ही दिखाई दे रहे थे।

"मोटरों को धक्का देते समय इनसे हमें सहायता मिलेगी।" मैंने कहा। फिर मैं आयूमो के पास पहुँचा और उसे भी अपना निश्चय बता दिया।

"मेरे इस 'कुमारी-परिवार' का क्या होगा तब?" आयूमो ने पूछा। दोनों लड़कियाँ सो रही थीं।

"इनसे हमें कोई मदद नहीं मिलेगी।" मैं बोला—"तुम्हें अपनी मोटर में किसी ऐसे व्यक्ति को बैठाना था, जो ज़रूरत पड़ने पर मोटर ढकेल सकता।"

"ये मोटर में पीछे की ओर तो बैठी रह सकती हैं।" आयूमो ने कहा—"भीतर काफ़ी जगह है।"

"यदि तुम इन्हें अपने साथ रखना चाहते हो, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।" मैं बोला—"पर मोटर ढकेलने के लिए किसी चौड़ी पीठ वाले व्यक्ति को भी बैठा लो, तो अच्छा रहेगा।"

"किसी इटालियन निशानेबाज़ को।" आयूमो मुस्कराया—"उन्हीं की पीठ सबसे चौड़ी होती है। वे उसे नापा करते हैं। आपकी तबीयत कैसी है, लेफ्टिनेंट साहब?"

"बहुत अच्छी और तुम कैसे हो?"

"बिलकुल ठीक। हाँ, भूख बहुत लगी है।"

"उस मार्ग पर आगे चलकर हमें कहीं-न-कहीं कोई स्थान अवश्य मिलेगा। वहीं ठहरकर हम कुछ खा-पी लेंगे।"

"आप का पैर कैसा है, साहब?"

"ठीक है।" मैंने कहा और गाड़ी के पॉवदान पर खड़े होते हुए, ऊपर सिर उठाकर सामने की ओर देखा। पिआनी की मोटर कतार से बाहर निकलकर उस छोटी सड़क पर पहुँच चुकी थी और आगे बढ़ रही थी। पत्रविहीन झाड़ियों के बीच से निकलती हुई वह मोटर पथ-प्रदर्शन कर रही थी। बोनेलो ने अपनी मोटर घुमायी और उसके पीछे चल पड़ा। उसी के पीछे आयूमो ने भी अपनी राह बनाते हुए उनका अनुसरण किया। झाड़ियो के बीच से गुज़रने वाले उस संकरे पथ पर अग्रसर होती हुई उन दो एम्बुलेन्सों के पीछे हमारी मोटर भी चल रही थी। पर वह रास्ता खेत में बने हुए एक घर के निकट पहुँच कर खत्म हो गया। हमने देखा कि पिआनी और बोनेलो वहीं खलिहान में ठहर गए थे। घर नीचा; किन्तु लम्बा था। उसके दरवाज़े पर बेलों को ऊपर चढ़ाने के लिए लकड़ी की एक जाली बनी थी और उस पर अंगूर की बेल फैली थी। आंगन में एक कुआँ था। रेडिएटर में पानी भरने के लिए पिआनी कुएँ से पानी खींच रहा था। काफ़ी समय तक मंद गति से चलने के कारण मशीन बड़ी गर्म हो गयी थी। मैंने पीछे मुड़कर उस सड़क पर एक दृष्टि डाली। खेत में बना वह घर एक ऊँची जगह पर था। वहाँ से हम आस-पास के इलाके को स्पष्ट देख सकते थे। मैंने सड़क पर नजर घुमायी, झाड़ियों को देखा, खेतो पर आँखें दौड़ायीं और बड़ी सड़क के दोनों ओर के वृक्षों की कतारों को देखता रहा। वृक्षों की उन कतारों के बीच, सड़क पर सैन्यदल का वह काफ़िला धीरे-धीरे रेंगता दिखायी दे रहा था। दोनों सार्जेण्ट घर में से बाहर की ओर झाँक रहे थे और लड़कियाँ जाग गयी थीं। उन्होने एक बारगी चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। आंगन को देखा। कुएँ पर नज़र डाली और घर के सामने खड़ी हुई दो एम्बुलेन्स मोटरों और कुएँ पर खड़े हुए तीनों मोटर-चालकों को देखा। इसी बीच एक सार्जेण्ट एक दीवार-घड़ी लेकर उस घर से बाहर आया।

"इसे वापस अपने स्थान पर रख आओ।" मैंने कहा। उसने मुझे देखा, घर के भीतर गया और घड़ी रखकर लौट आया।

"तुम्हारा साथी कहाँ है?" मैंने पूछा।

"वह शौच के लिए गया है।" कहकर वह मोटर में बैठ गया। उसे भय था कि कहीं हम उसे वहीं छोड़कर आगे न चल दें।

"नाश्ते के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है, लेफ्टिनेण्ट साहब?" बोनेलो ने पूछा—"यदि हम थोड़ा-बहुत खा-पी लेते, तो अच्छा होता। इसमें कोई अधिक समय भी नहीं लगेगा।"

"यह सड़क, जो घर के दूसरी ओर से आगे चली गई है, हमें कहीं पहुँचा सकेगी या नहीं? क्या खयाल है तुम्हारा?"

"क्यों नहीं!"

"अच्छा। तो चलो, नाश्ता कर लें।" पिआनी और बोनेलो घर के भीतर चले गये।

"चलो, उतरो।" आयूमो ने लड़कियों से कहा। उसने उन्हें नीचे उतरने में सहायता देने के लिए अपना हाथ बढ़ाया; पर बड़ी लड़की ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। वे उस सूने घर में जाने के लिए तैयार नहीं थीं। उन्होंने जिज्ञासा-भरी दृष्टि से हमारी ओर देखा।

"इनसे निबटना बड़ा कठिन है।" आयूमो बोला और हम सब लोग साथ-साथ घर में घुसे। उस लम्बे और अंधेरे घर में—काफ़ी दिनों से खाली रहने के कारण उत्पन्न—एक गहरे सूनेपन की भावना व्याप्त थी। बोनेलो और पिआनी रसोईघर में व्यस्त थे।

"यहाँ खाने-पीने के लिए कुछ खास नहीं है।" पिआनी ने कहा—"घर के लोग पहले ही सब समाप्त करके गये हैं।"

तभी बोनेलो पनीर का एक बड़ा सफ़ेद टुकड़ा ले आया और रसोईघर की वजनदार मेज़ पर रखकर उसे काटने लगा।

"यह पनीर का टुकड़ा कहाँ मिला?"

"तहखाने में। पिआनी शराब और सेब भी ढूँढ़ लाया है।"

"तब तो हमें काफ़ी अच्छा नाश्ता मिल गया।"

पिआनी सींक की जाली से ढँके हुए शराब के एक बड़े पात्र में लगे डाट को खोल रहा था। उसने उस पात्र को तिरछा करते हुए तावे के एक बरतन को शराब से लबालब भर लिया।

"गंध तो अच्छी आ रही है।" वह बोला—"बारटो, कुछ गिलास वगैरह ढूँढ़ो दोस्त!"

इसी समय दोनों सार्जेण्ट भी भीतर आए।

"थोड़ा पनीर खाइए, सार्जेण्ट साहब।" बोनेलो ने कहा।

"हमें, अब चल देना चाहिए।" पनीर का टुकड़ा चबाते हुए और शराब का घूँट लेते हुए एक सार्जेण्ट बोला।

"हाँ साहब, चलेंगे। आप चिन्ता मत कीजिए।" बोनेलो ने उत्तर दिया।

"सेना तो पेट के सहारे चलती है।" मैंने कहा।

"मैं समझा नहीं!" सार्जेण्ट ने कहा।

"मेरा मतलब है कि चलने के पहले खा-पी लेना अच्छा है।"

"हाँ, किन्तु समय बहुत कीमती है।"

"मेरे खयाल से ये हरामखोर पहले ही अपना पेट भर चुके हैं।" पियानी बोला। दोनों सार्जेंटों ने उस की ओर देखा। वे हम लोगों से घृणा करते थे, यह निश्चित था।

"आपको रास्ता मालूम है?" उनमें से एक ने मुझसे प्रश्न किया।

"नहीं!" मैंने उत्तर दिया और वे दोनों एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे।

"तब तो सबसे अच्छा यही होगा कि हम अब अविलम्ब चलना शुरू कर दें।" एक सार्जेंट ने कहा।

"बस, चलते ही हैं अब।" मैंने ज़वाब दिया और उस लाल शराब की एक और प्याली खाली कर दी। पनीर के टुकड़े और सेव के साथ शराब बहुत अच्छी लगी।

"पनीर साथ ले चलो।" कहते हुए मैं बाहर आ गया। हाथ में शराब का वह बड़ा-सा बर्तन लिए बोनेलो भी मेरे पीछे-पीछे बाहर निकला।

"यह तो बहुत बड़ा है।" मैंने कहा। उसने बड़ी खिन्नता से उसकी ओर देखा।

"मैं भी यही सोच रहा था।" उसने उत्तर दिया—"कृपया मुझे पानी भर कर ले चलनेवाली कुप्पियाँ दे दीजिये। मैं उनमें यह शराब भर लेता हूँ। उसने सब कुप्पियों में शराब भर ली। कुप्पियो में शराब भरते समय नीचे ज़मीन पर भी कुछ शराब गिर गई। बोनेलो ने कुप्पियाँ भर जाने के बाद वह बड़ा-सा मद्यपात्र द्वार के भीतर की ओर रख दिया।

"अब बिना दरवाज़ा तोड़े ही आस्ट्रियनों को यह शराब मिल जायेगी।" वह बोला।

"अच्छा चलो, अब चलें।" मैंने कहा—"मैं पिआनी की मोटर में आगे-आगे चलूँगा।" दोनों सार्जेण्ट पहले ही बोनेलो के पास की सीट पर बैठ चुके थे। लड़कियाँ पनीर और सेव खा रही थीं और आय्मो धूम्रपान कर रहा था। हमने उस संकरे पथ पर आगे बढ़ना आरम्भ किया। मुड़कर मैंने अपने पीछे आती हुई दोनों मोटरों को देखा और खेतों के बीच बने उस घर पर भी अंतिम दृष्टि फेंकी। नीची छत वाला वह घर बड़ा सुन्दर दीख रहा था और ठोस पत्थरों की उसकी बनावट बड़ी आकर्षक थी। कुएँ पर किया गया लोहे का काम भी बहुत सुंदर दीख रहा था। हमारे सामने, दोनों ओर ऊँची-ऊँची झाड़ियों से घिरा हुआ संकरा और कीचड़ से भरा रास्ता था और पीछे, हमारा अनुसरण करने वाली मोटरें!

• २९ •

दोपहर को हम एक जगह कीचड़ में बुरी तरह फँस गये। जहाँ तक मैं दूरी का अनुमान लगा सकता था, उस समय हम लोग यूडाइन से प्रायः छः मील दूर थे। वर्षा दोपहर से पहले ही बन्द हो चुकी थी और इस समय तक हम तीन बार वायुयानों के आने का स्वर सुन चुके थे। वे हमारे सिर पर से उड़ते हुए बायीं ओर बड़ी दूर तक चले जाते और कुछ ही क्षणों बाद हमें उस ऊँचे बड़े रास्ते पर बमों के गिरने की आवाज़ सुनाई देती। हम कई उपमार्गों से होते हुए ही इतनी दूर आ सके थे। अपने इस संकटपूर्ण प्रयास में हमने अनेक ऐसे पथों का अनुसरण भी किया था, जो आगे चलकर बिलकुल धोखे की टट्टियाँ सिद्ध हुए थे। वे थोड़ी दूर तक जाकर अचानक विलीन हो जाते और हम पीछे लौट कर किसी दूसरे रास्ते पर चल देते। इसी प्रकार चलते-चलाते हम यूडाइन के इतने पास आ पहुँचे थे और अब एक ऐसे ही लुप्तप्राय मार्ग से पीछे हटने के प्रयास में आय्मो की मोटर एक ओर से, पोली मिट्टी में नीचे धँस गई थी। अपनी जगह पर घूमते हुए उसके पहिए मिट्टी में भीतर-ही-भीतर धँसते चले गये और अन्त में जब धुरी ज़मीन से आकर लग गयी, तब उनका घूमना बन्द हो गया। इस संकट से मुक्त होने का केवल एक ही मार्ग था और वह था पहियों के सामने की धरती खोदकर वहाँ झाड़-झंखाड़ बिछा देना, जिससे वे साँकलों की पकड़ में आ सकें। उसके बाद ही हम मोटर को ढकेलकर उस

कीचड़ से बाहर निकाल सकते थे। सड़क पर उतरकर हम सब मोटर के चारो ओर खड़े हो गए। दोनों सार्जेंटो ने मोटर को देखा और उसके पहियों की जाँच की। और तब, एक शब्द भी बोले बिना वे चुपचाप सड़क पर आगे बढ़ने लगे। मैंने उन्हे आवाज़ दी।

"इधर आओ और कुछ झाड़ियाँ काटकर ले चलो।"

"हमें जाना है।" उनमें से एक बोला।

"काम करो—" मैं झल्लाया—"चलो, काटो झाड़ियाँ।"

"किन्तु हम यहाँ से जाना चाहते हैं।" वही व्यक्ति पुनः बोला। दूसरा चुपचाप खड़ा था। वे वहाँ से भागने की जल्दी में थे और मेरी ओर आँखें उठाकर देखना भी नहीं चाहते थे।

"मैं तुम्हें मोटर तक वापस लौटने और झाड़ियाँ काटने का आदेश देता हूँ।" मैं बौखला उठा। पहला सार्जेंण्ट मेरी ओर मुड़ा और बोला—"हमें आगे जाना है। यहाँ रुकने से, थोड़ी देर बाद ही आप लोग मारे जायेंगे। आप हमें आदेश नहीं दे सकते। आप हमारे अफ़सर नहीं हैं।"

"लौटो और झाड़ियाँ काटो—यह मेरा आदेश है।" मैंने ज़ोर देक कहा। वे घूमे और आगे बढ़ते गये।

"रुक जाओ, मैं कहता हूँ।" मैं चिल्लाया। पर वे दोनों ओर झाड़ियों से घिरी हुई उस कीचड़ भरी सड़क पर चलते ही गये। "मै तुम्हे रुक जाने को कह रहा हूँ—रुको!" मैं जोर से चिल्लाया। वे कुछ तेज़ी से चलने लगे। मैंने अपनी पिस्तौल की पेटी खोली, पिस्तौल निकाली और सार्जेण्ट पर निशाना साधकर गोली दाग दी। निशाना चूक गया और उन दोनो ने भागना शुरू कर दिया। मैंने लगातार तीन बार गोलियाँ चलायीं। एक सार्जेण्ट गिर गया। दूसरा अपनी जान बचाने के लिए झाड़ियों में भाग खड़ा हुआ और आँखों से ओझल हो गया। ज्योंही वह निकलकर खेत में भागने लगा, मैंने उस पर भी गोली चलायी। किन्तु इसबार पिस्तौल केवल 'खट्' की आवाज़ करके रह गई। वह खाली हो चुकी थी। मैंने उसमें दुबारा गोलियाँ भरीं; लेकिन तब तक वह सार्जेण्ट काफ़ी दूर निकल चुका था और इतनी दूर से उसे अपना निशाना बनाने में मैं असमर्थ था। वह अपना सिर झुकाये बड़ी दूर, खेतों में, प्राण लिये भागा जा रहा था। मैं खड़ा-खड़ा खाली क्लिप में गोलियाँ डालने लगा। इसी बीच बोनेलो आ पहुँचा।

"लाइए। मैं उसे खत्म किये आता हूँ।" वह बोला। मैंने उसे अपनी

पिस्तौल दे दी। वह उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ पहला सार्जेण्ट सड़क पर औंधे मुँह पड़ा था। वह उसके ऊपर झुका, पिस्तौल की नली उसके सिर पर रखी और उसका घोड़ा दबा दिया; किन्तु पिस्तौल चली नहीं।

"तुम्हें पहले उसकी टांटी बैठानी चाहिए।" मैं बोला उसने टांटी बैठाकर दो बार गोली चलायी। उसके बाद उसने सार्जेंट की दोनों टागें पकड़कर उसे घसीटते हुए सड़क के किनारे डाल दिया। सार्जेण्ट की मृत देह झाड़ियों के पास पड़ी रही। बोनेलो लौट आया। उसने पिस्तौल मेरे हाथ में दे दी।

"कुतिया का पिल्ला!" वह बड़बड़ाया और उस मृत सार्जेण्ट की ओर देखते हुए बोला—"आपने देखा, साहब, मैंने उसकी क्या हालत कर दी?"

"हमें अब शीघ्र-से-शीघ्र झाड़ियाँ काटनी चाहिए।" मैंने कहा—"तुम्हारा क्या खयाल है, दूसरे सार्जेण्ट को मेरी कोई गोली लगी या नहीं?"

"मैं नहीं समझता कि उसे गोली लगी।" आयूमो ने कहा—"वह इतनी दूर था कि पिस्तौल से गोली चलाकर उसे आहत करना असम्भव ही था।"

"नीच कहीं का!" पिआनी ने कहा।

अब तक हम झाड़ियों की टहनियाँ तथा बड़ी-बड़ी डालियाँ काटने में जुट गए थे। मोटर का सारा सामान पहले ही बाहर निकाल लिया गया था। बोनेलो पहियों के सामने की मिट्टी खोद रहा था। सब तैयारी हो जाने के बाद आयूमो ने इंजन शुरू किया और गेयर को सँभाला। पहिये अपने स्थान पर ही चक्कर लगाने लगे और नीचे जमा की हुई टहनियाँ कीचड़ के साथ उछलकर दूर जा गिरीं। बोनेलो और मैंने मोटर को धक्का देना शुरू किया। धक्का देते-देते बदन दुखने लगा, किन्तु मोटर अपनी जगह से हिली भी नहीं।

"इसे ज़रा आगे-पीछे की ओर तो चलाओ, बारटो।" मैंने कहा।

उसने मोटर को पहले पीछे की ओर चलाया फिर आगे; किन्तु इसका भी कोई फल नहीं निकला। पहिये गढ़ों में और भी अधिक धँसते चले गए और धुरी पुनः जमीन से जा लगी। मोटर उसके सहारे टिकी रह गई और दोनों पहियों के चाक गढ़ो में घूमते रहे। हार कर मैं सीधा खड़ा हो गया।

"हमें अब इसे रस्सी से बाहर खींचने की कोशिश करनी चाहिए।" मैं बोला।

"मेरे खयाल से उससे भी कुछ नहीं होगा, साहब। हम मोटर को सीधी नहीं खींच सकते।"

"फिर भी चेष्टा तो करनी ही है।" मैंने कहा—"उसे गढ़ों में से बाहर निकालने का अन्य कोई रास्ता भी तो नहीं है।"

पिआनी और बोनेलो की मोटरें उस संकरे पथ पर केवल आगे की ओर सीधी चल सकती थीं। हमने दोनों मोटरों को रस्सी से बाँध कर रस्सी कीचड़ में धँसी उस मोटर से बाँध दी और खींचना आरम्भ किया। उसके पहिए सड़क की लकीर के विरुद्ध केवल बगल में मुड़ गये; पर मोटर टस-से मस न हुई।

"कोई लाभ नहीं।" मैं चिल्लाया—"बन्द करो। मत खींचो।"

पिआनी और बोनेलो अपनी मोटरों से उतरकर मेरे पास लौट आए। आयूमो भी नीचे उतर आया। लड़कियाँ सड़क के किनारे हमसे क़रीब चालीस गज दूर, एक पत्थर की दीवार पर बैठी थीं।

"कहिए, अब क्या आदेश है, लेफ्टिनेण्ट साहब?" बोनेलो ने पूछा।

"हम थोड़ी ज़मीन और खोदकर और टहनियाँ बिछाकर एक प्रयास और करेंगे।" कहते हुए मैंने सड़क पर दृष्टि डाली। अपराध वस्तुतः मेरा ही था। मै ही सब लोगो को यहाँ तक लाने के लिए उत्तरदायी था। आकाश में बादल फट चुके थे। सूर्य खुले आकाश में चमकने लगा था। सार्जेण्ट का मृत शरीर झाड़ियों के पास पड़ा था।

"हम उस सार्जेण्ट का कोट और लबादा पहियों के पास डाल देंगे।" मैंने कहा। बोनेलो उन्हें लाने के लिए उधर चला गया। मै झाड़ियाँ काट-काट कर लाने लगा। आयूमो और पिआनी सामने तथा पहियों के दोनों ओर गढ़े खोदने लगे। कोट और लबादा आ जाने पर मैंने लबादे को फाड़कर उसके दो टुकड़े कर लिए। उन टुकड़ों को मैंने पहियो के निकट, कीचड़ में बिछा दिया और उनके ऊपर टहनियाँ जमा दीं, जिससे पहिए बिना विशेष दिक्कत के राह पकड़ सके। हम अपना प्रयास प्रारम्भ करने के लिए फिर से तैयार हो गये। आयूमो ड्राइवर की सीट पर जाकर बैठ गया और उसने इंजन शुरू किया। पहिए एक बार फिर अपने स्थान पर घूमने लगे। हमने मोटर को धक्का दे-दे कर निकालने की जी तोड़ कोशिश की; किन्तु इस बार भी हमारा प्रयास निष्फल रहा।

"यह तो जैसे यहीं की हो गई।" हारकर मैं बोला—"क्या इसमें कोई ऐसी चीज़ है बारटो, जिसकी तुम्हें ज़रूरत हो?"

आयूमो पनीर, शराब की दो बोतलें तथा अपना लबादा लेकर बोनेलो के साथ उसकी मोटर में जा बैठा। बोनेलो स्टीअरिंग ह्वील के पीछे बैठ गया और सार्जेण्ट के कोट की जेबों की तलाशी लेने लगा।

"उस कोट को यहीं फेंक देना उचित है।" मैंने कहा—"अरे, हाँ! बारटो की उन दो कुमारियो का क्या होगा?"

"वे पीछे की ओर बैठ सकती हैं।" पिआनी ने उत्तर दिया।

"मेरा ख़याल है कि अब हम लोग ज़्यादा दूर नहीं जा पायेंगे।"

मैंने एम्बुलेन्स के पीछे का दरवाज़ा खोला।

"आओ—" मैंने कहा—"बैठ जाओ भीतर।" दोनों लड़कियाँ भीतर एक कोने में बैठ गयीं। ऐसा प्रतीत होता था कि सार्जेंट पर मैंने जो गोलियाँ चलायी थीं, उसका उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। मैंने पीछे की ओर सड़क पर नज़र दौड़ायी। लम्बी बाँहोंवाली मैली बनियाइन में लिपटी हुई सार्जेण्ट की मृत देह उसी स्थान पर पड़ी थी। मैं पिआनी की मोटर में चढ़ गया और हम लोग आगे बढ़ने लगे। हमारा इरादा सामने के खेत को पार कर जाने का था। सड़क जब खेत में उतर गयी तो मैं भी मोटर से उतरकर आगे-आगे चलने लगा। यदि हम खेत पार कर लेते, तो उसके दूसरी ओर हमें एक और सड़क मिल सकती थी। किन्तु हम खेत को पार नहीं कर सके। उसकी ज़मीन इतनी पोली और कीचड़ से भरी थी कि उसमें से मोटरें नहीं जा सकती थीं। अन्त में, जब मोटरें कीचड़ में पूरी तरह फँसकर खड़ी हो गयीं और उनके पहिए धुरी तक कीचड़ में धँस गये, तो हमने उन्हें वहीं छोड़ दिया और पैदल ही यूडाइन की ओर चल पड़े।

जब हम उस सड़क पर पहुँचे, जो बड़ी सड़क की ओर जाती थी, तो मैंने उन दोनों लड़कियों से उस रास्ते की ओर इशारा करते हुए कहा—

"इस राह से आगे चली जाओ। तुम्हें अपने आदमी मिल जायेंगे।" उन्होंने मेरी ओर देखा। मैंने अपनी पाकेटबुक निकाली। उसमें से दस लिरा का एक-एक नोट निकालकर उन्हें दिया और हाथ से इशारा करते हुए कहा—"सीधी इसी ओर चली जाओ। मित्र या परिवार के लोग—कोई-न-कोई तुम्हें मिल ही जायेगा।"

उन्हें मेरी बात समझ में नहीं आई। फिर भी उन्होंने पैसा ले लिया और सड़क पर मेरी बतायी हुई दिशा में चल पड़ीं। जाते-जाते उन्होंने मेरी ओर घूमकर इस तरह देखा, मानो उन्हें भय था कि मैं अपना पैसा कहीं वापस न ले लूँ। मैं उन्हें सड़क पर जाते हुए देखता रहा। वे अपने दुशालों को कसकर लपेटे हुए थीं और बीच-बीच में मुड़ कर हमें शंकाभरी दृष्टि से देखती जा रही थीं। तीनों ड्राइवर उनके इस व्यवहार पर हँस रहे थे।

"यदि मैं भी उसी ओर जाऊँ, तो आप मुझे क्या देंगे, लेफ्टिनेण्ट साहब?" बोनेलो ने पूछा।

"यदि वे शत्रु के हाथों में पड़ गईं, तो अकेली पकड़ी जाने की अपेक्षा उनका कुछ आदमियों के साथ रहना ज्यादा अच्छा रहेगा—" मैंने कहा।

"यदि आप मुझे दो सौ लिरे दें, तो इसी क्षण मैं सीधा आस्ट्रिया जाने को तैयार हूँ।" बोनेलो ने कहा।

"आस्ट्रियन तुमसे सब पैसा छीन लेंगे।" पिआनी बोला।

"हो सकता है, युद्ध ही खत्म हो जाये।" आय्मो ने कहा। हम सड़क पर शक्ति-भर तेज़ी से चल रहे थे। सूर्य रह रह कर बादलों के बीच से झाँकने का प्रयत्न कर रहा था। सड़क के पास ही शहतूत के पेड़ थे। पेड़ों के बीच से मुझे अपनी वे दो मोटरें, जो खेत में फँस गयी थीं, स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। पिआनी भी मुड़-मुड़ कर, उन्हें देखता जा रहा था।

"उन मोटरों को वहाँ से निकालने के लिए अधिकारियों को पक्का रास्ता बनवाना पड़ेगा।" वह बोला।

"काश! हमारे पास साइकिलें होतीं।" बोनेलो ने कहा।

"क्या अमेरिका में लोग साइकिल चलाते हैं!" आय्मो ने प्रश्न किया।

"पहले चलाते थे, अब नहीं।"

"यहाँ तो यह बड़ी भारी बात समझी जाती है।" आय्मो बोला—"साइकिल सचमुच बड़ी सुन्दर चीज़ है।"

"काश! हमारे पास साइकिलें होतीं।" बोनेलो ने दुहराया—"मुझे पैदल चलने की आदत नहीं है।"

"यह क्या गोली चलने की आवाज़ है?" मैंने पूछा।

दूर कहीं मुझे गोली चलने-जैसी आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"कह नहीं सकता।" आय्मो ने कहा और कान लगाकर सुनने लगा।

"मैं समझता हूँ कि कहीं गोलियाँ अवश्य चल रहीं हैं।" मैंने कहा।

"यदि शत्रुदल आ रहा होगा, तो सबसे पहली वस्तु जो हमें दिखाई देगी, वह होगी अश्वारोहियों की सेना।" पिआनी बोला।

"मेरे ख़याल से शत्रु के पास अश्वारोही-दल है ही नहीं।"

"ईश्वर करे, ऐसा ही हो।" बोनेलो ने कहा—"मैं किसी अश्वारोही के भाले की नोक पर लटकना नहीं चाहता।"

"आपने तो सचमुच उस सार्जेण्ट पर गोली चला दी, साहब।" पिआनी बोला। हम लोग तीव्र गति से चलते जा रहे थे।

"और मैंने उसे मार डाला—" बोनेलो ने कहा—"मैंने इस युद्ध में

किसी को नहीं मारा था। मेरे जीवन की केवल एक ही साध थी और वह थी, किसी सार्जेण्ट की जान लेना।"

"पर तुमने उसे उस समय मारा, जब वह बेचारा आहत होकर स्थिर पड़ा था!" पिआनी बोला—"तुमने जब गोलियाँ चलायीं, तब वह तेज़ी से भाग थोड़े ही रहा था!"

"तो क्या हुआ। कम-से-कम इस बात पर तो मैं गर्व कर ही सकता हूँ—कि मैंने उस सार्जेण्ट के —को मार डाला।"

"अपने पापों की स्वीकारोक्ति के समय तुम क्या कहोगे?" आयुमो ने पूछा।

"कहूँगा, हे धर्मपिता! मुझे आशीर्वाद दो; क्योंकि मैंने एक सार्जेण्ट को मार डाला है।" हम सब हँस पड़े।

"बोनेलो तो अराजकतावादी है।" पिआनो बोला—"गिरजाघर में भी नहीं जाता यह।"

"पिआनी भी अराजकतावादी है।" बोनेलो ने उत्तर दिया।

"क्या तुम लोग सचमुच अराजकतावादी हो?" मैंने पूछा।

"नहीं, लेफ्टिनेण्ट साहब, हम तो समाजवादी हैं। हम लोग इमोला के रहने वाले हैं।"

"क्या आप कभी वहाँ गये हैं?"

"नहीं।"

"ईश्वर की सौगन्ध, बड़ा सुन्दर स्थान है वह! युद्ध का अन्त होने पर आप वहाँ कभी ज़रूर आइये। हम आपको वहाँ की कुछ विशेषताओं से परिचित करायेंगे।"

"क्या तुम्हारे यहाँ के सभी व्यक्ति समाजवादी हैं?"

"प्रत्येक व्यक्ति।"

"और शहर कैसा है?"

"आश्चर्यजनक! आपने आज तक उस-जैसा शहर नहीं देखा होगा।"

"तुम लोग समाजवादी कैसे बन गये?"

"हम सब हैं ही समाजवादी। हमारे यहाँ का एक-एक बच्चा समाजवादी है। हम लोग हमेशा से ही समाजवादी रहे हैं।"

"आप कभी वहाँ अवश्य आइए, साहब! हम आपको भी समाजवादी बना देंगे।"

सड़क अचानक बायीं ओर मुड़ गई। सामने की ओर एक पहाड़ी थी और उसके आगे थी एक दीवार तथा सेब का बगीचा। सड़क ज्यों ज्यों पहाड़ी पर चढ़ती गयी, त्यों-त्यों हमारी बातचीत कम होती गई और अन्त में बिलकुल बन्द हो गई। हम लोग जल्दी-जल्दी तीव्र गति से भागने वाले समय से मानो होड़ लगाते हुए एक साथ आगे बढ़ते चले गए।

. ३० .

चलते चलते हम एक ऐसे रास्ते पर पहुँचे, जो किसी नदी की ओर जा रहा था। राह पर मोटरों तथा ट्रकों की एक लम्बी कतार थी, जो नदी के पुल तक चली गई थी। पर एक भी आदमी हमें कहीं नहीं दीख पड़ा। नदी में बाढ़ आई थी और उसका पुल बीच से उड़ा दिया गया था। पत्थर का वह कमानीदार पुल टूटकर नदी में गिर गया था और उस पर से मटमैला पानी लहराता हुआ बह रहा था। हम नदी-तट पर पहुँचे और किसी ऐसे स्थान की खोज करने लगे, जहाँ से हम उस पार जा सकें। मुझे मालूम था कि नदी के ऊपर की ओर एक रेलवे पुल था। कदाचित् वहाँ से हम नदी पार कर सकें। रास्ता गीला और कीचड़ से भरा था। हमें वहाँ कोई नहीं दिखाई दिया। केवल मोटरें और ढेर-सा सामान ही वहाँ पड़ा था। नदी-तट पर भी कुछ नहीं था। कुछ झाड़ियों और कीचड़-भरे मैदान को छोड़कर वहाँ दूर तक, किसी मनुष्य की गंध भी नहीं थी। नदी के किनारे-किनारे ऊपर की ओर चलते हुए अन्त में हमें रेल का वह पुल दिखाई दे गया।

"कितना सुन्दर पुल है!" आयूमो ने कहा। इस स्थान पर नदी प्रायः सूख सी गयी थी और उस पर लोहे का एक लम्बा पुल बना था।

"जल्दी करो। शत्रु द्वारा इस पुल के उड़ाए जाने के पहले ही हमें उस पार पहुँच जाना चाहिए।" मैंने कहा।

"पुल उड़ाने के लिए अब यहाँ कोई नहीं है।" पिआनी बोला—"सब लोग यहाँ से जा चुके हैं।"

"इस पर शायद सुरंगें बिछा दी गयी हैं।" बोनेलो ने कहा—"पहले आप पुल पार कीजिए, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

"ज़रा, इस अराजकतावादी की बातें तो सुनो।" आयूमो ने कहा—"पहले इसे ही जाने दीजिए, साहब!"

"नहीं, पहले मैं ही जाता हूँ।" मैंने कहा—"केवल एक आदमी के साथ सारा पुल उड़ा देने के लिए उस पर सुरंगें नहीं बिछायी गयी होंगी।"

"देखा तुमने—" पिआनी बोला—"इसे कहते हैं दिमाग! तुम अराजकतावादियों के दिमाग क्यों नहीं होता?"

"यदि मेरे दिमाग होता, तो मैं आज यहाँ नहीं होता।" बोनेलो ने उत्तर दिया।

"बात तो इन्होंने बड़ी अच्छी कही, साहब!" आयूमो बोला।

"हाँ, है तो अच्छी बात।" मैंने कहा। अब हम पुल के बिलकुल पास पहुँच चुके थे। उधर आकाश में फिर बादल उमड़ आये थे। थोड़ी वर्षा भी आरम्भ हो गई थी। पुल काफ़ी लम्बा और ठोस दिखाई दे रहा था। हम ऊपर की ओर चढ़ने लगे।

"एक पर में एक ही व्यक्ति आओ।" कहते हुए मैं पुल पर आगे बढ़ने लगा। मैंने बिछे हुए तारों अथवा विस्फोटक का पता लगाने के लिए रेल की पटरियों और उनके स्लीपरों को अच्छी तरह देखा; किन्तु मुझे कहीं कुछ नहीं दिखाई दिया। स्लीपरों की संधि के नीचे, कीचड़ से भरी नदी का मटमैला पानी तेज़ी से बह रहा था। वर्षा से नहाये हुए आसपास के इलाके के उस ओर हमारे सामने, पानी में भीगता हुआ यूडाइन नगर दिखायी दे रहा था। पुल पार करने के बाद मैंने पीछे की ओर देखा। नदी के ऊपर की ओर कुछ ही दूर पर एक दूसरा पुल भी था। मैं उसे देख ही रहा था कि इतने में कीचड़ में रंगी पीले रंग की एक मोटर उस पर से निकल गयी। पुल के दोनों किनारे ऊँचे थे, अतः वह मोटर, ऊपर चढ़ते ही पुल के बीच ओझल-सी हो गयी। मैं केवल उसके ड्राइवर तथा उसके साथ बैठे हुए व्यक्ति के सिर देख सका। पीछे की सीट पर बैठे हुए दो अन्य व्यक्तियों के सिर भी मुझे दिखायी दिए। उन सबने लोहे के जर्मन टोप पहन रखे थे। कुछ क्षण बाद ही वह मोटर पुल पार करके एक झलक के साथ पुनः घने वृक्षों के पीछे तथा सड़क पर पड़ी हुई मोटरों की उस लम्बी कतार के बीच गायब हो गई। पुल पार करते हुए आयूमो तथा अन्य साथियों को मैंने जल्दी आने के लिए इशारा किया। फिर मैं नीचे उतरा और पुल के बगल में झुककर बैठ गया। आयूमो भी नीचे आया और मेरे पास ही छिप गया।

"तुमने वह मोटर देखी?" मैंने पूछा।

"नहीं! मैं तो आपको देख रहा था।"

"उस ऊपर के पुल से अभी-अभी जर्मन-सैन्य-कर्मचारियों की मोटर गुज़री है।"

"सैन्य-कर्मचारियों की मोटर?"

"हाँ।"

"तब भगवान् ही मालिक है!"

दूसरे साथी भी आ पहुँचे और हम सबने पुल के नीचे, कीचड़ में, झुककर अपने-आपको छिपाए रखा और पुल पर बिछी हुई रेल की पटरियों, एक कतार में खड़े वृक्ष खाइयों तथा सड़क को देखते रहे।

"आप क्या सोचते हैं? क्या हम मारे जायेंगे?"

"कह नहीं सकता। अभी तो मैं केवल इतना ही जानता हूँ कि उस सड़क पर से जर्मन सैन्य-कर्मचारियों की एक मोटर गयी है।"

"क्या आपको यह सब अजीब-सा नहीं लगता? क्या आपके दिमाग में कोई विचित्र-सी कल्पना नहीं उठती?"

"पागल मत बनो, बोनेलो!"

"हम अगर थोड़ी शराब पी लें, तो कैसा रहेगा?" पिआनी ने कहा—"यदि हमें मरना ही है, तो उसके पहले थोड़ी शराब ही क्यों न पी ले!" उसने अपनी कुप्पी निकाली और उसका ढक्कन खोला।

"देखो! देखो!" कहते हुए आयूमो ने सड़क की ओर इशारा किया। पत्थर के उस पुल पर हमें जर्मनों के लोहे के टोप हिलते दिखाई दे रहे थे। वे आगे की ओर झुके हुए थे और किसी दैवी शक्ति के समान, बड़ी सरलता से पुल पर घूम रहे थे। ज्योंही वे पुल पार करके आगे बढ़े, हमने उन्हें अच्छी तरह देखा। वे सेना के साइकिल सवार-दल के सैनिक थे। मुझे अगले दो व्यक्तियों के चेहरे दिखाई दिये। दोनों व्यक्तियों के चेहरों पर लालिमा थी और वे काफ़ी स्वस्थ दिखाई दे रहे थे। उनके लोहे के टोप उनके चेहरे पर एक ओर कुछ झुके हुए थे। उनकी छोटी बन्दूकें उनकी साइकिलों के डंडों से बँधी हुई थीं। उनके पट्टों से बमगोले लटक रहे थे और उनके लोहे के टोप और भूरी वर्दियाँ वर्षा से भीगी हुई थीं। चारों ओर नज़रें दौड़ाते हुए आराम से वे अपनी साइकिलों पर चले जा रहे थे। सबसे अगली पंक्ति में दो व्यक्ति थे। उसके पीछे की पंक्ति में चार सैनिक थे—फिर उनके पीछे दो और तब क़रीब एक दर्जन सैनिक। इनसे भी पीछे एक दर्जन दूसरे सैनिक थे और सबसे अन्त में केवल एक सैनिक था। वे बिना कुछ बोले, चुपचाप चले जा रहे थे।

किन्तु यदि वे बातें करते भी, तो नदी के वेग से बहने की आवाज़ के कारण हमें उनकी बातचीत न सुनाई देती। धीरे-धीरे वे सड़क पर आगे बढ़ते हुए हमारी आँखो से ओझल हो गये।

"लाख-लाख शुक्र है, तेरा भगवान्!" आयूमो ने कहा।

"वे सब जर्मन थे।" पिआनी बोला—"आस्ट्रियन नहीं थे, समझे!"

"पर उन्हें रोकने के लिए यहाँ कोई है क्यों नहीं?" मैंने कहा—"इस पुल को आख़िर उड़ा क्यों नहीं दिया गया? फिर यहाँ पर मशीनगनें भी नहीं हैं?"

"आप ही बताइए, लेफ्टिनेंट साहब!" बोनेलो ने कहा।

मुझे क्रोध आ गया—"यह बिलकुल पागलपन है। नीचे की ओर हमारी सेना एक छोटा-सा पुल भी उड़ा देती है; किन्तु इस बड़ी सड़क पर इतना बड़ा पुल योंही छोड़ दिया गया। आख़िर सब लोग कहाँ मर गये? क्या शत्रु को रोकने के लिए वे बिलकुल प्रयत्न ही नहीं कर रहे हैं?"

"अब आप ही कहिए, साहब!" बोनेलो ने अपनी बात दुहरायी। मैं चुप हो गया। मुझे इससे क्या लेना देना था। मेरा कार्य तो केवल उन तीनों मोटरों को लेकर पोर्डेनॉन पहुँचना था। अपने इस कार्य में तो मैं असफल हो गया था। अब केवल एक ही कार्य शेष था और वह था स्वयं पोर्डेनॉन पहुँचना। परन्तु वर्तमान स्थिति में कदाचित् यूडाइन पहुँच सकना भी कठिन था। भाग्य की बात थी। इस समय तो एक ही रास्ता था कि हम शान्त बैठे रहें और किसी की गोली का निशाना न बन जायें अथवा शत्रु द्वारा बन्दी न बना लिये जायें!

"क्यों, तुमने कुप्पी नहीं खोली क्या?" मैंने पिआनी से पूछा। उसने मुझे कुप्पी पकड़ा दी। खूब शराब पी लेने के बाद मैं बोला—"हमें अब चल देना चाहिए। वैसे कोई ख़ास जल्दी नहीं है। क्या तुम लोग कुछ खाना चाहते हो?"

"यह स्थान अधिक देर तक ठहरने के उपयुक्त नहीं है।" बोनेलो ने कहा।

"तो फिर हम लोग यहाँ से चल दें।"

"हम लोग इसी बगल से चलें न—छिपते हुए?"

"नहीं, ऊपर से ही चलना ठीक होगा। वे लोग इस पुल पर भी आ सकते हैं। मुझे यह पसंद नहीं कि अचानक ही वे हमारे सिर पर चले आयें और हम उन्हें देख भी न पाएँ।"

हम सब रेल की पटरियों पर आगे बढ़ने गये। दोनों ओर दूर-दूर तक वर्षा से नहाया हुआ मैदान फैला था। सामने ही, मैदान से परे, यूडाइन की पहाड़ी दिखाई दे रही थी। उस पर बने हुए क़िले की छतें गिर चुकी थीं, पर उसका घण्टाघर तथा उसकी मीनार भी हमें दिखायी दे रही थी। खेतों में शहतूत के बहुत-से पेड़ थे। कुछ दूर चलने पर मैंने देखा कि एक जगह रेल की पटरियाँ उखाड़ दी गयी थीं। उनके स्लीपर खोद डाले गये थे और उन्हें रेल-मार्ग से नीचे की ओर फेंक दिया गया था।

"छिप जाओ! छिप जाओ!" आयूमो चिल्लाया। हम लोग उस ऊँचे रेल-मार्ग की बगल में छिप गए। सड़क पर साइकिल-सवार सैनिकों का दूसरा दस्ता जा रहा था। मैंने सिर थोड़ा ऊपर उठाया और उन्हें जाते हुए देखने लगा।

"उन्होंने हमें देख लिया; फिर भी वे चले गए!" आयूमो ने कहा।

"हम अब निश्चय ही मारे जायेंगे, लेफ्टिनेण्ट साहब।" बोनेलो ने कहा।

"उन्हें सम्भवतः हमारी आवश्यकता नहीं है।" मैं बोला—"वे किसी और वस्तु के पीछे पड़े हैं।"

"यदि उन्होंने हमारे ऊपर अचानक आक्रमण कर दिया, तो हम किसी भारी संकट में पड़ जायेंगे।"

"मैं तो यहाँ छिप कर ही चलना पसंद करूँगा।" बोनेलो ने कहा।

"अच्छी बात है। हम लोग इस रेल मार्ग के साथ-साथ चलेंगे।"

"क्या आपको विश्वास है कि हम उनसे बचकर निकल जाएँगे?" आयूमो ने पूछा।

"क्यों नहीं। अभी तक तो वे अधिक तादाद में यहाँ नहीं दिखायी देते हैं। अंधेरे में छिपते-छिपाते हम पार लग ही जायेंगे।"

"सैन्य-कर्मचारियों की वह मोटर यहाँ क्या करने आयी थी?"

"ईश्वर ही जाने!" मैंने कहा और हम रेल मार्ग पर बढ़ते गए। बोनेलो रेल-मार्ग के टीले के पीछे छिपता-छिपता बढ़ रहा था। पर कीचड़ में चलते-चलते वह अंततः थक गया और आकर हम लोगों के साथ चलने लगा। रेल-मार्ग अब दक्षिण की ओर, बड़ी सड़क से धीरे-धीरे दूर होता जा रहा था। अतः सड़क पर आने-जानेवालों को हम साफ़-साफ़ नहीं देख पा रहे थे। हमारे रास्ते में पड़नेवाली नहर के ऊपर बनाया हुआ एक छोटा-सा पुल उड़ा दिया गया था; किन्तु उसके बाँध के अवशेषों के सहारे हमने उसे पार कर लिया। सामने की ओर अब हमें गोलियाँ चलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

नहर पार करने पर हम पुनः रेल मार्ग पर चले आये। अब हम खेतों के बीच से होते हुए सीधे शहर की ओर जा रहे थे। सामने ही हमें एक दूसरा रेल-मार्ग दिखाई दिया। उत्तर की ओर हमें वह बड़ी सड़क भी दीख पड़ी, जिस पर हमने उन साइकिल-सवारों को देखा था। दक्षिण में, खेतों के पार, दोनों ओर घने वृक्षों से घिरा हुआ एक छोटा सा उपमार्ग था। दक्षिण की ओर मुड़कर, शहर का चक्कर लगाते हुए उस रास्ते पर आगे बढ़ना ही मैंने ज्यादा अच्छा समझा। उसी मार्ग से आगे के इलाके को पार करते हुए, हम कैम्पो-फ़ोर्मिओ की ओर चल देते और तब बड़ी सड़क पकड़कर सीधे टेंग्लिआमेण्टो पहुँच जाते। यूड्राइन पार करने के बाद उपमार्गों के सहारे हम अपनी पीछे हटनेवाली सेना के उस लम्बे क़ाफ़िले से बच सकते थे। मैं जानता था कि उस प्रदेश में बहुत से उपमार्ग थे। अतः यह ख़याल आते ही मैं रेल-मार्ग के टीले से नीचे उतरने लगा।

"मेरे पीछे चले आओ।" मैं बोला—"हम लोग उस उपमार्ग द्वारा शहर के दक्षिण की ओर चलेंगे।" पर हम रेल-मार्ग से नीचे उतर कर आगे बढ़े ही थे कि उधर से किसी ने हम पर गोली चलायी। गोली रेल-मार्ग के टीले की कीचड में आकर धँस गई।

"पीछे लौट जाओ।" मैं चिल्लाया और वापस टीले पर चढ़ने लगा, किन्तु कीचड़ में फिसल पड़ा। वे तीनों मेरे आगे थे। किसी तरह जल्दी-जल्दी मैं ऊपर चढ़ा। घनी झाड़ियों से दो गोलियाँ छूटीं—रेल की पटरियाँ पार करता हुआ आयूमो अचानक झुका और उछलते हुए, मुँह के बल गिर पड़ा। हमने उसे नीचे की ओर खींच कर सीधा कर दिया।

"इसका सिर टीले के सहारे ऊपर की ओर रखो।" मैंने कहा। पिआनी ने उसे घुमाया। अभागा आयूमो टीले के एक ओर कीचड़ में पड़ा था। उसके पैर नीचे लटक रहे थे। साँस लेते समय बीच-बीच में उसके मुख से रक्त निकल पड़ता था। वर्षा हो रही थी, अतः हम तीनों व्यक्तियों ने एक-दूसरे से सटकर उसके ऊपर थोड़ी छाया कर दी। उसके गले के पिछले हिस्से में, नीचे की ओर, गोली लगी थी और भीतर धँसती हुई दाहिनी आँख के नीचे से बाहर निकल गयी थी। जब मै गोली द्वारा बने उन दोनों छिद्रों को बन्द करने की कोशिश कर रहा था, तभी वह मर गया; पिआनी ने उसका सिर नीचे लिटा दिया। संकट काल में काम आनेवाली पट्टी के टुकड़े से उसके मुख को पोंछा और उसे वहीं लिटा दिया।

"हरामखोर कहीं के!" उस गोली चलानेवाले को सम्बोधित कर जैसे वह बड़बड़ाया।

"वे जर्मन तो नहीं थे।" मैंने कहा—"यहाँ कोई जर्मन नहीं आ सकता।"

"नहीं इटालियन थे!" 'इटालियन' शब्द का किसी उपाधि के रूप में प्रयोग करते हुए पिआनी ने कहा—"इटालियन थे बेचारे!" बोनेलो कुछ नहीं बोला। वह आयूमो की मृत देह के पास बैठा था। आयूमो की ओर देखने का भी साहस उसमें नहीं था। टीले के नीचे गिरी हुई आयूमो की टोपी उठाकर पिआनी ने उससे उसका मुँह ढँक दिया। फिर उसने उसकी कुप्पी निकाल ली।

"शराब पीओगे?" कुप्पी बोनेलो की ओर बढ़ाते हुए पिआनी ने पूछा।

"ना!" बोनेलो ने उत्तर दिया। वह मेरी ओर मुड़ा—"रेल-मार्ग पर ऐसी घटना हमारे साथ कभी भी घट सकती थी।"

"नहीं।" मैं बोला—"यह तो इसलिए हुआ कि हम खेत पार कर रहे थे।"

बोनेलो ने अपना सिर हिलाया—"आयूमो मर गया।" वह बोला—"अब किसकी बारी है, साहब? अब हम किस ओर जायेंगे?"

"जिन्होंने आयूमो को मारा है, वे इटालियन ही थे।" मैं बोला—"वे जर्मन नही थे।"

"मेरा अनुमान है कि यदि वे जर्मन होते, तो हम सबको मार डालते।" बोनेलो ने कहा।

"जर्मनों की अपेक्षा इटालियनों की ओर से हमें अधिक खतरा है।" मैं बोला।

"पिछली पंक्तियों के रक्षक-सैनिक किसी भी चीज़ से डर जाते हैं। किन्तु जर्मन लोग अपने लक्ष्य को अच्छी तरह जानते हैं।"

"यह तो आपका तर्क है, लेफ्टिनेण्ट साहब!" बोनेलो ने कहा।

"अब हमें किस ओर जाना है?" पिआनी ने पूछा।

"अच्छा हो, यदि हम अंधेरा होने तक कहीं छिपे रहें। फिर यदि हम दक्षिण की ओर जा सकें, तो सुरक्षित रहेंगे।"

"यह सिद्ध करने के लिए कि उनका पहले व्यक्ति को मारना उचित था, वे हम सब को मार डालेंगे।" बोनेलो ने कहा—"और मैं इस विषय में उनकी परीक्षा नहीं लेना चाहता।"

"छिप कर रहने के लिए हम यूडाइन के जितने पास हो सकेगा, किसी स्थान की खोज करेंगे और अंधेरा होते ही हम वहाँ से आगे चल देंगे।"

"तब हमें यहाँ से चल देना चाहिए।" बोनेलो ने कहा। हम उस ऊँचे रेल-मार्ग के उत्तर की ओर नीचे उतरने लगे। आयूमो टीले के कोने में, कीचड़ में लथपथ पड़ा था। वह बहुत छोटा दीख रहा था। उसके हाथ एक ओर लटक गये थे। उसके पैरों में पट्टियाँ लिपटी थीं और उन पर पहने गये जूते कीचड़ में सन गये थे। उसका टोप उसके मुख पर खिसक आया था। वह दूर से ही बिलकुल मुर्दा दिखायी दे रहा था। इधर वर्षा हो रही थी। अपने जीवन में जिन व्यक्तियों से मैं स्नेह करता था, उनमें से आयूमो भी एक था। मैं उससे उतना ही स्नेह करता था, जितना अपने किसी अन्य घनिष्ठ मित्र से। उसके परिचय-पत्र आदि मेरी जेब में थे। मैं उस अभागे की मृत्यु के विषय में उसके घर पत्र लिखनेवाला था।

खेतों के पार, सामने की दिशा में एक घर था—किसी किसान का घर, जिसके आसपास वृक्षों का घेरा था। उस घर के सामने कुछ और घर थे। घर की दूसरी मंज़िल पर खंभों के सहारे टिका हुआ एक बरामदा था।

"हम एक-दूसरे से कुछ फ़ासले पर चलें, तो ठीक रहेगा।" मैं बोला—"मैं आगे-आगे चलता हूँ।" खेतों के निकट बने उस घर की ओर मैं चला। खेत के ठीक बीच से एक पगडण्डी गयी थी।

खेत को पार करता हुआ मैं उस घर की ओर बढ़ा जा रहा था। सिर्फ़ इस बात को छोड़कर कि कहीं उस घर के भीतर से अथवा उसके आसपास खड़े उन वृक्षों की ओट से कोई हम पर गोली न चला दे, और कोई विचार मेरे मन में नहीं उठ रहा था। घर पर नज़र गड़ाये मैं उस ओर बढ़ता गया। दूसरी मंज़िल पर का बरामदा कोठार से जाकर मिल जाता था। खम्भों के बीच से भूसा उड़कर अभी भी बाहर आ रहा था। आगन में पत्थर का फ़र्श था और वृक्षों से वर्षा की बूंदें टपक रही थीं। वहीं दो पहियोंवाली एक गाड़ी भी खड़ी थी। उसके धुरे बर्फ़-वर्षा में ऊपर की ओर उठ गए थे। मैं आँगन में आ पहुँचा, उसे पार किया और बरामदे के नीचे जाकर खड़ा हो गया। घर का द्वार खुला हुआ था। मैं अंदर घुसा और मेरे पीछे-पीछे बोनेलो और पिआनी भी आ गये। भीतर अंधेरा था। मै पीछे की ओर रसोईघर में पहुँचा। वहाँ एक बड़े-से चूल्हे में राख पड़ी थी। राख के ऊपर बर्तन पड़े थे; किन्तु वे सब खाली थे। मैंने चारों ओर तलाश की; किन्तु खाने योग्य कोई चीज़ मुझे वहाँ नहीं मिली।

"हमें कोठार में चलकर आराम करना चाहिए।" मैंने कहा—

"क्यों पिआनी, क्या तुम कहीं से खाने-पीने की कुछ चीज़ें खोज-खाज कर ला सकोगे ?"

"मैं तलाश करता हूँ।" पिआनी ने कहा।

"मैं भी तलाश करता हूँ।" बोनेला ने कहा।

"अच्छी बात है।" मैं बोला—"तब तक मैं ऊपर जाकर कोठार में देखता हूँ।" मैंने ऊपर जाने के लिए सीढ़ियों का पता लगाया। नीचे बाड़े में मुझे ऊपर जाने के लिए पत्थर की सीढ़ियाँ मिल गईं। वर्षा के बीच, जानवर बाँधने के उस बाड़े की सूखी ज़मीन से उठनेवाली गंध बड़ी सुखद लगी। बाड़ा सूना था—कहीं कोई मवेशी नहीं। घर के मालिक ने घर छोड़ते समय कदाचित् मवेशियों को भगा दिया था। कोठार के आधे भाग में भूसा भरा था और उसकी छत में दो खिड़कियाँ बनी थीं। उनमें से एक को लकड़ी के पटियों द्वारा बन्द कर दिया गया था। दूसरी खिड़की उत्तर की ओर, छत की ढलान में, थी। वह बहुत संकरी थी। कोठे में एक नाली भी बनी थी, जिससे जानवरों के लिए वहीं से नीचे की ओर भूसा पहुँचाया जा सके। कोठार के फ़र्श की खुली जगह से होती हुई, लकड़ी की बड़ी धरन नीचे ज़मीन के भीतर तक चली गयी थीं। जब नीचे घास से लदी हुई गाड़ियाँ आती थीं, तब उस धरन के सहारे गाड़ियों में से भूसा ऊपर खींच लिया जाता था और उसे कोठार में जमा कर दिया जाता था। मुझे छत पर गिरती हुई पानी की बूंदों का स्वर सुनायी दिया। मैंने भूसे से उठती हुई गंध भी अनुभव की। जब मैं नीचे उतरा, तो बाड़े में सूखे हुए गोबर की गंध भी स्पष्ट रूप से व्याप्त थी। दक्षिण की ओर की खिड़की से एक पटिया निकाल देने के बाद हम उससे होकर सीधे आँगन में उतर सकते थे। दूसरी खिड़की उत्तर में, खेत की ओर खुलती थी। सीढ़ियों का रास्ता काम में आने लायक न रहने पर हम किसी भी खिड़की द्वारा छत पर पहुँचकर नीचे उतर सकते थे अथवा भूसा नीचे पहुँचाने की नाली से भी नीचे पहुँचा जा सकता था। कोठार बहुत बड़ा था, अतः यदि कोई वहाँ आया भी या किसी के आने की आहट सुनायी दी, तो हम भूसे के ढेर में छिप सकते थे। हर प्रकार से वह स्थान उपयुक्त प्रतीत होता था। मुझे विश्वास था कि यदि हम पर गोली न चलाई गई होती, तो हम उस प्रदेश को पार करते हुए दक्षिण की ओर निकल जाते। उस क्षेत्र में जर्मनों की उपस्थिति बिलकुल असम्भव थी। वे तो उत्तर दिशा में सिविडेल होकर इस ओर आ रहे थे। दक्षिण की ओर से वे निश्चित रूप से नहीं आ सकते थे। वास्तव में, इटालियन सैनिक ही

उनकी अपेक्षा अधिक ख़तरनाक थे। वे डर जाते थे और जिसे देखते, उसी पर गोली चला देते थे। पिछली रात, सैन्य-दल के साथ चलते हुए हमने सुना था कि उत्तर की ओर, जो सैन्य-दल पीछे हट रहे थे, उनके साथ इटालियन सैनिकों के वेश में बहुत-से जर्मन भी मिल गए थे। मुझे इस पर विश्वास नहीं था। युद्ध-काल में ऐसी बातें हमेशा सुनाई देती थीं—ऐसी अफ़वाहें शत्रु द्वारा हमेशा फैलायी जाती थीं। पर यह सुनने में कभी नहीं आता था कि विपक्षी दल के किसी सैनिक ने जर्मन पोशाक पहन कर जर्मनों को धोखा दिया हो! हो सकता है, जर्मनों ने ऐसा किया हो। फिर भी ऐसा करना था कठिन। मुझे तनिक भी विश्वास नहीं था कि जर्मनों ने ऐसा किया होगा। मेरी समझ से उन्हें ऐसा करने की कोई आवश्यकता भी नहीं थी। पीछे हटने वाली हमारी सेनाओं को भ्रम में डालने की उन्हें भला क्या ज़रूरत थी! यह सब गड़बड़ी तो रास्तों की कमी तथा बहुत बड़ी सेना होने के कारण ही हुई थी। जर्मनों की बात तो अलग है, हमारी ओर से किसीने ऐसा कोई आदेश नहीं दिया था। फिर भी, हममें से बहुत-से व्यक्तियों को, सिर्फ़ जर्मन होने के शक पर मार डाला जाता था। आयुनो को भी इसी लिए गोली मारी गयी थी।

सूखे घास की गंध बड़ी भली लग रही थी। कोठार में भूसे पर लेटा मैं कुछ ही देर में अपने-आपको वर्तमान से न-जाने कितने वर्ष पीछे खींच चुका था। पुरानी स्मृतियाँ सजग हो उठीं—हम घास पर पड़े हुए हैं—कोठार की दीवार के कोनों में, छत के निकट चिड़ियों ने घोंसले बना रखे हैं—अपनी हवाई बन्दूक से हम चिड़ियों को मार रहे हैं—कोठार अब नष्ट हो चुका है—हैम-लॉक के पेड़ भी काट डाले गए हैं—अब केवल उनके ठूंठ बचे हैं—वृक्षों के ऊपरी हिस्से सूख चुके हैं—हरे-भरे वन के स्थान पर शेष बच रहे हैं केवल वे ही ठूंठ, वृक्षों के सूखे हुए ऊपरी भाग—डालियाँ—और जलाने के योग्य घास-पात तथा टहनियाँ। किन्तु कोई पीछे कैसे जा सकता है? मनुष्य वर्षों पीछे नहीं लौट सकता, तब? तब वह आगे जाता है? आगे? हाँ—और यदि कोई आगे न जा सका, तब? तब क्या होगा? न आगे, न पीछे—मैं पीछे—मिलान नहीं जा सकता। और यदि मिलान चला गया तो? क्या होगा तब? अचानक विचारों की कड़ी टूट गई। मैंने उत्तर की ओर यूडाइन के निकट गोली चलने की आवाज़ सुनी। मशीनगनों के चलने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। हाँ, बमबारी नहीं हो रही थी, यही थोड़े संतोष की बात थी। शायद सड़क पर दो सैन्य-टुकड़ियों में मुठभेड़ हो गई थी। तभी घास-भूसे

से आधे भरे हुए कोठार के धुँधले प्रकाश में मैंने देखा कि नीचे के उस स्थान पर, जहाँ से घास ऊपर चढ़ाया जाता था, पिआनी खड़ा था। उसके हाथों में मसालेदार मांस का एक लम्बा गोल डिब्बा और साथ ही किसी अन्य वस्तु से भग हुआ एक पात्र था। वह अपनी बगल में शराब की दो बोतलें भी दबाये था।

"ऊपर आ जाओ।" मैंने कहा—"सीढ़ी लगी है, उसी से आ जाओ।" पर तभी मैंने अनुभव किया कि उसके हाथो में बहुत-सी वस्तुएँ हैं और मुझे उसकी सहायता करनी चाहिए। मैं नीचे उतर आया। भूसे पर पड़े-पड़े मेरा मन बड़ा अस्थिर हो उठा था। वस्तुतः मैं एक प्रकार से अर्द्ध निद्रावस्था में वहाँ लेटा था।

"बोनेलो कहाँ है?" मैंने पूछा।

"ज़रा ठहरिये बताता हूँ।" पिआनी ने उत्तर दिया। हम सीढ़ी के सहारे ऊपर चढ़ गये। भूसे के ढेर पर हमने सब वस्तुएँ रख दीं। पिआनी ने डाट खोलने के पेंच सहित अपना चाकू निकाला और शराब की बोतल का डाट खोलने लगा।

"इस पर मोम लगा दिया गया है।" उसने कहा—"शराब अच्छी होनी चाहिए।" वह मुस्कराया।

"बोनेलो कहाँ है?" मैंने फिर पूछा।

पिआनी ने मेरी ओर देखा।

"वह चला गया, साहब।" उसने कहा—"वह युद्ध-कैदी बनना चाहता था।"

उत्तर में मैंने कुछ नहीं कहा।

"उसे भय था कि हम सब मार डाले जायेंगे।"

शराब की बोतल हाथ में पकड़े हुए मैं चुपचाप बैठा रहा।

"और आप तो जानते ही हैं कि हम लोग युद्ध में विश्वास नहीं करते, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

"तब तुम क्यों नहीं गए?" मैंने पूछा।

"मैं आपको अकेला नहीं छोड़ना चाहता।"

"किस ओर गया है वह?"

"मालूम नहीं। बस, वह चला गया।"

"खैर, छोड़ो।" मैं बोला—"क्या तुम मांस का टुकड़ा काटोगे?" पिआनी ने उस धुँधलके में मेरी ओर चकित नेत्रों से देखा।

"उसे तो जब हम बातें कर रहे थे, तभी मैंने काट लिया।" वह बोला। हम वहीं बैठ गये और मसालेदार मास का टुकड़ा चबाते हुए शराब पीने लगे। ऐसा प्रतीत होता था कि घर के लोगों ने वह शराब किसी शादी के लिए बचाकर रखी होगी। वह इतनी पुरानी पड़ गई थी कि उसका रंग तक उड़ रहा था।

"लुइजी! तुम इस खिड़की से बाहर देखो—" मैंने कहा—"मैं दूसरी खिड़की से बाहर देखता हूँ।"

हम लोग अलग-अलग बोतलों से शराब पी रहे थे। मैंने अपनी बोतल ली, खिड़की की ओर गया और घास पर चित लेटते हुए, खिड़की से बाहर वर्षा में सराबोर प्रदेश को देखने लगा। मै कह नहीं सकता कि क्या देखने की आशा से मैं बाहर झाँक रहा था; किन्तु यह सत्य है कि लम्बे-चौड़े खेतों, पत्र-विहीन शहतूत के वृक्षों तथा बरसात के सिवा मुझे और कुछ नहीं दिखाई दिया। मैने शराब खत्म कर दी; किन्तु उससे मुझे कोई लाभ नहीं हुआ—मैंने स्वयं को तनिक भी स्वस्थ नहीं अनुभव किया। घर के मालिक ने उसे बहुत दिनों तक सँजो रखा था। वह बिलकुल बेकार हो गयी थी और उसका स्वाद तथा रंग दोनों नष्ट हो चुके थे। बाहर, बढ़ते हुए अन्धकार को, मै निहारता रहा। वह बड़ी तेज़ी से बढ़ता जा रहा था। मुझे विश्वास हो गया कि रात में ज़ोरो की बारिश होगी ओर घना-काला अंधेरा छाया रहेगा। अंधेरा बढ़ने के बाद बाहर देखना व्यर्थ था, अतः मैं पिआनी के पास पहुँचा। वह सो रहा था। मैंने उसे जगाया नहीं। थोड़ी देर उसी के पास बैठा रहा। वह एक स्वस्थ और भरा-पूरा मनुष्य था—नींद भी गहरी ले रहा था। कुछ समय बीतने पर मैंने उसे जगाया और हम चल पड़े।

वह रात्रि भी बड़ी अद्भुत थी। मैं नहीं कह सकता कि उस गहन निशा से मैंने क्या आशा की थी—मृत्यु की आशा? अन्धकार में गोलियो का निशाना बनने की आशा! या आहत होकर भागने की आशा!! किन्तु हुआ कुछ नहीं। रास्ते में, बड़ी सड़क पर जाता हुआ एक जर्मन सैन्य-दल हमें दिखायी पड़ा। और जब तक वह आगे नहीं निकल गया, हम खाई के उस पार, धरती पर चुपचाप लेटे रहे। जब वे चले गए, तब हमने सड़क पार की और उत्तर की ओर बढ़ने लगे। बरसते हुए पानी में दो बार हम उस जर्मन सैन्य दल के बिलकुल पास जा पहुँचे; किन्तु उन्होंने हमें नहीं देखा। राह में हमें एक भी इटालियन नहीं मिला। हमने शहर पार कर लिया और थोड़ी

दूर जाने पर पीछे हटनेवाले सैन्य-दल की एक लम्बी कतार में मिल गये। रात भर हम टैग्लिआमेण्टो की ओर बढ़ते रहे। अभी तक मैंने यह ख़याल नहीं किया था कि हम कितनी बड़ी तादाद में पीछे हट रहे थे। सेना तो पीछे हट ही रही थी; साथ ही सारा देश भी पीछे हट रहा था। सारी रात हम चलते रहे। हमारी गति सेना के साथ चलनेवाली गाड़ियों की अपेक्षा तेज़ थी। मेरे पैर दुख रहे थे, मैं थक चुका था; किन्तु हम लोग तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। बोनेलो का युद्ध-कैदी बन जाने का निश्चय मुझे बड़ा मूर्खतापूर्ण प्रतीत हो रहा था। भय की तो कोई बात ही नहीं थी। बिना किसी विशेष घटना के हम दो सैन्य-दलों को पार कर चुके थे। यदि आयूमो न मारा जाता, तो हमें कभी किसी प्रकार के भय का आभास ही नहीं मिलता। रेल-मार्ग पर चलते हुए जब हम स्पष्टतः दूसरों की दृष्टि में आ सकने की स्थिति में थे, तब भी हमें किसी ने कुछ नहीं कहा था। आयूमो तो अचानक और अकारण ही मार डाला गया था। किन्तु इन सबके बावजूद बोनेलो चला गया था। इस समय वह कहाँ होगा भला?

"कैसा लग रहा है, साहब?" पिआनी ने पूछा। हम मोटरों-ट्रकों और सैन्य-टुकड़ियों से ठसाठस भरे रास्ते पर चल रहे थे।

"ठीक ही है।" मैंने उत्तर दिया।

"मैं तो इस तरह चलने से तंग आ गया हूँ।"

"पर इस समय तो हमारे सामने केवल एक ही मार्ग है—और वह है चलना। हमें अब कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

"बोनेलो बड़ा मूर्ख था।"

"निश्चय ही, पूरा मूर्ख था वह।"

"आप उसके विषय में क्या कार्यवाही करेंगे, साहब?"

"कह नहीं सकता।"

"क्या आप उसके विषय में यह नहीं लिख सकते कि वह शत्रुओं द्वारा बन्दी बना लिया गया?"

"अभी कैसे कुछ कहूँ।"

"यदि युद्ध चलता रहा, तो अधिकारी-वर्ग उसके परिवार को बड़ा कष्ट देगा।"

"युद्ध नहीं चलेगा अब।" एक सैनिक बोला—"हम सब लोग घर वापस जा रहे हैं। युद्ध समाप्त हो चुका है।"

"हर व्यक्ति घर लौट रहा है।"

"हम सभी घर लौट रहे हैं।"

"इधर आइए, लेफ्टिनेण्ट साहब!" पिआनी ने कहा। वह उन सैनिकों से आगे निकल जाना चाहता था।

"लेफ्टिनेण्ट? कौन है लेफ्टिनेण्ट? अफ़सरों का नाश हो! अफ़सर मुर्दाबाद!"

पिआनी ने मेरा हाथ पकड़ लिया। "अच्छा हो, यदि मैं आपको आपका नाम लेकर पुकारूँ।" उसने कहा—"हो सकता है, ये लोग व्यर्थ ही कुछ बवण्डर खड़ा कर दें। इन्होंने कुछ अफ़सरों को मार भी डाला है।" हम जल्दी-जल्दी उनसे आगे निकल गए।

"मैं बोनेलो के विषय में ऐसी कोई बात नहीं लिखूँगा, जिससे उसका परिवार संकट में पड़े।" मैंने अपनी बातचीत जारी रखते हुए कहा।

"यदि युद्ध का अन्त हो गया है, तब तो कुछ भी लिखिये—कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा।" पिआनी बोला—"किन्तु मुझे विश्वास नहीं है कि युद्ध बन्द हो गया है। कितना अच्छा हो, यदि वह वास्तव में बन्द हो जाए।"

"बन्द हो गया या नहीं, यह शीघ्र ही मालूम हो जायेगा।" मैंने कहा।

"सभी यह सोचते हैं कि उसका अन्त हो गया है; किन्तु मुझे भरोसा नहीं होता—मैं नहीं विश्वास करता इस पर।"

"शान्ति अमर हो!" एक सैनिक चिल्लाया—"हम घर जा रहे हैं।"

"यदि हम सब घर लौट गये, तो बड़ा अच्छा होगा।" पिआनी बोला—"क्या आप घर नहीं जाना चाहते?"

"क्यों नहीं!"

"किन्तु हम नहीं जा सकेंगे—कभी नहीं जा सकेंगे। मैं नहीं समझता कि लड़ाई खत्म हो गयी है।"

"अपने-अपने घरों को लौट चलो, दोस्तो!" कोई सैनिक चिल्लाया।

"देखिये, ये लोग अपनी राइफलें फेंक रहे हैं।" पिआनी बोला—"सेना के साथ चलते-चलते कंधों पर से राइफलें उतार लेते हैं और उन्हें चुपचाप धरती पर डाल देते हैं। फिर वे इसी प्रकार चिल्लाते हैं।"

"उन्हें अपनी राइफलें अपने साथ रखनी चाहिए।"

"उनकी धारणा है कि यदि वे अपनी राइफलें फेंक देंगे, तो उन्हें कोई लड़ने पर बाध्य नहीं कर सकेगा।"

अन्धकार और वर्षा के बीच, सड़क के एक ओर से, अपनी राह बनाते हुए हम लोग आगे बढ़ रहे थे। बीच-बीच में सैनिकों पर दृष्टि डालते हुए हमने देखा कि उनमें से अभी भी बहुत-से सैनिकों के पास राइफलें मौजूद थीं। वे उनके लबादों पर लटकी हुई थीं।

"तुम किस सैन्य दल के हो?" एक अफ़सर ने किसी को आवाज़ दी।

"शान्तिदल के।" कोई चिल्लाया—"शान्तिदल के हैं हम!"

अफ़सर ने कुछ नहीं कहा।

"यह क्या चिल्ला रहा है? और वह अफ़सर क्या कहता है?"

"अफ़सरों का नाश हो! शान्ति अमर रहे।"

"चलिए, चलिए।" पिआनी बोला। गाड़ियों के उस समूह में परित्यक्त-सी दो ब्रिटिश एम्बुलेन्स को पीछे छोड़ते हुए हम आगे बढ़ गये।

"ये एम्बुलेन्स गोरीज़िया से आ रही हैं।" पिआनी ने कहा—"मैं इन मोटरों को पहचानता हूँ।"

"ये तो हमसे भी आगे निकल आये थे।"

"वहाँ से ये चले भी हमसे पहले थे।"

"पर इन मोटरों के ड्राइवर कहाँ गये?"

"शायद आगे हों।"

"यूडाइन के बाहरी क्षेत्र में जर्मन सेना ठहरी है।" मैंने कहा।

"ये लोग भी नदी पार कर जायेंगे।"

"हाँ।" पिआनी बोला—"इसीलिए तो मैं सोचता हूँ कि युद्ध ज़रूर होगा।"

"जर्मन तो यहाँ भी आ सकते थे—" मैं बोला—"आश्चर्य है कि वे यहाँ आकर हम पर हमला क्यों नहीं करते!"

"मैं क्या बताऊँ! इस प्रकार के युद्ध के विषय में मैं कुछ नहीं जानता हूँ।"

"मेरा खयाल है कि वे शायद अपनी गाड़ियों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"मालूम नहीं।" पिआनी ने उत्तर दिया। अकेले में वह बड़ी नम्रता से बातें करता था; किन्तु जब वह दूसरों के साथ होता था, तो उसकी बातें बड़ी रूखी हुआ करती थीं।

"तुम विवाहित हो, लुइजी?"

"जी हाँ, मैं विवाहित हूँ।"

"क्या इसीलिए तुम युद्ध-कैदी नहीं बनना चाहते थे?"

"हाँ, यह भी एक कारण था। क्या आपकी भी शादी हो चुकी है, लेफ्टिनेण्ट साहब?"

"नहीं।"

"बोनेलो की भी नहीं हुई है।"

"आदमी के विवाहित होने से ही तुम उसके विषय में कोई धारणा नहीं बना सकते। किन्तु जहाँ तक मेरा खयाल है, एक विवाहित मनुष्य हमेशा अपनी पत्नी के पास लौट जाना पसंद करेगा।" पत्नियों के सम्बन्ध में बातचीत करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही थी।

"आप सच कहते हैं।"

"तुम्हारे पैर कैसे हैं अब?"

"काफ़ी दुख रहे हैं।"

सूर्य का प्रकाश फैलने से पहले हम टैग्लिआमेण्टो के तट पर पहुँच गए। नदी में बाढ़ आई थी। किनारे-किनारे चलते हुए हम लोग उस पुल पर पहुँचे, जहाँ से समस्त सैन्य-दल नदी पार कर रहा था।

"हमारी सेना को इस नदी पर अपना अधिकार बनाए रखना चाहिए।" पिआनी ने कहा। अंधेरे में नदी की बाढ़ बहुत ऊँची और भयावह दिखायी दे रही थी। पानी की धारा चौड़ी थी और उसमें भँवरें पड़ रही थीं। लकड़ी का वह पुल नदी के एक तट से दूसरे तट तक प्रायः पौन मील लम्बा था। नदी का पानी, जो चौड़े ककरीले पाट के बीच सामान्यतः संकरी धाराओं के रूप में पुल से बहुत नीचे बहा करता था, अब पुल के निचले हिस्से को स्पर्श कर रहा था। तट पर चलते हुए, पुल पार करनेवाले समूह के बीच हम अपना मार्ग बनाते गए। बरसते पानी में, बाढ़ के पानी की सतह से केवल कुछ फुट ऊपर, भीड़ में पिसते हुए, हम बिलकुल धीमी गति से नदी पार कर रहे थे। हमारे आगे तोपखाने की बारूद का एक भारी सन्दूक जा रहा था। एक ओर गर्दन घुमाकर मैंने नदी की ओर देखा। उस भीड़ में अपनी इच्छानुसार चलना सम्भव नहीं था, अतः मुझे बड़ी थकान मालूम होने लगी। पुल पार करने में कोई उत्साह नहीं हो रहा था। मैं सोच रहा था कि दिन निकलने पर यदि पुल पार करते हुए, इस विशाल सैन्य समूह पर यहीं किसी हवाई जहाज ने बमबारी कर दी, तो क्या परिणाम होगा? उसकी कल्पना-मात्र से ही मैं सिहर उठा।

"पिआनी!" मैंने पुकारा।

"मैं यहाँ हूँ, लेफ्टिनेण्ट साहब!" उत्तर मिला। भीड़ की रेल-पेल में वह

मुझसे कुछ आगे पहुँच गया था। सब मौन थे। कोई किसीसे बात नहीं कर रहा था। सबको केवल उस पार पहुँचने की चिन्ता थी। उसी चिन्ता में खोये वे यथाशीघ्र आगे निकल जाने का प्रयत्न कर रहे थे। हम पुल प्रायः पार कर चुके थे। पुल के अंतिम छोर पर दोनों तरफ़ फौज़ी अफ़सर और कारबाइन-दल के सैनिक खड़े थे। वे पुल पार करते हुए इस सैन्य-दल पर प्रकाश-किरणें फेंक रहे थे। क्षितिज के विरुद्ध उनकी लम्बी प्रतिच्छायाएँ हमें दिखाई दे रही थीं। ज्योंही हम उनके पास पहुँचे, त्योंही मैंने एक अफ़सर को सामने की सैन्य-पंक्ति के एक सैनिक की ओर संकेत करते हुए देखा। कारबाइन-दल का एक सैनिक उस सैनिक की ओर गया और उसकी बाँह पकड़कर उसे बाहर खींच लाया। वह उसे सड़क से दूर ले गया। हम लोग भी तब तक उन अफ़सरों और कारबाइन-दल के सैनिकों के अधिक समीप आ गये। वे लोग सैन्यदल के प्रत्येक सैनिक की जाँच कर रहे थे। कभी-कभी वे आपस में बातचीत भी करने लगते; कभी बत्ती के प्रकाश में किसी सैनिक का चेहरा देखने लगते। उनसे हमारा सामना होने के क्षणभर पहले ही उन्होंने एक और व्यक्ति को पंक्ति से बाहर खींचा। वह व्यक्ति एक लेफ्टिनेण्ट-कर्नल था। ज्योंही उस पर बत्ती का प्रकाश फेंका गया, त्योंही मैंने देखा कि उसकी बाँह पर सितारे लगे हुए थे। उसके सिर के बाल सफ़ेद हो चले थे। वह ठिगना और मोटा था। कारबाइन-दल के सैनिकों ने उसे अफ़सरों की पंक्ति के पीछे ले जाकर खड़ा कर दिया। जब मैं उनके सामने पहुँचा, तो उन अफ़सरों में से कुछेक ने मेरी ओर देखा। तब एक अफ़सर ने मेरी ओर संकेत करते हुए आदेश दिया। मैंने देखा कि कारबाइन-दल का एक सैनिक मेरी ओर आ रहा है। वह कतार के बीच से होता हुआ, मेरे पास आया और मेरी गर्दन पकड़कर खींचने लगा।

"क्या हो गया है तुम्हें? पागल हो क्या?" कहते हुए मैंने उसके मुँह पर कस कर प्रहार किया। उसके टोप के भीतर छिपा हुआ मैंने उसका मुँह देखा। उसकी मूँछें ऊपर उठी हुई थीं और उसके गाल से खून बह रहा था। यह देखकर मेरी ओर उसी दल का दूसरा सैनिक दौड़ा।

"बात क्या है आखिर?" मैंने पूछा; पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह मुझ पर जैसे झपट्टा मारने की ताक में था। मैंने अपनी पिस्तौल निकालने के लिए अपना हाथ पीछे किया।

"क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम किसी अफ़सर को हाथ नहीं लगा सकते?"

इतने ही में कारबाइन-दल के उस दूसरे सैनिक ने मुझे पीछे से कसकर पकड़ लिया। उसने मेरी भुजा ऊपर की ओर खींचकर ऐंठ दी, जिससे वह कंधे के पास से मुड़-सी गई। मैं उसकी ओर घूमा ही था कि एक अन्य कारबाइन-सैनिक ने झपटकर मेरी गर्दन पकड़ ली। मैं उसकी पिंडलियों में लातें मारने लगा और उसके पेट के निचले भाग में, जाँघ के जोड़ पर मैंने अपना बायाँ घुटना अड़ा दिया।

"यदि ये विरोध करें, तो इन्हें गोली से उड़ा दो!" मैंने किसीको कहते हुए सुना।

"लेकिन इस सबका मतलब क्या है?" मैंने चिल्लाने का प्रयत्न किया; किन्तु मेरी आवाज़ में ज़ोर नहीं था। वे अब मुझे खींचकर सड़क के किनारे ले आये।

"यदि ये यों नहीं मानते, तो गोली मार दो।" एक अफ़सर बोला—"पीछे की ओर ले जाओ इन्हें।"

"आप हैं कौन आख़िर?"

"अभी मालूम हो जायेगा।"

"मैं पूछता हूँ, आप हैं कौन?"

"सैन्य-पुलिस।" एक दूसरे अफ़सर ने उत्तर दिया।

"इन 'उड़नखटोलों' जैसे सैनिकों को झपट्टा मार कर मुझे खींच लाने का आदेश देने के बजाय क्या आप मुझसे दल के बाहर आने के लिए नहीं कह सकते थे?"

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्हें उत्तर देने की आवश्यकता भी नहीं थी—वे सैन्य-पुलिस के आदमी थे!

"इन्हें भी पीछे की ओर दूसरों के पास पहुँचा दो!" पहले अफ़सर ने कहा—"देखा तुमने, किस खूबी से यह व्यक्ति इटालियन भाषा का प्रयोग कर रहा है!"

"तुम भी वैसा ही कर रहे हो—हरामज़ादे कहीं के!" मैं चिल्लाया

"हटाओ इसे, ले जाओ दूसरों के पास।" पहला अफ़सर बोला। वे लोग मुझे लेकर अफ़सरों की पंक्ति के पीछे से सड़क के नीचे उतरे। हम लोग नदी-तट से लगे एक खेत में उस स्थान की ओर चल दिये, जहाँ कुछ और व्यक्ति बैठे थे। उस तरफ़ जाते हुए मुझे गोलियाँ चलने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने राइफलों से निकलनेवाली चिनगारियाँ देखीं और गोली चलने की आवाज़

सुनी। हम उस दल के पास पहुँचे। वहाँ पर चार अफ़सर पास-पास खड़े थे। उनके सामने दो कारबाइन-सैनिकों से घिरा एक व्यक्ति खड़ा था। कुछ फ़ासले पर कारबाइन-सैनिकों के घेरे के बीच कुछ और व्यक्ति खड़े थे। जाँच करनेवाले अफ़सर के पास अपनी छोटी-छोटी बन्दूकों पर झुके हुए चार और कारबाइन-सैनिक खड़े थे। उन्होंने चौड़े किनारे के टोप पहन रखे थे। उन दोनों कारबाइन-सैनिकों ने, जो मुझे लेकर आये थे, धक्का देते हुए मुझे उन लोगों के बीच खड़ा कर दिया, जिनकी जाँच होने वाली थी। मैंने उस व्यक्ति की ओर देखा, जिससे जाँच करनेवाला अफ़सर प्रश्न पूछ रहा था। यह वही ठिंगना, मोटा, सफ़ेद बालवाला लेफ्टिनेण्ट-कर्नल था, जिसे थोड़ी देर पहले सैन्य-पंक्ति से बाहर खींचा गया था। प्रश्नकर्ताओं में उतनी ही योग्यता, उतना ही निरुत्साह और उतना ही आत्मनियन्त्रण नज़र आ रहा था जितना कि उन इटालियनों में होता है, जो केवल गोलियाँ चलाना जानते हैं और बदलेमें, जिन पर कोई गोली नहीं चलाता।

"तुम्हारा सैन्यदल?"

उसने नाम बता दिया।

"तुम्हारी टुकड़ी?"

उसने उसका भी नाम बता दिया।

"तुम अपनी टुकड़ी के साथ क्यों नहीं हो?"

उसने कारण भी बता दिया।

"क्या तुम यह नहीं जानते कि एक अफ़सर को सदा अपनी टुकड़ी के साथ होना चाहिए?"

उसने स्वीकारात्मक भाव से सिर हिलाया। बस, पहले अफ़सर ने प्रश्न करना बन्द कर दिया। दूसरे अफ़सर ने कहा—"तुम और तुम-जैसे अन्य व्यक्तियों के कारण ही हमारे पुरखों की पवित्र भूमि पर बर्बर शत्रुओं को पैर रखने का साहस हो सका है?"

"क्षमा कीजिये, क्या कहा आपने?" लेफ्टिनेण्ट-कर्नल ने कहा।

"तुम्हारे ही जैसे व्यक्तियों के देशद्रोह के कारण हमारी जीत नहीं हुई। विजयश्री ने हमें वरण नहीं किया।"

"क्या आप लोग कभी पीछे हटते हुए किसी सैन्यदल के साथ रहे हैं?" लेफ्टिनेण्ट-कर्नल ने पूछा।

"इटली पीछे हटना नहीं जानता।"

हम वर्षा में खड़े-खड़े उनकी बातचीत सुनते रहे। हमारा मुँह अफ़सरों की ओर था। हमसे कुछ हटकर एक ओर, हमारे सामने ही, वह कैदी खड़ा था।

"यदि तुम लोग मुझे मार डालना चाहते हो—" लेफ्टिनेण्ट-कर्नल ने कहा—"तो आगे, बिना एक शब्द पूछे ही, मुझे मौत की सजा दे दो। तुम्हारे प्रश्न मूर्खतापूर्ण हैं।" उसने अपने सामने धर्म-चिह्न (क्रॉस) बनाया। अफ़सरों ने कुछ क्षणों तक जैसे आपस में विचारविमर्श किया। फिर एक ने एक काग़ज़ पर कुछ लिखा।

"अपनी टुकड़ी छोड़ कर भाग निकलने के अपराध में गोली से उड़ा देने का दण्ड दिया गया।" उसने कहा।

दो कारबाइन-सैनिक लेफ्टिनेण्ट-कर्नल को पकड़ कर नदी-तट पर ले गये। बेचारा बूढ़ा आदमी, दोनों ओर दो रक्षकों से घिरा हुआ, अपना टोप उतारे, वर्षा में भीगता भागता, नदी की ओर चला गया। मैंने उन्हें उस पर गोली चलाते हुए नहीं देखा; किन्तु उसकी आवाज़ मुझे स्पष्ट सुनाई दे गयी। अफ़सर अब किसी दूसरे से प्रश्न कर रहे थे। यह व्यक्ति भी अपनी टुकड़ी से बिछुड़ गया था। उसे तो अपनी स्थिति स्पष्ट करने तक का अवसर नहीं दिया गया। काग़ज़ से पढ़कर जब उसके दण्ड की घोषणा की गई, तो वह रो पड़ा। जब उसे नदी की ओर ले जाया गया, तब भी वह रोता रहा। उसे गोली मारे जाने के समय अफ़सर लोग एक अन्य व्यक्ति की जाँच करने लगे। उन्होंने यह एक नियम-सा बना लिया था कि जब पहले प्रश्न किये गए व्यक्ति को गोली मारी जाने लगे, तो तुरत ही अगले व्यक्ति से प्रश्न पूछना प्रारंभ कर दिया जाए। यह तरीक़ा अपनाने के पीछे स्पष्टतः उनका यह उद्देश्य था कि गोली मारते समय कहीं कोई कुछ गड़बड़ी पैदा न करे। मैं यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि अपनी जाँच होते समय तक ठहरूँ या अभी ही किसी प्रकार वहाँ से भाग निकलूँ। प्रश्नकर्ताओं की दृष्टि में मैं निश्चित रूप से इटालियन सैनिक-वेश में कोई जर्मन था। मैं देख ही रहा था कि उनके दिमाग किस दिशा में काम कर रहे थे—बशर्ते सचमुच उनके पास दिमाग नाम की कोई चीज़ थी और वे कोई काम करने के योग्य थे। वे सब-के-सब नवयुवक थे—वे अपने देश की रक्षा कर रहे थे। टैग्लिआमेण्टो के तट पर द्वितीय सैन्यदल में सुधार हो रहा था। और सुधारक थे मेजर या उनसे उच्च अधिकारी, जो स्वयं अपनी टुकड़ियों से बिछुड़ गये थे। वे उन जर्मन उपद्रवियों से भी, जो इटालियन वेश में थे, बड़ी शीघ्रता और कुशलता के साथ निबट रहे थे। वे अपने सिर

पर लोहे के टोप लगाये थे। हममें से केवल दो ही के पास लोहे के टोप थे। कुछ कारबाइन-सैनिको के पास भी लोहे के टोप थे। अन्य कारबाइन-सैनिकों के पास चौड़ी किनारी के टोप थे—और हम उन्हें 'उड़नखटोला' कहकर पुकारते थे।

हम पानी में भीगते हुए खड़े थे। हममें से एक बार में एक ही व्यक्ति ले जाया जाता। उससे कुछ प्रश्न पूछे जाते और उसे गोली मार दी जाती। अभी तक उन्होंने जिन-जिनसे प्रश्न पूछे थे, उन सबको गोली मार दी गयी थी। प्रश्नकर्ताओं में कठोर न्याय के प्रति उदासीनता और धर्मनिष्ठा का वह सौंदर्य व्याप्त था, जो मृत्युदण्ड देने के आदी उन व्यक्तियों में होता है, जिन्हें स्वयं मृत्युदण्ड प्राप्त करने का कोई भय नहीं होता। अधिकारी-वर्ग अब एक ऐसे कर्नल से प्रश्न पूछ रहा था, जिसके अधीन एक पूरी पलटन थी। हमारे समूह में तीन और अफ़सरों की वृद्धि हो गयी थी।

"इनका सैन्यदल कहाँ है?" मैंने उस कर्नल के विषय में किसी अधिकारी को प्रश्न करते हुए सुना।

मैंने कारबाइन-सैनिको की ओर देखा। वे नवागन्तुक व्यक्तियों की ओर देख रहे थे। दूसरे लोगों की दृष्टि कर्नल पर जमी थी। मैं एक-ब-एक नीचे की ओर झुका और धक्का देता हुआ दो आदमियों के बीच से निकलकर, नदी की ओर भागा। गोलियों से बचने के लिए, मैंने भागते हुए अपना सिर नीचे की ओर झुका लिया। तट पर पहुँचकर मैं हल्के पैरों से ऊपर उछला और छलाक से, वर्षा की बौछारों के बीच, नदी में कूद पड़ा। पानी बड़ा ठंडा था; फिर भी जितनी देर सम्भव था, उतनी देर तक मैं उसके भीतर डूबा रहा। मुझे अपने सिर पर धारा में चक्कर काटती हुई भँवरों का अनुभव हो रहा था। मैं पानी में उस समय तक रहा, जब तक मेरी साँस न फूल गयी। फिर मैंने पानी से बाहर सिर निकाला और क्षणभर साँस लेने के बाद पुन भीतर चला गया। बहुत-से कपड़ो और भारी जूतो के कारण पानी में ठहरना बड़ा आसान था। दुबारा जब मैं ऊपर आया, तो मुझे अपने सामने लकड़ी का एक कुंदा तैरता हुआ दिखाई दिया। वहाँ तक पहुचकर मैंने उसे एक हाथ से पकड़ लिया। अपना सिर मैंने उसके पीछे ही रखा और उसकी ऊपरी सतह की ओर देखा तक नहीं। मैं नदी-तट की तरफ़ भी नहीं देखना चाहता था। अब तक दो बार मेरे ऊपर गोलियाँ छोड़ी जा चुकी थीं—पहली बार उस समय, जब मैं नदी-तट की ओर भागा था और दूसरी बार उस समय, जब मैं पहली बार पानी से ऊपर

आया था। गोलियों की आवाज़ मुझे उस समय सुनाई पड़ी थी, जब मैं अपना सिर क़रीब-क़रीब बाहर निकाल चुका था। हाँ, अब गोली चलना बिलकुल बन्द हो गया था। लकड़ी का वह कुंदा जल-प्रवाह में हिल-डुल रहा था। मैं उसे एक हाथ से कसकर पकड़े रहा और कुछ क्षण बाद मैंने किनारे की ओर नज़र दौड़ाई। लकड़ी का कुंदा नदी के वेग के साथ बड़ी तीव्र गति से बह निकला। नदी में काफ़ी लकड़ियाँ बह रही थीं। पानी बहुत ठंडा था। मैंने दोनों हाथों से लकड़ी का वह कुंदा पकड़ लिया और उसके सहारे बहने लगा। नदी-तट अब दृष्टि से बिलकुल ओझल हो चुका था।

.३१.

जब नदी का प्रवाह बड़े वेग में होता है, तब आपको यह नहीं मालूम होता कि आप कितनी देर से पानी में हैं। कभी-कभी जब आप कुछ ही देर पानी में रहते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि आप बहुत देर से पानी में हैं। नदी का पानी ठंडा और पूरे उफान पर था। जब बाढ़ आयी थी, तब उसके किनारों से बहुत-सी वस्तुएँ बहकर बीच धार में आ गई थीं। वे ही वस्तुएँ अब पानी के साथ बहती चली जा रही थीं। सौभाग्य से मैंने जो लकड़ी पकड़ रखी थी, वह काफ़ी भारी थी। बर्फ़ के समान ठंडे पानी में अपनी ठुड्डी को लकड़ी पर टिकाये मैं पड़ा हुआ था। मैंने उसे अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया था। किन्तु मुझे भय था कि इतने ठंडे पानी में कहीं मेरी मांस-पेशियाँ न जकड़ जायें। अतः मै शीघ्रातिशीघ्र किनारे की ओर पहुँचना चाहता था।

लकड़ी के उस कुंदे के सहारे बहता हुआ मैं नदी के एक लम्बे मोड़ पर जा पहुँचा। उजेला धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था, अतः अब मैं किनारे की झाड़ियों को अच्छी तरह देख सकता था। सामने ही झाड़-झंखाड़ों से भरा एक द्वीप था और उससे टकरा कर पानी का प्रवाह तट की ओर मुड़ गया था। मैं सोच रहा था कि अपने जूते और कपड़े उतारकर किनारे की ओर तैरने का प्रयत्न करूँ। किन्तु मैंने यह विचार त्याग दिया। इस बात को छोड़कर कि मैं किसी प्रकार तट तक पहुँच ही जाऊँगा, मैंने किसी अन्य बात पर गौर नहीं किया था। यदि मैं नंगे पैर तट पर पहुँचता, तो बड़े कष्ट का सामना करना पड़ता; क्योंकि किसी-न-किसी प्रकार मेरा मेस्त्रे पहुँचना आवश्यक था।

मैंने देखा कि हम किनारे के बहुत समीप आ गये थे। पर अचानक ही उससे दूर होने लगे और फिर उसके पास पहुँच गये। मेरी संगिनी, वह लकड़ी अब धीरे-धीरे बह रही थी। किनारा बहुत पास आ गया था। मुझे सरई की झाड़ियों की सूखी टहनियाँ दिखाई दे रही थीं। लेकिन तभी लकड़ी का कुंदा कुछ इस प्रकार घूम गया कि किनारा मेरी पीठ की ओर हो गया। मैं समझ गया कि मैं भँवर में फँस गया हूँ। लकड़ी के कुंदे के साथ मैं उस भँवर में धीरे-धीरे चक्कर खाता रहा। ज्योंही मैंने देखा कि मैं फिर किनारे के बिलकुल पास पहुँच चुका हूँ, त्योंही एक हाथ से लकड़ी पकड़ते हुए और दूसरे हाथ से लकड़ी को ढकेलते हुए तैर कर मैंने किनारे लगने का प्रयत्न किया; किन्तु उसमें अधिक सफलता नहीं मिली। मुझे भय था कि कहीं फिर किनारे से दूर न हो जाऊँ, अतः एक हाथ से लकड़ी पकड़कर मैंने अपने पैर लम्बे किये और लकड़ी की विरुद्ध दिशा में पैर फटकारते हुए स्वयं को पूरे बल के साथ तट की ओर ढकेलना आरम्भ किया। मुझे पास ही वे झाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। किन्तु शरीर की सम्पूर्ण शक्ति से तैरने के बाद भी जल प्रवाह मुझे तट से दूर खींचे जा रहा था। मैंने सोचा कि यदि यही हालत रही, तो भारी जूते होने के कारण मैं अवश्य डूब जाऊँगा। किन्तु मैंने प्रयास जारी रखा—प्रवाह से भरसक लड़ता रहा। जब मैंने अपना मुँह ऊपर उठाया, तो तट मुझे समीप आता हुआ दिखायी दिया। भारी जूतों के कारण संकट की आशंका थी, अतः मैंने पानी को काटते हुए तैरना उस समय तक जारी रखा, जब तक मैं बिलकुल किनारे पर नहीं पहुँच गया। फिर मैंने सरई की एक झाड़ी पकड़ी और उससे लटक गया। मुझ में इतनी शक्ति नहीं थी कि मैं उसके सहारे ऊपर चढ़ सकूँ। फिर भी मुझे इतना विश्वास अवश्य हो गया कि अब मैं डूबूँगा नहीं। जब तक मैं लकड़ी पकड़कर नदी के प्रवाह में बहता रहा, तब तक तो मैंने कभी यह कल्पना भी नहीं की थी कि मैं डूब सकता हूँ। सहसा मुझे ज़ोरों की थकान मालूम हुई। पेट के भीतर मैं खालीपन का भी अनुभव कर रहा था। अधिक श्रम के कारण मेरी तबीयत बिगड़ने लगी। झाड़ियों को पकड़े हुए मैं बड़ी देर तक लटका रहा। जब थकान की पीड़ा और अस्वस्थता मिट गई, तो मैंने झाड़ियों के सहारे पैर जमा-जमा कर ऊपर चढ़ने का प्रयास किया और सरई की झाड़ियों में घुसकर आराम करने लगा। आराम करते समय मैंने कुछ झाड़ियाँ अपने हाथों में लपेट लीं और उन्हें मजबूती से पकड़े रहा। कुछ समय बाद मैं रेंगता हुआ बाहर निकला और झाड़ियों के

बीच राह बनाता हुआ, किसी प्रकार नदी की कगार पर पहुँच गया। दिन निकल आया था। मैंने आसपास दृष्टि दौड़ाई; पर कहीं कोई नहीं दिखाई दिया। मैं पीठ के बल किनारे पर लेट गया और नदी तथा वर्षा की हरहराहट सुनता रहा।

कुछ समय बाद मैं उठा और नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ने लगा। मैं जानता था कि लैटिसाना तक नदी पर कोई पुल नहीं था। इधर-उधर नजरें दौड़ा कर मैंने अनुमान लगाया कि मैं शायद सानविटो के सामने पहुँच गया था। मैं सोचने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। तभी मुझे एक नाला दिखाई दिया, जो नदी में जाकर मिलता था। मैं उसी की ओर बढ़ा। अभी तक मैंने उस क्षेत्र में किसी व्यक्ति को नहीं देखा था। नाले के किनारे उगी हुई कुछ झाड़ियों के निकट बैठकर मैंने अपने जूते उतारे और उनमें भरा हुआ पानी बाहर निकाला। फिर मैंने अपना कोट उतारा और उसकी भीतरी जेब से बटुआ निकाला। बटुए में रखे हुए मेरे सब काग़ज़ और नोट बिलकुल भीग गए थे। मैंने कोट निचोड़ा और पतलून निकाल कर उसे भी अच्छी तरह निचोड़ डाला। इसी प्रकार एक-के-बाद-एक, मैंने क़मीज़, बनियाइन, चड्डी आदि सब कपड़े निचोड़ लिए। फिर कुछ समय तक अपने शरीर पर मुक्कियाँ मारने और प्रत्येक अंग को रगड़ने के बाद मैंने पुनः कपड़े पहन लिये। मेरी टोपी नदी में ही कहीं खो गयी थी।

अपना कोट पहनने के पहले मैंने बाँह पर लगे कपड़े के सितारों को काटकर उन्हें अपनी भीतरी जेब में रख लिया। मेरे सब नोट गीले हो गये थे; किन्तु ख़राब नहीं हुए थे। मैंने उन्हें गिना। सब मिलाकर उस समय मेरे पास तीन हज़ार से कुछ अधिक लिरे थे। मुझे अपने कपड़े बड़े गीले और चिपचिपे लग रहे थे। शरीर में स्वाभाविक रूप से रक्त-संचालन बनाए रखने के लिए मुझे बीच-बीच में अपनी भुजाओं को ज़ोर से थपथपाना पड़ता था। मैंने ऊनी बनियाइन पहन रखी थी और मेरा ख़याल था कि यदि मैं चलता रहा, तो मुझे ज़ुकाम नहीं हो सकेगा। सड़क पर जब मुझे पकड़ा गया था, तो मेरी पिस्तौल छीन ली गयी थी। उसकी खाली पेटी मैंने अपने कोट के नीचे दबा ली। मेरे पास लबादा नहीं था और वर्षा के कारण मुझे ठंड लग रही थी। मैंने नाले के किनारे-किनारे नदी की विपरीत दिशा में चलना प्रारम्भ किया। वह वास्तव में एक नहर थी। सूर्य का प्रकाश अब अच्छी तरह फैल चुका था। समस्त प्रदेश वर्षा के कारण गीला हो रहा था तथा बेजान और

उदासीन दिखाई दे रहा था। खेत भी सूने और पानी से भरे थे। काफ़ी दूर पर, मैदानों के बीच अपना सिर उठाए एक घण्टाघर भी दिखाई दे रहा था। चलते-चलते मैं एक सड़क पर पहुँच गया। सामने से कुछ सैन्य-टुकड़ियाँ मेरी ओर आ रही थीं। मैं लँगड़ाता हुआ सड़क के किनारे किनारे चलने लगा। सैन्य-टुकड़ियाँ मेरे पास से निकल गयीं। उन्होंने मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वे सब मशीनगन चलानेवाले दल के सैनिक थे और नदी की ओर जा रहे थे। मैं सड़क पर आगे बढ़ता गया।

उस दिन मैंने व्हॅनीशियन की समतल भूमि पार कर ली। यह वस्तुतः एक निचली सतहवाला इलाका है। वर्षा में वह और भी सपाट दिखाई देता था। इस इलाके में समुद्र की ओर नमक के अनेक दलदल हैं; किन्तु सड़कें कम हैं। सभी रास्ते नदी के मुहानों से होकर समुद्र की ओर जाते हैं, अतः इलाका पार करने के लिए नहरों से लगी हुई पगडण्डियों पर से होकर जाना पड़ता है। मैं उत्तर से दक्षिण की ओर चलता हुआ वह इलाका पार कर रहा था। अभी तक मैं बहुत-सी सड़कें और दो रेल-मार्ग पार कर चुका था। अन्ततः मैं एक ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ रेल-मार्ग दलदल के किनारे-किनारे जा रहा था। यह रेल-मार्ग वेनिस तथा ट्रीस्ट के बीच का प्रमुख मार्ग था और एक ऊँचे ठोस बाँध पर बनाया गया था। गाड़ियाँ आने-जाने के लिए अलग-अलग दो लाइनें थीं। उसके नीचे की ओर एक फ्लैग स्टेशन [बहुत ही छोटा-सा, नाममात्र का स्टेशन] था और उसकी रक्षा के लिए वहाँ सैनिक तैनात थे। मार्ग के ऊपर की ओर दलदल में गिरनेवाले एक जलस्रोत पर एक पुल बना था। उस पुल पर भी एक सैनिक पहरेदार दिखाई दे रहा था। जब मैं खेतों को पार कर रहा था, तब मैंने इसी रेलमार्ग पर एक रेलगाड़ी जाते हुए देखी थी। रेलगाड़ी मुझे सपाट मैदान के पार, काफ़ी दूरी पर दिखायी दी थी, अतः मैंने सोचा, कदाचित् पोर्टो ग्रुआरो से कोई गाड़ी इस तरफ़ आयेगी। पहरेदारों पर दृष्टि रखते हुए मैं रेलमार्ग के टीले पर इस प्रकार लेट गया कि दोनों दिशाओं में देख सकूँ। पुल की रक्षा करने वाला सैनिक चक्कर लगाता हुआ मेरी ओर कुछ कदम आगे आता और पुनः मुड़कर पुल की ओर लौट जाता। मैं लेटा हुआ रेलगाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। मुझे ज़ोरों की भूख लगी थी। जो गाड़ी मैंने देखी थी, वह इतनी लम्बी थी कि इंजन उसे बड़े धीरे-धीरे खींच रहा था और मुझे विश्वास था कि मैं उस पर सरलता से चढ़ सकूँगा। बड़ी देर तक रेलगाड़ी की प्रतीक्षा करने के बाद मैंने यह आशा छोड़ दी कि उस ओर से कोई गाड़ी निकलेगी।

पर इतने ही में मुझे एक गाड़ी अपनी ओर आती हुई दिखाई दी। बिलकुल सीधी दिशा में आगे बढ़नेवाला इंजन धीरे-धीरे बड़ा होता गया। मैंने पुल के पहरेदार की ओर दृष्टि घुमाई। वह पुल के इसी किनारे पर घूम रहा था, जो मुझ से पास था। किन्तु घूम रहा था वह दूसरी बगल में—उस ओर नहीं, जिस ओर मैं लेटा हुआ था। मैंने सोचा कि गाड़ी जब सामने आयेगी, तो वह उस ओर होने के कारण निश्चय ही उसकी आड़ में हो जायेगा और मुझे नहीं देख सकेगा। मैंने इंजन को अपनी ओर बढ़ते हुए देखा। वह अपनी पूरी ताक़त से गाड़ी खींच रहा था। गाड़ी में बहुत-से डिब्बे थे और मैं समझ गया कि उसमें भी बहुत-से सैनिक पहरेदार होंगे। मैंने यह देखने का प्रयत्न किया कि वे किस डिब्बे में थे। किन्तु मैं स्वयं को छिपाए हुए था, अतः उन्हें देख नहीं सका। इंजन अब प्रायः उस स्थान पर पहुँच चुका था, जहाँ मैं लेटा हुआ था। उस समतल भूमि पर भी, वह एक कर्कश चीत्कार के साथ गाड़ी खींचने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा था। जब वह मेरे सामने आया और जब ड्राइवर मेरे सामने से निकल गया, तो मैं खड़ा हो गया तथा चुपचाप सामने से निकलते हुए डिब्बों के बिलकुल पास पहुँच गया। यदि सैनिक-पहरेदार मुझे देख भी लेते, तो भी मुझ पर अधिक शक नहीं कर सकते थे; क्योंकि मै रेल-पथ से बिलकुल सटकर खड़ा था। मेरे सामने से बहुत-से बन्द माल डिब्बे निकलते गए और तब एक खुला हुआ डिब्बा सामने आया। डिब्बा नीचा था। उसका आकार एक हलकी डोंगी के समान था और उस पर तिरपाल पड़ा हुआ था। जब तक वह डिब्बा निकल न गया, मैं अपने स्थान पर खड़ा रहा। उसके पार होते ही मैंने उछलकर उसका पिछला डंडा पकड़ लिया और उसके सहारे अपने शरीर को ऊपर खींच लिया। ऊपर पहुँचते ही मैं धीरे धीरे रेंगता हुआ नाव के आकारवाले उस डिब्बे और उसके पीछे की ऊँची छतवाले माल-डिब्बे के बीच में पहुँच गया। मेरे ख़याल से मुझे अभी तक किसी ने देखा नहीं था। डंडों को पकड़कर मैं नीचे की ओर झुक गया। मेरे पैर अब दो डिब्बों के बीच के हिस्से पर थे। गाड़ी अब पुल के मुख पर पहुँच चुकी थी। मुझे उस सैनिक-पहरेदार की याद हो आयी। ज्योंही गाड़ी उसके सामने से निकली, उसने मुझे देखा। वह बिलकुल लड़का-सा लगता था। उसका लोहे का टोप उसके सिर से काफ़ी बड़ा था। मैंने तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा। वह बेचारा दूसरी ओर देखने लगा। शायद उसने सोचा कि मैं गाड़ी से सम्बन्ध रखनेवाला ही कोई व्यक्ति था।

मेरा डिब्बा उससे आगे निकल गया। मैंने देखा वह अभी भी घबराहट-भरी दृष्टि से सामने से निकलते हुए दूसरे डिब्बों को देख रहा था। अब मैं तिरपाल की ओर मुड़ा और यह देखने लगा कि वह किस प्रकार बँधा था। तिरपाल में रस्सी के फंदे दिये गये थे और उसके सिरे रस्सी के टुकड़ों द्वारा नीचे की ओर बाँध दिए गए थे। मैंने अपना चाकू निकाल कर रस्सी के टुकड़ों को काट दिया और अपना हाथ भीतर घुसेड़ा। वर्षा के कारण तिरपाल ऐंठ गया था और बीच-बीच में कड़ा और फूला हुआ दिखाई दे रहा था। ऊपर आँखें उठाते हुए मैंने सामने की ओर देखा। आगे के माल-डिब्बे पर एक सैनिक पहरेदार था; किन्तु वह सामने देख रहा था, पीछे नहीं। मैंने डण्डे छोड़ दिए और तिरपाल के भीतर घुस गया। मेरे कपाल में कोई वस्तु टकराई और वहाँ एक गूमड़ा उभर आया। मुझे प्रतीत हुआ कि मेरे मुख पर रक्त बह रहा है, लेकिन मैं रेंगता गया और अंदर पहुँचकर चित लेट गया। फिर मैंने पीछे की ओर मुड़कर तिरपाल का नीचे का छोर बाँध दिया।

मैं जिस तिरपाल के भीतर घुसा था, उसमें बन्दूकें रखी थीं। वे सब साफ़ बन्दूकें थीं और उनमें से तेल और चरबी की गंध निकल रही थी। मैं लेटे-लेटे तिरपाल पर टपकनेवाली वर्षा तथा पटरियों पर दौड़ते हुए डिब्बे की खटर-खट् की आवाज़ सुनने लगा। संधियों में से आते हुए थोड़े-से प्रकाश में, मैंने लेटे-ही-लेटे, बन्दूकों पर नज़रें दौड़ायीं। उन पर टाट के आवरण चढ़े हुए थे। ये बन्दूकें सम्भवतः तृतीय सैन्य-दल के द्वारा अगली पंक्तियों के पास भेजी जा रही थीं। मेरे कपाल पर उभरा हुआ गूमड़ा अब सूज गया था। मैं कुछ समय तक बिना हिले-डुले लेटा रहा, जिससे उसमें से बहता हुआ खून जम जाये और रक्त-स्राव बंद हो सके। धीरे-धीरे खून जमता गया और रक्तस्राव बंद हो गया। तब मैंने कटे हुए भाग को छोड़कर शेष भाग से जमे हुए रक्त की पपड़ियाँ निकाल डालीं। यों वह कोई भारी चोट नहीं थी। मेरे पास रूमाल भी नहीं था, अतः मैं अपनी उँगलियों से टटोलता गया और तिरपाल से गिरते हुए वर्षा के पानी से उस भाग को, जहाँ खून जमकर सूख गया था, धोता रहा। अच्छी तरह धो लेने के बाद मैंने उतना हिस्सा अपने कोट की बाँह से पोंछकर साफ़ कर लिया। मैं नहीं चाहता था कि उस आकस्मिक घाव के कारण किसी की दृष्टि बरबस मेरी ओर उठे। मैं जानता था कि मेस्त्रे पहुँचने से पहले ही मुझे रेलगाड़ी से उतर जाना होगा; क्योंकि तब इन बन्दूकों की बड़ी सावधानी से देखभाल होने लगेगी। इटालियन सेना के पास पर्याप्त बन्दूकें नहीं थीं और वह उनमें से एक के भी

खोने का ख़तरा उठाने का साहस नहीं कर सकती थी। अब तक मुझे ज़ोरों की भूख लग गयी थी।

• ३२ •

मैं डिब्बे के फ़र्श पर लेटा रहा। ऊपर टँगे तिरपाल से वर्षा का पानी टपक रहा था। मैं भीग गया था। मुझे ठंड लग रही थी। मैं बहुत भूखा भी था। जब मुझसे भूख सहन न हो सकी, तो अपने सिर को अपनी हथेलियों पर रखते हुए, मैं पेट के बल लेट गया। मेरा घुटना अकड़ गया था; किन्तु उसकी स्थिति चिन्ताजनक नहीं थी। डा. वेलेण्टाइनी ने उस घुटने का बड़ा अच्छा इलाज़ किया था और उसीकी बदौलत सैन्य-दल के पीछे हटते समय आधी दूरी मैंने पैदल ही तय की थी—उसी घुटने के बल पर तैरकर मैंने टैग्लिआमेण्टो नदी का काफ़ी हिस्सा पार किया था। डा० वेलेण्टाइनी वाला वह घुटना बिलकुल ठीक था। दूसरा घुटना मेरा अपना था। डाक्टर आपके शरीर के साथ जब कुछ कर देते हैं, तो वह शरीर आपका अपना नहीं रह जाता। उस पर डाक्टर का अधिकार हो जाता है। मेरे साथ भी यही बात थी। शरीर के कुछ अंग मेरे अपने थे। सिर मेरा था, पेट का भीतरी भाग मेरा था—और वहाँ मुझे ज़ोरों की भूख लगी थी। वहाँ मैं अपनी आंतों की कुलबुलाहट का अनुभव कर रहा था। सिर की भी यही हालत थी। वह था तो मेरा; किन्तु मैं उसका उपयोग नहीं कर पा रहा था—कुछ सोच ही नहीं सकता था—उसमें केवल स्मृतियाँ सहेजकर रख सकता था—वे भी बहुत अधिक स्मृतियाँ नहीं—सीमित स्मृतियाँ।

स्मृतियाँ और कैथरीन। हाँ, मैं कैथरीन को याद कर सकता था; किन्तु इन परिस्थितियों में मुझे इस बात का निश्चय नहीं था कि मैं उसे देख सकूँगा। और जब उससे मिलने की आशा ही नहीं थी, तो उसके विषय में सोचना भी व्यर्थ था; क्योंकि वैसी हालत में मैं पागल हो जाता—बिलकुल विक्षिप्त! नहीं, मैं उसके विषय में नहीं सोचूँगा। बस, उसकी याद-भर करूँगा—थोड़ी-सी याद—बहुत थोड़ी, धुँधली स्मृति-मात्र। धुँधली स्मृति, कैथरीन और यह डिब्बा। गाडीका डिब्बा खटर-खट् करता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। तिरपाल को भेदकर मंद-मंद प्रकाश भीतर आ रहा है। डिब्बे के फ़र्श पर मैं

कैथरीन के साथ लेटा हूँ...। किन्तु डिब्बे का वह फ़र्श बड़ा सख़्त था—इतना सख्त कि उस पर पड़े-पड़े मैं केवल उसके सख्त होने का ही अनुभव कर सकता था—किसी के विषय में कुछ सोच नहीं सकता था। मुझे कैथरीन से बिछुड़े हुए काफ़ी समय हो चुका था और मै अनुभव कर रहा था। मै अनुभव कर रहा था—मेरे कपड़े गीले हैं, डिब्बे का फ़र्श बहुत धीरे-धीरे आगे खिसक रहा है, भीतर भयानक सूनापन व्याप्त है; गीले कपड़ो में लिपटा हुआ मैं उस सूनेपन में पड़ा हूँ, वह भी एक ऐसे फ़र्श पर, जो पीठ छीले दे रहा है—जो एक पत्नी के लिए बड़ा कठोर फ़र्श है!

रेलगाडी के डिब्बे के फर्श से मनुष्य कभी प्रेम नहीं कर सकता। टाट के आवरण में छिपी बन्दूकों से भी किसी का प्यार नहीं हो सकता। चरबी लगी हुई धातु की गध अथवा वह तिरपाल, जिससे जगह-जगह बरसात का पानी चू रहा हो, प्रेम करने योग्य वस्तुएँ नहीं हो सकतीं। तिरपाल के नीचे लेटना निस्सन्देह सुखद होता है। बन्दूको के बीच पड़े रहने में भी आनन्द आता है। किन्तु व्यक्ति का प्रेम इन वस्तुओ से नहीं, किसी व्यक्ति से ही होता है। और जब उस व्यक्ति को मालूम है कि उसका स्नेहपात्र उसके साथ नहीं है, तब वह उदास और फटी-फटी आँखों से इधर-उधर देखने के सिवा और कर ही क्या सकता है? अपने उस एकाकीपन में वह सोच भी तो नहीं सकता —ऐसी कल्पना भी तो नहीं कर सकता कि उसकी प्रेमिका उसके पास है। ऐसी स्थिति में उसकी उदास दृष्टि स्पष्ट ही किसी को खोजती रहती है। हाँ, उस खोजने में उदासी उतनी नहीं रहती, जितना सूनापन रहता है। बेचारा प्रेमी पेट के बल लेटकर सूनी-सूनी आँखों से देखता रहता है। उसके नेत्रों के सामने जाने कितनी स्मृतियाँ सजग हो उठती हैं। वह देखता है कि एक सैन्यदल पीछे हट रहा है और दूसरा आगे बढ़ रहा है। उसकी अपनी मोटरें—उसके अपने आदमी—समाप्त हो चुके हैं—ठीक उसी प्रकार, जैसे एक बड़ी दूकान के किसी कर्मचारी के विभाग का सारा सामान आग लगने से जलकर भस्म हो गया हो। सामान का बीमा भी नहीं है। और अब, वह व्यक्ति इस जंजाल से मुक्त हो चुका है। उसकी जिम्मेदारियाँ समाप्त हो गयी हैं। आग लगने के बाद यदि उस बड़ी दूकान का अधिकारी-वर्ग शंकावश कुछ कर्मचारियों को गोली मार देता है, तो वहाँ के किसी अन्य कर्मचारी से यह आशा नहीं की जा सकती कि दूसरे दिन दूकान खुलने पर वह वहाँ काम पर जायेगा। फिर शका भी केवल इसलिए कि मृत कर्मचारियों ने अधिकारी-वर्ग से सदा की भाँति बड़ी

स्पष्टता से बातचीत की थी। ऐसी स्थिति में शेष कर्मचारी यदि कहीं अन्यत्र काम मिल सका, तो निश्चय ही वहाँ जाकर काम करने लगते हैं और तब पुलिस भी उनका कुछ नहीं कर सकती।

अपनी ज़िम्मेदारियों के साथ ही मेरा क्रोध भी नदी में बह गया था। यों तो ज़िम्मेदारी का अन्त उसी समय हो चुका था, जब पुल पार करते समय, नदी-तट पर कारबाइन-सैनिक ने मेरा गला पकड़कर मुझे पंक्ति से बाहर खींचा था। यद्यपि मैं अपनी सैनिक वर्दी को उतार फेंकना चाहता था, फिर भी इस बाहरी वेश की मुझे अधिक चिन्ता नहीं थी। मैंने अपनी बाँह पर लगे सितारों को निकाल लिया था। किन्तु केवल सुविधा की दृष्टि से ही मैंने ऐसा किया था। मेरा सम्मान उन सितारों पर निर्भर नहीं करता था। उन इटालियन सैन्याधिकारियों के भी मैं विरुद्ध नहीं था। मैं उनसे बच कर निकल आया था। मेरी समस्त शुभकामनाएँ उनके साथ थीं। इटालियन सेना में भी अच्छे व्यक्ति थे, बहादुर थे, शान्त स्वभाव के आदमी थे। समझदारों की भी उनमें कमी नहीं थी। वे सचमुच सम्मान के अधिकारी थे। किन्तु इन सब बातों से अब मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रह गया था। मैं चाहता था कि यह सड़ियल रेलगाड़ी किसी तरह मेस्त्रे पहुँच जाये, जिससे मैं वहाँ उतर कर कुछ खा-पी सकूँ और अपने दिमाग को कुछ आराम दे सकूँ। मुझे यह सोचना बन्द करना ही होगा।

पिआनी जाकर लोगों को बताएगा कि सैन्याधिकारियों ने मुझे गोली से उड़ा दिया। अधिकारी-वर्ग जिन व्यक्तियों को मृत्यु-दण्ड देते थे, उनके जेबों की तलाशी लेकर उनमें से उनके काग़ज़ात निकाल लिया करते थे; पर मेरे काग़ज़ात उनके पास नहीं थे। इसीलिए शायद वे लिख दें कि मैं नदी में डूब गया। पता नहीं, मेरे विषय में मेरे देश-वासियों को न-जाने कैसा समाचार सुनने को मिलेगा। उन्हें कदाचित् यह खबर भेजी जाये कि मैं युद्ध में घायल होकर मर गया या शायद कोई अन्य कारण बता दिया जाये। हे भगवान्, मुझे तो बड़ी भूख लगी थी। भोजनालय के उस पादरी का न-जाने क्या हुआ होगा? मालूम नहीं, बेचारा कहाँ होगा! और रिनाल्डी? वह कदाचित् पोर्डेनन में होगा। सैन्य-दल पोर्डेनन से आगे नहीं गया होगा। पर मैं अब रिनाल्डी को कभी नहीं देख सकूँगा – उससे कभी नहीं मिल सकूँगा। सैन्य-दल के किसी भी मित्र से मेरी कभी भेंट न हो सकेगी। अब तो उस जीवन का ही अन्त हो चुका था। मुझे विश्वास नहीं होता कि रिनाल्डी को उपदंश रोग हो गया था।

और यदि हो भी गया था, तो समय रहते चिकित्सा कर लेने पर वह कोई भयानक बीमारी नहीं रह जाती थी। लोगों की धारणा यही थी। वहाँ के लोग भी यही कहते थे। किन्तु बेचारा रिनाल्डी तो चिंतित होगा। यदि वह रोग मुझे हो जाय, तो मैं भी चिंता करने लगूँगा। ऐसी दशा में कोई भी चिंता करने लगेगा।

पर मेरा जन्म चिंताओं में डूबे रहने के लिए नहीं हुआ था। मैं तो खाने-पीने के लिए पैदा हुआ था। परमात्मा की सौगंध, यही बात थी। खाना, पीना और कैथरीन के साथ सोना—बस, यही। हो सकता है, आज ही रात मैं अपनी कैथरीन से मिल सकूँ। किन्तु नहीं, यह बिलकुल असम्भव था। हाँ, कदाचित् कल रात को ऐसा हो सके। कल रात को शायद मैं उसके पास पहुँच जाऊँ। उसके साथ बैठकर सुस्वादु भोजन कर सकूँ, कोमल चादरों में अपने स्वप्नों को साकार रूप दे सकूँ। हम दोनों पुनः मिल जायें और हमारा फिर कभी बिछोह न हो। हम कभी अकेले न जायें, जब भी कहीं जायें, एक-दूसरे के साथ जायें। किन्तु कदाचित् हमें शीघ्र ही जाना पड़े। कैथरीन को जाना पड़े। मैं जानता था, उसे जाना पड़ेगा। पर हम जायेंगे कब? यही एक ऐसी बात थी, जिस के विषय में सोचना आवश्यक था। बाहर अंधेरा छाने लगा था। मैं लेटे-लेटे सोच रहा था कि हम कहाँ जायेंगे? जाने के लिए स्थानों की कमी तो थी नहीं।

चतुर्थ खण्ड

·३३·

दूसरे दिन उषःकाल में, अन्धकार और प्रकाश की उस मिलन-वेला के बीच हमारी गाड़ी मिलान पहुँची। स्टेशन की सीमा में प्रवेश करते समय गाड़ी की गति ज्योंही धीमी हुई, त्योंही मैं उससे कूद पड़ा। मैंने रेलमार्ग पार किया और पास ही बने मकानों के बीच से निकलकर एक सड़क पर जा पहुँचा। शराब की एक दूकान खुली थी। कॉफी पीने के इरादे से मैं उसके भीतर घुस गया। दूकान में झाड़ू लगाई जा चुकी थी। मेज़ों पर कॉफी के गिलासों में चम्मच पड़े थे। शराब के गिलासो को उठा लिया गया था और जहाँ वे गिलास रखे हुए थे, वहाँ अब उनकी पेंदी के गीले गोल निशान दिखाई दे रहे थे। दूकान का मालिक काउंटर के पीछे बैठा हुआ था। एक मेज़ के निकट दो सैनिक बैठे थे। मै मद्य-कक्ष के काउंटर के पास जाकर खड़ा हो गया और एक गिलास कॉफी तथा रोटी का टुकड़ा लेकर जलपान करने लगा। दूध ज्यादा होने के कारण कॉफी का रंग भूरा हो गया था। मैंने रोटी के टुकड़े द्वारा कॉफी की सतह पर जमी हुई दूध की मलाई हटा दी। दूकानदार मेरी ओर देखने लगा।

"आपको एक गिलास ग्रेप्पा (शराब) दूँ?"

"नहीं, धन्यवाद!"

"मेरी ओर से लीजिये।" कहते हुए उसने एक छोटा-सा गिलास भरकर मेरी ओर बढ़ा दिया—'मोर्चे के क्या हाल-चाल हैं?"

"मैं नहीं जानता।"

"डरिये मत। वे तो नशे में हैं।" उसने अपने हाथ से उन सैनिकों की ओर संकेत करते हुए कहा। मैं उसके कथन पर विश्वास कर सकता था। वे सचमुच नशे में थे।

"बताइए न" वह बोला—"क्या हाल हैं मोर्चे के?"

"मुझे उस विषय में सचमुच कुछ नहीं मालूम।"

"मैंने आपको उस दीवार से नीचे उतरते हुए देखा है। आप गाड़ी से आए हैं।"

"अगर आप इतने ही इच्छुक हैं, तो सुनिए। अपनी सेना भारी संख्या में मोर्चे से पीछे हट रही है।"

"मैं समाचार-पत्र पढ़ता रहता हूँ। आखिर यह सब क्या है? क्या हो रहा है वहाँ? युद्ध बन्द हो गया क्या?"

"नहीं, मेरी समझ से तो नहीं!"

उसने एक बोतल से ग्रेप्पा उड़ेलते हुए मेरा गिलास पुनः भर दिया।

"यदि आप किसी विपत्ति में फँस गए हों—" उसने कहा—"तो मैं आपको अपने यहाँ रख सकता हूँ।"

"नहीं, मुझ पर ऐसी कोई विपत्ति नहीं आयी है।"

"मेरा मतलब है कि यदि आप सचमुच मुसीबत में हों, तो यहाँ, मेरे ही पास, ठहर जायें।"

"सामान्यतः ऐसे लोग कहाँ ठहरते हैं?"

"मकान में। बहुत-से यहाँ भी ठहरते हैं। कोई भी व्यक्ति, जो विपत्ति में होता है, बहुधा यहीं ठहरता है।"

"क्या बहुत-से लोग विपत्ति में हैं?"

"यह तो विपत्ति के रूप पर निर्भर है। क्या आप दक्षिण-अमेरिका के निवासी हैं?"

"नहीं।"

"आप स्पेनिश भाषा जानते हैं?"

"थोड़ी थोड़ी।"

वह काउंटर को धोकर साफ़ करने लगा।

"आजकल देश छोड़कर जाना बड़ा कठिन है; फिर भी बिलकुल असम्भव नहीं है।"

"देश छोड़कर जाने की इच्छा नहीं है मेरी।"

"आप जब तक चाहें, तब तक यहाँ रह सकते हैं। मैं किस प्रकार का व्यक्ति हूँ, यह आप शीघ्र ही जान जायेंगे।"

"अभी तो मुझे जाना है; किन्तु यदि लौटकर यहाँ आया, तो आपका पता अवश्य याद रखूँगा।"

उसने अपना सिर हिलाया—"जब आप इस तरह की बातें कर रहे हैं, तो

यह निश्चित है कि, आप वापस नहीं आयेंगे। मेरी धारणा थी कि आप सचमुच किसी विपत्ति में फँस गए हैं।"

"नहीं, मुझ पर कोई विपत्ति नहीं आई है। किन्तु मैं एक मित्र के पते की कद्र करता हूँ।"

मैंने कॉफी का मूल्य चुकाने के लिए दस लिरा का एक नोट उसके सामने रख दिया।

"मेरे साथ थोड़ी ग्रेप्पा और पीजिये।" वह बोला।

"नहीं, उसकी कोई आवश्यकता नहीं है।"

"बस, एक गिलास।"

उसने दो गिलासों में शराब भरी।

"देखिए—" वह बोला—"ज़रूरत पड़ने पर यहीं आइयेगा। दूसरों के जाल में फँसियेगा नही। यहाँ आप बड़े मज़े में रहेंगे।"

"मुझे विश्वास है।"

"सच?"

"हाँ।"

वह गम्भीर हो कर बोला—"तब मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ। आप इस कोट को पहनकर इधर-उधर मत घूमिये।"

"क्यों?"

"उसकी बाँह पर वह स्थान, जहाँ से आपने सितारे काट डाले हैं, साफ़-साफ़ मालूम हो जाता है। बाँह के उतने हिस्से का रंग ही दूसरा है।"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

"यदि आपके पास ज़रूरी काग़ज़ात न हों, तो मैं दे सकता हूँ।"

"कैसे काग़ज़ात?"

"छुट्टी के काग़ज़ात।"

"मुझे उनकी आवश्यकता नहीं है। मेरे पास काग़ज़ात हैं।"

"तब ठीक है," वह बोला—"किन्तु यदि कभी ज़रूरत पड़ी, तो मैं आपको, जैसे काग़ज़ात आप चाहें, वैसे ही दिलवा सकता हूँ।"

"ऐसे काग़ज़ातों की क़ीमत क्या होगी?"

"यह तो इस बात पर निर्भर है कि आप किस प्रकार के काग़ज़ात चाहते हैं। हाँ, मूल्य बिलकुल उचित होता है—अधिक नहीं।"

"ख़ैर, इस समय तो मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

उसने अपने कंधे उचकाये।

"अभी तो सब ठीक है।" मैं बोला।

जब मैं बाहर जाने लगा, तो उसने कहा—"यह भूलियेगा नहीं कि मैं आपका मित्र हूँ।"

"भूल कैसे सकता हूँ मैं?"

"मैं आपसे फिर मिलूँगा।" उसने कहा।

"अच्छी बात है।" मैंने उत्तर दिया।

मैं बाहर आया। स्टेशन पर सैन्य-पुलिस का पहरा था, अतः मैं उस स्थान से दूर ही रहा। एक छोटे-से पार्क के निकट मैंने किराये की गाड़ी ली और उसे अस्पताल ले चलने के लिए कहा। अस्पताल पहुँचकर मैं सीधा दरबान की कोठरी पर पहुँचा। उसने मुझे देखते ही मुझसे हाथ मिलाया और उसकी स्त्री ने मुझे प्रगाढ़ स्नेहालिंगन में कस लिया।

"आप लौट आये? आप स्वस्थ-सानंद तो हैं न?" दरबान बोला।

"हाँ।"

"आपने जलपान किया है या नहीं?"

"कर लिया।"

"आपकी तबीयत कैसी है, लेफ्टिनेण्ट साहब? ठीक हैं न आप?" उसकी स्त्री ने पूछा।

"बिलकुल!"

"क्या आप हम लोगों के साथ जलपान नहीं करेंगे?"

"नहीं, धन्यवाद! हाँ, एक बात तो बताओ। मिस बर्कले अब इस अस्पताल में है या नहीं?"

"मिस बर्कले?"

"वही, अंग्रेज़ परिचारिका।"

"इनकी प्रेयसी।" उसकी स्त्री ने कहा। उसने स्नेह से मेरी बाँह थपथपाई और मुस्कराने लगी।

"नहीं।" दरबान ने उत्तर दिया—"वह चली गयी।"

मेरा हृदय बैठ गया। "तुम्हें निश्चित मालूम है?" मैंने पूछा—"मेरा मतलब उस अंग्रेज़ युवती से है, जो ऊँची और बड़ी सुन्दर है।"

"जी, मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वह स्ट्रेसा चली गयी।"

"कब गयी?"

"दो दिन पहले। उसके साथ दूसरी अंग्रेज़ युवती भी चली गयी।"

"अच्छा।" मैं बोला—"क्या तुम मेरी कुछ सहायता करोगे? देखो, किसीको यह मत बतलाना कि तुमने मुझे यहाँ देखा था। बड़ा आवश्यक है यह।"

"नहीं, मैं किसीसे नहीं कहूँगा।" दरबान ने कहा। मैंने उसके सामने दस लिरा का एक नोट बढ़ाया; पर उसने मेरा हाथ परे हटा दिया।

"मैं आपको वचन देता हूँ कि मैं यह बात किसी से नहीं कहूँगा।" वह बोला—"मुझे पैसे की आवश्यकता नहीं है।"

"हम आपके लिए और क्या कर सकते हैं, लेफ्टिनेण्ट साहब?" उसकी पत्नी ने पूछा।

"इतना ही पर्याप्त है।" मैंने कहा।

"आप हम लोगो को बिलकुल गूँगा समझिये।" दरबान बोला—"यदि मेरे योग्य अन्य कोई कार्य हो, तो निस्संकोच मुझे बताइयेगा।"

"अवश्य—अवश्य।" मैंने कहा—"अच्छा, नमस्ते। मैं तुम लोगों से फिर मिलूँगा।"

वे द्वार पर खड़े-खड़े मुझे जाते देखते रहे।

मैं गाड़ी में बैठ गया और ड्राइवर को सिमन्स का पता बता कर उससे वहाँ चलने के लिए कहा। सिमन्स को मैं अच्छी तरह जानता था। वह मिलान में रहकर संगीत का अभ्यास कर रहा था।

सिमन्स का घर काफ़ी दूर था। वह शहर के एक छोर पर, पोर्टा-मेग्नेटा की ओर रहता था। जब मैं उसके घर पहुँचा, तो वह उस समय भी बिस्तर में पड़ा-पड़ा ऊँघ रहा था।

"तुम बड़ी जल्दी उठ जाते हो, हैनरी।" उसने कहा।

"मैं आज सुबह ही गाड़ी से आया हूँ।"

"यह सेनाओं के पीछे हटने की क्या बात है, दोस्त? क्या तुम मोर्चे पर मौजूद थे? सिगरेट पीओगे? मेज़ पर उस डब्बे में रखी है।" उसका कमरा काफ़ी बड़ा था। उसका पलंग दीवार से सटा हुआ था। कोने में एक पियानो रखा था। उसी के पास खाने-पीने के सामान की आलमारी और एक मेज़ थी। मैं उसके बिस्तर के पास ही एक कुर्सी पर बैठ गया। सिमन्स तकियों के सहारे टिककर धूम्रपान करने लगा।

"मैं एक बड़ी मुसीबत में फँस गया हूँ, सिम!" मैंने कहा।

"मेरा भी वही हाल है, दोस्त!" वह बोला—"मैं तो हमेशा ही किसी-न-किसी मुसीबत में फँसा रहता हूँ। क्यों सिगरेट नहीं पीओगे क्या?"

"नहीं।" मैंने कहा—"यह तो बताओ कि स्विट्ज़रलैंड जाने का क्या उपाय है?"

"तुम्हारे लिए? इटालियन अधिकारी तुम्हें देश से बाहर नहीं जाने देंगे।"

"यह तो मैं भी जानता हूँ। किन्तु स्विस-सरकार—यदि किसी तरह मैं वहाँ पहुँच गया, तो वहाँ की सरकार क्या करेगी?"

"वह तुम पर प्रतिबंध लगा देगी।"

"मालूम है; पर उस प्रतिबंध का रूप कैसा होगा?"

"कुछ नहीं। बिलकुल सीधी-सी बात है। तुम कहीं भी आ-जा सकोगे। मेरा खयाल है कि समय-समय पर तुम्हें स्थानीय अधिकारियों को अपनी मौजूदगी की सूचना देनी पड़ेगी या ऐसा ही कुछ करना होगा। क्यों? कहीं पुलिस से बचकर तो नहीं भाग रहे हो तुम?"

"अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।"

"यदि तुम्हारी इच्छा न हो, तो मत बताओ। किन्तु तुम्हारी कहानी सुनने में आनंद अवश्य आता। खैर! यहाँ के समाचारों मे कोई विशेषता नहीं। पिआसेन्ज़ा के संगीत-कार्यक्रम में मै बिलकुल असफल रहा।"

"मुझे इसका दुःख है।"

"देखो न—मैं वहाँ जम ही नहीं सका। यों, मेरा गाना अच्छा ही रहा। अब मैं पुनः यहाँ लिरिको में प्रयत्न करनेवाला हूँ।"

"काश, मैं वहाँ मौजूद रह सकता!"

"तुम बड़ी विनम्रता प्रदर्शित कर रहे हो। किसी गहरी मुसीबत में तो नहीं हो न?"

"क्या बताऊँ मैं!"

"नहीं, यदि इच्छा नहीं हो, तो न सही। उस जानलेवा मोर्चे को छोड़कर तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे?"

"जहाँ तक मेरा स्वयं का प्रश्न है, मैं उससे मुक्त हो चुका हूँ।"

"भले आदमी, मुझे तो पहले ही विश्वास था कि तुम कभी-न-कभी अपनी अक्ल से काम ज़रूर लोगे! क्या मैं किसी प्रकार तुम्हारी कोई सहायता कर सकता हूँ?"

"किन्तु तुम तो बहुत व्यस्त हो।"

"नहीं, बिलकुल नहीं, हैनरी! ज़रा भी व्यस्त नहीं। तुम्हारे लिए मैं सब-कुछ कर सकता हूँ—बड़ी प्रसन्नता के साथ।"

"तुम प्रायः मेरे ही कद के हो। क्या तुम बाज़ार से मेरे लिए सामान्य नागरिको-जैसे कुछ कपड़े ला सकते हो? सादी पोशाक है तो मेरे पास भी, किन्तु यहाँ नहीं, रोम में है।"

"तो तुम रोम में भी रह आए हो, है न? बड़ा गंदा शहर है! कैसे रह सके तुम वहाँ?"

"मुझे रहना पड़ा। मैं शिल्पकारी सीखना चाहता था।"

"वह तो शिल्पकारी सीखने के योग्य स्थान नहीं है। हाँ, सुनो, तुम कपड़े मत ख़रीदो। तुम्हें जिन कपड़ों की ज़रूरत हो, मैं दे दूँगा। मैं तुम्हें इस प्रकार सजा दूँगा कि तुम सफलतापूर्वक अपने सामान्य नागरिक होने का अभिनय कर सको। उस कमरे में चले जाओ। वहाँ एक आलमारी है। उसमें से जो कपड़े चाहो, निकाल लो! मेरे प्रिय मित्र, तुम्हें कपड़े ख़रीदने की ज़रूरत नहीं है।"

"नहीं—नहीं, सिम! मैं कपड़े ख़रीदना ही अधिक पसन्द करूँगा।"

"भाई मेरे, बाहर जाकर तुम्हारे लिए कपड़े ख़रीदकर लाने की अपेक्षा, यहीं से कपड़े दे देने में मुझे अधिक सुविधा होगी। क्या तुम्हारे पास देश से बाहर जाने का आज्ञापत्र है या तुम बिना आज्ञापत्र के ही इतनी दूर जाना चाहते हो?"

"नहीं, अभी तक मेरा आज्ञापत्र मेरे पास है।"

"तब कपड़े पहनो, और सीधे पुराने हैल्वेशिया का रास्ता पकड़ो।"

"यह इतना आसान नहीं है, भाई! मुझे पहले स्ट्रेसा जाना है।"

"बहुत सुंदर! अरे, नाव में बैठकर उस पार चले जाओ। बस, पहुँच गये स्ट्रेसा! यदि मैं गाने का अभ्यास नहीं करता होता, तो तुम्हारे साथ मैं भी चलता।"

"तुम्हें तो रोने का अभ्यास करना चाहिए था।"

"आगे चलकर वह भी सीखूँगा, मित्र। फिर भी यह सच है कि मैं गा सकता हूँ। यही तो मेरी विचित्रता है।"

"मैं शर्त लगा कर कह सकता हूँ कि तुम्हें गाना आता है।"

वह बिस्तर पर पड़े-पड़े सिगरेट पीता रहा।

"अधिक शर्त मत लगाओ। यों इसमें संदेह नहीं कि मैं गाना जानता हूँ।

बड़ा अजीब-सा लगता है यह सब; किन्तु गा मैं सकता हूँ। मुझे गाना अच्छा लगता है—उसका शौक है मुझे। सुनो।"

वह 'आफ्रिकाना' राग में गरजा। उसका गला फूल गया। उसकी नसें उभर आयीं। अलाप भरने के बाद वह बोला—"मैं गा तो सकता हूँ न? चाहे किसी को अच्छा लगे या न लगे।" मैंने खिड़की से बाहर झाँका—"मैं ज़रा नीचे जाकर उस गाड़ीवाले को जाने के लिए कह दूँ।"

"जल्दी ऊपर आना, दोस्त। हम लोग यहीं जलपान करेंगे।"

वह बिस्तर पर से उठ कर सीधा खड़ा हो गया। फिर उसने गहरी साँस खींची और शरीर को झुकाकर व्यायाम करने लगा। मैं सीढ़ियाँ उतर कर नीचे पहुँचा और गाड़ीवाले को किराया देकर विदा कर दिया।

३४

नागरिकों-जैसे सामान्य वस्त्र पहनकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो मैं कोई बहुरूपिया हूँ। मैं एक लम्बे अर्से तक सैनिक-वेश में रहा था, अतः साधारण नागरिक की वेशभूषा धारण करने की मेरी प्रवृत्ति ही नष्ट हो चुकी थी। मुझे मेरा पतलून बड़ा ढीला-ढाला लग रहा था। स्ट्रेसा जाने के लिए मैंने मिलान से ही टिकट ख़रीद लिया था। एक नया टोप भी ख़रीदना पड़ा। सिम का टोप मेरे सिर में नहीं आया, किन्तु उसके कपड़े बिलकुल ठीक बैठे थे। उनसे तम्बाखू की गंध आ रही थी। मैं रेल के डिब्बे में बैठ गया और खिड़की से बाहर झाँकने लगा। अपने नये टोप की तुलना में मुझे अपने कपड़े बड़े पुराने लगे। सामने ही विस्तृत लोम्बार्ड प्रदेश दिखायी दे रहा था। उस पर फैली हुई उदासी के समान ही मेरे मन में भी उदासी छायी हुई थी। मेरे डिब्बे में कुछ वायुयान-चालक बैठे थे; पर उन्हें मेरी कोई परवाह नहीं थी। वे मेरी तरफ़ सम्भवतः देखना भी नहीं चाहते थे। मेरी आयु के व्यक्ति को अ-सैनिक-वेश में पाकर उनके नेत्रों में व्यंग्य झलक रहा था। किन्तु मुझे यह अपमानजनक नहीं लगा। यदि कुछ दिन पहले ऐसा हुआ होता, तो मैं निश्चय ही, इसके लिए उनका अपमान करता और उनसे लड़ बैठता। वे गैलॅराते पर उतर गए। डिब्बे में स्वयं को अकेला पाकर मुझे प्रसन्नता ही हुई। मेरे पास समाचारपत्र था; किन्तु मैंने उसे पढ़ा नहीं था। मैं अब युद्धविषयक समाचार नहीं पढ़ना चाहता था। युद्ध को

मैं बिलकुल ही भूल जाना चाहता था। मैंने अलग ही शान्ति से समझौता कर लिया था। पर शीघ्र ही मुझे यह अकेलापन अखरने लगा और जब मैं स्ट्रेसा पहुँच गया, तो मैंने संतोष की साँस ली।

मुझे आशा थी कि स्टेशन पर स्ट्रेसा के होटलों के कर्मचारी अवश्य दिखायी दे जायेंगे; किन्तु वहाँ कोई नहीं मिला। जिस मौसम में लोग स्ट्रेसा जाते हैं, वह कभी का बीत चुका था और अब गाड़ियों पर यात्रियों को लेने, कोई नहीं आता था। मैं अपना झोला लेकर नीचे उतरा। झोला भी सिम का ही था। वह बहुत हलका था; क्योंकि उसमें दो कमीज़ों को छोड़कर और कुछ नहीं था। बाहर वर्षा हो रही थी। मै स्टेशन की छत के नीचे जाकर खड़ा हो गया। गाड़ी चली गई। स्टेशन में एक और आदमी खड़ा था। मैंने उससे पूछा कि वहाँ उन दिनों कौन कौन-सी होटलें खुली रहती है। उसने ग्रेण्ड-होटेल-दा-ले-बोरोमी का नाम लिया। अन्य बहुत-सी छोटी-छोटी होटलों के नाम भी गिनाये और कहा कि वे होटलें सालभर खुली रहती हैं। बरसते पानी में, हाथ में झोला लिए, मैं ले–बोरोमी की ओर चल पड़ा। इतने ही में, मुझे सड़क पर अपनी ओर आती हुई एक गाड़ी दिखाई दी। मैंने चालक को ठहरने का संकेत किया। गाड़ी में बैठकर ही होटल जाना ठीक था। उस विशाल होटल के प्रवेशद्वार पर, जहाँ गाड़ियाँ खड़ी की जाती थीं, जब मैं पहुँचा, तो मुझे देखते ही, दरबान हाथ में छाता लेकर दौड़ा आया। उसके व्यवहार में बड़ी विनम्रता थी।

मैंने एक अच्छा-सा कमरा किराये पर ले लिया। कमरा काफ़ी बड़ा और खुला हुआ था। वहाँ से झील का दृश्य दिखाई देता था। झील पर मेघ छाए थे। सूर्य की सुनहली किरणें जब झील के नीले जल पर नृत्य करती होंगी, तो निश्चय ही वह बड़ा सुंदर दिखायी देता होगा–ऐसा मेरा विश्वास था। मैंने होटलवालो को बताया कि मैं वहाँ अपनी पत्नी की प्रतीक्षा कर रहा था। कमरे में सुहागरात के पलंग के समान ही काफ़ी बड़ा दुहरा पलंग बिछा हुआ था। बिस्तर पर साटन की चादरें थीं। होटल वस्तुतः बड़ा भव्य और आरामदेह था। लम्बे दालानों तथा चौड़ी चौड़ी सीढ़ियों को पार कर, छोटे-बड़े कमरों से गुज़रता मैं शराब पीने के कमरे में पहुँचा। वहाँ का बैरा मेरी पहचान का था। मैं एक ऊँची तिपाई पर बैठकर नमकीन बादाम और 'पोटेटो चिप्स' खाने लगा। मार्टिनी (शराब) ठण्डी और शुद्ध प्रतीत हुई।

"आप यहाँ एक सामान्य नागरिक-वेश में क्या कर रहे हैं?" बैरे ने दूसरी बार गिलास में मार्टिनी भरते हुए पूछा।

"मैं छुट्टी पर हूँ। स्वास्थ्य-लाभ करने के लिए छुट्टी पर आया हूँ।"

"आजकल इस होटल में कोई नहीं है। पूरा होटल खाली पड़ा है। समझ में नहीं आता कि बेकार ही ये लोग अभी होटल खुला क्यों रखे हैं।"

"क्या इधर तुम मछलियाँ पकड़ते रहे हो?"

"हाँ, हम लोगों ने कुछ मछलियाँ पकड़ी हैं—काफ़ी बड़ी और खूबसूरत। वर्ष के इस भाग में यदि मछलियाँ पकड़ी जायें, तो काफ़ी अच्छी मछलियाँ मिल जाती हैं।"

"तुम्हें मेरे द्वारा भेजी हुई तम्बाखू मिली या नहीं?"

"हाँ, क्या आपको मेरा पत्र नहीं मिला?"

मुझे हँसी आ गयी। उसके मनलायक तम्बाखू मैं जुटा ही नहीं सका था। उसे पाइप में रखकर पीने की अमरीकन तम्बाखू चाहिए थी। किन्तु मेरे सम्बन्धियों ने उसे मेरे पास भेजना ही बन्द कर दिया था। सम्भव है, उसे राह में कहीं किसीने रोक लिया हो। कुछ भी हो, तम्बाखू मेरे पास कभी नहीं आई।

"मैं कहीं-न-कहीं से तुम्हारे लिए थोड़ी तम्बाखू ज़रूर ला दूँगा।" मैं बोला—"हाँ, एक बात तो बताओ। क्या तुमने शहर में दो अंग्रेज़ लड़कियों को देखा है? वे परसों ही यहाँ आयी हैं।"

"होटल में तो नहीं हैं।"

"नहीं, वे परिचारिकाएँ हैं।"

"हाँ, दो परिचारिकाओं को देखा है। ज़रा एक मिनट ठहरिये। मैं अभी पता लगाता हूँ कि वे कहाँ ठहरी हैं।"

"उनमें से एक मेरी पत्नी है।" मैं बोला—"मैं उसी से मिलने यहाँ आया हूँ।"

"और दूसरी मेरी औरत है।"

"मैं तुमसे मज़ाक नहीं कर रहा हूँ।"

"तब इस मूर्खतापूर्ण परिहास के लिए कृपया मुझे क्षमा कीजिए।" उसने कहा—"आपकी बात ठीक से समझ नहीं सका मैं।" वह कुछ देर के लिए बाहर चला गया। मैं जैतून, नमकीन बादाम और 'पोटेटो-चिप्स' का स्वाद लेता रहा। शराब पीने के उस कमरे में लगे आइने में मैंने नागरिक वस्त्रों में सज्जित अपने शरीर को देखा। बैरा लौट आया। "वे स्टेशन के पास, एक छोटे होटल में ठहरी हुई हैं—" उसने बताया।

"कुछ सैंडविच मिल सकेंगे?"

"हैं तो नहीं; पर मैं मंगा देता हूँ। आप तो जानते ही हैं कि यहाँ कुछ भी नहीं है। कोई ठहरा भी तो नहीं है यहाँ आजकल।"

"क्या सचमुच यहाँ कोई नहीं है?"

"हैं; परन्तु बहुत कम व्यक्ति।"

सैंडविच आ गये। तीन सैंडविच खाने के बाद मैंने दो गिलास मार्टिनी और पी। उसके समान बढ़िया और ठंडी शराब का स्वाद मैंने आज तक नहीं चखा था। उसे पीने के बाद मुझे लगा कि मैं सचमुच सभ्य-जगत् में रह रहा हूँ। लाल शराब, पावरोटी, पनीर, बेस्वाद कॉफी और ब्रेण्पा पीते-पीते मैं थक गया था। पर अब मैं शराबघर के खूबसूरत महोगनी के (अमेरिका का एक वृक्ष) काउंटर, पीतल की छड़ों और आइने के सामने एक ऊँची तिपाई पर बैठा था। चिन्ताएँ मुझ से कोसों दूर भाग चुकी थीं। इतने में बैरा ने मुझ से कोई प्रश्न पूछा।

"युद्ध के विषय में कोई बात मत करो।" मैं बोला। युद्ध मुझसे मीलों दूर था। हो सकता है, युद्ध बंद हो गया हो। कम-से-कम जहाँ मैं बैठा था, वहाँ तो युद्ध नाम की कोई चीज़ नहीं थी। और तब मुझे अनुभव हुआ कि मेरे लिए सचमुच युद्ध का अंत हो चुका था। फिर भी मैं यह विश्वास नहीं कर सका कि सही अर्थों में युद्ध का खात्मा हो गया था। मेरे हृदय में उस समय ठीक उस विद्यार्थी की-सी भावनाएँ उठ रही थीं, जो किसी खास मौके पर बिना अनुमति के पाठशाला से अनुपस्थित रहे और यह जानने का इच्छुक हो कि उस विशिष्ट अवसर पर पाठशाला में क्या हुआ!

जब मैं कैथरीन और हैलेन फर्ग्यूसन के होटल में पहुँचा, तो वे खाना खा रही थीं। दालान में खड़े होकर मैंने उन्हें मेज़ पर खाना खाते हुए देखा। कैथरीन का मुख मुझसे कुछ दूर था। मैंने उसकी लटों को देखा, उसके कपोलों पर दृष्टि दौड़ाई और उसकी ग्रीवा तथा कंधों को निहारता रहा। फर्ग्यूसन बातों में खोयी थी। जब मैं कमरे के भीतर पहुँचा, तो वह चुप लगा गयी।

"हे भगवान्! तुम!" वह चकित-सी बोली।

"हेलो!" मैंने कहा।

"ओह!—तुम!" कैथरीन अकचकाकर बोली। उसका मुखड़ा दमक उठा। मुझे अपने सामने पा वह अपार सुख का अनुभव कर रही थी। मैंने झुककर उसका चुम्बन ले लिया। वह आरक्त हो उठी। मैं मेज़ के पास ही बैठ गया।

"तुम भी एक अजीब मुसीबत हो!" फर्ग्यूसन ने कहा—"यहाँ क्या कर रहे हो तुम? खाना खा लिया है?"

"नहीं।" तभी खाना परोसनेवाली नौकरानी भीतर आई और मैंने उसे अपने लिए खाना लाने का आदेश दे दिया। कैथरीन टकटकी लगाकर मुझे देखती रही। उसके नेत्रों से अवर्णनीय सुख झाँक रहा था।

"तुम इस असैनिक वेश में यहाँ क्या करने आये हो?" फर्ग्यूसन ने पूछा।

"मैं अब मंत्रिमडल में आ गया हूँ।"

"नहीं, तुम ज़रूर किसी झँझट में फँस गये हो।"

"कैसी बातें करती हो, फर्गी! तुम्हें तो खुश होना चाहिए।"

"मैं तुम्हें देखकर खुश नहीं हो सकती। मैं जानती हूँ कि तुमने इस गरीब लड़की को किस गढ़े में ढकेल दिया है। तुम्हारी मनहूस सूरत देखकर मुझे ज़रा भी प्रसन्नता नहीं होती।"

कैथरीन मेरी ओर देखकर मुस्कराई। मेज़ के नीचे मेरा पैर दबाकर उसने मुझे चुप रहने का संकेत किया।

"मुझे किसी ने गढ़े में नहीं ढकेला है, फर्गी! मैं स्वयं ही अपने जाल में फँस गयी हूँ।"

"मैं इसकी सूरत भी नहीं देखना चाहती।" फर्ग्यूसन ने कहा—"इसने अपनी नीचतापूर्ण इटालियन चालबाज़ियों द्वारा तुम्हें बरबाद करने के सिवा और क्या किया है? अमरीकी तो इटालियनों से भी अधिक अधम होते हैं।"

"और स्कॉच सचमुच बड़े नैतिक व्यक्ति होते हैं!" कैथरीन बोली।

"मेरा मतलब यह नहीं है। मैं तो इस व्यक्ति की इटालियन नीचता की बात कह रही हूँ।"

"क्या मैं सचमुच नीच हूँ, फर्गी?"

"हाँ, हाँ, तुम नीच हो! नीच से भी नीच—अधम से भी अधम। तुम एक सर्प हो—इटालियन सैनिक-वेश में छिपे हुए विषैले नाग! एक लबादा ओढ़कर अपने आपको ढँक लेनेवाले साँप।"

"किन्तु अब तो मैं इटालियन सैनिक के वेश में नहीं हूँ।"

"यह तुम्हारी नीचता का दूसरा उदाहरण है। गर्मी के मौसमभर तुम प्रेम करते रहे। इस मासूम लड़की को तुमने गर्भवती बनने के लिए बाध्य कर दिया। और अब, अब मैं समझती हूँ कि तुम इसे अकेली छोड़कर चोर के समान भाग जाओगे।"

मैं कैथरीन की ओर देखकर मुस्कराया। वह भी मुस्करा पड़ी।

"हम दोनों ही चोरों की तरह भागनेवाले हैं।" वह बोली।

"तुम दोनों एक ही धातु के बने हो।" फर्ग्यूसन ने कहा—"मैं तो तुम्हारे कारण, शर्म से पानी-पानी हुई जाती हूँ, कैथरीन! लज्जा और सम्मान नाम की वस्तु तो तुममें है ही नहीं। तुम भी उतनी ही छिछली हो, जितना यह है।"

"नहीं फर्गी, नहीं।" कहते हुए कैथरीन ने प्यार से उसका हाथ थपथपाया—"मुझ पर इस प्रकार दोष मत लगाओ। तुम जानती हो कि हम एक-दूसरे को चाहते हैं।"

"हटाओ अपना हाथ यहाँ से।" फर्ग्यूसन बोली। उसका मुख क्रोधावेश में लाल हो रहा था—"यदि तुम्हें थोड़ी भी शर्म होती, तो आज बात ही दूसरी होती। किन्तु तुम्हारे, ईश्वर जाने, कितने महीने का गर्भ है, और फिर भी तुम इसे मज़ाक समझती हो! आज अपने कौमार्य नष्ट करनेवाले के लौट आने पर, तुम मुस्करा रही हो। तुम्हारी शर्म मर चुकी है—तुम्हारी भावनाएँ नष्ट हो चुकी हैं।" वह रोने लगी। कैथरीन ने उसके पास जाकर उसके गले में बाँहें डाल दीं। वह उसे सांत्वना दे रही थी। मैंने उसकी ओर देखा; किन्तु मुझे उसके शरीर में कोई अन्तर नहीं दिखाई दिया।

"मुझे इसकी परवाह नहीं।" फर्ग्यूसन ने सिसकते हुए कहा—"मैं समझती हूँ—यह सब बड़ा भयानक है।"

"चुप हो जाओ, फर्गी।' कैथरीन उसे समझाते हुए बोली—"क्यो शर्मिंदा कर रही हो। रोओ मत। आँसू पोंछ लो, फर्गी!"

"नहीं, मैं रो नहीं रही हूँ।" हिचकियाँ भरते हुए फर्ग्यूसन बोली—"रोती नहीं हूँ मैं। दुःख तो मुझे इस बात का है कि तुमने अपने-आपको कितनी भयानक परिस्थिति में डाल लिया है।" उसने मेरी ओर देखा—"मैं तुमसे घृणा करती हूँ—हार्दिक घृणा!" वह बोली—"और यह लड़की मुझे तुमसे घृणा करने से नहीं रोक सकती। नीच, अधम, अमरीकन-इटालियन कहीं के!" उसके नेत्र और नाक रोते-रोते बिलकुल लाल पड़ गए थे।

कैथरीन मुझे देखकर मुस्कराई।

"मेरे गले में बाँहें डाल तुम उसकी ओर मुँह करके मुस्करा नहीं सकती।"

"तुम्हारा इतना क्रोध अनुचित है, फर्गी।"

"मैं जानती हूँ।" सिसकियाँ भरते हुए फर्ग्यूसन बोली—"मेरी बातों का

कोई ख़याल मत करो। तुम दोनों मेरे आवेग को मन में मत लाओ। अपने आपे में नहीं हूँ मैं—समझ लो बैठी हूँ—जानती हूँ यह सब। किन्तु मैं तुम दोनों को सुखी देखना चाहती हूँ।"

"सुखी तो हैं ही हम।" कैथरीन ने कहा—"तुम कितनी अच्छी हो, फर्गी!"

फर्ग्यूसन पुनः रो पड़ी—"जिस तरह तुम आज सुखी हो, मैं तुम्हें उस तरह सुखी नहीं देखना चाहती। तुम दोनों शादी क्यों नहीं कर लेते? तुम्हारी कोई और पत्नी तो नहीं है न?"

"नहीं।" मैंने उत्तर दिया। कैथरीन हँस पड़ी।

"हँसने की कोई बात नहीं है—" फर्ग्यूसन बोली—"तुम नहीं जानती, इनमें से अधिकांश की दूसरी पत्नी होती है।"

"यदि तुम इसी में प्रसन्न हो, फर्गी" कैथरीन ने कहा—"तो हमारा विवाह भी हो जायेगा।"

"मुझे प्रसन्न करने के लिए नहीं, तुम्हें स्वयं अपनी मर्ज़ी से विवाह कर लेना चाहिए।"

"अब तक तो हम काफ़ी व्यस्त थे।"

"हाँ, हाँ, मुझे मालूम है। तुम्हारी व्यस्तता अच्छी तरह समझती हूँ मैं। बच्चा पैदा करने के प्रयास में व्यस्त थे न!" मुझे लगा, वह फिर से रोने-वाली है; किन्तु उसके स्थान पर इस बार वह बड़ी कटु हो गई—"मेरा ख़याल है, अब तुम आज रातको मुझे छोड़कर इसके साथ चल दोगी।"

"हाँ," कैथरीन बोली—"यदि इनकी इच्छा हुई, तो।"

"और, मेरा क्या होगा?"

"क्या तुम यहाँ अकेली रहने से डरती हो?"

"हाँ, डरती हूँ।"

"तब, मैं तुम्हारे साथ यहीं रहूँगी।"

"नहीं, तुम इसी के साथ जाओ। अभी, इसी क्षण चली जाओ। उठो, जाओ यहाँ से। मै तुम दोनों को यहाँ देखना तक नहीं चाहती।"

"कम-से-कम हम अपना भोजन तो समाप्त कर ले।"

"नहीं, तुम लोग अभी जाओ।"

"फर्गी, कुछ तो बुद्धि से काम लो।"

"मैं कहती हूँ, चले जाओ यहाँ से! दोनों-के-दोनों निकल जाओ—एक मिनट भी यहाँ ठहरने की आवश्यकता नहीं है।"

"चलो, हम चलें" मैं बोला। फर्गी के व्यवहार से मैं तंग आ गया था।

"तुम स्वयं जाने के इच्छुक हो। देखा तुमने, तुम लोग चाहते हो कि मैं खाना तक अकेली खाऊँ। इटालियन झीलों पर घूमना मुझे शुरू से पसंद है। तुम अभी ही मुझे अकेली छोड़कर जा रही हो! तुम्हारा मेरे साथ यही व्यवहार है! ओह!" वह फिर सिसक पड़ी। उसने कैथरीन की ओर देखा। उसका गला रुंध आया था।

"हम लोग भोजन समाप्त होने तक रुक जाते हैं।" कैथरीन ने कहा—"यदि तुम चाहती हो कि मैं यहीं रहूँ, तो मैं तुम्हें अकेली छोड़कर नहीं जाऊँगी, फर्गी।"

"नहीं, नहीं, मैं स्वयं चाहती हूँ कि तुम चली जाओ। अवश्य जाओ तुम। ओह, मैं भी कितनी विवेकहीन हूँ! मेरी बातों पर ध्यान मत देना!" उसने आँसू पोंछते हुए कहा।

यह रोना-धोना देखकर भोजन परोसनेवाली लड़की बड़ी उलझन में पड़ गई थी। दुबारा खाना लाते समय जब उसने देखा कि परिस्थिति सुधर गई थी, तो उसने संतोष की साँस ली।

रात्रि का समय—ग्रैण्ड होटल का मेरा अपना कमरा और बाहर सूना-लम्बा बरामदा—एक शान्त-एकान्त कक्ष में बैठे थे हम दोनो। कमरे के सामने हमारे जूते पड़े थे। फ़र्श पर मोटी-सी दरी बिछी थी। खिड़की के बाहर वर्षा की मधुर रिमझिम सुनायी दे रही थी। कमरा प्रकाश से जगमगा रहा था—एक अनोखा आनन्द और उत्साह! कुछ देर बाद बत्तियाँ बुझा दी गयीं। चिकनी चादरों और आरामदायक गद्दे तथा तकियों पर एक अपूर्व सुख का अनुभव हो रहा था। हमें ऐसा प्रतीत हुआ कि हम अपने घर लौट आये हैं। रात में जब भी हमारी नींद खुली, हमने स्वयं को एक दूसरे के समीप पाया—कोई किसी से दूर नहीं हुआ—कोई किसी को छोड़कर नहीं गया। हमारे जीवन का सूनापन अब हमसे सदा के लिए विदा हो चुका था। जो-कुछ हमारे सामने था, वही सत्य था। शेष सब असत्य था—अप्रत्यक्ष। जब हम थक जाते, तो सो जाते। बीच में यदि हममें से किसी एक की नींद उचट जाती, तो दूसरा भी जाग जाता और फिर कोई अकेला नहीं रह पाता। पुरुष प्रायः एकाकी रहना चाहता है, नारी भी एकान्त की कामना करती है। यदि वे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो उस प्रेम में ही एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या की भावना पैदा हो जाती है। किन्तु हमारे साथ सच तो यह है कि हम दोनों ने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया। एक-दूसरे के साथ रहकर भी हम एकान्त का अनुभव कर सकते थे। सम्पूर्ण

विश्व से अलग—ऐसा एकान्त, जिसमें केवल हम दो थे—अन्य कोई नहीं था। हाँ, बिलकुल अकेलेपन का अनुभव मुझे अपने जीवन में एक बार हुआ है। उस समय बहुत-सी लड़कियों से घिरे रहने पर भी मैंने स्वयं को अकेला महसूस किया था। निरे एकाकीपन का अनुभव ऐसी ही परिस्थिति में तो होता है। किन्तु जब हम दोनों साथ थे, तो अकेलेपन और भय या मनहूसियत का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। मैं जानता हूँ कि रात बिलकुल वैसी ही नहीं होती, जैसा दिन हुआ करता है। दोनों में अंतर होता है। रात में जो-कुछ होता है, उसे दिन में समझाया भी नहीं जा सकता; क्योंकि दिन के समय उसका अस्तित्व ही नहीं होता। एकाकी व्यक्तियों के लिए—अगर उनका सूनापन जाग उठा—तो रात कभी-कभी बड़ी भयावह हो उठती है। किन्तु कैथरीन के साथ रहने पर मुझे दिन और रात में कोई अन्तर नहीं दिखायी देता था। अंतर था भी तो इतना ही कि रात का समय दिन की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह कटता था। मनुष्य, इस डरावनेपन के विरुद्ध यदि अपनी निर्भयता का परिचय देता है और यदि उसकी निर्भयता सिर उठाने लगती है, तो दुनिया उसे जीने नहीं देती—उसे तोड़मरोड़ कर रख देती है। दुनिया के लिए उसकी मौत के सिवा शायद और कोई मार्ग शेष नहीं रह जाता है। वह तो प्रत्येक व्यक्ति को झुकने के लिए मज़बूर करती है। बाद में, बहुत-से मनुष्य इस हालत में भी अपनी शक्ति बढ़ा लेते हैं। किन्तु जो झुकना नहीं जानते, उन्हें तो मरना ही पड़ता है।

दुनिया तो इस मामले में पक्षपात नहीं करती। नम्र, सज्जन और शूरवीर—बिना किसी भेदभाव के—सबका यही अंत होता है। यदि आप इन व्यक्तियों की श्रेणी में नहीं है, तो आप निश्चिंत रह सकते हैं। मृत्यु तो आपकी भी होगी; किन्तु आपकी मौत के लिए दुनिया को कोई जल्दी नहीं है।

दूसरी सुबह जब मैं उठा, तो कैथरीन सो रही थी। सूर्य की किरणें खिड़की से कमरे में झाँक रही थीं। वर्षा बन्द हो गई थी। मैं बिस्तर से उतरा और खिड़की के निकट जा कर खड़ा हो गया। खिड़की के नीचे ही बगीचा था। यद्यपि उस समय बगीचे में फूल नहीं थे, किन्तु बगीचा बड़े कलात्मक ढंग से बनाया गया था। कंकरीले रास्ते, वृक्षों की कतार और झील के किनारे तक पत्थर की दीवार—झील के उस ओर एक-दूसरे से जुड़ी हुए पर्वत-श्रृंखलाएँ और झील के नीले जल पर सूर्य की थिरकती हुई स्वर्ण-रश्मियाँ—मैं खड़ा-खड़ा मुग्ध भाव से निहारता रहा। ज्योंही मैं मुड़ा, मैंने देखा कि कैथरीन की नींद टूट चुकी थी। वह मुझे ही देख रही थी।

"कैसे हो प्राण?" उसने कहा—"आज का दिन बड़ा सुन्दर है—है न?"

"तुम्हें कैसा लग रहा है?"

"बहुत अच्छा। हमारी रात बड़ी प्यारी रही।"

"नाश्ता करोगी?"

वह नाश्ता करना चाहती थी। मैं भी नाश्ता करना चाहता था। हमने वहीं, बिस्तर पर ही नाश्ता किया। नवम्बर मास की कोमल-स्निग्ध रवि-किरणें खिड़की की राह कमरे में प्रवेश कर रही थीं। मेरी गोद में नाश्ते की तश्तरी रखी थी और हम नाश्ता कर रहे थे।

"क्या आज तुम समाचारपत्र नहीं पढ़ोगे? जब तुम अस्पताल में थे, तब तो हमेशा समाचारपत्र पढ़ते थे।"

"हाँ," मैं बोला—"पर अब मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है।"

"क्या युद्ध वास्तव में इतना भयानक था कि तुम उसके विषय में पढ़ना भी नहीं चाहते?"

"मैं उन समाचारों पर नजरें भी नहीं डालना चाहता।"

"काश! मैं भी तुम्हारे साथ युद्धक्षेत्र में होती—मैं भी उसके भीषणस्वरूप से परिचित हो सकती।"

"यदि किसी दिन मैं अपने मस्तिष्क में उसका स्पष्ट चित्र खींच सका, तो तुम्हें अवश्य बताऊँगा।"

"तुम्हें सैनिक-वेश में न पाकर कहीं अधिकारी-वर्ग तुम्हें गिरफ्तार तो नहीं कर लेगा?"

"वे कदाचित् मुझे गोली ही मार देंगे।"

"तब हमें यहाँ नहीं रहना चाहिए। हमें इस देश से बाहर चले जाना चाहिए।"

"मैंने भी यही सोचा है।"

"हमें यह देश छोड़ ही देना चाहिए, प्रियतम! मूर्खों की तरह बैठकर अवसर की प्रतीक्षा करने से कोई लाभ नहीं। तुम मेरठ से मिलान कैसे पहुँचे थे?"

"गाड़ी से। उस समय मैं सैनिक-वेश में था।"

"क्या तुम्हें उस समय किसी विपत्ति की आशंका नहीं थी?"

"बहुत कम। मेरे पास इधर-उधर जाने का एक पुराना आदेशपत्र था। मेरठ में मैंने उसकी तारीख बदल दी थी।"

"प्रियतम, तुम किसी भी क्षण गिरफ्तार किये जा सकते हो। मैं ऐसा

ख़तरा मोल नहीं लेना चाहती। यह तो निरी मूर्खता होगी। यदि अधिकारी लोग तुम्हें पकड़कर ले गए तो, सोचो तो, हमारी क्या हालत होगी?"

"हमें इस विषय में कुछ सोचना ही नहीं चाहिए। मैं तो सोच-सोच कर थक गया हूँ।"

"पर यदि कोई तुम्हें गिरफ्तार करने आया, तो तुम क्या करोगे?"

"मैं उसे गोली मार दूँगा।"

"देखा, कितने पागल हो तुम! जब तक हम यहाँ से अन्य स्थान के लिए रवाना न हो जायें, मैं तुम्हें होटल से बाहर नहीं निकलने दूँगी।"

"कहाँ जानेवाले हैं हम?"

"नाराज़ मत हो, प्राण! जहाँ तुम कहोगे, हम वहीं जायेंगे। पर कृपा कर यह अभी तय कर लो कि हम कहाँ जायेंगे।"

"इस झील के उस पार स्विट्ज़रलैण्ड है। हम लोग वहाँ जा सकते हैं।"

"तब तो बड़ा आनन्द आयेगा।"

बाहर बादल उमड़ रहे थे। झील पर कालिमा छाती जा रही थी।

"कहीं ऐसा न हो कि हमें सदा इसी तरह छिप कर रहना पड़े—अपराधियों का जीवन बिताना पड़े।" मैं बोला।

"ऐसा मत सोचो, प्रियतम। तुम कोई बहुत दिनों से तो इस तरह छिप कर रह नहीं रहे हो – और अपराधियों के समान हम कभी रहेंगे भी नहीं। बड़े अच्छे दिन आनेवाले हैं हमारे।"

"कभी-कभी मुझे लगता है, मैं सचमुच अपराधी हूँ। मैं सेना से भाग खड़ा हुआ हूँ।"

"समझदारी से काम लो, प्रिय। दया करो मुझ पर। तुम सेना से नहीं भागे हो, केवल इटालियन सेना से भागे हो।"

मुझे हँसी आ गई। "तुम सचमुच बड़ी प्यारी लड़की हो!" मैंने कहा—"चलो, बिस्तर पर चलें। मुझे बिस्तर पर पड़े रहने में बड़ा आनन्द आता है।"

थोड़ी देर बाद कैथरीन अचानक पूछ बैठी—"तुम अपने-आपको अपराधी तो नहीं मानते न?"

"नहीं।" मैं बोला—"जब मैं तुम्हारे साथ होता हूँ, तो मुझे ऐसा नहीं लगता।"

"कितने पागल हो तुम भी।" उसने कहा—"किन्तु मैं तुम्हें सँभाल

लूँगी। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है प्राण, कि मुझे सुबह उठने में तनिक भी आलस्य नहीं मालूम देता!"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

"क्या तुम इसे अपना सौभाग्य नहीं समझते कि तुम्हें कितनी योग्य पत्नी मिली है। किन्तु मुझे इसकी चिंता नहीं। मैं तुम्हें किसी ऐसे स्थान में ले जाऊँगी, जहाँ तुम्हें कोई गिरफ्तार न कर सके, और तब हम सुखपूर्वक अपने दिन बितायेंगे।"

"तब चलो, हम इसी क्षण वहाँ चल दें।"

"चलेंगे प्रिय, अवश्य चलेंगे। जब और जहाँ तुम जाना चाहोगे, वहीं मैं तुम्हारा साथ दूँगी।"

"छोड़ो, अब हमें किसी भी सम्बन्ध में नहीं सोचना चाहिए।"

"अच्छी बात है!"

.३५.

कैथरीन, झील के किनारे-किनारे, फर्ग्यूसन से मिलने उसके होटल चली गई। मैं शराब पीने के कमरे में जाकर समाचारपत्र पढ़ने लगा। कमरे में चमड़े की आरामदेह कुर्सियाँ पड़ी थीं। उन्हीं में से एक पर बैठकर मैं उस समय तक समाचारपत्र उलटता रहा, जब तक कि बैरा भीतर नहीं आया। अखबारों में मैंने पढ़ा कि इटालियन सेना टैग्लिआमेण्टो नदी पर बुरी तरह पराजित हुई थी और अब वह पिआवे की ओर पीछे हट रही थी। मुझे पिआवे का स्मरण हो आया। सॉन डोना के पास पिआवे नदी को पार करता हुआ एक रेल-मार्ग मोर्चे की ओर जाता था। उस स्थान पर नदी गहरी और संकरी थी। वहाँ उसका बहाव भी बहुत धीमा था। नीचे के इलाकों में बहुत-सी नहरें तथा मच्छरों से भरे दलदल थे। वहाँ कुछ आकर्षक बंगले भी थे। युद्ध के पहले, एक बार, कोर्टिना-द-आम्पेज़ो जाते समय, पहाड़ियों के बीच, इस नदी के किनारे मैंने घण्टों यात्रा की थी। उस स्थान से कुछ ऊपर, नदी की तीव्र गति से बहनेवाली धारा ऐसी लगती थी, मानो मछलियों की एक लम्बी पंक्ति बढ़ती चली आ रही हो। बीच-बीच में उसका जल-प्रवाह छिछला होकर फैल गया था। चट्टानों के नीचे जलकुण्ड बन गए थे। केडोर के पास, रास्ता नदी के

तट से मुड़कर दूर चला गया था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि आख़िर वहाँ जो सैन्यदल था, वह नीचे कैसे उतरेगा? तभी बैरा अंदर आया।

"काउण्ट ग्रेफ़ी आपके विषय में पूछ रहे थे।" उसने कहा।

"कौन?"

"काउण्ट ग्रेफ़ी! आपको स्मरण होगा, पिछली बार जब आप यहाँ आये थे, तो आपसे एक बूढ़ा व्यक्ति मिला था—वही।"

"क्या वे यहाँ हैं?"

"जी हाँ, वे अपनी भतीजी के साथ यहीं ठहरे हुए है। मैंने उन्हें बताया कि आप भी यहीं हैं। वे आप के साथ बिलियर्ड्स खेलना चाहते हैं।"

"वे हैं कहाँ इस समय?"

"टहल रहे हैं।"

"उनका स्वास्थ्य कैसा है?"

"उनकी उम्र पहले से भी कम दिखाई देती है और वे हमेशा की भाँति युवा प्रतीत होते है। पिछली रात खाना खाने के पहले वे तीन गिलास शैम्पेन पी गये।"

"उनके बिलियर्ड-खेल का क्या हाल है?"

"ठीक है। उन्होंने मुझे हरा दिया। जब मैंने उनसे कहा कि आप यहाँ हैं, तो वे बड़े प्रसन्न हुए। उनके साथ खेलनेवाला यहाँ कोई है भी तो नहीं।"

काउण्ट ग्रेफ़ी की उम्र इस समय चौरानवे वर्ष थी। वे मेट्टरनिच के समकालीन थे। उनके सिर के बाल तथा मूँछें सफ़ेद हो चुकी थीं। वे बड़े व्यवहारकुशल थे। आस्ट्रिया और इटली, दोनों देशों में वे एक सफल कूटनीतिज्ञ के रूप में काम कर चुके थे। उनके जन्म-दिवस पर दिये जानेवाले प्रीतिभोजों को मिलान के सामाजिक-जीवन में बड़ा महत्त्व प्राप्त था। वे सौ वर्षों तक जीना चाहते थे। वे बिलियर्ड बहुत सुंदर खेलते थे। चौरानवे वर्ष की इस वृद्धावस्था में वे जिस कुशलता और धैर्य के साथ बिलियर्ड खेलते थे, वह वस्तुतः सराहनीय था। एक बार इसके पहले जब मैं स्ट्रेसा आया था, तब उनसे मेरी भेंट हुई थी। उसी समय हमने बिलियर्ड खेलते-खेलते साथ-साथ शैम्पेन पी थी। शैम्पेन पीने का यह ढंग मुझे बहुत पसन्द आया था। उन्होंने उस खेल में सौ में से पन्द्रह नम्बर देकर मुझे हरा दिया था।

"तुमने मुझे अभीतक क्यों नहीं बताया कि वे यहाँ हैं?"

"मैं भूल गया था।"

"यहाँ और कौन ठहरा है?"

"आपसे परिचित तो और कोई नहीं है। सब मिलाकर इस समय यहाँ केवल छः ही व्यक्ति हैं।"

"इस समय तुम क्या कर रहे हो?"

"कुछ नहीं।"

"तब चलो, मेरे साथ—कुछ मछलियाँ मार लायें?"

"लेकिन घण्टा-भर से अधिक मैं आपके साथ नहीं रह सकूँगा।"

"कोई बात नहीं। जाओ, मछली पकड़ने की बंसी तो ले आओ।"

बैरा ने कोट पहना और हम लोग चल दिये। नीचे जाकर हमने एक नाव ली और मैं नाव खेने लगा। बैरा पीछे की ओर बैठ गया। उसने झील की ट्राउट मछलियाँ फँसाने के लिए बंसी की गिर्री घुमाई और छोर पर बँधे हुए वजन के साथ रस्सी पानी में फेंक दी। हम लोग किनारे के पास ही नाव खेते हुए आगे बढ़ते गये। बैरा हाथ में बंसी पकड़े हुए बैठा रहा। बीच-बीच में वह उसे आगे की ओर झटका दे देता था। झील से स्ट्रेसा शहर बड़ा सूना-सूना दिखायी दे रहा था। उसकी पत्रविहीन लम्बी वृक्ष पंक्तियाँ, विशाल होटलें तथा बन्द बंगले—एक अजीब-सी उदासी और सूनेपन से व्याप्त थे। नाव खेते खेते हम लोग आइसोला-बेला को पार कर गये। वहाँ से हम उन दीवारों के पास पहुँचे, जहाँ पानी बहुत गहरा हो गया था। झील के स्वच्छ नीले जल में पत्थर की दीवारों की आकृतियाँ तिरछी दिखाई दे रही थीं। हमारी नाव आगे बढ़ती गई और हम मछुआ द्वीप पहुँच गए। सूर्य बादलों में छिप गया था और झील के पानी पर अंधेरे का साया घना हो उठा था। पानी बड़ा ठंडा था और उसकी सतह चिकनी दीख रही थी। मछलियों के, पानी की ऊपरी सतह पर आने के समय पर उठनेवाले वृत्त हमने अवश्य देखे; किन्तु हम एक भी मछली नहीं पकड़ सके।

मछुआ-द्वीप की विरुद्ध दिशा में खेते हुए मैं नाव को उस स्थान पर ले गया, जहाँ कुछ अन्य नावें बँधी थीं और कुछ व्यक्ति जाल सुधार रहे थे।

"यदि हम यहाँ थोड़ी शराब पी लें, तो अच्छा रहेगा।"

"क्यों नहीं, चलिये।"

मैं नाव को पत्थर के घाट के निकट ले आया। बैरा ने नाव के एक ओर के लकड़ी के तख्ते की ऊपरी कोर में बंसी की गिर्री अटका दी और धागा लपेटते हुए उसने उसे ऊपर खींच लिया। नाव से उतरकर मैंने उसे घाट से बाँध

दिया। हम लोग कॉफे में पहुँचे और एक लकड़ी की मेज़ के पास बैठ गए। नौकर को हमने वरमाउथ (शराब) लाने का आदेश दिया।

"आप नाव खेते-खेते थक तो नहीं गए?"

"नहीं तो।"

"लौटती बार मैं खे लूँगा।" उसने कहा।

"नहीं, मुझे नाव खेना अच्छा लगता है।"

"हो सकता है, आपके बंसी डालने से हमारा भाग्य पलट जाये।"

"अच्छी बात है।"

"युद्ध कैसा चल रहा है?"

"बिलकुल वाहियात ढंग से!"

"मुझे युद्ध में नहीं जाना पड़ेगा। मैं अब काफ़ी बूढ़ा हो चुका हूँ—काउण्ट ग्रेफ़ी की तरह।"

"हो सकता है, तुम्हें अभी भी युद्ध में जाना पड़े।"

"अगले वर्ष वे मुझ-जैसे व्यक्तियों को भेजनेवाले हैं। किन्तु मैं नहीं जाऊँगा।"

"और यदि जाना ही पड़ा, तो क्या करोगे?"

"मैं देश छोड़कर कहीं बाहर चला जाऊँगा; पर युद्ध में नहीं जाऊँगा। एक बार मैं अबीसीनिया की लड़ाई में गया था। बिलकुल बेकार है वहाँ जाना। आप क्यों फँसे इस युद्ध के चक्कर में?"

"क्या बताऊँ। मेरी मूर्खता ही समझो।"

"और मँगाऊँ वरमाउथ?"

"मँगाओ।"

लौटती बार बैरा नाव खेने लगा। हम झील में चक्कर लगाते हुए स्ट्रेसा से आगे निकल गये और वहाँ से पुनः किनारे-किनारे ही वापस आये। मैं बंसी की तनी हुई रस्सी को थामे रहा। नवम्बर का महीना था। मैं झील के पानी और सूने-निर्जन तट पर नज़रें गड़ाये बंसी की गिर्री के घूमने के धीमे कम्पन का अनुभव करता रहा। बैरा तेज़ी से डाँड़ चलाता हुआ नाव खे रहा था। पतवार की छपछपाहट के साथ नाव ज्योंही आगे बढ़ती, त्योंही बंसी की रस्सी बहुत हौले से हिल उठती। बीच में एक बार मुझे ऐसा लगा, जैसे मछली ने बंसी पर झपट्टा मारा और तब अचानक रस्सी में तनाव पैदा हुआ और वह एक झटके के साथ पीछे खिंच गयी। रस्सी खींचते समय मैंने ट्राउट मछली के भार का अनुभव किया; किन्तु तभी रस्सी हिली और मछली निकल भागी।

"क्या बड़ी मछली लग रही थी?"

"काफ़ी बड़ी।"

"एक बार मैं अकेला मछली मार रहा था। बंसी मैंने अपने दाँतों से पकड़ रखी थी। अचानक एक मछली का इतने ज़ोर का धक्का लगा कि मुझे मालूम हुआ, मानो मेरा पूरा मुँह ही बाहर निकल आयेगा।"

"सबसे अच्छा तरीक़ा है बंसी को जाँघ पर रखना।" मैं बोला—"वैसी हालत में मछली फँसने का पता भी लग जाता है और दाँत टूटने का डर भी नहीं रहता।"

मैंने पानी में हाथ डाला। वह बहुत ठंडा था। उस समय हम लोग लगभग होटल के सामने पहुँच चुके थे।

"मुझे होटल में जाना है।" बैरा बोला— "ग्यारह बजे के कॉकटेल-नृत्य में मेरा वहाँ होना आवश्यक है।"

"अच्छी बात है।"

मैंने रस्सी खींचकर उसे लकड़ी पर लपेट लिया। लकड़ी के सिरे दाँतदार थे। बैरा ने नाव किनारे लगा दी और पत्थर की दीवार के एक नन्हें कटाव के बीच उसे खड़ा कर दिया। फिर एक साँकल और ताले द्वारा उसने नाव में ताला लगा दिया।

"आप जब भी चाहें"—उसने कहा—"मैं आपको इसकी चाबी दे दूँगा।"

"धन्यवाद!"

हम होटल पहुँचे और शराब पीने के कमरे में गये। मैं इतने सबेरे दुबारा शराब नहीं पीना चाहता था, अतः सीधा ऊपर, अपने कमरे को चला गया। नौकरानी ने अभी-अभी कमरे की सफाई की थी। कैथरीन उस समय तक लौटकर नहीं आई थी। मैं बिस्तर पर लेट गया। उस वक्त मैं चुपचाप पड़ा रहना चाहता था—कुछ सोचने की भी इच्छा नहीं थी।

जब कैथरीन लौटी, तो मैं अपनी स्वाभाविक हालत में आ चुका था। कैथरीन ने मुझे बताया कि नीचे फर्ग्यूसन बैठी थी। वह हम लोगों के साथ ही भोजन करनेवाली थी।

"मुझे विश्वास था कि तुम इसका बुरा नहीं मानोगे।" कैथरीन बोली।

"बुरा मानने की तो बात ही नहीं है।" मैंने कहा।

"क्या बात है, प्रिय? तुम कुछ परेशान-से दीखते हो।"

"नहीं तो!"

"मैं समझ गई। तुम्हें कोई काम नहीं है न। तुम्हारे पास जो कुछ है—वह मैं हूँ और मैं भी तुम्हें अकेला छोड़कर चली गयी थी।—है न?"

"हाँ; है तो सच।"

"मुझे इसका बहुत दुःख है, प्रियतम। मैं जानती हूँ कि अचानक ही सब-कुछ खो बैठने पर मनुष्य के मन में कैसी गहरी उदासी छा जाती है।"

"मेरा जीवन सदा भरा-पूरा था।" मैंने कहा—"और अब यदि तुम मेरे पास नहीं रहती, तो दुनिया में मेरे लिए मानो कुछ भी नहीं रह जाता।"

"किन्तु मैं तो तुम्हारे पास ही हूँ—पास ही रहूँगी। दो ही घण्टे के लिए तो तुमसे अलग हुई थी मैं। क्या तुम अकेले में और कुछ नहीं कर सकते?"

"मैं बैरा के साथ मछली मारने गया था।"

"मज़ा नहीं आया तुम्हें उसमें?"

"क्यों नहीं।"

"देखो, जब मैं यहाँ नहीं रहूँ, तब मेरे विषय में मत सोचा करो।"

"मोर्चे पर मैंने यही तरीक़ा अपनाया था। किन्तु तब मेरे पास करने लायक कुछ काम भी तो था।"

"अरे, अरे, बेचारा 'ओथेलो' अपने काम से ही गया!" वह मुझे चिढ़ाते हुए बोली।

"ओथेलो था हबशी।" मैंने कहा—"और फिर मुझे किसी से ईर्ष्या तो है नहीं। मैं तो तुम्हारे प्रेम में इस कदर खो गया हूँ कि मेरे पास और कुछ रहा ही नहीं!"

"तुम फर्ग्यूसन के साथ भद्रता और अच्छाई से तो पेश आओगे न?"

"मैं तो फर्ग्यूसन से हमेशा अच्छा व्यवहार करता हूँ। हाँ, यदि वह मुझे गालियाँ देने लगे, तो बात दूसरी है।"

"देखो, उसे अपनी किसी बात से दुःख मत पहुँचाना। ज़रा सोचो तो, अपने जीवन में हमने कितना अधिक पाया है जब कि उस बेचारी ने कुछ भी नहीं पाया।"

"मैं नहीं समझता कि जो हमारे पास है, उसकी उसे भी कामना है।"

"तुम इस सम्बन्ध में ज्यादा नहीं जानते, प्रियतम!"

"अच्छा-अच्छा, मैं उसके साथ नम्र व्यवहार करूँगा।"

"मैं जानती हूँ, तुम उसे दुःख नहीं पहुँचाओगे। कितने अच्छे हो तुम!"

"भोजन के बाद तो वह यहाँ नहीं ठहरेगी न? या ठहरेगी?"

"नहीं, मैं उसे किसी प्रकार यहाँ से विदा कर दूँगी।"

"और तब हम यहाँ, ऊपर चले आयेंगे।"

"अवश्य! और भला हम करेंगे भी क्या?"

हम फर्ग्यूसन के साथ भोजन करने के लिए नीचे गए। वह उस होटल से बड़ी प्रभावित हुई। भोजन करने के कमरे की तड़क-भड़क का भी उस पर कम प्रभाव नहीं पड़ा। सफ़ेद काप्री (शराब) की दो-एक बोतलों ने हमारे खाने में आनंद ला दिया। इसी बीच काउण्ट ग्रेफ़ी भी वहाँ आ पहुँचे। हमें देखकर विनम्रतापूर्वक झुकते हुए उन्होंने हमारे प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। उनके साथ उनकी भतीजी भी थी। वह बहुत-कुछ मेरी दादी के समान दिखायी देती थी। मैंने कैथरीन और फर्ग्यूसन से उनके विषय में बताया। फर्ग्यूसन पर इसका बड़ा असर पड़ा। होटल काफ़ी बड़ा और भव्य था; किन्तु वह खाली पड़ा था।—फिर भी वहाँ का खाना बड़ा अच्छा था। शराब भी बड़ी सुंदर थी। उसे पीने के बाद हमने एक नयी ताज़गी का अनुभव किया। कैथरीन को तो इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं थी। वह योंही बहुत खुश थी। हाँ, फर्ग्यूसन पूर्णतः प्रसन्न हो गई। स्वयं मुझे भी बहुत अच्छा लगा। भोजन के बाद फर्ग्यूसन अपने होटल लौट गयी। भोजन करने के बाद अब वह कुछ देर के लिए आराम करना चाहती थी।

तीसरा पहर बीतते-बीतते किसी ने आकर दरवाज़ा खटखटाया।

"कौन है?" मैंने पूछा।

"काउण्ट ग्रेफ़ी जानना चाहते हैं कि क्या आप उनके साथ बिलियर्ड्स खेलेंगे?"

मैंने अपनी घड़ी पर नज़र दौड़ाई। घड़ी मेरे तकिये के नीचे रखी थी। मैंने उतारकर उसे वहाँ रख दिया था।

"क्या तुम्हें वहाँ जाना है, प्रियतम?" कैथरीन फुसफुसाई।

"यदि चला जाऊँ, तो ठीक होगा।" घड़ी में उस समय सवा चार बजे थे। मैंने ज़ोर से उस व्यक्ति से कहा—"काउण्ट ग्रेफ़ी से कह दो, मैं पाँच बजे बिलियर्ड खेलने के कमरे में पहुँच जाऊँगा।"

पौने पाँच बजे मैंने कैथरीन का चुम्बन लेते हुए उससे विदा ली और कपड़े पहनने के लिए स्नानागार में चला गया। अपनी टाई लगाते हुए मैंने स्वयं को दर्पण में देखा। इस नागरिक वेशभूषा में स्वयं मुझे बड़ा विचित्र लग रहा था। फिर भी मैंने कुछ और क़मीज़ तथा मोजे ख़रीदने का निश्चय किया।

"क्या तुम काफ़ी देर तक बाहर रहोगे?" कैथरीन ने पूछा। बिस्तर में लेटे हुए वह बड़ी आकर्षक प्रतीत हो रही थी—"ज़रा मुझे वह ब्रश देना।"

वह अपने बालों पर ब्रश फेरने लगी। मैं खड़ा-खड़ा उसे देखता रहा। अपना सिर एक ओर झुकाये वह ब्रश कर रही थी। बाहर अंधेरा छाया हुआ था। बिस्तर के सिरहाने पड़नेवाले धूमिल प्रकाश में उसके बाल, ग्रीवा तथा कंधे चमक रहे थे। उसके पास पहुँचकर मैंने उसे फिर चूम लिया। उसके ब्रशवाले हाथ को मैंने अपने हाथ में ले लिया और उसका सिर पीछे की ओर तकिये पर लुढक गया। मैंने उसकी ग्रीवा तथा कंधों पर चुम्बनों की वर्षा कर दी और मुझे ऐसा लगा, मानो मैं अपना आपा खोता जा रहा हूँ।

"मैं बाहर नहीं जाना चाहता।"

"मैं भी तुम्हें बाहर नहीं जाने देना चाहती।"

"तब मैं नहीं जाऊँगा।"

"नहीं, नहीं। चले जाओ। थोड़ी ही देर के लिए तो जा रहे हो तुम। उसके बाद तो लौट ही आओगे।"

"शाम को हम अपने कमरे में ही खाना खायेंगे।"

"जल्दी जाओ और जल्दी लौटना।"

काउण्ट ग्रेफ़ी बिलियर्ड-कक्ष में मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे बिलियर्ड-टेबल पर अपने निशाने का अभ्यास कर रहे थे। मेज़ पर पड़ते हुए प्रकाश में वे बहुत सुकुमार-से दिखाई दे रहे थे। प्रकाश से कुछ दूर, एक मेज़ पर बर्फ़ से भरी चादी की एक बाल्टी रखी थी। उसमें रखी हुई शैम्पेन की दो बोतलों के डाट दिखाई दे रहे थे। जब मैं मेज़ की ओर बढ़ा, तो काउण्ट ग्रेफ़ी सीधे खड़े हो गए और मेरे पास आये। अपना हाथ बढ़ाते हुए उन्होंने कहा—"मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप यहाँ आए। मेरे साथ खेलने के लिए यहाँ आने का कष्ट उठाकर आपने बड़ी उदारता दिखाई है।"

"और मुझे खेलने का निमंत्रण देकर आपने मुझ पर बड़ी कृपा की है।"

"आप अच्छी तरह तो हैं न? मैंने सुना था कि आप इसोन्ज़ो की लड़ाई में बहुत घायल हो गए थे। मैं आशा करता हूँ, अब आप पुनः स्वस्थ हो गये होंगे।"

"बिलकुल स्वस्थ हूँ मैं अब। आप तो ठीक हैं न?"

"अरे साहब, मैं तो हमेशा ही ठीक रहता हूँ। लेकिन हाँ, अब मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ। मुझमें अब वृद्धावस्था के चिह्न नजर आने लगे हैं।"

"मुझे विश्वास नहीं होता।"

"मानिए तो आप। एकाध प्रमाण दूँ आपको? देखिये, इटालियन भाषा मैं सरलता से बोल सकता हूँ; पर मैं इसके प्रयोग के विषय में बड़ा सतर्क रहता हूँ—उसका अधिक प्रयोग नहीं करता। किन्तु मैंने अनुभव किया है कि जब मैं थक जाता हूँ, तो इटालियन भाषा में ही बोलना मुझे अच्छा लगता है और इसका अर्थ है कि मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ।"

"तब हम इटालियन में ही बात करेंगे। मैं भी कुछ थक गया हूँ।"

"ओह, किन्तु जब आप थक गये हैं, तो आपको अंग्रेज़ी में बातचीत करना अधिक आसान मालूम होगा।"

"अंग्रेज़ी नहीं, अमरीकी।"

"हाँ-हाँ, अमरीकी ही। आप कृपया अमरीकी में ही बात कीजिये। बड़ी मज़ेदार भाषा है।"

"बड़ी मुश्किल से, कभी-कभी ही किसी अमरीकी से मेरी मुलाकात हो पाती है।"

"आपको उनका न मिलना निश्चय ही, बड़ा अखरता होगा। प्रत्येक व्यक्ति को, अपने देशवासियों से, विशेषतः स्त्रियों से भेंट न होना, अखरता है। मैं जानता हूँ, कैसा अनुभव होता है उस वक्त। फिर, खेल शुरू करें हम या आप बहुत थक गए हैं?"

"नहीं-नहीं, मैं बिलकुल नहीं थका हूँ। वह तो मैंने आपसे मज़ाक किया था। आप मुझे कितने अंकों की रियायत देंगे?"

"क्या आप बिलियर्ड्स बहुत अधिक खेलते रहे हैं?"

"नहीं तो, बिलकुल नहीं।"

"खेलते तो बहुत अच्छा हैं आप। सौ में दस अंकों की रियायत पर्याप्त होगी?"

"आप तो व्यर्थ ही मेरी प्रशंसा कर रहे हैं।"

"पन्द्रह की?"

"बड़ा सुन्दर होगा वह तो। किन्तु आप मुझे हरा अवश्य देंगे।"

"क्या हम कोई दाँव लगाकर खेलें? आप हमेशा दाँव लगाकर खेलने की इच्छा व्यक्त करते रहे हैं।"

"हाँ, यही ठीक भी रहेगा।"

"अच्छी बात है। मैं आपको प्रारम्भ में अठारह अंक देता हूँ। हम लोग एक अंक के लिए एक फ्रेंक के हिसाब से खेलेंगे।"

काउण्ट ग्रेफ़ी बहुत अच्छा बिलियर्ड्स खेलते थे। पचास अंक पूरे होते समय, अपने रिआयती अंकों के साथ मैं उनसे केवल चार अंक आगे था। पचास पर पहुँचकर उन्होंने दीवार में लगा हुआ बटन दबा कर बैरा को बुलाया। "एक बोतल खोलकर रख दो।" उन्होंने बैरा को आदेश दिया। तब मेरी ओर मुड़ते हुए वे बोले—"हम थोड़ी शराब लेंगे, जिससे हम स्फूर्ति अनुभव कर सकें।" शराब बर्फ़-सी ठण्डी और अच्छी थी।

"यदि हम इटालियन में बातचीत करें, तो आपको बुरा तो नहीं लगेगा? क्या करूँ, आजकल यह मेरी बड़ी कमजोरी हो गयी है।"

हम लोग खेल में खो गए। हम बीच-बीच में शराब के घूँट भी ले लिया करते थे। कभी-कभी इटालियन में बातें भी कर लेते; किन्तु बहुत कम। हमारा ध्यान अधिकतर खेल में ही था। काउण्ट ग्रेफ़ी ने अन्ततः अपना सौवाँ अंक बना लिया। अपने रिआयती अंकों को मिलाकर, उस समय भी मैं चौरानवे अंक ही बना पाया था। मुस्कराते हुए उन्होंने मेरा कन्धा थपथपाया।

"अब हम दूसरी बोतल ख़तम करेंगे और आप मुझे युद्ध के विषय में कुछ बतानेका कष्ट करेंगे।" वे मेरे बैठने की प्रतीक्षा करने लगे।

"युद्ध के विषय में नहीं, हम किसी और विषय पर बातें करेंगे।" मैंने कहा।

"आप युद्ध के विषय में बात नहीं करना चाहते? ठीक। आपने इधर कुछ नयी पुस्तकें पढ़ी हैं?"

"कोई ख़ास नहीं।" मैं बोला—"मैं इस मामले में बड़ी मंद बुद्धि वाला आदमी हूँ।"

"नहीं, नहीं। किन्तु आपको कुछ-न-कुछ पढ़ते रहना चाहिए।"

"युद्ध के दिनों में लिखा ही क्या गया है?"

"वाह, एक फ्रांसीसी लेखक ने एक पुस्तक लिखी है—'ला-फ़ीड'। लेखक का नाम है बारबुसे। एक और पुस्तक प्रकाशित हुई है—'ब्रिट्लिंग सीज़ थ्रू इट' (ब्रिट्लिग उसके पार देखते हैं)"

"नहीं, वे नहीं देखते।"

"क्या मतलब?"

"ना, वे उसके पार नहीं देखते। ये पुस्तकें अस्पताल में थीं।"

"तब आप पढ़ते अवश्य रहे हैं—है न?"

"हाँ; किन्तु कोई अच्छी पुस्तक नहीं।"

"मैं तो समझता हूँ कि श्री ब्रिट्लिंग ने अपनी पुस्तक में मध्यम वर्गीय अंग्रेज़ों की आत्मा का बड़ा सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है।"

"मैं आत्मा के विषय में कुछ नहीं जानता।"

"मेरे भोले मित्र! आत्मा के विषय में, हम में से कोई भी व्यक्ति, कुछ नहीं जानता। आप आस्तिक हैं क्या?"

"हाँ, किन्तु केवल रात में।" काउण्ट ग्रेफ़ी मुस्करा उठे। उनकी उँगलियाँ गिलास से खेलने लगीं।

"मैंने आशा की थी कि ज्यों ज्यों मैं बूढ़ा होता जाऊँगा, त्यों-त्यों ईश्वर के प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती जायेगी। किन्तु किसी तरह ऐसा नहीं कर सका मैं।" —उन्होंने कहा—"कितनी करुणाजनक बात है यह।"

"क्या आप मृत्यु के बाद भी जीवित रहना चाहते हैं?"

मैंने पूछा और तभी मुझे प्रतीत हुआ कि मृत्यु का नाम लेकर मैंने कितनी बड़ी मूर्खता की है! किन्तु उन्होने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

"यह तो जीवन के ऊपर निर्भर रहेगा। यह जीवन बड़ा आनन्दमय है। इतना आल्हादक कि मैं अनन्तकाल तक जीवित रहना चाहूँगा।" एक मधुर मुस्कान में वे बोले—"सच पूछा जाये, तो मैं जीवन के आनंद का वर्षों उपभोग कर चुका हूँ।"

हम चमड़े की आरामदेह कुर्सियों में बैठे थे। बर्फ़ से भरी बाल्टी में शैम्पेन रखी थी। हम दोनों के बीच में मेज़ थी और उस पर हमारे गिलास रखे हुए थे।

"यदि आप मेरी आयु तक जीवित रहे, तो आप जीवन में अनेक विचित्रताएँ देखेंगे।"

"बूढ़े तो आप कभी दिखायी ही नहीं देते।"

"यह तो मेरा शरीर है, जो बूढ़ा हो गया है। कभी-कभी तो मुझे इतना अधिक भय लगता है कि मेरी उँगली एक दिन ठीक उसी प्रकार टूट जायेगी, जैसे कोई खड़िया चटाक से टूट जाती है। और मेरी चेतना न तो शरीर से अधिक वृद्ध ही है, न अधिक बुद्धिमान।"

"आप सचमुच बुद्धिमान हैं।"

"नहीं, कोरी भ्रांति है यह। वृद्ध पुरुष और बुद्धिमत्ता—भ्रम है केवल। आयु बढ़ने के साथ ही मनुष्य अधिक बुद्धिमान भी हो जाये, ऐसी बात नहीं है। वह केवल अधिकाधिक सावधान होता जाता है।"

"कदाचित् इसी का नाम बुद्धिमत्ता हो।"

"तब इस प्रकार की बुद्धिमत्ता बड़ी अनाकर्षक है। आप अपने जीवन मे सबसे अधिक महत्त्व किसे देते हैं?"

"उसे, जिससे मैं प्रेम करता हूँ।"

"मेरे साथ भी ऐसा ही है। इसे बुद्धिमानी नहीं कह सकते। क्या आप अपने जीवन को महत्त्व देते हैं?"

"अवश्य।"

"जीवन को मैं भी महत्त्व देता हूँ। मेरे पास जो कुछ है, वही तो सब कुछ है। और हाँ, एक बात और है—जन्मदिन पर बड़े-बड़े भोज देना।" उन्होंने हँसते हुए कहा—"आप कदाचित् मुझसे अधिक बुद्धिमान हैं। आप अपने जन्मदिन पर भोज नहीं दिया करते।"

हम दोनों शराब पीते रहे।

"युद्ध के विषय में आपका क्या खयाल है?" मैंने पूछा।

"मै तो इसे निरी मूर्खता मानता हू।"

"पर जीतेगा कौन?"

"इटली!"

"क्यो?"

"वह एक नवोदित राष्ट्र है।"

"क्या नवोदित राष्ट्र सदा विजयी हुआ करते हैं?"

"एक निश्चित काल तक उनके विजयी होने की सम्भावना रहती है।"

"और उसके बाद क्या होता है?"

"उसके बाद वे नव-राष्ट्र नही रहते, पुराने हो जाते हैं।"

"आप तो कह रहे थे कि आप बुद्धिमान नहीं हैं।"

"भाई मेरे, बुद्धिमानी इसे नही कहते। यह तो केवल छिद्रान्वेषण है।"

"मुझे तो यह बड़ी बुद्धिमानी की बात मालूम होती है।"

"कोई खास बुद्धिमानी नहीं है, इसमें। मैं इसके विरोध में भी उदाहरण प्रस्तुत कर सकता हूँ। फिर भी यह कुछ बुरा नहीं है। हमारी शैम्पेन समाप्त हो गई क्या?"

"क़रीब-क़रीब।"

"थोड़ी और पीएँगे क्या? उसके बाद मुझे कपड़े पहनकर तैयार भी होना है।"

"हमें अब और नहीं पीनी चाहिए।"

"आप सच कह रहे हैं? और नहीं चाहिए आपको?"

"जी नहीं, सचमुच ही नहीं चाहिए मुझे।" वे खड़े हो गये।

"मेरी कामना है कि, आप बड़े भाग्यशाली बनें, सदा सुखी रहें और आपका स्वास्थ्य दूसरों के लिए ईर्ष्या की वस्तु हो!"

"धन्यवाद! मुझे आशा है कि आप अनंत काल तक जीवित रहेंगे।"

"धन्यवाद! जीवित तो मैं रह चुका हूँ। हाँ, यदि कभी आपके हृदय में ईश्वर-भक्ति की भावना जगे और मेरी मृत्यु हो जाये, तो मेरी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना कीजियेगा। अपने बहुत-से मित्रों से मैं यही अनुरोध करता आ रहा हूँ। मुझे स्वयं ही ऐसी आशा थी कि कभी-न-कभी मुझमें भी श्रद्धा उत्पन्न होगी; किन्तु वह क्षण अभी तक नहीं आया।" मुझे ऐसा आभास हुआ कि काउण्ट के मुख पर एक विषादयुक्त मुस्कान फैल गई; फिर भी मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सका। वे इतने वृद्ध थे कि उनका पूरा मुख झुर्रियों से भरा हुआ था। फलतः उनकी एक मुस्कराहट का निर्माण इतनी अधिक झुर्रियो से होता था कि उनमें भावों के उतार-चढ़ाव ही खो जाते थे।

"कदाचित् मैं कभी ईश्वर का बड़ा भक्त बन जाऊँ।" मैंने कहा—"कुछ भी हो, मैं आपके लिए प्रार्थना अवश्य करूँगा।"

"मेरी सदा यही कामना रही कि परमात्मा के प्रति श्रद्धा और भक्ति का उदय मुझमें भी हो। मेरा सारा परिवार भगवान् की भक्ति में लीन होकर ही मरा। किन्तु मेरे जीवन में वह स्थिति अभी तक पैदा नहीं हुई है।"

"उस स्थिति के उत्पन्न होने में अभी काफ़ी समय है।"

"यह भी तो हो सकता है कि समय बीत चुका हो। कदाचित् मैं इतने अधिक काल तक जीवित रह चुका हूँ कि मेरी धार्मिक भावनाएँ मुझसे अब मेल नहीं खातीं।"

"स्वयं मुझे भी रात्रि के समय ही परमात्मा की याद आती है।"

"तब आप भी किसी से प्रेम करते हैं। भूलिये मत कि वह भी आपके धर्म में विश्वास करने की भावना का ही प्रतीक है।"

"क्या आप इस पर विश्वास करते हैं?"

"क्यों नहीं!" उन्होंने मेज़ की ओर बढ़ते हुए कहा—"मेरे साथ खेलकर आपने सचमुच बड़ी कृपा की।"

"आपके साथ खेलने में मुझे भी बड़ा आनंद आया।"

"आइये, हम साथ ही ऊपर चलें।"

.३६.

उस रात तूफ़ान आया। मैं जाग गया और खिड़कियों के कॉचों से टकराती हुई वर्षा की बौछारों की आवाज़ सुनता रहा। खुली हुई खिड़की की राह पानी के छींटे भीतर आ रहे थे। अचानक दरवाज़े पर थपथपाहट सुनाई दी। कैथरीन की नींद न टूटने पाये, इसलिए दबे-पॉवों दरवाज़े तक पहुँचकर मैंने उसे खोला। मदिरा-कक्ष का बैरा सामने खड़ा था। वह ओवरकोट पहने हुए था और अपना गीला टोप उसने अपने हाथ में ले रखा था।

"मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ, लेफ्टिनेण्ट साहब?"

"क्या बात है?"

"बात बड़ी गम्भीर है, साहब।"

मैंने अपने चारों ओर देखा। कमरे में अंधेरा छाया था। फिर खिड़की की राह फ़र्श पर बिखरे हुए पानी की ओर देखते हुए बोला—"भीतर आ जाओ।" उसका हाथ पकड़कर मैं उसे स्नानागार में ले गया। दरवाज़े में भीतर से ताला लगाकर मैंने बत्ती जला दी। स्नान करने के टब के एक किनारे पर बैठते हुए मैंने पूछा—"बात क्या है, एमिलो? क्या तुम किसी विपत्ति में पड़ गये हो?"

"मैं नहीं, आप विपत्ति में हैं, साहब?"

"अच्छा!"

"अधिकारी-वर्ग आपको सबेरे गिरफ्तार करनेवाला है।"

"अच्छा?"

"मैं आपको यही बताने आया हूँ। मैं जब बाज़ार गया था, तो वहीं एक कॉफे में मैंने अधिकारियों को इस सम्बन्ध में बातें करते हुए सुना।"

"ओह!"

वह वहीं खड़ा रहा। उसका ओवरकोट भीगा हुआ था। उसके हाथ में गीला टोप था और वह मौन खड़ा था।

"पर वे मुझे गिरफ्तार क्यो करना चाहते हैं?"

"युद्ध-सम्बन्धी किसी बात पर।"

"तुम्हें मालूम है, कौन-सी बात है वह?"

"जी, नहीं। किन्तु उनकी बातों से कुछ आभास ज़रूर मिला है। उन्हें यह मालूम है कि आप पहले एक अफ़सर की हैसियत से यहाँ आये थे और अब आप एक सामान्य नागरिक के वेश में आये हैं। इस बार सेना के पीछे हटने के बाद, वे इस तरह के प्रत्येक व्यक्ति को गिरफ्तार कर रहे हैं।"

मैं क्षणभर कुछ सोचता रहा।

"वे लोग मुझे गिरफ्तार करने कब आयेंगे?"

"सबेरे। समय का मुझे पता नहीं।"

"तुम क्या करने के लिए कहते हो मुझे?"

उसने हाथ धोने के बर्तन में अपना टोप रख दिया। टोप बुरी तरह भीग चुका था और उससे पानी टपककर फ़र्श पर गिर रहा था।

"यदि आपने कुछ किया ही नहीं है, तो गिरफ्तारी से घबराने का कोई कारण नहीं है। किन्तु हाँ, गिरफ्तार होना हमेशा बुरा होता है—विशेषतः आज की परिस्थिति में।"

"मैं भी गिरफ्तार नहीं होना चाहता।"

"तब आप स्विट्ज़रलैण्ड चले जाइए।"

"कैसे?"

"मेरी नाव में।"

"बाहर तूफ़ान जो चल रहा है।" मैं बोला।

"नहीं, वह खत्म हो चुका है। वातावरण कुछ अशान्त अवश्य है; किन्तु उससे आपको कोई तकलीफ नहीं होगी।"

"कब चल देना चाहिए हमें?"

"अभी—इसी क्षण। वे लोग सम्भवतः कल बहुत सबेरे ही आ पहुँचेंगे।"

"और हमारे सामान का क्या होगा?"

"सब बाँध लीजिये। आपकी श्रीमतीजी को कपड़े पहन कर तैयार होने के लिए कह दीजिये। सामान वगैरह मैं सँभाल लूँगा।"

"तुम कहाँ रहोगे?"

"यहीं ठहरूँगा। मैं नहीं चाहता कि कोई मुझे बाहर हॉल में प्रतीक्षा करते देख ले!"

मैंने स्नानागार का दरवाज़ा खोला और बाहर निकलकर उसे बन्द कर दिया। सोने के कमरे में पहुँचा, तो कैथरीन जाग चुकी थी।

"क्या बात है, प्रियतम?"

"ऐसी कोई ख़ास बात नहीं है, केट।" मैंने उत्तर दिया—"क्या तुम इसी समय नाव में स्विट्ज़रलैण्ड जाना पसन्द करोगी?"

"तुम जाना पसंद करोगे क्या?"

"बिलकुल नहीं।" मैंने कहा—"मैं तो अभी बिस्तर में सोना अधिक पसन्द करूँगा।"

"बात क्या है आख़िर?"

"बैरे का कहना है कि यहाँ के अधिकारी मुझे सबेरे गिरफ्तार करने वाले हैं।"

"बैरा कहीं पागल तो नहीं हो गया है?"

"नहीं।"

"तब जल्दी करो। चलो, कपड़े पहनो, ताकि हम यहाँ से अभी चल दें।" वह उठकर पलंग के एक ओर बैठ गई। उस समय भी वह ऊँघ-सी रही थी—"स्नानागार मे बैरा ही है क्या?"

"हाँ।"

"तब मैं वहाँ हाथ-मुँह धोने नहीं जाऊँगी। ज़रा दूसरी ओर तो नजर फेर लो, प्रियतम। मैं अभी मिनट-भर में कपड़े पहनकर तैयार हो जाती हूँ।"

ज्योंही उसने अपनी रात की पोशाक उतारी, त्योंही मुझे उसकी गोरी-गोरी पीठ दिखाई दे गयी और तभी मैंने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया। गर्भावस्था के कारण अब उसका शरीर कुछ फैलने लगा था। इसी से वह नहीं चाहती थी कि मैं उसकी ओर देखूँ। खिड़कियों पर वर्षा का पानी 'टप टप' करते हुए गिर रहा था। मैंने अपने कपड़े पहने। अपने थैले में रखने लायक मेरे पास कोई विशेष सामान नहीं था।

"मेरे थैले में अभी काफ़ी जगह खाली है, केट। यदि तुम कुछ रखना चाहती हो, तो रख दो!"

"मैंने क़रीब-क़रीब सभी सामान रख लिया है।" वह बोली—"मैं भी बड़ी पागल हूँ, प्रिय। लेकिन हाँ, यह बैरा वहाँ स्नानागार में क्या कर रहा है?"

"शः—वह हमारा सामान नीचे ले जाने के लिए ठहरा हुआ है।"

"बड़ा भला है, बेचारा!"

"पुराना मित्र है मेरा।" मैंने कहा—"मैंने उसके पास पाइप की तम्बाखू

भेजने का वादा किया था लेकिन भेजते-भेजते रह गया।"

खुली हुई खिड़की से मैंने बाहर झाँका। सारा शहर घने अंधकार में लिपटा पड़ा था। इतना अंधेरा था कि झील मुझे दिखाई नहीं दी। चारों ओर घोर कालिमा छायी थी। दिखायी दे रहा था, तो केवल बरसता हुआ पानी। हाँ, तूफ़ान थम चुका था।

"मैं तैयार हूँ, प्रियतम।" कैथरीन बोली।

"अच्छी बात है।" कहते हुए मैं स्नानागार के द्वार पर पहुँचा। "थैले यहीं रखे हुए हैं, एमिलो—" मैं बोला। बैरा ने दोनों थैले उठा लिये।

"तुमने वास्तव में हम पर बड़ा उपकार किया है!" कैथरीन ने कहा।

"नहीं देवीजी, मैं भला किस लायक हूँ।" बैरा बोला—"मैंने तो आपकी सहायता केवल इसलिए की है कि मैं स्वयं किसी विपत्ति में न फँस जाऊँ। देखिये—" उसने मुझसे कहा—"मैं नौकरों के आने-जाने वाली सीढ़ी से इन थैलों को होटल के बाहर ले जाऊँगा। फिर मैं इन्हें नाव पर रख दूँगा। आप लोग यहाँ से इस तरह बाहर निकलिये, मानो घूमने जा रहे हों।"

"हाँ, घूमने के लिए तो बड़ी सुन्दर रात है, यह।" कैथरीन ने कहा।

"रात बड़ी वाहियात है, इसमें शक नहीं।"

"खुशी की बात है कि मेरे पास छाता है।" कैथरीन बोली।

बरामदा पार करते हुए, हम मोटी दरियों से ढँकी चौड़ी सीढ़ियों पर होकर नीचे उतरे। सीढ़ियाँ जहाँ ख़त्म होती थीं, वहाँ दरवाज़े के निकट, एक डेस्क के पीछे दरबान बैठा था।

हमें देखकर उसने आश्चर्य प्रकट किया।

"आप बाहर जा रहे हैं, महाशय?" उसने पूछा।

"हाँ," मैंने उत्तर दिया—"हम लोग झील पर तूफ़ान का दृश्य देखने जा रहे हैं।"

"आपके पास छाता नहीं है, क्या साहब?"

"नहीं।" मैंने कहा—"छाते की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। मेरा यह कोट पानी से भी बचाव करता है।"

उसने अविश्वासकी नज़रों से उस कोट की ओर देखकर कहा—"मैं आपके लिए एक छाता ला देता हूँ।" वह गया और तुरन्त ही एक बड़ा छाता लेकर लौट आया। "छाता ज़रा बड़ा है, हुजूर!" उसने कहा। मैंने उसे दस लिरा का एक नोट थमा दिया। "ओह, आप बड़े कृपालु हैं, महाशय।" वह बोला—

"बहुत-बहुत धन्यवाद!" और दरवाज़ा खोलकर खड़ा हो गया। हम लोग बाहर बरसात में आगे बढ़ने लगे। वह कैथरीन को देखकर मुस्कराया। कैथरीन भी उसे देखकर मुस्करा दी। "तूफ़ान में अधिक समय तक बाहर मत रहिये।" वह बोला—"आप भीग जायेंगे, हुज़ूर और आपकी श्रीमतीजी भी।" वह वहाँ का छोटा दरबान था। अंग्रेज़ी उसे अधिक नहीं आती थी और जो भी वह अंग्रेज़ी में कहता, वह उसकी मातृभाषा का अक्षरशः अनुवाद हुआ करता था।

"हम शीघ्र वापस आ जायेंगे।" मैं बोला। उस दैत्याकार छाते में अपने सिर को छिपाए हम आगे बढ़े। हमने वर्षा से तर तथा अंधकार में लिपटे बगीचे को पार किया और सड़क पर निकल आये। चलते-चलते हम झील की राह पर पहुँच गये। रास्ता लताकुंजों से आच्छादित था और झील के किनारे-किनारे दूर तक चला गया था।

हवा अब झील के किनारे की विपरीत दिशा में बह रही थी—नवम्बर मास की हड्डियाँ-कंपानेवाली ठण्डी-गीली हवा। पहाड़ों पर निश्चय ही बर्फ़ गिरता रहा होगा। हम झील के किनारे बँधी हुई नावों को पीछे छोड़ते हुए उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ हमें बैरा की नाव मिलने की आशा थी। पत्थरों की पृष्ठभूमि में झील का पानी और भी काला दिखाई दे रहा था। बैरा वृक्षों की कतार के पीछे से निकलकर बाहर आया।

"आपके थैले मैंने नाव में रख दिए हैं।" उसने कहा।

"मैं तुम्हारी नाव की कीमत चुका देना चाहता हूँ।" मैं बोला।

"आपके पास कितने पैसे हैं?"

"बहुत तो नहीं है।"

"तब रहने दीजिये, बाद में भेज दीजियेगा। वही ठीक रहेगा।"

"कितना भेजूँ?"

"जितना आप चाहें।"

"नहीं, नहीं; बताओ, कितना?"

"यदि आप सकुशल पहुँच जायें, तो पाँच सौ फ्रैंक भेज दीजियेगा। सुरक्षित पहुँच जाने की खुशी में आपको यह कीमत अखरेगी नहीं।"

"अच्छी बात है।"

"ये कुछ सैण्डविच हैं। आपके लिए लाया हूँ।" उसने मुझे एक पैकेट देते हुए कहा—"होटल के मदिरा-कक्ष में जो कुछ था, मैं सब यहाँ ले आया हूँ। यह ब्राण्डी की बोतल है और यह आपकी प्रिय शराब!" मैंने

उन्हें थैले में डाल लिया। "इनकी कीमत तो तुम ले ही लो—" मैं बोला।

"जैसी आपकी इच्छा। पचास लिरे दे दीजिये।"

मैंने उसे पैसे दे दिये। "ब्राण्डी बड़ी अच्छी है।" वह बोला—"आप बेफिक्र होकर इसे अपनी श्रीमतीजी को भी दे सकते हैं। अब ये नाव में बैठ जायें, तो अच्छा है।" उसने पत्थर की दीवार से टकराती हुई लहरों के उतार-चढ़ाव पर ऊपर-नीचे डगमगानेवाली नाव को पकड़ लिया और कैथरीन को सवार होने में सहायता दी। कैथरीन नाव के पिछले हिस्से में बैठ गयी और उसने अपना लबादा अपने चारों ओर लपेट लिया।

"क्या आप जानते हैं कि आपको कहाँ जाना है?"

"झील के चढ़ाव की ओर।"

"मालूम है, कहाँ तक?"

"लुइनो से आगे।"

"हाँ, लुइनो से आगे, कॅन्नेरो, कॅन्नोबिओ और ट्रान्ज़ानो। जब तक आप ब्रिस्सागो न पहुँच जायें, तब तक आप स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा में नहीं पहुँचेंगे। आपको माण्टे टॅमारा के पार जाना है।"

"क्या बजा है अभी?" कैथरीन ने पूछा।

"सिर्फ ग्यारह।" मैंने उत्तर दिया।

"यदि आप लगातार नाव चलाते जायें, तो सात बजे सबेरे तक आप वहाँ पहुँच जायेंगे।"

"क्या स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा यहाँ से इतनी दूर है?"

"हाँ, लगभग बाईस मील है।"

"पर हम जायँगे कैसे? इस बरसात में तो दिशासूचक यंत्र का होना बड़ा आवश्यक है।"

"ऐसी कोई बात नहीं। यहाँ से नाव खेने हुए पहले आइसोला-बेला जाइये। वहाँ से आइसोला-माद्रे की दूसरी ओर पहुँचकर वायु के प्रवाह के साथ आगे बढ़िए। वायु आपको पालान्ज़ा पहुँचा देगी। आपको वहाँ बत्तियाँ दिखाई देंगी। बस, वहाँ से फिर आप झील के किनारे-किनारे आगे बढ़ते जाइये।"

"हवा की दिशा बदल भी तो सकती है!"

"नहीं—" वह बोला—"हवा अभी इसी प्रकार तीन दिन तक एक ही दिशा में बहती रहेगी। वह सीधे मोट्रेरोने की ओर से आ रही है। और देखिये, नाव से पानी बाहर निकालने के लिए उसमें पीपा रखा हुआ है।"

"नाव का थोड़ा-बहुत मूल्य तो मुझे अभी चुका देने दो।"

"नहीं। मुझे भी तो सेवा का एकाध मौका दीजिए। यदि आप निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच जायें, तो जो आप दे सकें, भेज दीजियेगा।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा।"

"घबराइयेगा नहीं, आप लोगों के डूबने की कोई आशंका नहीं है।"

"तब तो बड़ा अच्छा है।"

"हवा के साथ-साथ ही, झील के चढ़ाव की ओर चल दीजिये।"

"ठीक है!" कहते हुए मैं नाव में चढ़ गया।

"क्या आप होटल का बिल चुकाने के लिए वहाँ पैसा छोड़ आये हैं?"

"हाँ, अपने कमरे में, एक लिफ़ाफ़े में रख आया हूँ।"

"अच्छी बात है। भाग्य आपका साथ दे, लेफ्टिनेण्ट साहब!"

"ईश्वर तुम्हें सुखी रखे, एमिलो! तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद!"

"इस तूफ़ानी रात में यदि आप कहीं डूब गये, तो धन्यवाद देने के स्थान पर मुझे कोसेंगे।"

"क्या कह रहा है यह?" कैथरीन ने पूछा।

"अपनी शुभ कामनाएँ प्रकट कर रहा है।"

"हमारी ओर से भी तुम्हें शुभकामनाएँ।" कैथरीन बोली—"और अनेक धन्यवाद भी?"

"क्या आप लोग तैयार हैं?"

"हाँ।"

वह नीचे झुका। उसने हमारी नाव को गहरे पानी की ओर ढकेलना शुरू किया। मैंने पानी में पतवार डाली और अपना एक हाथ हिलाया। बैरा ने भी अपना हाथ हिलाकर हमें विदा किया। क्षणभर तक होटल की बत्तियों को देखने के बाद मैं झील की छाती पर नाव खेने लगा। सीधे सामने की ओर पतवार चलाते हुए मैं होटल से दूर होता गया। धीरे-धीरे एक-एक करके होटल की बत्तियाँ छिपने लगीं और अन्ततः सब आँखों से ओझल हो गईं। हमारे सामने अब केवल असीम जल-सागर हिलोरें मार रहा था और हवा के साथ-साथ हम उसकी छाती पर बढ़ते चले जा रहे थे।

. ३७ .

उस घोर अन्धकार में अपने मुख पर हवा के थपेड़े सहते हुए मैं नाव खेता गया।

वर्षा बन्द हो चुकी थी। बीच-बीच में हवा के झोंकों के साथ कुछ बौछारें भी आ जाती थीं। अंधेरा इतना अधिक था कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था। बड़ी ठण्डी हवा बह रही थी। नाव के पिछले हिस्से में बैठी हुई कैथरीन को मैं देख रहा था; किन्तु जहाँ पतवारों के चौड़े फल गहराई में डूबते थे, वहाँ का पानी मुझे दिखाई नहीं देता था। पतवार लम्बे थे और उन्हें फिसलने से बचाने के लिए उन पर चमड़े की पट्टियाँ नहीं लगी थीं। मैं पतवार खींचता, उसे ऊपर उठाता, आगे झुकता, जल की थाह लेता और पतवार को पुनः पानी में डुबाकर खींचता। इस प्रकार जहाँ तक सम्भव था, बिना किसी अधिक मेहनत के मैं नाव खे रहा था। हवा हमारा साथ दे रही थी, अतः नाव की चाल में तेज़ी लाने के लिए मुझे पतवारों को अपने दोनों ओर बहुत ऊपर तक नहीं उठाना पड़ता था। मैं जानता था कि पतवार चलाते-चलाते मेरे हाथों में छाले पड़ जाएँगे; किन्तु जहाँ तक हो सकता था, मैं अधिक-से-अधिक समय तक यह नौबत नहीं आने देना चाहता था। नाव हलकी थी और बड़ी आसानी से आगे भागती जा रही थी। गहरे काले जल और सर्वत्र फैले अंधकार में मुझे कुछ दिखाई नहीं देता था; फिर भी मुझे उम्मीद थी कि हम शीघ्र ही पालान्जा पहुँच जाएँगे।

किन्तु पालान्ज़ा के दर्शन हमें बिलकुल नहीं हुए। वायु के तीव्र प्रवाह के बीच अनजाने ही हम उस स्थान को पार कर गये, जहाँ अंधेरे की ओट में दिन-भर की दौड़-धूप के बाद पालान्जा थक कर सो रहा था। वहाँ की बत्तियाँ हमें दिखाई भी न दीं। अन्त में सामने की ओर काफ़ी दूरी पर, हमने कुछ बत्तियाँ देखीं। बत्तियाँ झील के बिलकुल किनारे पर थीं। निकट आने पर ज्ञात हुआ कि वे बत्तियाँ इन्ट्रा नामक स्थान की थीं। किन्तु उससे पहले हमें काफ़ी समय तक कहीं कोई रोशनी नहीं दिखाई दी थी। यहाँ तक कि झील का तट भी नहीं दीख पड़ा था। पानी की लहरों पर हिचकोले खाते हुए हम तेज़ी से आगे बढ़ते गए। पतवार चलाते हुए, कभी-कभी लहरें हमारी नाव को ऊपर उछाल

देतीं और तब पतवारें पानी में गहराई तक जाने के बदले उसकी सतह से ऊपर ही रह जातीं। नाव खेते-खेते हम अचानक ही उस अंधेरे में एक नुकीली चट्टान से टकराते-टकराते बचे। झील का पानी उस चट्टान से टकरा रहा था। वह बड़े वेग से टकराता, लहरें ऊपर उठतीं और पीछे लौटकर गिर जातीं। इससे पहले कि हम चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जायें, मैंने पूरी शक्ति लगाकर दाहिनी पतवार के सहारे नाव मोड़ी और बायीं से पानी को पीछे ढकेलना आरम्भ किया। थोड़े प्रयास से ही चट्टान से बचकर हम पुनः झील में पहुँच गये। चट्टान की आगे की ओर निकली नोक धीरे-धीरे हमारी दृष्टि से ओझल हो गयी। हम झील में अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते गये।

"हम झील के दूसरे तट की ओर जा रहे हैं।" मैंने कैथरीन से कहा।

"क्या हम पालान्ज़ा की तरफ़ नहीं जायेंगे?"

"पालान्ज़ा तो कब का पीछे छूट गया। अंधेरे में हम उसे देख नहीं सके।"

"तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं हो रहा है, प्रियतम?"

"नहीं, मैं बिलकुल मज़े में हूँ।"

"यदि तुम कहो, तो थोड़ी देर के लिए पतवार मैं सँभाल लूँ।"

"नहीं-नहीं, मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हो रही है।"

"बेचारी फ़र्ग्यूसन!" कैथरीन बोली--"सबेरे वह हमारे होटल पहुँचेगी और तब उसे पता लगेगा कि हम वहाँ से चले गये हैं।"

"उसकी मुझे अधिक चिन्ता नहीं है।" मैं बोला—"चिन्ता है इस बात की कि सूर्योदय से पहले, चुंगी के सिपाहियों से बचकर हम इस झील के स्विट्ज़रलैण्ड वाले हिस्से में कैसे प्रविष्ट हों।"

"क्या स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा काफ़ी दूर है?"

"यहाँ से करीब उन्नीस मील होगी।"

मैं रातभर नाव खेता रहा। धीरे-धीरे मेरे हाथों में इतनी सूजन आ गयी कि पतवारों को पकड़ना भी मुझे भारी प्रतीत होने लगा। कई बार हम तट से टकराते-टकराते बचे। मैं डर रहा था कि झील के बीचोंबीच चलने से कहीं ऐसा न हो कि मुझे दिशा का ज्ञान न रहे और व्यर्थ ही समय नष्ट करना पड़े। अतः मैं किनारे-किनारे ही नाव खेता जा रहा था। कभी-कभी हम किनारे के इतने पास पहुँच जाते कि हमें वहाँ के वृक्षों की कतार और उससे लगा हुआ रास्ता उस अंधेरे में भी स्पष्ट दिखायी दे जाता था। रास्ते के पीछे दूर खड़ी पर्वत-श्रेणियाँ भी कभी-कभी दिखायी दे जाती थीं। वर्षा बिलकुल बन्द हो चुकी थी।

मंद हवा के झोंकों से आकाश में इधर-उधर छितरा गये थे। बादलों के भीतर से चाँद बार-बार झाँक उठता और क्षणभर बाद ही फिर छिप जाता। मैंने पीछे मुड़कर देखा। मुझे अंधकार में लिपटे हुए कैस्टाग्नोला का लम्बा शीर्ष दिखायी दिया। चाँद के प्रकाश में एक अनोखे सौंदर्य की सृष्टि करते हुए झील के नीले जल को मैं क्षणभर मंत्रमुग्ध की भाँति देखता रह गया। हिमाच्छादित पर्वत-शिखरों पर चाँद की किरणें चमक रही थीं। और तभी बादलों ने चाँद को पुनः अपने अंक में समेट लिया। पर्वतमालाओं और झील पर अंधेरा छा गया; किन्तु इस बार अंधेरा इतना अधिक नहीं था। किनारा हमें साफ़-साफ़ दिखाई दे रहा था। उस प्रकाश में चुंगी के कर्मचारियों की मौजूदगी का मुझे सहज ही पता चल जाता। इसी से अगर चुंगी का कोई सिपाही मुझे दिखाई देता, तो तत्काल ही मैं नाव को किनारे से दूर, ऐसे स्थान पर ले जा सकता था, जहाँ से वह हमें देख न ही सके। चाँद जब पुनः बादलों की ओट से निकला, तब हमें तट के पास, पहाड़ की ढाल पर बने कुछ सफ़ेद बंगले दीख पड़े। वृक्षों के बीच से चमकती हुई सफ़ेद सड़क भी यदाकदा हमें दिखाई दे जाती थी। मैं चारों ओर सतर्कता से देखता हुआ नाव खेता जा रहा था।

झील अब चौड़ी हो गयी थी। उस पार दूसरे तट पर खड़े पहाड़ों के नीचे कुछ बत्तियाँ दिखायी दीं। वे कदाचित् लुइनो की बत्तियाँ थीं। पहाड़ों के बीच में न्यून-कोण के आकार की सन्धि को देखकर मैंने यही अनुमान लगाया कि वह स्थान लुइनो ही होना चाहिए। यदि वह लुइनो ही था, तो इसका अर्थ था कि हम बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। मैंने पतवारें भीतर खींच लीं और अपनी जगह पर लेट गया। नाव खेते-खेते मैं बुरी तरह थक गया था। मेरी बाहों, कन्धों और पीठ में ज़ोर का दर्द हो रहा था। मेरे हाथ सूज गये थे।

"मैं छाता खोलकर बैठ जाती हूँ।" कैथरीन ने कहा—"उसके सहारे हवा के बहाव के साथ-साथ हमारी नाव भी आगे बढ़ती जायेगी।"

"तुम पतवार चला सकती हो?"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं!"

"तब यह पतवार लो। इसे नाव के किनारे से सटाकर अपनी बाहों में दबा लो और चलाओ। मैं छाता पकड़ लेता हूँ।" मैंने कैथरीन को पतवार पकड़कर दिखाई और दरबान के द्वारा दिए गये उस बड़े और भारी छाते को लेकर नाव के अगले हिस्से में सामने की ओर मुँह करके बैठ गया। मैंने

छाता खोला। एक 'फटाक्' की आवाज़ के साथ वह खुला और मैंने उसे दोनों ओर से पकड़ लिया। उसकी मूठ बैठक में फँसा दी और उसे अपने पैरों के बीच दबाकर बैठ गया। छाते में खूब हवा भर गयी। अपनी पूरी शक्ति से मैं उसके दोनो छोर पकड़े रहा और तभी मुझे ऐसा लगा कि नाव आगे खिंचती जा रही थी। वह सचमुच तेज़ी से आगे बढ़ रही थी।

"हम बड़े मज़े में आगे बढ़ते जा रहे हैं।" कैथरीन ने कहा। मुझे छाते की तीलियों को छोड़कर और कुछ नहीं दीख रहा था। हवा भर जाने के कारण छाता फूलकर तन गया और मुझे अपनी ओर खींचने लगा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि हम उसी के साथ खिंचे चले जा रहे हैं। मैंने अपने पैर जमाये और उसे कसकर पकड़े रहा। किन्तु तभी, अचानक ही, उसकी तनी हुई तीलियाँ ढीली पड़ने लगीं और एक तीली चटाक से मेरे सिर पर पड़ी। मैंने उसके ऊपरी सिरे को, जो हवा के ज़ोर से उलटता जा रहा था, दबाकर पकड़ने की कोशिश की। इतने ही में उसकी सभी तीलियाँ ढीली पड़कर बिखर गयीं। छाता बिलकुल उलट गया। कहाँ तो कुछ ही क्षण पहले मैं उस छाते को, हवा के ज़ोर से तने, नाव खींचनेवाले पाल के समान पकड़े बैठा था और कहाँ अब, उसके स्थान पर मेरे हाथ में एक उलटे छाते की डंडी भर रह गयी थी, जिसे मैंने अपनी जाँघों के बीच दबा रखा था। मैंने बैठक के बीच से उसकी मूठ बाहर निकाल ली और छाते को मोड़-माड़ कर नाव के अगले हिस्से में पटक दिया। पतवार स्वयं चलाने के विचार से जब मैं कैथरीन के पास पहुँचा, तो वह हँस रही थी। मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर वह बड़ी देर तक हँसती रही।

"क्या बात है?" पतवार पकड़ते हुए मैंने पूछा।

"उस छाते को पकड़े हुए तुम बड़े अजीब दिखायी दे रहे थे।" वह बोली।

"मेरा भी कुछ ऐसा ही अनुमान है।"

"नाराज़ मत हो, प्राण! वह दृश्य सचमुच बड़ा मज़ेदार था। तुम क़रीब बीस फुट चौड़े दीख रहे थे। उस छाते के दोनों छोरों को पकड़े हुए तुम बड़े प्यारे दिखाई दे रहे थे...।" हँसते-हँसते उसका गला रुँध गया।

"लाओ, अब मैं नाव खेता हूँ।"

"नहीं, कुछ देर आराम कर लो। थोड़ी शराब पी लो। देखो तो सही, कितनी सुहानी रात है और हम काफ़ी दूर आ भी गये हैं।"

"नहीं, मुझे अभी इन भँवरों से नाव को बचा ले चलना है।"

"ठहरो, मैं तुम्हारे लिए शराब ले आती हूँ। थोड़ी देर आराम तो कर लो, प्रिय।"

मैंने पतवार चलाना रोक दिया। हम लोग लहरों के साथ-साथ आगे बढ़ने लगे। कैथरीन ने थैला खोला और ब्राण्डी की बोतल निकालकर मेरे हाथ में पकड़ा दी। मैंने जेब में से चाकू निकाला, बोतल का डाट खोला और काफ़ी शराब पी गया। शराब अच्छी और गर्म थी। मेरी नस-नस में गरमी दौड़ गई। मैंने नयी स्फूर्ति तथा आनन्द का अनुभव किया। "बड़ी सुन्दर ब्राण्डी है—" मैंने कहा। चाँद पुनः बादलों में छिप गया था; फिर भी किनारा स्पष्ट दीख रहा था। तभी मुझे ऐसा आभास हुआ कि आगे एक और चट्टान की नोक है, जो झील में काफ़ी दूर तक धँसती चली आयी है।

"तुम ठंड तो महसूस नहीं कर रही हो?"

"नहीं तो! बिलकुल ठीक हूँ मैं। हाँ, कुछ अकड़ जरूर गई हूँ।"

"नाव में भरा हुआ पानी ज़रा बाहर फेंक दो जिससे तुम अपने पैर नीचे रख सको।"

मैं फिर नाव खेने लगा। पतवारें चलाते हुए मैं उनकी खड़खड़ाहट सुनता रहा। पतवारों के पानी में डूबने का स्वर और नाव के पिछले भाग की सीट के नीचे पड़े हुए, पानी फेंकने के टीन के डिब्बे की रगड़ से पैदा होनेवाली आवाज़ मेरे कानों में आती रही।

"ज़रा वह पानी फेंकने का डिब्बा तो दो।" मैंने कहा—"मुझे बड़ी प्यास लगी है।"

"वह तो बड़ा गंदा है।"

"कोई हर्ज नहीं। मैं धोकर उसे साफ़ कर लूँगा।"

मैंने कैथरीन द्वारा डिब्बा धोये जाने की आवाज़ सुनी। उसने डिब्बा भरा और मेरे हाथ में दे दिया। ब्राण्डी पीने के बाद मेरी प्यास जाग गई थी। पानी बर्फ़ के समान ठण्डा था—इतना ठण्डा कि मेरे दाँतों में सिहरन-सी पैदा हो गयी। मैंने किनारे की ओर नज़र दौड़ाई। हम लोग चट्टान की उस लम्बी नोक के काफ़ी पास पहुँच चुके थे। सामने दूर, खाड़ी में बत्तियाँ जगमगा रही थीं।

"धन्यवाद!" टीन का डिब्बा कैथरीन को लौटाते हुए मैं बोला।

"मैं तुम्हारे लिए कुछ भी करने को सदा तैयार हूँ।" कैथरीन ने कहा—"यदि तुम्हें चाहिए, तो मेरे पास अभी भी खाने को बहुत-कुछ शेष है।"

"क्या तुम कुछ नहीं खाना चाहती?"

"नहीं। अभी मुझे भूख नहीं है। भूख लगने तक यदि हम खाना बचाये रखें, तो अच्छा हो!"

"अच्छी बात है।"

दूर से जिसे हम किसी चट्टान की नोक समझ रहे थे, वह वास्तव में, एक लम्बा और ऊँची सतहवाला अन्तरीप निकला। उससे बच कर निकलने के लिए मैं नाव को हटाकर झील में काफ़ी दूर ले गया। झील की चौड़ाई अब बहुत कम हो गयी थी। चाँद फिर बादलों से बाहर आ गया था। चुंगी के सिपाही यदि पहरा देते होते, तो पानी पर तैरते हुए काले धब्बे के समान हमारी नाव को उस प्रकाश में वे अच्छी तरह देख सकते थे।

"कैसी हो केट?" मैंने पूछा।

"बिलकुल ठीक हूँ मैं। हम कहाँ हैं इस वक्त?"

"मेरी समझ से अब हमें सिर्फ़ आठ मील की दूरी और पार करनी है।"

"नाव खेने के लिहाज से तो यह दूरी काफ़ी है, मेरे भोले प्रियतम! तुम तो थककर चूर हो गये होगे—है न!"

"नहीं-नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ है। केवल मेरे हाथों में दर्द है। बाकी सब ठीक है।"

हम झील में आगे बढ़ते गए। दाहिने किनारे की वह लम्बी-सी पर्वत-शृंखला एक स्थान पर टूट-सी गयी थी। किनारा बहुत नीचा हो गया था। पहाड़ों की शृंखला जहाँ टूट गयी थी, वहाँ से एक सपाट-भूखण्ड बाहर निकल आया था, जो किनारे के साथ-साथ काफ़ी दूर तक चला गया था। मेरे ख़याल से वह स्थान कैन्नोबिओ था। किसी पहरेदार अथवा सिपाही से हमारी भेंट हो जाने का सबसे अधिक भय यहीं था, अतः मैंने अपनी नाव तट से काफ़ी दूर रखी। दूसरे तट पर, सामने की ओर, काफ़ी दूर, गुम्बज के आकार की चोटीवाला एक पहाड़ दिखाई दे रहा था। मैं अब तक थक गया था। अब हमें कोई बहुत दूर नहीं जाना था—नाव खेने के लिए भी दूरी अधिक नहीं थी; किन्तु मनुष्य जब अपनी स्वाभाविक स्थिति में नहीं रहता, तो थोड़ा-सा अंतर भी उसे बहुत लगता है। मैं जानता था कि स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा पर पहुँचने से पहले, हमें उस पहाड़ को पार करने के बाद, कम-से-कम पाँच मील की दूरी और तय करनी है। चाँद अब क़रीब-क़रीब ढल चुका था। किन्तु उसके डूबने से पहले ही आकाश में फिर बादल छा गये और साथ ही छा गया घोर अंधेरा। मैं

किनारे से काफी दूर रहते हुए नाव चलाता रहा। पतवार चलाते-चलाते, बीच-बीच में मैं कुछ समय के लिए आराम करने लगता। उस वक्त मैं पतवारें चलाना बन्द करके उन्हें ऊपर खींच लेता, जिससे उनके चप्पुओं से हवा टकराती रहे और नाव खुद ब-खुद बढ़ती जाये।

"कुछ देर मुझे भी नाव खेने दो।" कैथरीन ने कहा।

"मैं तुम्हें नाव चलाने की सलाह नहीं दे सकता।"

"बेकार की बात है। मेरे लिए तो यह अच्छा ही होगा। नाव चलाने से मैं गर्मी महसूस करूँगी और मेरा शरीर ज्यादा अकड़ने से बच जाएगा।"

"पर नाव चलाना तुम्हारे लिए उचित नहीं है, केट—वह भी ऐसी हालत मे!"

"फिर वही बेकार की बात। एक गर्भवती स्त्री के लिए तो धीरे-धीरे नाव चलाना फायदेमंद होता है।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा। किन्तु धीरे-धीरे ही चलाना। मैं पीछे चला जाता हूँ और तब तुम आगे आ जाना। जब तुम आगे आओ, तो नाव के दोनों किनारों का सहारा लेते हुए आना।"

मैं अपना कोट पहनकर नाव की पिछली ओर बैठ गया। मैंने अपनी कॉलर ऊपर उठा ली और नाव खेती हुई कथरीन को देखने लगा। वह बड़ी कुशलता से नाव चला रही थी; किन्तु पतवारें बहुत लम्बी थीं और इसमे उसे असुविधा हो रही थी। मैंने थैला खोला और उसमें से सैण्डविच निकालकर खाने लगा। दो सैण्डविच खाने के बाद मैंने एक गिलास ब्राण्डी पी। ब्राण्डी ने मेरी हालत में काफ़ी सुधार ला दिया। मैं एक गिलास ब्राण्डी और पी गया।

"जब तुम थक जाओ, तब मुझसे कह देना, केट!" मैं बोला। कुछ देर तक चुप्पी रही और फिर मैंने उससे कहा—"ज़रा खयाल रखना। पतवार कहीं तुम्हारे पेट पर न लग जाये।"

"पेट पर लग भी गयी, तो क्या!"—पतवारों की छपछपाहट के बीच कैथरीन बोली—"तब तो जीवन शायद बड़ा आसान हो जायेगा।"

मैंने तीसरी बार गिलास भर कर ब्राण्डी पी।

"कैसा लग रहा है तुम्हें, केट?"

"बहुत अच्छा।"

"जब तुम पतवार नहीं चलाना चाहो, मुझे बता देना।"

"अच्छा।"

मैंने एक गिलास ब्राण्डी और पी। उसके बाद नाव के दोनों किनारों को पकड़कर आगे की ओर बढ़ा।

"नहीं-नहीं, तुम अभी मत आओ। मैं बड़े मज़े में नाव चला रही हूँ।" कैथरीन ने मुझे रोकने की चेष्टा की।

"उठो भी, पीछे जाओ तुम। मैं काफ़ी आराम कर चुका हूँ।"

ब्राण्डी के नशे में कुछ देर मैं बड़ी आसानी से नाव चलाता रहा; किन्तु उसके बाद मेरी पतवारें उलटी-सीधी पड़ने लगीं और पानी पीछे हटाने के बदले वे पानी में ही फँसकर रह गयीं। किसी तरह मैंने फिर जैसे-तैसे पानी काटना आरम्भ किया। शराब पीकर बड़ी मेहनत से नाव चलाने के कारण मेरे मुँह में पतले पीले पित्त का-सा कड़वा स्वाद पैदा हो गया।

"मुझे थोड़ा पानी पिलाओ। पिलाओगी न?" मैंने कहा।

"क्यों नहीं? अभी लायी!" कैथरीन ने उत्तर दिया।

सवेरा होने से पहले ही वर्षा के फुहारें आरम्भ हो गईं। हवा का वेग धीमा हो गया था। कदाचित् ऐसा भी हो कि झील के मोड़ को घेरकर खड़े हुए पहाड़ों के कारण हवा के तीव्र झोंकों का हम अनुभव नहीं कर पा रहे थे। यह देख कर कि सवेरा होनेवाला है, मैं अपने स्थान पर जमकर बैठ गया और पूरी शक्ति से नाव खेने लगा। हम कहाँ तक पहुँचे थे, इसका मुझे बिलकुल पता नहीं था। मैं किसी प्रकार झील के स्विट्ज़रलैण्ड-स्थित भाग में पहुँच जाना चाहता था। सूर्य की किरणें जब धरती पर उतरने की तैयारी करने लगीं, तो मैंने देखा कि हम किनारे के बिलकुल पास थे। झील का पथरीला तट तथा उसके वृक्ष दिखाई देने लगे थे।

"ज़रा देखो तो, क्या है वह?" कैथरीन ने कहा। मैंने पतवारें चलाना बंद कर दिया और कान लगाकर कुछ सुनने का प्रयत्न करने लगा। तभी मुझे एक मोटर बोट की आवाज़ सुनाई दी। अपने नन्हें-से इंजन की फट-फट की आवाज़ के साथ वह झील का चक्कर लगा रही थी। मैंने नाव को बिलकुल किनारे से लगा दिया और चुपचाप लेट गया। मोटर-बोट की आवाज हमारे पास आती गई। बरसते पानी में हमने देखा कि वह हमारी नाव के पिछले भाग के क़रीब आ गयी थी। मोटर-बोट के पिछले हिस्से में चुंगी-विभाग के सिपाही बैठे थे। उन्होंने अपने पहाड़ी टोप उतार लिये थे और उनके कोट की कॉलरें ऊपर उठी हुई थीं। उनकी पीठ पर उनकी छोटी बन्दूकें (कारबाइन) लटक रही थीं। इतने सबेरे वे ऊँघते-से प्रतीत हो

रहे थे। उनके टोपों की पीली पट्टियाँ तथा उनके कोट की कॉलरों पर लगे हुए पीले निशान मैं अच्छी तरह देख सकता था। बरसते पानी में ही वह मोटर-बोट इंजन की घरघराहट के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ी और अदृश्य हो गयी।

मैं पुनः अपनी नाव झील के वक्ष पर ले आया। जब हम स्विस सीमा के इतने समीप पहुँच गए थे, तो मैं नहीं चाहता था कि किनारे से लगी हुई सड़क पर तैनात कोई संतरी हमें देख ले। मैं अपनी नाव झील में इतनी दूर ले गया, जहाँ से किनारा दिखाई-भर देता था। तट से उतनी दूरी बनाए रख-कर उस बरसात में ही मैं लगभग पौन घण्टा नाव चलाता रहा। एक बार फिर हमें मोटर-बोट की घरघराहट सुनाई दी। जब तक उसके इंजन का स्वर झील के पार, हमसे पर्याप्त दूरी पर जाकर विलीन नहीं हो गया, तब तक हम नाव रोककर मौन बैठे रहे।

"मैं समझता हूँ केट—कि हम स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा में पहुँच गए हैं।" मैंने कहा।

"सच?"

"सच या झूठ, इसका पता लगाने का तो उस समय तक कोई रास्ता नहीं है, जब तक हम स्विस सैनिकों को न देख लें।"

"या स्विस नौ-सैनिकों को। है न!"

"स्विस नौ-सेना के सैनिकों का दिखायी देना हमारे लिए बड़ा महँगा पड़ेगा। पिछली बार हमने जो मोटर-बोट देखी थी, वह सम्भवतः स्विस नौ सेना की ही थी।"

"यदि हम सचमुच स्विट्ज़रलैण्ड पहुँच चुके हैं, तो बड़ा मज़ा आयेगा। सबसे पहले हम बढ़िया नाश्ता करेंगे—यहाँ के रोल्स (एक खाद्य विशेष), मक्खन और मुरब्बा बड़े स्वादिष्ट होते हैं।"

प्रकाश अब पूर्णतः व्याप्त हो चुका था। वर्षा की नन्हीं-नन्हीं फुहारें पड़ रहीं थीं। झील के ऊपर की ओर अभी तक हवा चल रही थी। उस ओर हमसे काफ़ी दूर पर झील की लहरें चाँदी-सी चमक रही थीं। मुझे पूरा विश्वास हो गया कि अब हम स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा में प्रवेश कर चुके हैं। तट के वृक्षों के पीछे बहुत-से मकान बने थे। एक ओर एक गाँव भी नज़र आता था। उसके मकान पत्थरों के बने थे। वहीं पहाड़ियों पर कुछ बंगले भी थे। एक गिरजाघर भी दिखायी देता था। मैं इस डर से कि कहीं कोई पहरेदार न खड़ा हो, किनारे को घेरती हुई सड़क पर नज़र जमाए रहा। किन्तु मुझे वहाँ कोई पहरेदार नहीं दिखाई दिया। सड़क, अब, झील के

बिलकुल किनारे-किनारे आगे बढ़ रही थी। तभी पास ही के एक कॉफे से एक सैनिक निकला और सड़क पर आया। वह भूरे-हरे रंग की वर्दी पहने था। उसके सिर पर जर्मनों-जैसा लोहे का एक टोप था और वह बड़ा स्वस्थ दीख रहा था। दाँत साफ़ करने के ब्रश के समान उसकी छोटी-छोटी मूँछें थीं। उसने हम लोगों की ओर देखा।

"ज़रा उसकी ओर हाथ हिलाकर मैत्री प्रदर्शित करो तो।" मैंने कैथरीन से कहा। उसने हाथ हिलाया। जवाब में सैनिक ने बड़े संकोच के साथ मुस्कराकर हाथ हिलाते हुए कैथरीन के अभिनन्दन का उत्तर दिया। मैं कुछ निश्चिंत होकर नाव चलाने लगा। अब हम गॉव के सामने के घाट को पार कर रहे थे।

"मेरा खयाल है कि हम अब स्विस-सीमा के काफ़ी भीतर आ गये हैं।" मैंने कहा।

"पहले हमें इस बात का पूरा-पूरा निश्चय कर लेना चाहिए, प्रियतम! कहीं ऐसा न हो कि हमें मोर्चे पर लौटने के लिए बाध्य किया जाए।"

"मोर्चा यहाँ से काफ़ी पीछे छूट चुका है। मैं तो समझता हूँ कि यह चुंगी-नगर है। निश्चय ही, यह स्थान ब्रिस्सागो होना चाहिए।"

"क्या यहाँ इटालियन पहरेदार नहीं हैं? चुंगी-नगर में तो दोनों देशों के पहरेदार रहते हैं न?"

"ना, युद्ध के ज़माने में नहीं। स्विस लोग तो शायद इटालियनों को सीमा के इस ओर आने भी नहीं देते होंगे।"

वह एक छोटा-सा सुन्दर शहर था। खाड़ी में मछली मारने की बहुत-सी नावें पड़ी हुई थीं। ऊपर मछली पकड़ने के जाल फैले हुए थे और नवम्बर मास की बरसात के बीच भी वह शहर बड़ा साफ़-सुथरा दिखाई दे रहा था—प्रसन्नता वहाँ जैसे बिखरी हुई थी।

"तब हम यहाँ उतर कर नाश्ता कर लें, क्यों?"

"हाँ, यही ठीक रहेगा।"

मैंने बायीं पतवार को घुमाते हुए पूरी शक्ति से खींचा और हम लोग किनारे के पास आ गये। खाड़ी के नजदीक पहुँचकर मैंने नाव खाड़ी के मुख की ओर घुमाकर सीधी कर दी और उसे तट से लगा दिया। पतवारें खींच कर भीतर रखीं, लोहे का एक कड़ा पकड़ा और गीले पत्थरों की सीढ़ियों से होते हुए मैंने स्विट्ज़रलैण्ड की धरती पर पॉव रखा। फिर मैंने तट से नाव बाँध दी और कैथरीन को सहारा देने के लिए हाथ बढ़ाया।

"ऊपर आ जाओ, केट। हमारे लिए यह बड़े आनन्द का समय है।"

"ओर इन थैलों का क्या होगा?"

"उन्हें वहीं नाव में पड़ा रहने दो।"

कैथरीन भी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गयी। अब हम दोनों स्विट्ज़रलैण्ड में थे। वह भी एक साथ।

"कितना सुन्दर देश है।" वह बोली।

"और भव्य भी, है न?"

"चलो, कहीं चलकर नाश्ता करें।"

"क्या सचमुच यह देश भव्य नहीं है? इस देश की धरती पर कदम रखने में मुझे जो आनन्द आ रहा है—मेरे हृदय में जो भव्य भावना तरंगित हो रही है—उसी भव्यता को तो मैं प्यार करता हूँ।"

"मेरा बदन तो इतना अकड़ गया है कि मैं अभी उस भव्यता का अनुभव नहीं कर पा रही हूँ। किन्तु निस्सन्देह यह देश है बड़ा सुंदर। क्या तुम्हें यह अनुभव नहीं हो रहा है, प्रियतम! कि अब हम इस सुरम्य देश में हैं—इटली के उस भयावह स्थान से हमें सदा के लिए छुटकारा मिल चुका है?"

"अनुभव क्यो नहीं होता केट, अवश्य होता है। इससे पहले मैंने कभी इतनी खुशी महसूस नहीं की थी।"

"ज़रा इन मकानों पर दृष्टि डालो। देखो, कितना सुन्दर मैदान है यह! और यहाँ हम नाश्ता भी कर सकते हैं।"

"यह बरसात कितनी सुखद है! इटली में ऐसी बरसात नहीं होती। यहाँ की वर्षा में एक आल्हाद है—मस्ती है।"

"और हम इस खूबसूरत मौसम में यहाँ मौजूद हैं। कितना सुंदर है, यह सब, प्रियतम!"

कॉफे के भीतर पहुँचकर हम लकड़ी की एक साफ़ सुथरी मेज़ पर बैठ गए। किसी मूर्ख के समान ही चकित दृष्टि से हम इधर उधर देख रहे थे। तभी साफ़ सुथरे कपड़ों में, एप्रॉन (पोशाक के ऊपर लपेट कर पहना जाने वाला कपड़ा) लपेटे, एक लड़की हमारे पास आयी और उसने हमसे पूछा कि हम क्या खाना पसंद करेंगे।

"रोल्स, मुरब्बा और कॉफी ले आओ।" कैथरीन ने आदेश दिया।

"मुझे दुःख है, लड़ाई के कारण, इन दिनों रोल्स हमारे यहाँ नहीं बनते।"

"तब रोटी (ब्रेड) ही ले आओ।"

"आप लोग कुछ टोस्ट खाना पसंद करेंगे?"

"अच्छी बात है, टोस्ट ही ले आओ।"

"मुझे कुछ उबले हुए अंडे भी चाहिए।"

"कितने अंडे लाऊँ?"

"तीन।"

"चार ले लो, प्रियतम।"

"अच्छा, चार अंडे ले आओ।"

लड़की लौट गई। मैंने कैथरीन का चुम्बन लिया और खूब कसकर उसका हाथ अपने हाथ में दबा लिया। हमने एक-दूसरे की ओर देखा, और फिर कॉफे की ओर देखने लगे।

"प्रियतम, कितना सुन्दर—कितना आकर्षक है—यह सब!"

"बहुत ही सुंदर—बहुत ही मोहक!" मैंने कहा।

"रोल्स हमें नहीं मिले, कोई बात नहीं।" कैथरीन बोली—"यद्यपि रातभर मैं उन्हीं के विषय में सोचती रही हूँ, फिर भी उनके न मिलने का मुझे ज़रा भी दुख नहीं है।"

"मेरा अनुमान है कि कुछ ही देर में हमें गिरफ्तार कर लिया जाएगा।"

"कोई परवाह नहीं, प्रियतम। अभी तो हम नाश्ता करेंगे। उस के बाद यदि कोई हमें गिरफ्तार भी कर ले, तो चिन्ता की बात नहीं। फिर गिरफ्तार करके कोई हमारा कर भी क्या सकता है? हम लोग तो सम्भ्रांत घराने के अंग्रेज़ और अमरीकी नागरिक हैं।"

"तुम्हारे पास प्रवेश-पत्र है न?"

"क्यों नहीं। पर छोड़ो यह सब। इसके सम्बन्ध में हमें बात ही नहीं करनी चाहिए। हमें तो सब-कुछ भूल कर अभी खुशियाँ मनानी चाहिए।"

"इससे बढकर प्रसन्नता की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है!" मैं बोला। ठीक इसी समय भूरे रंग की एक मोटी-सी बिल्ली आयी। उसकी पूँछ किसी पंख के समान ऊपर उठी हुई थी। फ़र्श पार कर के वह हमारी मेज़ के पास आ गयी। अपने शरीर को कमानी के समान मोड़ते हुए वह मेरे पैरों से सटकर खड़ी हो गयी और बार-बार अपनी पीठ रगड़ने लगी। जब-जब वह पीठ रगड़ती, प्रसन्नता से गुर्राती। नीचे झुक कर मैंने उसे थपथपाया। कैथरीन मुझे देखकर मुस्कराई—उसकी आँखों से सुख बरस रहा था।

"लो कॉफी आ गयी।" उसने कहा।

नाश्ते के बाद ही हमें गिरफ्तार कर लिया गया। हम थोड़ी देर तक गाँव में इधर-उधर घूमते रहे और फिर जब नाव से अपना सामान लाने के लिए खाड़ी में पहुँचे, तो हमारी नाव का पहरा देते हुए एक सैनिक खड़ा था।

"यह आपकी नाव है?"

"हाँ।"

"आप लोग कहाँ से आ रहे हैं?"

"झील के उस पार से।"

"आपको मेरे साथ चलना होगा।"

"और इन थैलों का क्या होगा?"

"आप इन्हें अपने साथ ले चल सकते हैं।"

मैंने दोनों थैले उठा लिये। कैथरीन मेरी बगल में चलने लगी। सैनिक हम लोगों के साथ ही, किन्तु हमारे पीछे-पीछे चल रहा था। हम लोग चुंगी-घर पहुँचे और वहाँ हमें एक लेफ्टिनेण्ट के सामने खड़ा कर दिया गया। लेफ्टिनेंट बड़ा दुबला-पतला था और वह सैनिक-वेश में था। उसने हम लोगों से पूछा—"आप दोनों किस राष्ट्र के नागरिक हैं?"

"हम अंग्रेज़ और अमरीकी हैं।"

"ज़रा मुझे अपने प्रवेशपत्र तो दिखाइए।"

मैंने उसे अपना प्रवेशपत्र निकालकर दे दिया। कैथरीन ने भी अपने बटुए से प्रवेशपत्र निकाला। वह बड़ी देर तक उनका निरीक्षण करता रहा।

"आप इस प्रकार नाव में बैठकर स्विट्ज़रलैंड क्यों आये?"

"मैं एक खिलाड़ी हूँ।" मैंने कहा—"नाव खेने का मुझे बड़ा शौक है। जब भी अवसर मिलता है, मैं नाव खेता हूँ। ऐसे मौके मैं कभी नहीं चूकता।"

"आप यहाँ क्यों आये हैं?"

"शरत्कालीन खेलों के लिए। हम लोग घूमने के शौकीन हैं—और यहाँ शरत्कालीन खेल खेलना चाहते हैं।"

"पर यह जगह तो शरत्कालीन खेलों के उपयुक्त नहीं है।"

"यह तो हम भी जानते हैं। पर हम तो यहाँ से उन स्थानों को जाना चाहते हैं, जहाँ ये खेल हुआ करते हैं।"

"आप इटली में क्या करते थे?"

"मैं वहाँ शिल्पकारी सीखता था। मेरी यह चचेरी बहन वहाँ कला का अध्ययन करती थी।"

"आप लोगों ने इटली क्यों छोड़ा?"

"इसलिए कि हम शीतकालीन खेलों में भाग लेना चाहते हैं और युद्ध-काल में शिल्पकला का अध्ययन तो किया नहीं जा सकता!"

"आप यहीं ठहरे रहें।" लेफ्टिनेण्ट बोला। वह हमारे प्रवेश-पत्र लेकर मकान के भीतर घुस गया।

"तुम वस्तुतः बड़े अद्‌भुत हो, प्रियतम—" कैथरीन ने कहा—"बस, इसी बात पर अड़े रहो अब, कि तुम शीतकालीन खेलों में भाग लेना चाहते हो।"

"क्या तुम कला के विषय में कुछ जानती हो?"

"हाँ, हाँ, जानती क्यों नहीं?"

"कुछ प्रसिद्ध कलाकारों के बारे में बताओ।"

"सुनो, रयूबां!" कैथरीन ने कहा।

"लम्बा और मोटा।" मैं बोला।

"तितियन।" कैथरीन बोली।

"तितियन के समान सुनहले केशोंवाला।" मैंने कहा—"और मान्तेन्यॉ?"

"देखो, कठिन सवाल मत पूछो।" कैथरीन ने कहा—"यद्यपि जिसके विषय में मैं जानती हूँ कि वह बड़ा कटु स्वभाववाला था।"

"बहुत कटु।" मैंने समर्थन किया—"बड़ी भद्दी थी उसकी कला।"

"देखा तुमने। तुम्हारे लिए मैं निश्चय ही योग्य पत्नी सिद्ध होऊँगी।" कैथरीन ने कहा—"मैं तुम्हारे ग्राहकों से कला के विषय में बात कर सकूँगी।"

"लो, वह आ गया।" मैं बोला। वह दुबला-पतला लेफ्टिनेण्ट लौट आया। उसके हाथ में हमारे प्रवेशपत्र थे।

"मुझे आपको यहाँ से लोकार्नो भेजना पड़ेगा।" वह बोला—"आप एक गाड़ी किराये पर ले लीजिए। आपके साथ एक सैनिक भी जायेगा।"

"ठीक है।" मैंने उत्तर दिया—"किन्तु हमारी नाव का क्या होगा?"

"नाव जब्त कर ली गई है। आपके इन थैलों में क्या है?"

उसने दोनों थैलों की अच्छी तरह तलाशी ली और ब्राण्डी की बोतल निकाल ली। बोतल में केवल एक-चौथाई शराब बची थी।

"यदि आपको कोई एतराज न हो, तो आइए, हम बैठकर थोड़ी देर शराब पीएँ।" मैंने कहा।

"नहीं, धन्यवाद!" वह सीधा खड़ा हो गया—"आपके पास कितना पसा है?"

"दो हज़ार पाँच सौ लिरे।"

मेरे इस कथन से वह प्रभावित हुआ—"और आपकी चचेरी बहन के पास?"

कैथरीन के पास भी बारह सौ से ऊपर लिरे थे। लेफ्टिनेंट बहुत प्रसन्न हुआ। हमारे प्रति उसके अकड़-भरे व्यवहार में थोड़ी नम्रता आ गयी।

"यदि आप शीतकालीन खेलों के लिए ही आये हैं—" वह बोला—"तो बेन्जेन इसके लिए उपयुक्त स्थान है। बेन्जेन में मेरे पिता का एक बड़ा सुन्दर होटल भी है। वह बारहों मास खुला रहता है।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।" मैंने कहा—"क्या आप हमें उस होटल का पता बतायेंगे?"

"मैं आपको एक कार्ड पर लिख देता हूँ।" उसने पता लिखकर बड़ी नम्रता से कार्ड मेरे हाथ में दे दिया।

"सैनिक आपको लोकानों ले जायेगा। आपके प्रवेशपत्र उसीके पास होंगे। इस प्रकार की कार्यवाही करने के लिए मुझे दुःख है; किन्तु यह आवश्यक है। मुझे पूरी आशा है कि लोकार्नो के अधिकारी आपको अस्थायी प्रमाण-पत्र (विसा) या पुलिस का अनुमति-पत्र दे देंगे।"

उसने हमारे दोनों प्रवेशपत्र उस सैनिक को दे दिये। हमने दोनों थैले उठाये और किराये की गाड़ी खोजने के लिए गाँव में चल पड़े। "ए!" लेफ्टिनेण्ट ने सैनिक को पुकारा। उसने उससे जर्मन भाषा में कुछ कहा। सैनिक ने अपनी राइफल पीठ पर लटका ली और हमारे हाथों से थैले ले लिए।

"सचमुच, यह एक महान देश है।" मैंने कैथरीन से कहा।

"और पूर्णतः व्यावहारिक।"

"आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।" मैंने लेफ्टिनेण्ट से कहा। उत्तर में उसने हमें विदा देते हुए अपना हाथ हिलाया।

"यह तो हम लोगों का कर्तव्य है।" वह बोला। हम उस सैनिक पहरेदार के पीछे-पीछे गाँव में चले गये।

गाड़ी में बैठकर हम लोकार्नो चल पड़े। हमारे साथ वह सैनिक पहरेदार भी था। वह सामने की सीट पर चालक के पास बैठा था। लोकार्नो में हमें कोई कठिनाई नहीं हुई। अधिकारियों ने हमसे कुछ प्रश्न अवश्य पूछे; किन्तु उनका

व्यवहार बड़ा विनम्र रहा; क्योंकि हमारे पास प्रवेशपत्र थे और अच्छी रकम भी। जहाँ तक मेरा अनुमान है, हमारी कहानी के एक शब्द पर भी उन्होंने विश्वास नहीं किया। उनकी सारी कार्यवाही मूर्खतापूर्ण थी; किन्तु वहाँ तो सब कुछ एक क़ानूनी न्यायालय के समान था। कथन के आचित्य का वहाँ प्रश्न ही नहीं था। प्रश्न था केवल यह कि जो-कुछ कहा जाये, वह क़ानूनन ठीक हो और आप अपने कथन पर अड़े रहें। हमारे पास प्रवेशपत्र थे। पैसा खर्च करने की हममें शक्ति थी। अतः उन्होंने हमें अस्थायी प्रमाणपत्र दे दिए। ये प्रमाणपत्र किसी भी समय रद्द किए जा सकते थे। हमें यह आदेश भी हुआ कि हम जहाँ जायें, वहाँ की पुलिस को अपने आगमन की सूचना दे दें।

"हम जहाँ चाहें, वहाँ जा सकते हैं?"

"हाँ। आप लोग कहाँ जाना चाहते हैं?"

"क्यों केट, तुम कहाँ चलना पसंद करोगी?"

"मॉन्ट्रयूज।"

"बड़ा सुंदर स्थान है!" एक अफ़सर ने कहा—"आप निश्चय ही उसे पसंद करेंगे।"

"लोकार्नो स्वयं बहुत सुंदर जगह है।" दूसरे अफ़सर ने कहा—"मुझे विश्वास है कि आपको यहाँ, लोकार्नो में ही, बड़ा आनंद आयेगा। लोकार्नो बड़ा आकर्षक स्थान है।"

"हम किसी ऐसे स्थान को जाना चाहते हैं, जहाँ शरत्कालीन खेल-कूदों का आनंद उठा सकें।"

"मॉन्ट्रयूज़ तो शरत्कालीन खेल-कूदों के लिए उपयुक्त स्थान नहीं है।"

"क्षमा कीजिये।" पहले अफ़सर ने कहा—"मैं मॉन्ट्रयूज़ का ही रहने वाला हूँ। मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि मॉन्ट्रयूज़ ओबरलेण्ड-बॅरनॉइस रेलमार्ग पर शरत्कालीन खेल-कूद के लिए बड़ी ही उपयुक्त और प्रसिद्ध जगह है। इसे ग़लत कहना सत्य का गला घोंटना होगा।"

"मैं इसे ग़लत नहीं कहता। मैंने तो केवल यह कहा है कि स्वयं मॉन्ट्रयूज में ऐसी कोई जगह नहीं है।"

"मैं इसे नहीं मानता।" पहले अफ़सर ने कहा—"आपके इस कथन से मैं सहमत नहीं हूँ।"

"पर मैंने जो कहा है, वह सही है।"

"मैं इसे नहीं मानता। मैं स्वयं बर्फ़ पर फिसलनेवाले छोटे-छोटे पटियों

पर चढ़कर मॉन्ट्रयूज़ की सड़कों पर फिसला हूँ। और एक बार नहीं, बल्कि सौ बार घूमा हूँ। लूज़िंग [बर्फ़ पर फिसलने का खेल] निश्चय ही शीतकालीन खेल है।"

दूसरा अफ़सर मेरी ओर मुड़ा—"शीतकालीन खेल-कूद से आपका मतलब क्या लूजिंग से है? मैं कहता हूँ कि आप यहीं, लोकानों में ही, बड़े मज़े में रहेंगे। यहाँ का जलवायु आपके स्वास्थ्य के लिए बड़ा लाभदायक होगा। यहाँ के आसपास का वातावरण भी आपको आकर्षक प्रतीत होगा। यह नगर आपको काफ़ी पसंद आयेगा।"

"इन्होंने तो पहले ही मॉन्ट्रयूज़ जाने की इच्छा व्यक्त कर दी है।"

"यह 'लूज़िंग' क्या होता है?"

"देखा आपने, इन्होंने उस खेल का नाम तक नहीं सुना।"

दूसरे अफ़सर को मेरे प्रश्न से बड़ा सहारा मिला। वह बड़ा प्रसन्न हुआ।

"अरे साहब, लूज़िंग माने छोटे-छोटे पटियों द्वारा बर्फ़ पर फिसलना—" पहले अफ़सर ने कहा—"बिलकुल वैसे ही, जैसे अन्य देशों में, लोग बर्फ़ पर फिसलते हैं।"

"क्षमा कीजिये, मैं आपसे सहमत नहीं हूँ।" पहले अफ़सर ने इनकार में सिर हिलाते हुए कहा—"साधारण तरीक़े से बर्फ़ पर फिसलने में और लूज़िंग में बहुत अंतर है। 'टोबोगेनिंग' [बर्फ़ पर फिसलने का खेल, जो अमेरिका में बहुत प्रचलित है] के पटिये कैनेडा में बनाये जाते हैं। वे चौड़े तख्तों से बनते हैं। 'लूज़' तो साधारण पटियों की बनी होती है।"

"तो क्या हम 'टोबोगेन' नहीं खेल सकते?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं, अवश्य खेल सकते हैं।" पहले अफ़सर ने उत्तर दिया—"खूब अच्छी तरह खेल सकते है, आप। मॉन्ट्रयूज में कैनेडा से निर्यात किए गए 'टोबोगेन' के पटिये मिलते हैं, सुन्दर और मजबूत पटिये। ये वहाँ 'ऑक्स ब्रदर्स' की दूकान पर मिलते हैं। वे लोग कैनेडा में, अपने कारखाने में, उन्हें तैयार कराते हैं और वहाँ से मॉन्ट्रयूज मँगवा लेते हैं।"

दूसरे अफ़सर ने अपना मुँह फिरा लिया। "टोबोगेन के लिए—" वह बोला—"ख़ास किस्म की जगह चाहिए। मॉन्ट्रयूज की सड़कों पर आप यह खेल नहीं खेल सकते। ख़ैर, आप लोग यहाँ ठहरे कहाँ हैं।"

"यह तो अभी हम भी नहीं जानते।" मैंने कहा—"ब्रिस्सागो से हम सीधे यहीं आए हैं। हमारी गाड़ी बाहर खड़ी है।"

"आप मॉन्ट्यूज जाने में कोई गलती नहीं कर रहे हैं।" पहले अफ़सर ने कहा—"आप स्वयं जान जायेंगे कि वहाँ का जलवायु कितना सुन्दर और स्वास्थ्यकर है। शीतकालीन आमोद-प्रमोद के लिए भी आपको वहाँ से कहीं और नहीं जाना पड़ेगा।"

"यदि आप सचमुच शीतकालीन खेलों के शौकीन हैं—" दूसरा अफ़सर बोला—"तो आप एन्गेडाइन अथवा म्यूरेन जाइये। शीतकालीन खेलों के लिए आपको मॉन्ट्यूज़ जाने की गलत सलाह दी गई है। मैं वहाँ जाने की सलाह आपको नहीं दे सकता।"

"मॉन्ट्यूज से ऊपर की ओर लॅ एवान्ट्स में हर प्रकार के शरत्कालीन खेलों की सुविधा है।" मॉन्ट्यूज का पक्ष लेनेवाले अफ़सर ने विजयी की भाँति अपने सहयोगी की ओर देखा।

"देखिये—" मैंने कहा—"मुझे भय है, हम यहाँ अब ज्यादा देर तक नहीं रुक सकेंगे। मेरी चचेरी बहन काफ़ी थक गयी है। फिलहाल हमने मॉन्ट्यूज जाने का ही निश्चय कर लिया है।"

"आपके इस निश्चय पर मैं आपको बधाई देता हूँ।" कहते हुए पहले अफ़सर ने मुझसे हाथ मिलाया।

"मुझे विश्वास है कि लोकानों छोड़कर आप पछतायेंगे।" दूसरा अफ़सर बोला—"खैर, हर हालत में आप मॉन्ट्यूज़ जाकर वहाँ की पुलिस को अपने आगमन की सूचना ज़रूर दे दीजियेगा।"

"वहाँ की पुलिस से आपको कोई परेशानी नहीं होगी।" पहले अफ़सर ने मुझे विश्वास दिलाया—"वहाँ के प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार शिष्ट और मित्रतापूर्ण होगा।"

"आप दोनों को बहुत-बहुत धन्यवाद!" मैंने कहा—"हम लोग आप दोनों की नेक सलाह के लिए आपके बहुत आभारी हैं।"

"अच्छा नमस्ते।" कैथरीन बोली—"आप दोनों को कोटिशः धन्यवाद।"

उन्होंने सम्मानपूर्वक सिर झुकाया और हमें दरवाज़े तक पहुँचाने आये। लोकानों का पक्ष लेनेवाले अफ़सर के सम्मान-प्रदर्शन में कुछ उदासी-सी थी। हम सीढ़ियों से नीचे उतरे और गाड़ी में बैठ गये।

"हे भगवान्!" कैथरीन बोली—"प्रियतम, क्या हम इनसे जल्दी पीछा नहीं छुड़ा सकते थे?" मैंने गाड़ीवान को एक अफ़सर के द्वारा बताये गए एक होटल का पता दे दिया। उसने घोड़ों की रास सँभाल ली।

"तुम तो उस सैनिक पहरेदार को बिलकुल ही भूल गये।" कैथरीन ने कहा। सैनिक पहरेदार गाड़ी के पास ही खड़ा था। मैंने उसे दस लिरा का नोट दिया और कहा—"मेरे पास अभी स्विट्ज़रलैण्ड के सिक्के नहीं है।" उसने मुझे धन्यवाद दिया, फ़ौजी सलामी दी और चला गया। कोचवान ने गाड़ी चलायी और हम होटल की ओर चल पड़े।

"तुमने मॉन्ट्रयूज़ का नाम कैसे लिया?" मैंने कैथरीन से पूछा—"क्या तुम सचमुच वहाँ जाना चाहती हो?"

"वही पहला स्थान था, जो मेरे दिमाग में उस वक्त आया।" उसने उत्तर दिया—"जगह बुरी नहीं है। हम लोग वहाँ, पहाड़ों में, अपने लिए कोई-न-कोई उपयुक्त स्थान खोज ही लेंगे।"

"नींद आ रही है क्या?"

"आ नहीं रही है, आ गयी।"

"मेरी भोली केट, अब हम बड़े इतमीनान से सुख की नींद सो सकेंगे। तुम्हें रात बड़ी तकलीफ़ उठानी पड़ी न!"

"नहीं, नहीं; बड़े आनन्द से बीती है, मेरी रात!" कैथरीन ने कहा—"और जब तुम छाता खोलकर नाव चला रहे थे तब तो, बस मज़ा आ गया।"

"क्या तुम यह महसूस कर रही हो कि हम आज स्विट्ज़रलैण्ड में हैं?"

"नहीं। मैं डरती हूँ, कहीं यह ऐसा स्वप्न न हो कि मेरी नींद खुली और सब गायब!"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

"पर यह सच है, है न प्राण? यह कोई मिलान तो है नहीं कि मैं विदा देने के लिए बग्घी में बैठकर स्टेशन जा रही हूँ। है न?"

"तुम ठीक कह रही हो।"

"ऐसा मत कहो। इससे मुझे डर लगने लगता है। कहीं ऐसा न हो कि हम वहीं जा रहे हों।"

"मैं तो जैसे एक नशे में हूँ। मुझे यही नहीं मालूम कि हम कहाँ जा रहे हैं।" मैं बोला।

"ज़रा मुझे अपने हाथ तो दिखाओ।"

मैंने अपने दोनों हाथ उसके सामने कर दिये।

छालों के कारण वे सूजकर कड़े पड़ गए थे।

"घबराओ मत—नाव चलाने से मेरी बगल में कहीं छेद नहीं हुआ है।" मैंने कहा।

"बेकार की बातें मत करो।"

मेरे दिमाग में एक धुँधलका छाता जा रहा था और मैं बड़ी थकावट अनुभव कर रहा था। मेरा सारा उल्लास समाप्त हो चुका था। गाड़ी सड़क पर चली जा रही थी।

"हाय—तुम्हारे हाथ!" कैथरीन बोली।

"आह! मत छुओ उन्हें।" मैंने कहा—"ईश्वर की सौगन्ध, मुझे बिलकुल पता नहीं, हम लोग कहाँ हैं। हम लोग कहाँ जा रहे हैं, कोचवान?" कोचवान ने घोड़ा रोक दिया।

"होटल मेट्रोपोल में, हुजूर! क्या आप वहाँ नहीं जाना चाहते?"

"हाँ, हाँ; क्यों नहीं?" मैं बोला—"सब ठीक है, केट!"

"हाँ; सब ठीक है, प्रियतम। व्यर्थ ही परेशान मत होओ। आज हमें बड़ी अच्छी नींद आयेगी और कल तक तुम्हारी सारी थकावट जाती रहेगी।"

"मैंने तो जैसे काफ़ी शराब पी ली हो—ऐसा नशा है मुझे।" मैंने कहा—"ऐसा लग रहा है, मानो, मैं किसी ऑपेरा (थियेटर) में कोई मजेदार खेल देखता रहा हूँ। यह भी हो सकता है कि मुझे भूख लगी हो और...।"

"तुम्हें कुछ नहीं हुआ है, प्रियतम! तुम केवल थक गए हो। बिलकुल ठीक हो जाओगे तुम।" गाड़ी होटल के सामने जाकर खड़ी हो गयी। हमारा सामान उतारने के लिए होटल से कोई वहाँ आया।

"मुझे अब कुछ कुछ अच्छा मालूम हो रहा है।" मैंने कहा। हम लोग अब तक होटल के प्रवेश द्वार को जानेवाले रास्ते पर खड़े थे।

"मैं जानती हूँ कि तुम शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जाओगे। थकभर गए हो तुम—काफ़ी मेहनत भी तो की है तुमने।"

"ख़ैर, किसी तरह हम यहाँ पहुँच तो गये।"

"हाँ, सचमुच ही हम यहाँ पहुँच गये हैं।"

हमारे थैले उठाकर ले चलनेवाले लड़के के पीछे-पीछे हमने होटल में क़दम रखा।

पंचम-खण्ड

• ३८ •

उस वर्ष बहुत देर से बर्फ़ गिरना आरम्भ हुआ। हम लोग पहाड़ की ओर, चीड़ के वृक्षों से घिरे हुए, लकड़ी के एक मटमैले रंग के घर में रह रहे थे। रात में खूब बर्फ़ गिरी। सबेरे रसोईघर की चौकी पर रखे हुए दो बर्तनों के पानी की सतह पर बर्फ़ की पतली तह-सी जम गई। सुबह श्रीमती गटिंगेन खिड़की बन्द करने के लिए हमारे कमरे में आई। उसने चीनी मिट्टी की बनी ऊँची अँगीठी में आग जलायी। उसमें पड़ी हुई चीड़ की लकड़ियाँ चटचटाने लगीं। उनमें से चिनगारियाँ फूट पड़ीं। फिर वे बड़े ज़ोर से जल उठीं। श्रीमती गटिंगेन दुबारा कमरे में आई। आग में जलाने के लिए उसके हाथ में लकड़ी के बड़े-बड़े और काफ़ी मोटे टुकड़े थे। पानी गर्म करने का एक बर्तन भी साथ में था। जब कमरा गर्म हो गया तो उसने हमारे सामने सुबह का नाश्ता लाकर रख दिया। हम लोग बिस्तर में बैठे-बैठे नाश्ता करने लगे। सामने की ओर हमें झील दिखाई दे रही थी। उसके उस ओर, फ्रान्स की दिशा में, पहाड़ खड़े थे। पहाड़ की चोटियों पर बर्फ़ जमी थी। झील धूसर, लोहित और नीलवर्ण दीख रही थी।

हमारे घर के सामने से एक रास्ता ऊपर की ओर पहाड़ पर जाता था। पाला पड़ने से सड़क लोहे-सी सख्त हो गयी थी। सड़क, जंगल के बीच से होती हुई, धीरे-धीरे पहाड़ पर चली गई थी। वहाँ से चक्कर काटती हुई वह उस इलाके में प्रवेश करती थी, जहाँ चरागाह थे। जंगल की सीमा से सटे हुए उन चरागाहों में, किसानों के खलिहान तथा छोटे-छोटे घर थे, जहाँ से घाटी के उस पार का दृश्य दिखाई देता था। घाटी बड़ी गहरी थी। उससे होकर एक नदी बहती थी, जो झील में जाकर मिल जाती थी। घाटी के ऊपर से जब हवा चलती, तो चट्टानों के बीच से बहती हुई नदी की हरहराहट अच्छी तरह सुनाई देती थी।

कभी-कभी हम सड़क से दूर निकल जाते। चीड़-वन को पार करके हम

किसी पगडण्डी पर चल देते। जंगल की मिट्टी बहुत नरम थी। उस पर चलने में तनिक भी कष्ट नहीं होता था। पाला पड़ने पर भी वह सड़क के समान सख्त नहीं हुई थी। यों तो सड़क के सख्त होने का भी हम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था; क्योंकि हमारे जूतों के तलों में कीलें ठुकी थीं। जूतों की एड़ियों तथा उनमें लगी कीलों से सड़क की बर्फीली भूमि कट जाती और हम आसानी से आगे बढ़ जाते। कील लगे जूते पहनकर सड़क पर चलना हमें बड़ा भला लगता। हम उत्साहित-से हो उठते। किन्तु इन सबसे अधिक आकर्षक और आह्लादक था, वन में विचरण करना।

हमारे घर के सामने का पहाड़ बिलकुल ढलुवाँ था। वह झील के किनारे-किनारे ढालू होता हुआ एक छोटे-से मैदान तक चला गया था। हम लोग धूप का आनंद लेते हुए घर के ओसारे में बैठ जाते और पर्वत के ढाल पर उतरती हुई चक्करदार सड़क के घुमावों को देखा करते। निचले पहाड़ के एक ओर अंगूर के छतदार खेत थे। ठण्ड के कारण अंगूर की सभी बेलें मर गई थीं। पत्थर की दीवारें बनाकर उन खेतों को एक-दूसरे से अलग कर दिया गया था। खेतों के नीचे, झील के तट पर स्थित, सकरे मैदान में बसे हुए शहर के घर भी हम ओसारे में बैठे बैठे देखा करते। झील पर एक छोटा सा द्वीप भी था। द्वीप पर दो पेड़ थे, जो ऐसे दिखाई देते, मानो मछली मारनेवाली नाव के दो पाल हों। झील के दूसरे तट पर स्थित पहाड़ बिलकुल सीधे और काफ़ी ऊँचे थे। उनके नुकीले शिखर मानो आकाश को छूने का प्रयास करते थे। जहाँ झील खतम होती थी, वहीं से रोन की घाटी में स्थित मैदान आरम्भ होता था। मैदान चौरस था और दो पर्वत शृंखलाओं के मध्य फैला हुआ था। घाटी की ऊपरी तरफ़ एक और पहाड़ था। वह पहाड़ घाटी के बीचों-बीच दीवार की तरह खड़ा था और उसे दो भागों में विभक्त करता था। पहाड़ का नाम था डैण्ट-डयू-मीडी। बड़ा ऊँचा पहाड़ था वह। उस पर सदा बर्फ़ जमी रहती थी। सारी घाटी उसकी विशालता के नीचे दबी-सी प्रतीत होती थी; किन्तु वह हमसे इतनी दूर था कि हमें उसका आभास भी नहीं होता था।

जब धूप तेज़ होती, तब हम अपना दोपहर का खाना ओसारे में ही खाते। अन्यथा, ऊपरी मंज़िल के छोटे-से कमरे में हमारा भोजन होता। कमरा लकड़ी की सपाट दीवारों का बना था। उसके एक कोने में एक बड़ी-सी अँगीठी थी। हम शहर से बहुत-सी पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ ख़रीदकर ले आते थे। 'हांयले' पत्र की प्रति भी हम ख़रीद लेते और उसके सहारे दो

व्यक्तियों द्वारा खेले जानेवाले ताश के खेलों का अभ्यास किया करते। अँगीठीवाला वह छोटा कमरा ही वास्तव में, हमारे रहने का कमरा था। उसमें दो आरामकुर्सियाँ तथा एक मेज़ रखी थी। मेज़ पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ रखने के काम आया करती थी। भोजन की मेज़ साफ़ हो जाने के बाद हम उसी पर ताश खेलते। गर्टिंगेन-परिवार नीचे ही रहता था। पति-पत्नी दोनों बड़े सुख से रह रहे थे। कभी-कभी सन्ध्या-समय हम उनकी बातचीत सुना करते। गर्टिंगेन किसी समय एक होटल में बड़े ख़ानसामा का काम करता था। श्रीमती गर्टिंगेन उसी होटल में नौकरानी थी। अपनी नौकरी के दिनों में ही कुछ पैसा बचाकर उन्होंने यह घर ख़रीद लिया था। उनका एक लड़का भी था, जो इस समय बड़े खानसामा का काम सीख रहा था। इस समय वह ज्यूरिच के एक होटल में था। घर की निचली मंज़िल पर एक बैठक थी, जहाँ वे शराब तथा बीअर बेचते थे। किसी-किसी दिन शाम में हम लोग बाहर, सड़क पर, गाड़ियों के रुकने की आवाज़ सुनते। गाड़ियों से उतरकर लोग सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सुनाई देते। वे शराब पीने के लिए उस बैठक में आते थे।

हमारे कमरे के सामने की दालान में जलावन रखने की पेटी थी। मैं उसमें से लकड़ियाँ निकाल-निकालकर कमरे में जलनेवाली आग को बुझने नहीं देता था। उस कमरे में हम ज़्यादा देर तक नहीं ठहरते थे और शीघ्र ही अपने विशाल शयन-कक्ष में चले जाते थे। उस अंधेरे कमरे में अपने दिन के कपड़े उतारकर, मैं खिड़कियाँ खोल देता, कुछ समय तक खिड़की के निकट खड़ा अंधेरी रात को देखता रहता तथा आकाश में छिटके तारों और नीचे के चीड़-वृक्षों पर नज़रें दौड़ाता। जब ठंड लगने लगती, तो दौड़कर बिस्तर में घुस जाता। खिड़की के बाहर फैली हुई रात को जब स्नेह से स्पर्श करती ठंडी हवा बहने लगती, तो बिस्तर पर लेटे रहने में हमें बड़ा आनंद आता। हम बड़ी गहरी नींद सोते थे। यदि रात में मेरी नींद खुल जाती, तो उसका केवल एक ही कारण होता। मुझे ठंड लगती और मैं जाग पड़ता। परों-जैसे हलके लिहाफ को मैं अपने ऊपर ओढ़ लेता। ऐसा करते समय मैं काफ़ी सावधानी बरतता था ताकि कैथरीन की नींद न खुलने पाये। पतले और हल्के लिहाफों की उष्णता का स्पर्श पा मैं शीघ्र ही फिर सो जाता। ऐसा प्रतीत होता था, मानो युद्ध वहाँ से काफ़ी दूर हो—वहाँ साया भी न पड़ा हो युद्ध का! किन्तु समाचारपत्रों से यह स्पष्ट था कि लड़ाई अभी चल रही थी। पर्वतीय क्षेत्र में अभीतक बर्फ़ गिरना आरम्भ नहीं हुआ था, अतः लड़ाई जारी थी।

कभी-कभी पहाड़ से नीचे उतरकर हम लोग मॉन्ट्रयूज़ चले जाते। वहाँ से एक पगडण्डी भी नीचे जाती थी; किन्तु वह बिलकुल ढाल्व थी। अतः हम बड़ी सड़क का ही उपयोग करते। चौड़ी-सख्त सड़क पर चलते हुए पहले हम खेतों को पार करते। फिर निचली सतह पर लगाये गये अंगूर के बगीचों की पत्थर की बनी हुई दीवारों के बीच आगे बढ़ते और फिर ढाल पर उतरते हुए गाँव के छोटे छोटे घरों के बीच से अपना रास्ता तय करते। रास्ते में तीन गाँव पड़ते थे—चॅरनेक्स, फॉण्टेनिवान्ट तथा एक और गाँव, जिसका नाम मुझे याद नहीं। उन ग्रामो को पार करके हम पहाड़ की उस दिशा में पहुँच जाते थे, जहाँ अंगूर के छतदार खेत थे। पहाड़ के अगले हिस्से से बाहर निकली हुई एक चट्टान पर पत्थर से बना हुआ एक चौकोर मकान था। खेतों में अंगूर की बेलें लकड़ियों के सहारे खड़ी कर दी गई थीं। वे बिलकुल सूख चुकी थीं और उनका रंग भूरा पड़ गया था। खेतों से आगे, नीचे, लोहित मटमैले रंग के समान समतल झील फैली हुई थी। चट्टान पर बसे हुए मकान के बाद, सड़क काफ़ी दूर तक सीधी चली गई थी। उसके बाद दाहिनी ओर मुड़कर वह एक ढलान के साथ मॉण्ट्रयूज़ पहुँच जाती थी। सड़क कंकड़ों से पाट दी गयी थी।

मॉण्ट्रयूज़ में हमारा किसी से परिचय नहीं था। हम झील के तट पर घूमते रहते। वहाँ पर हमें हंसों, समुद्री पक्षियों तथा लम्बी फटी पूँछवाली एक अन्य समुद्री चिड़िया के झुण्ड-के-झुण्ड दिखायी दे जाते। जब हम उनके पाससे निकलते, तो वे सब-के-सब तेज़ी से उड़ जाते और आकाश में उड़ते हुए जब वे झील के जल की ओर देखते, तो बड़े ज़ोर से चिल्लाते। झील के तट की ओर छोटी-छोटी, काले रंग की पनडुब्बी चिड़ियों के झुण्ड थे। जब वे पानी पर तैरतीं, तो उनके पीछे झील की सतह पर एक लम्बी रेखा-सी खिंच जाती। नगर में पहुँचकर हम वहाँ की मुख्य सड़क पर घूमा करते। बीच-बीच में दोनों ओर स्थित दूकानों में भी झाँक लेते। सड़क पर बहुत-से होटल थे। परन्तु सरदी का मौसम होने से वे बंद थे। हाँ, दूकानें प्रायः सभी खुली थीं। हमें देखकर वहाँ के लोगों को बड़ी प्रसन्नता होती। वहाँ केश सँवारने की भी एक बड़ी सुन्दर दूकान थी। कैथरीन अपने केश ठीक करवाने के लिए वहाँ जाया करती। दूकान की मालकिन बड़े हँसमुख स्वभाव की औरत थी और वही एक ऐसी औरत थी, जिसे हम मॉण्ट्रयूज़ में पहचानते थे। कैथरीन जब वहा अपने केश ठीक करवाती, तब मैं एक शराबघर में पहुँच जाता। वहा बैठकर मैं काले रंग की म्यूनिक शराब

पिया करता और समाचारपत्र पढ़ता। समाचारपत्रों में "कोरिएर डेला सॅग" तथा पेरिस से आनेवाले अंग्रेज़ी और अमरीकी पत्र मुझे प्रिय थे। पत्रों में इन दिनों विज्ञापन बिलकुल बन्द कर दिये गये थे। सम्भवतः इसलिए कि विज्ञापन के नाम पर किसी सांकेतिक भाषा में कोई शत्रु से सम्बन्ध स्थापित न कर सके। समाचार पढ़ने में मुझे कोई आनन्द नहीं आता था। सभी ओर से बुरे समाचार ही पढ़ने को मिलते थे। एक दिन मैं वहाँ एक कोने में बैठा था। मेरे सामने काले रंग की बीअर से भरा हुआ एक बड़ा बर्तन रखा था। मैंने चमकीले काग़ज़ में बँधे हुए बिस्कुट निकाले। शराब के साथ साथ मैं उन छोटे छोटे, नमकीन, गोल और खस्ता बिस्कुटों का स्वाद लेने लगा। बिस्कुटों के खारेपन के कारण शराब के स्वाद में एक नई लज़्ज़त आ गई। शराब पीते हुए मैं युद्ध के समाचारों पर नज़रें दौड़ाने लगा। मैंने सोचा था कि केश सँवारने की दूकान से कैथरीन शीघ्र ही लौट आयेगी; किन्तु वैसा हुआ नहीं। समाचारपत्रों को कटहरे पर रखकर मैंने शराब के पैसे चुकाए और कैथरीन को देखने के लिए सड़क पर निकल आया। दिन बड़ा ठंडा था। चारों ओर धुंध और सरदी छायी थी। घरों की दीवारों में लगे पत्थर तक सर्द हो गये थे। कैथरीन उस समय भी केश सँवारने की दूकान में बैठी थी। दूकान की मालकिन उसके केश घुंघराले बनाने में व्यस्त थी। मैं बैठा यह सब देखता रहा। कैथरीन को इस प्रकार देखकर मैं बिलकुल मदहोश-सा हो गया। वह मुझे देखकर मुस्कराई और बातें करने लगी। उत्तेजना के कारण मेरी आवाज़ कुछ भारी हो गयी। बीच-बीच में बाल सँवारने की चिमटियों का मृदुल शब्द मेरे कानों में सुख बरसाता रहा। मैं उस सुखद एवं गर्म छत के नीचे बैठा-बैठा दूकान में लगे हुए तीन दर्पणों में कैथरीन के प्रतिबिम्बों को मुग्ध-सा निहारता रहा। दूकान की मालकिन ने अन्ततः कैथरीन के बाल सँवार दिए। कैथरीन ने दर्पण में देखा और पिनों को ठीक करते हुए अपनी इच्छानुसार उसने उनमें कुछ फेर-फार किया। फिर वह उठ खड़ी हुई—"मुझे दुःख है कि काफ़ी समय लग गया इसमें।"

"श्रीमान् को भी इसमें बड़ा आनन्द आ रहा था। है न श्रीमान्?" दूकान की मालकिन मुस्कराते हुए बोली।

"हाँ, हाँ।" मैंने उत्तर दिया।

दूकान से निकलकर हम बाहर सड़क पर आ गये। हवा चल रही थी। बाहर काफ़ी ठंड थी। "ओह, प्रिये, मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ।" मैंने कहा।

"क्या हमारे दिन बड़े सुख से नहीं बीत रहे हैं, प्रियतम?" कैथरीन बोली—"सुनो, हम कहीं चलकर चाय के बदले बीअर पियें। बीअर पीने से नन्हीं कैथरीन (गर्भस्थ बच्चे) को भी लाभ होगा। उससे वह अधिक बढ़ेगी नहीं।"

"नन्हीं कैथरीन?" मैंने पूछा—"वह शैतान!"

"ऐसा मत कहो। बड़ी भली है बेचारी।" कैथरीन ने उत्तर दिया—"बहुत ही कम तकलीफ देती है मुझे। डॉक्टर का कहना है कि बीअर पीने से मुझे तो फायदा होगा ही और शिशु भी ज़्यादा नहीं बढ़ेगा।"

"यदि लड़का हुआ और अधिक न बढ़ा, तो हो सकता है, कि उसे कहीं जॉकी का काम करना पड़े।"

"मैं सोचती हूं कि यदि सचमुच बच्चा पैदा हुआ, तो हमें अवश्य विवाह कर लेना चाहिए।" कैथरीन ने कहा। बातें करते-करते हम बीअर की दूकान में आ गये और कोने की एक मेज़ पर बैठ गए। बाहर अंधेरा घिरने लगा था। यद्यपि सांझ अभी दूर थी; फिर भी दिन-भर अंधेरा-सा बना रहा था और अब समय से पहले ही साध्य-वेला निकट आती जा रही थी।

"चलो, हम अभी विवाह किये लेते हैं।" मैं बोला।

"नहीं।" कैथरीन ने कहा—"इस समय शादी करना तो बड़ा लज्जास्पद प्रतीत होगा। मुझे देखकर कोई भी कह सकता है कि मैं गर्भवती हूँ। ऐसी स्थिति में मैं न तो किसी के सामने ही निकलना चाहती हूँ और न शादी करना!"

"यदि हम पहले ही विवाह कर लेते, तो कितना अच्छा होता!"

"हाँ; किन्तु उतना समय ही कहां मिला हमें, प्रियतम?"

"क्या बताऊँ मैं?"

"मैं तो एक बात जानती हूँ। इस गर्भावस्था में, जब कि मुझमें और एक विवाहित स्त्री में कोई अन्तर नहीं है, मैं शादी नहीं कर सकती।"

"किन्तु तुम विवाहित तो नहीं हो!"

"नहीं-नहीं; मैं विवाहित ही हूँ, प्रियतम! अभी-अभी उस केश सँवारने वाली स्त्री ने मुझसे पूछा था कि क्या यह हमारा पहला ही बच्चा है। और जवाब में मेरे मुंह से आप-ही-आप निकल पड़ा—कि मेरे दो लड़के और दो लड़कियाँ और भी हैं।"

"हमारी शादी होगी कब आखिर?"

"बच्चा होने के बाद किसी भी समय। मैं चाहती हूँ कि हमारा विवाह बड़ी धूमधाम से हो—हर कोई हमें देखकर कहे कि वाह, कितनी सुंदर जोड़ी है!"

"और, तुम्हें किसी भी बात की चिन्ता नहीं है?"

"कैसी चिन्ता? चिन्ता करें ही क्यों हम, प्रियतम? आज तक के जीवन में मेरे साथ केवल एक ही बार ऐसा मौका आया है, जब मुझे बड़ा बुरा लगा था। तुम्हें याद है, हम दोनों मिलान के होटल में ठहरे थे—उस रात मुझे ऐसा प्रतीत हुआ था कि मुझमें और एक वेश्या में कोई अन्तर नहीं है। कुछ देर के लिए—सिर्फ सात मिनट के लिए—मेरे मन में यह भावना उठी थी। पर उसमें मेरा कोई दोष भी तो नहीं था। कमरे की सजावट ही उस ढंग की थी। क्या तुम्हारी नज़र में मैं एक सुयोग्य पत्नी नहीं हूँ?"

"तुम बड़ी सुन्दर पत्नी हो।"

"फिर इन सब लोकाचारों पर ध्यान मत दो, प्राण! विवाह के अर्थ में विवाह की चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं। बच्चा होने पर शीघ्र ही हमारा विधिवत् विवाह भी हो जाएगा।"

"अच्छी बात है।"

"एक गिलास बीअर और पी लूँ मैं? क्या राय है तुम्हारी? डाक्टर ने कहा था कि मेरे कूल्हे बहुत कम चौड़े हैं, अत. पेट के भीतर बच्चे का अधिक नहीं बढ़ना ही अच्छा होगा।"

"और क्या कहा था उसने?" मैं चिन्तित हो उठा।

"कुछ नहीं। मेरा रक्त-चाप बड़ा सुन्दर है, प्रिय! डाक्टर ने इसकी बड़ी प्रशंसा की थी।"

"तुम्हारे कूल्हों के कम चौड़े होने के बारे में उसने और क्या कहा था?"

"अरे, कुछ भी तो नहीं। कोई ख़ास बात नहीं कही उसने। हाँ, यह ज़रूर कहा था कि मुझे बर्फ़ पर नहीं फिसलना चाहिए।"

"बिलकुल ठीक कहा उसने।"

"उसने मुझे बताया कि यदि मैं पहले कभी बर्फ़ पर नहीं फिसली हूँ, तो अब, ऐसी अवस्था में, यह खेल खेलना मेरे लिए ठीक नहीं है। हाँ, उसने यह भी कहा था कि यदि मुझे गिरने-पड़ने की कोई आशंका न हो, तो मैं फिसल सकती हूँ।"

"बड़ा मज़ाकिया डाक्टर मालूम होता है।"

"सचमुच, बड़ा अच्छा डाक्टर है बेचारा! बच्चा पैदा होने के समय हम उसीको बुलाएँगे।"

"तुमने उससे यह नहीं पूछा कि तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए या नहीं?"

"नहीं! मैंने तो उल्टे यह कहा कि मेरी शादी चार वर्ष पहले हो चुकी है। सुनो प्रिय, तुमसे शादी होने पर मैं भी अमरीकी नागरिक बन जाऊँगी और अमरीकी विधान के अंतर्गत चाहे किसी भी समय विवाह हो—शादी, बच्चा होने के पहले हुई हो या बाद में—बच्चा जायज़ माना जायेगा।"

"यह विधान तुमने कहाँ पढ़ा?"

"वाचनालय में। न्यूयॉर्क से प्रकाशित वार्षिक विश्व-पंचांग से मालूम हुआ है मुझे।"

"बड़ी विचित्र लड़की हो तुम।"

"अमरीकी नागरिक बनकर मुझे वस्तुतः बड़ी प्रसन्नता होगी। हम लोग अमेरिका जाएँगे। है न? मैं नियागरा-जल-प्रपात देखने की बड़ी इच्छुक हूँ, प्रियतम!"

"तुम सचमुच बड़ी भली लड़की हो।"

"मैं अमेरिका में और भी कुछ देखना चाहती हूँ; किन्तु मुझे अभी याद नहीं आ रहा है कि वह क्या है!"

"पशुओं को रखने के लम्बे-चौड़े बाड़े तो नहीं?"

"नहीं, कुछ और—मैं बिलकुल भूल गई हूँ अभी।"

"वूलवर्थ भवन?"

"ना।"

"ग्रैण्ड कैनियन (महान जल-घाटी)?"

"नहीं; किन्तु मैं उसे भी देखना चाहूँगी।"

"तब आखिर है क्या वह?"

"हाँ, याद आया मुझे—'गोल्डन गेट'—स्वर्ण-द्वार! यही देखना चाहती हूँ मैं। कहाँ है यह?"

"सॅनफ्रान्सिस्को में।"

"तब हम वहीं चलेंगे। मैं सॅनफ्रान्सिस्को देखने के लिए बड़ी उत्सुक हूँ।"

"अच्छी बात है। हम लोग वहाँ चलेंगे।"

"अब हमें पहाड़ के ऊपर चल देना चाहिए। क्यों, है न? बस नहीं मिल सकती क्या?"

"पाँच बजकर कुछ मिनट पर एक रेलगाड़ी छूटती है यहाँ से।"

"तब उसी को पकड़े।"

"अच्छी बात है। मैं पहले एक गिलास शराब और पी लूँ।"

जब हम बाहर निकलकर सड़क पर आये और कुछ दूर चलकर स्टेशन की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे, तो बड़े ज़ोर की ठंड पड़ रही थी। रोन-घाटी की ओर से ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी। दूकानों की खिड़कियों में बत्तियाँ चमक रही थीं। हम ऊपर तक सीधी चली गई पत्थर की सीढ़ियां पार करते हुए ऊँची सड़क पर पहुँचे। वहाँ से दूसरी सीढ़ियों पर चढ़कर स्टेशन में घुसे। स्टेशन पर बिजली से चलने वाली गाड़ी तैयार खड़ी थी। उसकी सब बत्तियाँ जल रही थीं। स्टेशन पर गाड़ी छूटने का समय बताने वाला एक समय-सूचक यंत्र (इंडीकेटर या डायल) लगा था। उसके काँटों के निर्देशानुसार गाड़ी पाँच बजकर दस मिनट पर छूटनेवाली थी। मैंने स्टेशन की घड़ी की ओर देखा। गाड़ी चलने में अभी पाँच मिनट शेष थे। ज्योंही हम दोनों डिब्बे में प्रवेश करने लगे, त्योंही मैंने गाड़ी के ड्राइवर और कंडक्टर को स्टेशन में बनी शराब की दूकान से बाहर निकलते हुए देखा। हम डिब्बे में बैठ गए। खिड़की हमने खोल दी। बिजली के जरिये डिब्बे को गर्म रखा गया था; पर साथ ही कुछ घुटन भी लगती थी। खिड़की खोल देने से डिब्बे में ताज़ी-ठंडी हवा आने लगी।

"थक तो नहीं गयी, केट?" मैंने पूछा।

"नहीं तो, बड़ा अच्छा लग रहा है मुझे।"

"हमें गाड़ी में देर तक थोड़े ही बैठना है।"

"गाड़ी में बैठना पसन्द है मुझे।" वह बोली—"मेरे विषय में कोई चिन्ता मत करो, प्रियतम! मैं बिलकुल भली चंगी हूँ।"

क्रिसमस के तीन दिन पहले तक बर्फ़ गिरना आरम्भ नहीं हुआ था। एक दिन प्रातःकाल उठकर अचानक हमने देखा कि हिमपात हो रहा था। हमारे कमरे की अँगीठी में ज़ोरों से आग जल रही थी। हम अपने बिस्तर में ही दुबके पड़े रहे और वहीं से बर्फ़ का गिरना देखने लगे। श्रीमती गर्टिंगेन ने अँगीठी में कुछ और लकड़ियाँ डाल दीं और प्रातःकालीन नाश्ते की खाली प्लेटें उठाकर ले गईं। बर्फ़ का वह तूफ़ान बड़ा भयानक था। श्रीमती गर्टिंगेन ने बताया कि तूफ़ान आधी रात से आरम्भ हुआ था। खिड़की पर पहुँच कर मैंने बाहर झाँका; किन्तु सड़क से आगे मुझे कुछ नहीं दिखाई दिया। हवा बड़े भीषण रव के साथ बह रही थी और साथ ही बर्फ़ भी ज़ोरों से गिर रहा था।

म पुनः आकर बिस्तर पर लेट गया। लेटे-लेटे हम लोग बातें करने लगे।

"मेरी बड़ी इच्छा हो रही है कि मैं बर्फ़ पर फिसलूँ।" कैथरीन बोली—

"यह बिलकुल बेकार बात है कि मैं बर्फ़ पर नहीं फिसल सकती।"

"हम बर्फ़ पर चलने वाली एक छोटी गाड़ी ठीक किये लेते हैं और तब सड़क के ढाल पर फिसलने चलेंगे। तुम्हारे लिए वह मोटर की सवारी से कम आरामदेह नहीं रहेगी।"

"कोई कष्ट तो नहीं होगा।"

"तुम स्वयं ही देख लेना।"

"आशा है, अधिक तकलीफ़ नहीं होगी।"

"थोड़ी देर बाद हम बर्फ़ पर घूमने चलेंगे।"

"पर खाना खाने से पहले—" कैथरीन बोली—"जिससे लौटकर आने पर हमें ज़ोरों की भूख लग जाये।"

"मुझे तो हमेशा ही भूख लगी रहती है।"

"यही हाल तो मेरा भी है।"

कुछ देर बाद हम बाहर आ गये। पर बर्फ़ एक स्थान पर न जमकर इधर-उधर बह रहा था, अतः हम उसपर अधिक दूर नहीं जा सके। हम लोगों ने स्टेशन की दिशा में फिसलना प्रारम्भ किया। किन्तु जब हम नीचे पहुँचे, तो स्टेशन से काफ़ी दूर आ गये थे। बर्फ़ हवा के साथ-साथ उड़ रहा था, अतः बड़ी मुश्किल से हमें कुछ दिखाई देता था। हम स्टेशन के पास की एक छोटी-सी सराय में घुस गये। एक झाड़न द्वारा हमने एक-दूसरे के शरीर पर से बर्फ़ साफ़ किया और एक बेन्च पर बैठकर वरमाउथ (शराब) पीने लगे।

"तूफान बहुत भारी है।" नौकरानी ने कहा।

"हाँ।"

"इस वर्ष काफ़ी देर से बर्फ़ गिरना शुरू हुआ है।"

"हाँ।"

"क्या मैं कुछ चॉकलेट खा सकती हूँ?" कैथरीन ने पूछा—"या हमारे खाना खाने का समय हो गया है? क्या बताऊँ, मुझे हमेशा भूख सताया करती है।"

"तो खा लो न एकाध चॉकलेट—" मैं बोला।

"मैं तो फिनबर्ट (जैतून की जाति के एक पेड़ का सुपारी-जैसा फल) मिली हुई चॉकलेट लूँगी।" कथरीन ने कहा।

"बड़ी स्वादिष्ट होती है।" सराय की नौकरानी बोली—"मैं स्वयं भी उसे बहुत पसन्द करती हूँ।"

"मेरे लिए एक गिलास वरमाउथ और लाओ।" मैंने कहा।

वापस आने के लिए हम सराय से बाहर निकले। सड़क पर चढ़ते हुए हमने देखा कि हमारे नीचे उतरते समय जो निशान बने थे, वे सब अब बर्फ़ से ढँक गए थे। सड़क पर जहाँ-जहाँ छिद्र थे, उन स्थानों पर, अब उनके कुछ धुँधले-से चिह्न ही बचे थे। हमारे चेहरों पर बर्फ़ की थपेड़ें पड़ रही थीं, अतः हम बड़ी कठिनाई से कुछ देख सकते थे। घर में पहुँचकर हमने अपने ऊपर पड़ा हुआ बर्फ़ साफ़ किया और भोजन करने बैठे। गर्टिंगेन ने भोजन परोसना शुरू किया।

"कल यहाँ बर्फ़ पर फिसलने का खेल होगा।" उसने कहा—"आप खेलते हैं या नहीं, हैनरी साहब?"

"नहीं; पर मैं उसे सीखना अवश्य चाहता हूँ।"

"बड़ी आसानी से सीख जायेंगे आप। क्रिसमस मनाने के लिए मेरा लड़का यहाँ आने वाला है। वह आपको सिखा देगा।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है। कब आ रहा है वह?"

"कल रात को।"

खाना खाने के बाद, हम अपने छोटे कमरे में अँगीठी के पास बैठकर, खिड़की से, बर्फ़ का गिरना देखने लगे। एकाएक कैथरीन पूछ बैठी—"क्या कभी तुम्हारी ऐसी इच्छा नहीं होती प्रियतम, कि तुम अकेले कहीं सैर करने जाओ, लोगों से मिलो और उनके साथ बर्फ़ पर फिसलो?"

"नहीं तो। ऐसी इच्छा भला करूँगा ही क्यों मैं?"

"मैं सोचती हूँ, कभी-कभी तो तुम्हारे मन में मेरे सिवा अन्य व्यक्तियों से मिलने की इच्छा होती ही होगी।"

"तुम्हारे मन में ऐसी इच्छा उठती है क्या?"

"नहीं।"

"मैं भी किसीसे मिलना नहीं चाहता।"

"जानती हूँ मैं। किन्तु मुझमें और तुममें अन्तर है। मेरे पेट में बच्चा है। मैं गर्भवती हूँ, और इस विचार के मन में उठते ही, कोई काम किए बिना ही मैं सन्तुष्ट हो जाती हूँ। मुझे मालूम है कि आजकल मैं बिलकुल पागल-सी हो गई हूँ। बहुत बातें करने लगी हूँ मैं। इसीलिए तो सोचती हूँ कि तुम मुझसे कहीं दूर चले जाओ, जिससे मेरी बातें सुन-सुनकर ऊबने की नौबत न आये तुम्हारे सामने।"

"क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें छोड़कर कहीं चला जाऊँ?"

"नहीं, मैं तो चाहती हूँ कि तुम सदा मेरे ही पास बने रहो।"

"वही तो कर रहा हूँ मैं, पगली!"

"ज़रा, मेरे पास खिसक आओ।" वह बोली—"मैं तुम्हारे सिर पर उभरे हुए गूमड़े को देखना चाहती हूँ। ओह, यह तो बड़ा-सा गूमड़ा है।" उसके ऊपर उगली फिराते हुए उसने कहा—"सुनो, दाढ़ी रखना पसन्द है तुम्हें?"

"क्यों? क्या तुम चाहती हो कि मैं दाढ़ी रखूँ?"

"यदि तुम रखो, तो बड़ा मज़ा आये। मैं देखना चाहती हूँ कि तुम दाढ़ी में कैसे लगते हो?"

"अच्छी बात है। मैं दाढ़ी बढा लूँगा। अभी, इसी क्षण से, दाढ़ी बढ़ाना शुरू कर देता हूँ मैं। बड़ा अच्छा सुझाव है तुम्हारा। दाढ़ी रखने में मुझे कम-से-कम कुछ काम तो करने को मिल जायगा।"

"क्यों? क्या कुछ काम न होने से तुम्हें चिन्ता हो रही है?"

"नहीं-नहीं। मुझे स्वयं ही यह सब बड़ा पसन्द है। बड़े सुख से तो बीत रहे हैं मेरे दिन। तुम्हारा क्या खयाल है?"

"मेरे दिन भी बड़ी सुन्दरता से कट रहे हैं। भय केवल इतना ही है कि अब मैं बहुत बड़ी हो गई हूँ—अतः डरती हूँ, तुम्हें भार न लगने लगूँ।"

"ओह, तुम नहीं जानती केट, कि मैं तुम्हारे पीछे कितना पागल हूँ—कितना प्यार करता हूँ तुम्हें मैं!"

"इस हालत में भी!"

"तुम जैसी भी हो, मुझे प्रिय हो। कितने सुख में बीत रहे हैं हमारे दिन! क्यों, क्या हमारा जीवन सुखी नहीं है?"

"क्यों नहीं? बहुत सुखी है। किन्तु मैं देखती हूँ कि कभी-कभी तुम बहुत परेशान हो उठते हो!"

"नहीं तो, ऐसी कोई बात नहीं है। कभी-कभी मुझे युद्ध के मोर्चे की याद आ जाती है और मैं अपनी जान-पहचान के व्यक्तियों के बारे में सोचने लगता हूँ। पर मैं इस विषय में चिन्ता नहीं करता। आजकल मैं किसी भी चीज़ को लेकर अधिक नहीं सोचता।"

"तुम किसके विषय में सोचा करते हो? कौन है वह?"

"उन अनेक व्यक्तियों के विषय में, जिन्हें मैं जानता था—रिनाल्डी, पादरी और अन्य बहुत-से परिचित व्यक्ति! किन्तु मैं उनके बारे में बहुत तो नहीं

सोचता। युद्ध-सम्बन्धी कोई भी बात सोचने की मेरी इच्छा नहीं होती। मैं तो उस भयानक युद्ध से सदा के लिए मुक्त हो चुका हूँ।"

"इस समय तुम क्या सोच रहे थे भला?"

"कुछ तो नहीं।"

"ना, कुछ सोच अवश्य रहे थे तुम। बताओ न, क्या सोच रहे थे?"

"मैं सोच रहा था कि क्या रिनाल्डी को सचमुच उपदंश की बीमारी थी?"

"बस, इतना ही?"

"बस, इतना ही!"

"क्या वह सचमुच उपदंश रोग से पीड़ित था?"

"कह नहीं सकता मैं।"

"मुझे बड़ी खुशी है कि तुम उस रोग से बचे हो। क्या तुम्हें कभी कोई ऐसा रोग हुआ है?"

"हाँ, एक बार मुझे सूज़ाक हुआ था।"

"बस-बस, मैं उस विषय मे सुनना नहीं चाहती। क्या तुम्हें उससे बहुत तकलीफ़ होती थी, प्रियतम?"

"बेहद!"

"काश, मुझे भी सूज़ाक हो जाता!"

"नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं करते।"

"क्यो नहीं? मैं चाहती हूँ कि यदि मुझे भी वही रोग हो जाता, तो मैं बिलकुल तुम जसी हो जाती। काश, मैं मोर्चे पर तुम्हारी उन सब लड़कियों के साथ होती, जिनसे तुम मिला करते थे! तब मै तुम्हारे सामने उनका खूब मज़ाक उड़ाया करती।"

"कल्पना तो बड़ी सुन्दर है, तुम्हारी!"

"नहीं, तुम्हारे सूज़ाक से पीड़ित होने की बात जानते हुए सुन्दर नहीं कही जा सकती।"

"हाँ, यह तो मैं भी समझता हूँ। ज़रा उधर, बाहर गिरते हुए बर्फ़ की ओर तो देखो—कितना सुदर दृश्य है!"

"उसकी अपेक्षा तुम्हारी ओर देखना मुझे अधिक प्रिय है। प्रियतम, तुम अपने सिर के बाल क्यो नहीं बढ़ा लेते?"

"बोलो, कितने लम्बे बाल रखूँ?"

"बस यो ही, थोड़े-से बाल और।"

"मेरे बाल तो अभी भी काफ़ी लम्बे हैं।"

"नहीं, तुम अपने बाल थोड़े और बढ़ा लो। मैं अपने बाल कुछ छोटे करवा लूँगी और तब हम दोनों बिलकुल एक जैसे हो जायेंगे। अंतर केवल इतना ही होगा कि हममें से एक होगा सुन्दर गौरवर्ण और दूसरा होगा कुछ साँवला-सलोना!"

"नहीं, मैं तुम्हें अपने बाल नहीं कटवाने दूँगा।"

"क्यों? अरे बड़ा मज़ा आएगा उसमें। मैं तो तंग आ गई हूँ, इन बालों से। रात को बिस्तर में सोते समय ये बड़ी तकलीफ़ देते हैं।"

"मुझे तो बड़े अच्छे लगते हैं ये।"

"यदि ये छोटे करा दिए जायें, तो तुम्हें अच्छे नहीं लगेंगे?"

"शायद लगने लगे। पर मुझे तो वे जैसे हैं, वैसे ही बहुत पसंद हैं।"

"छोटे हो जाने पर वे कदाचित् और सुन्दर दिखेंगे। तब हम दोनों एक-जैसे हो जाएँगे। ओह, प्रियतम, मैं तुम्हें इतना अधिक चाहती हूँ कि मैं पूर्णतः 'तुम' बन जाना चाहती हूँ—बिलकुल एकात्म हो जाना चाहती हूँ।"

"तुम मुझसे अलग हो ही कब! हम दोनों एक ही तो हैं।"

"मुझे मालूम है। रात में हम दोनों एक हो जाते हैं।"

"हमारी रातें सचमुच बड़ी सुहानी होती हैं।"

"मेरी बड़ी इच्छा है कि हम दोनों घुल-मिल कर बिलकुल एक हो जाएँ—एक-रूप बन जाएँ। मैं तुम्हें स्वयं से अलग नहीं देखना चाहती—तुम्हारे मुझसे दूर चले जाने की कल्पना ही मुझे पागल बना देती है। वैसे यदि तुम कहीं जाना चाहते हो, तो जा सकते हो। किन्तु उल्टे पैरों ही वापस आ जाना। जानते हो प्रियतम, क्यों? जब तुम मेरे पास नहीं होते तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है, मानो मुझमें प्राण ही नहीं है।"

"मैं तुमसे कभी विलग नहीं हूँगा।" मैंने कहा—"तुम्हारे पास न होने पर मुझमें जैसे कुछ रह ही नहीं जाता—मेरी साँसों का स्पंदन ही समाप्त हो जाता है।"

"मैं चाहती हूँ कि तुममें जीवन हो—ऐसा जीवन जिसमें सुख हो, सौंदर्य हो। किन्तु हम दोनों ही मिलकर उसका उपभोग करेंगे। है न?"

"अच्छा, अब यह बताओ कि मैं अपनी दाढ़ी बढ़ाना बन्द कर दूँ या बढ़ाता जाऊँ उसे? क्या इच्छा है तुम्हारी?"

"चलने दो, बढ़ाओ दाढ़ी। सच, मज़ा आ जायेगा। हो सकता है, तुम्हारी लम्बी दाढ़ी नये वर्ष में हमारे लिए एक नवीनता लेकर आये।"

"तुम थोड़ी देर शतरंज खेलोगी क्या ?"

"मैं तो तुमसे खेलना अधिक पसन्द करूँगी।"

"चलो, थोड़ी देर शतरंज ही खेलें।"

"और उसके बाद हम दोनों आपस में खेलेंगे।"

"अच्छा।"

"ठीक है तब।"

मैंने शतरंज की तख्ती निकाली और उस पर मोहरे जमा दिए। बाहर अभी तक, बड़े ज़ोरों से बर्फ़ गिर रहा था।

रात में एक बार मेरी नींद उचट गयी। मैंने देखा कि कैथरीन भी जाग रही थी। खिड़की में से चाँद चमक रहा था। उसके प्रकाश में, खिड़की के चौखटों में लगी हुई लोहे की छड़ों की परछाईं हमारे बिस्तर पर पड़ रही थी।

"अरे, तुम जाग गए, प्रियतम!"

"हाँ, क्यों तुम्हें नींद नहीं आती?"

"अभी-अभी खुली है मेरी नींद। मैं सोच रही थी कि जब हमारा प्रथम मिलन हुआ था, तब मैं किस प्रकार तुम्हारे पीछे क़रीब-क़रीब पागल हो गई थी। कुछ याद है तुम्हें?"

"हाँ, कुछ सनक-सी ज़रूर नज़र आती थी तुममें!"

"किन्तु अब मैं ज़रा भी ही वैसी नहीं हूँ। अब तो मैं पागल नहीं, बड़ी सुन्दर हूँ। 'सुन्दर' शब्द का उच्चारण तुम बड़ी मिठास से करते हो। बोलो तो एक बार ज़रा—सुन्दर—।"

"सुन्दर!"

"ओह! कितने प्रिय हो तुम! और देखो, अब मैं तनिक भी पागल नहीं हूँ। अब तो मैं बस, बहुत, बहुत—बहुत ही सुखी हू।"

"सो भी जाओ अब।" मैंने कहा।

"अच्छी बात है। आओ, हम दोनों एक ही क्षण, ठीक एक ही समय पर, एक साथ सो जायें!"

"बहुत अच्छा!"

किन्तु हम दोनों को एक साथ नींद नहीं आई। मैं बड़ी देर तक इधर-उधर की बातें सोचता हुआ जागता रहा। बीच-बीच में मैं अपने पास सोई हुई कैथरीन पर स्नेह-भरी दृष्टि डाल लेता। चन्द्रिका उसके मुखचंद्र पर प्रतिबिम्बित हो रही थी। मैं उसे देखता रहा—देखता रहा और जाने कब मुझे नींद आ गयी।

. ३८ .

आधा जनवरी मास बीतते-बीतते मेरी दाढ़ी अच्छी तरह उग आई। शरद ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर थी। दिन में आकाश बिलकुल साफ़ रहता और वातावरण में नमी होती। रात को कड़ी ठंड पड़ती। सड़क पुनः चलने योग्य हो गई थी। बर्फ़ पर फिसलने वाली घास और लकड़ी की गाड़ियों तथा पहाड़ों पर से नीचे लुढ़काए गए लकड़ी के लट्ठों के कारण बर्फ़ अपनी जगह पर जमकर कठोर और चिकना हो गया था। आसपास के समस्त क्षेत्र में, यहाँ तक कि माँण्ट्रयूज़ तक, बर्फ़-ही-बर्फ़ बिखरा हुआ था। झील के उस पार के सभी पहाड़ बर्फ़ के कारण सफ़ेद हो गए थे। रोन घाटी बर्फ़ से बिलकुल ढँक-सी गयी थी। हम पहाड़ की दूसरी तरफ़ बड़ी दूर तक घूमने जाया करते और बेन्स-द-एलाइज़ पहुँच जाते। कैथरीन कील ठुके भारी जूते पहना करती। उसका शरीर लबादे में लिपटा होता और उसके हाथ में लोहे की नोकवाली एक छड़ी होती थी। लबादे में वह कोई अधिक मोटी नहीं दिखाई देती थी। पर हम तेज़ चाल से नहीं चलते थे। जब कैथरीन चलते-चलते थक जाती, तो हम रुक जाते और सड़क की बगल में पड़े हुए लकड़ी के लट्ठों पर बैठकर आराम करने लगते।

बेन्स-द-एलाइज पर वृक्षों की झुरमुट में एक सराय थी। वहाँ एक क्षण रुक कर लकड़हारे शराब पिया करते थे। हम उसी सराय के भीतर चले जाते और आग तापते हुए अँगीठी के पास बैठ जाते। वहीं पर कुछ सुगंधित मसाले तथा नीबू मिलाकर हम लाल रंग की गरम शराब पिया करते। वहाँ के लोग उस शराब को 'ग्ल्यूव्हाइन' के नाम से पुकारते थे। शरीर में उष्णता बनाए रखने तथा आनन्द मनाने की दृष्टि से वह बड़ी अच्छी शराब थी। सराय भीतर से बिलकुल अंधकारमय तथा धुएँ से भरी थी। हम जब सराय से बाहर आते, तो वहाँ की ठण्डी हवा बड़े वेग के साथ हमारे फेफड़ों में धँस जाती। ज्योंही हम साँस भीतर खींचते, बर्फ़ जैसी वायु हमारी नाक को चेतना-शून्य कर देती। चलते-चलते हम पीछे मुड़कर सराय की ओर देखते। हमें उसकी खिड़कियों से बाहर आता हुआ प्रकाश दिखाई देता। वहीं बँधे हुए, लकड़हारों के घोड़े अपने शरीर को गरम बनाए रखने के लिए बार-बार अपनी टाँगें फटकारते और अपनी गर्दन को झटका देते। उनके थूथनों के बालों पर बर्फ़ जम जाता। जब वे साँस लेते, तो आसपास के बर्फ़ के परों के समान

हलके गाले हवा में उड़ा करते। घर की ओर लौटते समय थोड़ी दूर तक हमारी राह चिकनी और फिसलनदार होती। सराय की घुड़साल से लेकर लकड़ी के लट्ठे लुढ़काये जानेवाली सड़क के मोड़ तक बर्फ़ का रंग नारंगी-जैसा दिखाई देता था। उसके बाद हमारा रास्ता जंगलों से होकर गुजरता और उसपर स्वच्छ श्वेत बर्फ़ की तह जमी रहती। साँझ को घर लौटते समय रास्ते में एक-दो बार हमें लोमड़ियाँ भी दिखायी पड़ीं।

बड़ा सुन्दर इलाका था वह—अतः जब भी हम बाहर घूमने निकलते, हमें बड़ा आनन्द आता।

उस दिन भी हम उस पर्वतीय इलाके का चक्कर लगाकर बातें करते हुए वापस आ रहे थे।

"अब तो तुम्हारे चेहरे पर काफ़ी सुंदर दाढ़ी उग आई है।" कैथरीन ने कहा—"बिलकुल ऐसी ही लगती है, जैसे किसी लकड़हारे की दाढ़ी हो। क्या तुमने उस आदमी को देखा था, जिसके कानों में सोने की नन्हीं-नन्हीं बालियाँ थीं।"

"हाँ, वह सॉभर का शिकारी है।" मैं बोला—"सॉभर का शिकार करने वाले लोग यहाँ ऐसी ही बालियाँ पहना करते हैं। उनका विश्वास है कि बालियाँ पहनने से वे अधिक स्पष्ट सुन सकते हैं।"

"सच? मैं इस पर विश्वास नहीं करती। मेरी समझ से वे उन्हें इसलिए पहनते हैं, जिससे लोगों को दिखा सकें कि वे सॉभर मारने वाले शिकारी हैं। क्या यहाँ आसपास किसी इलाके में साभर पाये जाते हैं?"

"हाँ, डेण्ट-डयू जमान से आगे के इलाके में।"

"मुझे उस लोमड़ी को देखकर बड़ा मज़ा आया आज।"

"जानती हो? जब लोमड़ी सोती है, तो अपने शरीर में उष्णता बनाए रखने के लिए अपनी पूँछ चारों ओर लपेट लेती है!"

"तब तो उसे बड़ा आनंद आता होगा!"

"मेरी सदा यही इच्छा रही है कि मेरे भी एक वैसी ही पूँछ होती! तुम्हीं बताओ, यदि हमारे शरीर पर भी लोमड़ी के समान ही पूँछ हो, तो मज़ा नहीं आयेगा?"

"किन्तु तब, हमें कपड़े पहनने में बड़ी तकलीफ़ होगी।"

"क्यों, उस अवस्था में, हम अपने लिए खास ढंग के कपड़े बनवा लेंगे अथवा किसी ऐसे प्रदेश में जाकर रहने लगेंगे, जहाँ कपड़े पहनना और न पहनना, दोनों बराबर होगा।"

"वास्तव में, हम ऐसे ही प्रदेश में रह रहे हैं, जहाँ चाहे कोई कुछ भी करे, कोई फर्क नहीं पड़ता। क्या यह मज़े की बात नहीं है कि यहाँ हमारी कभी किसी से भेंट नहीं होती ? तुम भी तो लोगों से मिलना-जुलना नहीं चाहते, है न प्रियतम ?"

"हाँ, मैं किसी से नहीं मिलना चाहता।"

"यदि हम लोग पल-भर यहाँ बैठ जायें, तो कैसा रहेगा ? मैं कुछ थक-सी गई हूँ।"

हम दोनों लकड़ी के लट्ठों पर एक-दूसरे से सटकर बैठ गये। हमारे सामने का रास्ता जंगल को पार करता हुआ ढाल पर उतरता जा रहा था।

"यह नन्हीं बच्ची (गर्भस्थ शिशु) हम दोनों के बीच में बाधक तो नहीं बनेगी न, प्रियतम ?"

"नहीं, हम उसे ऐसा नहीं करने देंगे !"

"हमारे पास पैसा कितना है, इस समय ?"

"बहुत है। पिछली बार आई हुई दर्शनी हुंडी को बैंकवालों ने स्वीकार कर लिया है।"

"तुम्हारे परिवारवालों को यह तो पता लग ही गया है कि तुम स्विट्ज़रलैण्ड में हो। क्या वे अब तुम्हें लौटा ले जाने का प्रयत्न नहीं करेंगे ?"

"ऐसा हो सकता है। पर मैं उन्हें कुछ उल्टा सीधा लिख दूँगा !"

"क्या तुमने उन्हें अभी तक कुछ नहीं लिखा ?"

"नहीं ! केवल पैसा भेजने के विषय में ही लिखा था।"

"भगवान् का लाख-लाख शुक्र, कि मैं तुम्हारे परिवार में नहीं हूँ।"

"मैं उन्हें तार द्वारा अपने समाचार भेज दूंगा।"

"क्या तुम अपने परिवारवालों की बिलकुल परवाह नहीं करते ?"

"करता था कभी; किन्तु एक बार हम लोगों में इतना झगड़ा हो गया कि परवाह करने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

"मैं तो सोचती हूँ कि मेरी उनसे अच्छी निभेगी। कदाचित्, मैं उन्हें बहुत अधिक चाहने लगूँ।"

"छोड़ो, उनके विषय में हम कोई बात ही न करें, अन्यथा मैं व्यर्थ ही उनके विषय में चिन्ता करने लगूँगा।"

कुछ समय बाद मैंने कहा—"यदि तुमने आराम कर लिया हो, तो अब हम आगे बढ़ें।"

"चलो, मैं अपनी थकान मिटा चुकी हूँ।"

हम सड़क की ढाल पर उतरने लगे। अब तक चारों ओर अंधेरा फैल चुका था। बर्फ़ हमारे जूतों के नीचे दबकर टूटने लगा। आकाश साफ़ था और वातावरण में ठंड थी।

"मैं तो तुम्हारी दाढ़ी से प्रेम करती हूँ।" कैथरीन बोली—"कितनी घनी और भयानक दीखती है यह; पर है कितनी कोमल। और कितना आनंद आता है इसे छूने में!"

"जब मेरे दाढ़ी नहीं थी, उस समय से ज्यादा अच्छा लगता हूँ मैं तुम्हें?"

"मुझे तो ऐसा ही लगता है। एक बात बताऊँ, प्रियतम? मैं अपने केश नन्हीं कैथरीन के पैदा होने तक नहीं कटवाऊँगी। मैं अब बहुत फूली हुई लगती हूँ न—बिलकुल माँ लगती हूँ न! किन्तु प्रसव के बाद मैं पुनः दुबली हो जाऊँगी और तब मैं बाल कटवा लूँगी। उसके बाद मैं तुम्हारे लिए अपने उस रूप में सर्वथा नवीन और सुंदर युवती बन जाऊँगी—है न? पर केश कटवाने के लिए हम दोनों ही चलेंगे। या मैं अकेली ही चुपचाप खिसक जाऊँगी और लौटकर तुम्हें आश्चर्य में डाल दूँगी।"

मैं मौन सुनता रहा।

"तुम कहीं यह तो नहीं कह दोगे कि मैं ऐसा नहीं कर सकती—बोलो, कहोगे?"

"नहीं। मेरा तो ख़याल है कि इसमें और भी मज़ा आयेगा।"

"ओह, तुम कितने अच्छे हो। और हाँ, तब मैं शायद और भी आकर्षक लगूँगी। मैं बड़ी दुबली हो जाऊँगी। तुम मुझे देखकर इतने उत्तेजित हो जाओगे—इतने—कि मुझसे नये सिरे से प्रेम करना प्रारम्भ कर दोगे।"

"तुम्हारा सिर!" मैं बोला—"मैं तुमसे आज भी बहुत प्रेम करता हूँ। आख़िर तुम चाहती क्या हो? मुझे बरबाद करने की इच्छा है क्या?"

"हाँ, मैं तुम्हें बरबाद ही करना चाहती हूँ।"

"तब यही सही।" मैंने कहा—"मैं भी यहीं चाहता हूँ।"

. ४० .

बड़ा सुन्दर जीवन था हमारा। जनवरी और फरवरी मास कैसे और कब बीत गए, हमें मालूम भी न पड़ा। सरदी का वह मौसम सचमुच बड़ा सुहावना

था। हम वस्तुतः बड़े सुखी थे। बीच-बीच में वहाँ कभी-कभी गर्म हवा चलने लगती और तब कुछ समय के लिए बर्फ़ पिघलने लगता। हिम के कठोर स्तर में कुछ कोमलता आती और ऐसा प्रतीत होता, मानो वसंत-वायु बह रही हो। किन्तु कुछ दिनों के बाद ही कड़ी ठण्ड पड़ने लग जाती और सरदी का मौसम फिर लौट आता। मार्च के महीने में, पहली बार, सरदी का मौसम समाप्त होने का आभास हुआ। उसी रात वर्षा भी आरम्भ हो गई। प्रातःकाल भी पानी बरसता ही रहा। चारों ओर फैला बर्फ़ कीचड़ में बदल गया। पूरा पर्वतीय क्षेत्र उदासीन दिखाई देने लगा। झील तथा रोन की घाटी पर मेघ छाए हुए थे। पर्वत-शिखरों पर ज़ोरों की वर्षा हो रही थी। कैथरीन ने अपने भारी लम्बे जूते पहने। मैंने गटिंगेन के रबर के जूते पहन लिये और एक ही छाते में अपने सिर छिपाए हम दोनों स्टेशन की ओर चल पड़े। कीचड़ और सड़क पर के बर्फ़ को बहाकर ले जाने वाली वर्षा के पानी में फिसलते-फिसलाते हम ज्यों-त्यों करके आगे बढ़ते गये—और अन्त में वरमाउथ (शराब) पीने की इच्छा से हम एक शराबघर में घुस गये। बाहर होनेवाली वर्षा की आवाज़ हमें भीतर सुनाई दे रही थी।

"तुम्हारी क्या राय है? हमें अब शहर में चले आना चाहिये?"

"तुम क्या सोचते हो?" कैथरीन ने पूछा।

"यदि सरदी का मौसम खत्म हो गया हो और वर्षा इसी प्रकार होने वाली हो, तो यहाँ रहने में कोई आनन्द नहीं आयेगा। बच्चा होने में अभी और कितने दिन शेष हैं?"

"प्रायः एक मास या सम्भवतः कुछ अधिक।"

"तब तक हम नीचे, मॉण्ट्रयूज़ में आकर रह सकते हैं।"

"हम लॉसेने ही क्यों न चलें? अस्पताल भी तो वहीं है।"

"अच्छी बात है। मैंने सोचा कि वह बहुत बड़ा शहर है—शायद वहाँ इतना अच्छा न लगे।"

"हम बड़े शहर में भी तो इसी प्रकार अकेले रह सकते हैं। फिर लॉसेने शायद शहर भी अच्छा हो।"

"कब चलें तब?"

"इसकी चिन्ता मुझे नहीं। जब तुम चाहो, तभी चल देंगे। यदि तुम्हारी इच्छा यहाँ से जाने की न हो, तो मैं भी नहीं जाऊँगी।"

"ज़रा पहले दो-चार दिन यह तो देखने दो कि मौसम कैसा रहता है!"

तीन दिन तक लगातार वर्षा होती रही। बर्फ़ स्टेशन से नीचे की ओर बहकर पहाड़ की जड़ मे इकट्ठा हो गया। सड़क कीचड़मय हिमजल की वेगवती धारा के रूप में परिणत हो गई। वह इतनी गीली थी और कीचड़ से इस तरह भर गयी थी कि उस पर चलना कठिन हो गया। वर्षा के तीसरे दिन प्रातःकाल ही हमने शहर चले जाने का निश्चय कर लिया।

"कोई बात नहीं, साहब!" गटिंगन ने कहा—"आपको मुझे पहले से सूचित करने की कोई आवश्यकता नही है। मैं स्वयं जानता था कि यह खराब मौसम शुरू होते ही आप यहाँ रहना पसंद नहीं करेंगे।"

"अपनी पत्नी के कारण हमारा किसी अस्पताल के पास रहना अनिवार्य हो गया है।" मैंने कहा।

"मैं जानता हूँ, साहब!" वह बोला—"आप कभी अपने बच्चे के साथ आकर यहाँ अवश्य ठहरियेगा। आयेंगे न?"

"हाँ-हाँ, क्यो नहीं! यदि यहाँ जगह होगी, तो हम ज़रूर आयेंगे।"

"बसन्त के मौसम में, जब सभी जगह बहार छायी रहती है, आप यहाँ आकर प्रकृति के सौन्दर्य का पूरा-पूरा उपभोग कर सकते हैं। हम लोग उस बड़े कमरे में, जो अभी बन्द है, नवजात शिशु और उसकी परिचारिका के रहने की व्यवस्था कर देंगे। आपको तथा श्रीमती हैनरी को आपका वही कमरा दे दिया जायेगा, जहाँ से झील दिखाई देती है।"

"अपने आने के बारे में लिखूँगा मैं।"—मैं बोला। फिर हम लोगों ने अपना सामान बाँधा और भोजन करने के बाद, हम चलने को तैयार हो गये। गटिंगन अपनी पत्नी के साथ हमें स्टेशन तक पहुँचाने आया। हमारा सामान बर्फ़ पर फिसलनेवाली गाड़ी पर लादकर गटिंगन खुद स्टेशन ले आया। हमारे अलग होने तक वे भरी बरसात में स्टेशन के पास खड़े रहे। जब हमारी गाड़ी चलने लगी, तो उन्होने अपने हाथ हिलाते हुए हमें विदा दी।

"बड़े भले हैं, बेचारे!" कैथरीन ने कहा।

"हमारे प्रति उनका व्यवहार बहुत ही अच्छा रहा।"

मॉण्ट्रयूज पहुँचकर हमने लॉसेन की गाड़ी पकड़ी। खिड़की से बाहर सिर निकालकर मैंने देखा कि जहाँ हम रहते थे, वहाँ के पहाड़ बादलो में छिप जाने से दिखाई नहीं पड़ते थे। गाड़ी वेव्ही में जाकर रुकी और फिर चल पड़ी। अब हमारे एक ओर झील थी और दूसरी ओर, वर्षा में भीगे हुए भूरे-भूरे खेत, पत्रविहीन वन तथा पानी में नहाए हुए घर खड़े थे। झील

और खेतों के बीच आगे बढ़ती हुई हमारी गाड़ी अन्ततः लॉसेने पहुँची। गाड़ी से उतर कर हम शहर आये और एक होटल में ठहर गये। स्टेशन से होटल पहुँचने तक पानी लगातार बरसता रहा।

एक लम्बे काल तक गर्टिंगेन-परिवार के घर में रहने के बाद होटल का वातावरण बड़ा अजीब सा लगा। कोट के कॉलरों पर पीतल की चाबियों का गुच्छा लटकाए हुए दरबान, लिफ्ट, फ़र्श पर फैले हुए गलीचे, हाथ-मुँह धोने के सफ़ेद बर्तन और पीतल के चौखटों वाला पलंग और एक लम्बा-चौड़ा सुखद शयनकक्ष—सब बड़ा आरामदेह प्रतीत होता था। हमारे कमरे से होटल का बगीचा दिखाई देता था। वर्षा में नहाये बगीचे का सौन्दर्य निखर आया था। उसके सामने ही दीवार थी। दीवार पर लोहे की जाली लगा दी गयी थी। उस ओर एक सड़क थी, जो ढालू होती हुई चली गई थी। सड़क के उस पार ऐसा ही दूसरा होटल था। उसके सामने भी ऐसा ही बगीचा और ऐसी ही दीवार थी।

कैथरीन ने कमरे की सब बत्तियाँ जला दीं और सामान खोलने लगी। मैंने व्हिस्की और सोड़ा लाने का आदेश दिया और बिस्तर पर लेट गया। लेटे-लेटे मैं स्टेशन पर खरीदे गए समाचारपत्रों को देखने लगा। मार्च १९१८ के दिन थे। फ्रान्स में जर्मन हमला आरम्भ हो चुका था। मैं व्हिस्की और सोड़ा पीते हुए समाचारपत्र पढ़ता रहा। कैथरीन सामान खोलने में व्यस्त थी। सारी चीज़ें जमाते हुए वह कमरे में इधर-उधर दौड़-सी रही थी।

"जानते हो प्रियतम, मुझे क्या खरीदना है?" उसने कहा।

"क्या?"

"नन्हीं बच्ची के लिए कपड़े। ऐसे बहुत कम व्यक्ति मिलेंगे, जो दिन इतने पास आ जाने पर भी भावी शिशु के कपड़े न बनवाते हों।"

"तुम भी खरीद लो उन्हें।"

"वही तो करने जा रही हूँ मैं कल। कल ही बताऊँगी कि कौन-कौन-सी चीज़ की ज़रूरत है हमें।"

"यह तो तुम्हें मालूम होना चाहिए। तुम तो स्वयं परिचारिका रह चुकी हो।"

"परिचारिका तो रही हूँ; परंतु हमारे अस्पतालों में कदाचित् ही किसी सैनिक ने बच्चा जना होगा।"

"मैंने तो जना है।"

उसने मुझे तकिया फेंककर मारा। व्हिस्की और सोड़ा फ़र्श पर बिखर गये।

"मैं अभी तुम्हारे लिए दूसरी व्हिस्की मंगवा देती हूँ।" वह बोली—"मुझे बड़ा दुःख है कि वह मेरी वजह से नीचे गिर गयी।"

"कोई बात नहीं। थोड़ी-सी तो बची ही थी। आओ-आओ; ज़रा, मेरे पास बैठ जाओ।"

"नहीं, अभी नहीं। मुझे इस कमरे को इस तरह सजाना है, जिससे यह कुछ दिखने लगे।"

"कुछ क्या?"

"हमारे अपने घर के समान।"

"तो इसमें क्या है। मित्र राष्ट्रों के झण्डे लटका दो बाहर। दिखने लगेगा अपने घर के समान।"

"ओह, चुप भी रहो।"

"एक बार फिर तो कहो।"

"चुप रहो।"

"इतना डर-डर कर कहती हो तुम—" मैंने कहा—"जैसे तुम्हें डर हो कि कहीं किसीको इससे आघात न पहुँचे।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है।"

"तब आकर मेरे पास बैठ जाओ न।"

"अच्छी बात है।" वह आकर बिस्तर पर बैठ गई—"मुझे मालूम है प्रिय, कि मैं ऐसी स्त्री नहीं हूँ, जो तुम्हारे जीवन को आनन्दमय बना सके—उसमें उल्लास भर सके। मैं तो आटा पीसने की किसी बड़ी चक्की के समान हूँ।"

"नहीं-नहीं, वैसी नहीं हो तुम। तुम सुन्दर और बड़ी प्रिय हो!"

"मुझसे ब्याह करके तुम्हें सचमुच कोई लाभ नहीं हुआ।"

"नहीं-नहीं, ऐसा मत समझो। मेरी दृष्टिमें तो तुम सदा सुन्दर हो।"

"किन्तु मैं पुनः दुबली हो जाऊँगी, प्रियतम!"

"अभी भी तुम दुबली ही हो।"

"तुम शराब पी रहे थे न?"

"हाँ, केवल व्हिस्की और सोड़ा।"

"और भी आ जाती है अभी।" वह बोली—"शराब पीने के बाद यदि हम अपना भोजन भी यहीं मँगवा लें, तो कैसा रहेगा?"

"यह तो बड़ा अच्छा होगा।"

"और उसके बाद हम बाहर नहीं जायेंगे। क्यों ठीक है न? आज रात हम होटल में ही बैठे रहेंगे।"

"और खेलेंगे।" मैंने कहा।

"मैं भी थोड़ी शराब पीऊँगी।" कैथरीन बोली—"नुकसान नहीं करेगी मुझे। हो सकता है, यहाँ हमें अपनी पुरानी प्रिय शराब—सफ़ेद काप्री—मिल जाए।"

"मुझे विश्वास है, यहाँ मिल जायेगी वह। इस श्रेणी के होटल में ये लोग इटालियन शराब ज़रूर रखते होंगे।"

ख़ानसामा ने द्वार खटखटाया। वह एक गिलास में व्हिस्की और बर्फ़ मिलाकर लाया था। उसके साथ ही, ट्रे में सोड़े की एक छोटी-सी बोतल भी रखी थी।

"धन्यवाद।" मैंने कहा—"यहाँ रख दो उसे। क्या तुम दो व्यक्तियों का खाना और बर्फ़ के साथ सफ़ेद काप्री की दो बोतलें यहीं ले आओगे?"

"सबसे पहले क्या खायेंगे आप—सूप?"

"सूप लोगी तुम, केट?"

"हाँ—हाँ।"

"एक व्यक्ति के लिए सूप ले आओ।"

"धन्यवाद, महोदय!" कहकर वह बाहर गया और उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया। मैं पुनः समाचारपत्रों में युद्ध-सम्बन्धी समाचार पढ़ने लगा। समाचारों पर नज़रें गड़ाये ही मैं धीरे-धीरे बर्फ़ पर सोड़ा डालते हुए उसे व्हिस्की में मिलाने लगा। सोड़ा मिलाते हुए मैंने निश्चय कर लिया कि इन लोगों से व्हिस्की और बर्फ़ अलग-अलग लाने के लिए कह देना चाहिए। इस तरह कम-से-कम यह तो मालूम हो सकता है कि गिलास में व्हिस्की कितनी है! साथ ही, सोड़ा मिलाने पर शराब एकाएक इतनी पतली भी न होगी। भविष्य में मैं व्हिस्की की पूरी बोतल मँगा लिया करूँगा और इन लोगों को केवल बर्फ़ और सोड़ा लाने का आदेश दूँगा। यही समझदारी की बात होगी। अच्छी व्हिस्की सचमुच बड़ी आनंददायक होती है। उसके पीने के बाद का समय वस्तुतः हमारे जीवन का सुखद क्षण हुआ करता है।

"क्या सोच रहे हो, प्रियतम?"

"व्हिस्की के विषय में सोच रहा हूँ।"

"व्हिस्की के विषय में? क्या सोच रहे हो?"

"यही कि कितनी अच्छी होती है यह।"

कैथरीन ने मुँह बनाकर मुझे चिढ़ाया। "जैसी तुम्हारी मर्ज़ी—" वह बोली।

हम पूरे तीन सप्ताह होटल में ठहरे और हमारे दिन बड़े मज़े में कट गये। होटल का भोजन का कमरा प्रायः खाली रहा करता था और हम अपना खाना अधिकतर अपने कमरे में ही मँगवा लेते थे। हम दोनों शहर में घूमा करते, दाँतेदार पहियों वाली रेलगाड़ी में बैठकर नीचे आउची जाते और झील के किनारे-किनारे टहलते। मौसम काफ़ी गर्म हो गया था और ऐसा लगता था, मानो बसन्त आ गया हो। वापस, पर्वतों में लौट जाने की, हमारी बड़ी तीव्र इच्छा होती। किन्तु बसन्त के समान मौसम बहुत थोड़े दिनों तक रहा। शरद काल के पुनरागमन की सूचना देनेवाली ठंड पुनः आरम्भ हो गयी।

निकट भविष्य में ही जन्म लेनेवाले बच्चे के लिए कैथरीन ने शहर से आवश्यक वस्तुएँ ख़रीद लीं। मैं घूँसेबाज़ी का अभ्यास करने के लिए एक व्यायामशाला में भरती हो गया—इसी बहाने कुछ कसरत हो जाती! वहाँ मैं प्रायः प्रातःकाल ही जाया करता। कैथरीन दिन चढ़े तक बिस्तर में ही पड़ी रहती। 'झूठे' बसन्त के दिन बड़े अच्छे थे। घूँसेबाज़ी का अभ्यास करने के बाद नहाकर सड़कों पर घूमते हुए, वातावरण में बसन्त का अनुभव करने में बड़ा आनंद आता था! घूमते घूमते मै किसी कॉफे में घुस जाता। वहाँ बैठकर आने-जाते लोगों को देखते हुए समाचारपत्र पढ़ना और बरमाउथ (शराब) पीता रहता। फिर मैं अपने होटल लौट आता और कैथरीन के साथ ही खाना खाता। जिस व्यायामशाला मे मैं घूँसेबाज़ी सीखता था, वहाँ का शिक्षक मूँछें रखता था। वह बड़ा ठिगना था। जब कोई उसके साथ घूँसेबाज़ी का अभ्यास करता, तो कुछ ही देर में उसकी बुरी हालत हो जाती थी। परन्तु व्यायामशाला में बड़ा मज़ा आता था। जगह काफ़ी प्रकाशयुक्त और हवादार थी। मैं वहाँ बड़ी मेहनत से अभ्यास करता—कभी रस्सी पर उछलता, कभी बूँसबाज़ी सीखता, खुली हुई खिड़की की राह भीतर आते हुए सूर्य के प्रकाश में फ़र्श पर लेटकर पेट का व्यायाम करता और यदा कदा उस व्यायाम-शिक्षक से घूँसेबाज़ी करके उसे घायल कर देता। प्रारम्भ में लम्बे-संकरे दर्पण के सामने खड़ा होकर मैं नकली घूँसबाज़ी का ठीक अभ्यास नही कर पाता था। अपने घनी दाढ़ीवाले प्रतिबिम्ब को दर्पण में घूँसा चलाते देखकर मुझे बड़ा अटपटा-सा लगता। किन्तु अन्ततः मैंने सोचा कि यह भी एक मजेदार बात

थी। यों तो जिस दिन मैंने घुड़सवारी सीखना आरम्भ किया था, उसी दिन मैं अपनी दाढ़ी मुड़वा देना चाहता था; किन्तु कैथरीन ने ऐसा नहीं करने दिया।

कभी-कभी मैं और कैथरीन घोड़ागाड़ी में बैठकर आसपास के प्रदेश की सैर करने निकल जाते। जब दिन सुहाने होते, तो सैर में बड़ा आनन्द आता। हमने दो ऐसे सुन्दर स्थानों का भी पता लगा लिया था, जहाँ हम वन भोजन के लिए जा सकते थे। पर उसके साथ घोड़ागाड़ी में बैठकर आसपास के वनप्रदेश की सैर करना मुझे बहुत प्रिय था। यदि किसी दिन मौसम अच्छा होता, तो हमारा समय और भी मज़े में कटता। यों भी, रोते झींकते हमारे दिन कभी नहीं बीते। हम जानते थे कि प्रसव का समय बहुत क़रीब आ गया है। इससे हमारे मन में एक ऐसी भावना घर कर गयी थी कि जैसे कोई हमें तेज़ी से कहीं खींचे ले जा रहा है और व्यर्थ कष्ट करने के लिए हम दोनों के पास एक क्षण भी नहीं बचा है।

४१

एक दिन प्रातःकाल प्रायः तीन बजे अचानक मेरी नींद खुल गयी। मैंने देखा कि कैथरीन बिस्तर में इधर-उधर लुढ़क रही थी।

"क्या बात है, केट? कोई तकलीफ़ है तुम्हें?"

"मुझे दर्द हो रहा है, प्रियतम।"

"नियमित रूप से?"

"नहीं, पूर्णतः नियमित रूप से तो नहीं।"

"यदि दर्द नियमित होता हो तो हम अस्पताल चलेंगे।"

मुझे बहुत नींद आ रही थी, अतः मैं फिर सो गया। पर कुछ समय बाद ही मेरी नींद उचट गई।

"यदि तुम डाक्टर को बुला लो, तो अच्छा रहेगा।" कैथरीन बोली—"कदाचित् यह वही पीड़ा हो।"

मैंने फोन पर डाक्टर को बुलाया। "कितनी-कितनी देर बाद दर्द हो रहा है?"—उसने पूछा।

"दर्द कितनी-कितनी देर बाद होता है, केट?" मैंने उससे पूछा।

"अनुमानतः पन्द्रह-पन्द्रह मिनट में।" वह बोली।

"तब आप लोगों को तुरत अस्पताल पहुँचना चाहिए।" डाक्टर ने उत्तर दिया—"मैं भी कपड़े पहनकर सीधा वहीं आ रहा हूँ।"

मैंने फिर फोन उठाया और स्टेशन के पास के गैरेज को एक टैक्सी भेजने के लिए कहा। पर बड़ी देर तक कोशिश करने पर भी उधर से कोई उत्तर नहीं मिला। अन्त में मैंने एक दूसरे आदमी को फोन किया और उसने मुझे, तुरत ही एक टैक्सी भेज देने का वायदा किया। कैथरीन कपड़े पहनने लगी। उसने अस्पताल में उसके काम आनेवाली सभी आवश्यक वस्तुएँ तथा भावी शिशु के काम आनेवाला सामान एक थैले में सहेजकर रख लिया। बाहर बरामदे में जाकर मैंने लिफ्ट के लिए घंटी बजाई। कोई उत्तर नहीं मिला। सीढ़ियाँ उतरकर मैं नीचे पहुँचा। रात के पहरेदार को छोड़कर वहाँ और कोई नहीं था। मैं स्वयं ही लिफ्ट लेकर ऊपर आया। कैथरीन का थैला उठाकर लिफ्ट में रखा और लिफ्ट में उसके चढ़ने के बाद मैं लिफ्ट नीचे ले आया। पहरेदार ने दरवाजा खोला और हम बाहर आए। सीढ़ियों के पास के चौकोर पत्थरो से बने फ़र्श को पार करते हुए हम होटल के दरवाज़े के बाहर पहुँचे और टैक्सी की प्रतीक्षा करने लगे। आकाश बिलकुल साफ़ था और तारे चमक रहे थे। कैथरीन बड़ी बेचैन दिखायी दे रही थी।

"मुझे बड़ी खुशी है कि पीड़ा शुरू हो गई है।" वह बोली—"कुछ ही समय बाद यह सब कुछ समाप्त हो जायेगा।"

"तुम एक चतुर और निडर युवती हो, केट!"

"हां, डरती नहीं हूँ मैं। काश, यह अभागी टैक्सी आ जाती!"

तभी हमें सड़क पर मोटर के आने की आवाज़ सुनाई पड़ी। क्षणभर बाद ही उसकी आगेवाली बत्तियाँ दिखाई दीं और वह हमारे सामने आकर रुक गयी। मैंने कैथरीन को सहारा देकर भीतर बैठाया। ड्राइवर ने थैला सामने की सीट पर रख लिया।

"अस्पताल चलो!" मैंने उसे आदेश दिया।

हम अस्पताल पहुँचे। मैंने कैथरीन का थैला उठाया और हम दोनों भीतर पहुँचे। कमरे में एक डेस्क के निकट एक स्त्री बैठी थी। उसने एक रजिस्टर में कैथरीन के सम्बन्ध में सारी बातें लिख लीं—नाम, पता, सगे-सम्बन्धी तथा धर्म इत्यादि। धर्म के विषय में पूछने पर कैथरीन ने कहा कि उसका कोई धर्म नहीं है और उस स्त्री ने धर्म के खाने के खाली स्थान पर एक लकीर खींच दी। अपना नाम, उसने, कैथरीन हैनरी लिखवाया।

"चलिए, आपको आपके कमरे में पहुँचा दूँ।" उस स्त्री ने कहा और हम लिफ्ट द्वारा ऊपर गए। स्त्री ने लिफ्ट रोका। हम बाहर आये और बरामदा पार करते हुए उसके पीछे-पीछे चले। कैथरीन ने कसकर मेरी बाँह पकड़ ली।

"यह रहा आपका कमरा।" स्त्री बोली—"क्या आप अपने कपड़े उतारकर बिस्तर पर लेट जाने की कृपा करेंगी? आपके पहनने के लिए यह रात का लबादा रखा है।"

"मेरे पास है, रात का लबादा।" कैथरीन ने कहा।

"नहीं, आपके लिए यही अच्छा होगा कि आप अस्पताल का ही लबादा पहनें।" वह स्त्री बोली।

मैं बाहर आकर बरामदे में पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

"अब आप भीतर आ सकते हैं।" स्त्री ने दरवाज़े से झाँकते हुए कहा। मैं भीतर पहुँचा। कैथरीन अस्पताल का सादा लबादा पहनकर एक सँकरे-से पलंग पर लेटी थी। ऐसा लगता था, मानो वह लबादा किसी मोटी चादर का बना हो। कैथरीन मेरी ओर देखकर मुस्कराई।

"बड़े ज़ोरों का दर्द हो रहा है, अब।" उसने कहा। वह स्त्री उसकी कलाई पकड़े हुए थी और एक घड़ी लेकर दर्द की अवधि निश्चित कर रही थी।

"इस बार, काफ़ी देर तक दर्द होता रहा।" कैथरीन बोली। मुझे उसके मुखपर पीड़ा के चिह्न स्पष्ट दिखाई दे गये।

"डाक्टर कहाँ है?—" मैंने स्त्री से पूछा।

"नीचे सो रहे हैं। जब उनकी आवश्यकता होगी, वे यहाँ आ जायेंगे।"

"अब मुझे इन श्रीमतीजी के लिए कुछ-न कुछ करना चाहिए।" वहाँ की परिचारिका बोली— "क्या आप पुनः कमरे से बाहर जाने का कष्ट करेंगे?"

मैं फिर बरामदे में आ गया। बरामदा बिलकुल सादा था और उसमें सजावट नाम की कोई चीज़ नहीं थी। बरामदे के एक छोर पर, दो खिड़कियाँ और बन्द दरवाज़े थे। देखते ही अस्पताल का आभास हो जाता था। मैं कुर्सी पर बैठकर वहाँ का फ़र्श निहारने लगा। मन-ही-मन कैथरीन के लिए मैं भगवान् से प्रार्थना कर रहा था।

"भीतर आ जाइए।" परिचारिका ने कहा और मैं कमरे में आ गया।

"आओ, प्रियतम।" कैथरीन ने कहा।

"कैसा है दर्द?"

"अब तो बड़ी जल्दी-जल्दी दर्द उठ रहा है।" कष्ट के मारे उसके मुख पर बल पड़ गए और तभी वह मुस्करा दी।

"इस बार का दर्द बड़ी तकलीफ़ दे रहा था। क्या तुम फिर मेरी पीठ सहला दोगी, नर्स ?"

"यदि आपको इससे कुछ आराम मिलता हो, तो अवश्य।" परिचारिका ने कहा।

"तुम जाओ, प्राण!" कैथरीन बोली—"जाओ और जाकर कुछ खा-पी लो। नर्स का कहना है कि मेरा यह दर्द काफ़ी देर तक चल सकता है।"

"प्रथम प्रसव के समय की पीड़ा सामान्यतः बड़ी देर तक बनी रहती है।" परिचारिका बोली।

"जाओ प्रियतम, कुछ खालो जाकर।" कैथरीन ने दुहराया—"मैं बिलकुल ठीक हूँ, सच!"

"मैं कुछ देर यहीं ठहरूँगा, केट!" मैंने कहा।

पीड़ा नियमित रूप से उठ रही थी। कुछ देर बाद उसमें कुछ कमी हुई। कैथरीन बड़ी उत्तेजित प्रतीत हो रही थी। भयानक कष्ट होने पर भी वह उसे सामान्य कहकर टाल देती और जब पीड़ा कम होने लगती, तो उसे बड़ी लाज लगती।

"तुम जाते क्यों नहीं, प्राणेश ?" उसने कहा—"तुम्हारे यहाँ रहने से मैं अपने-आपके प्रति सजग हो उठती हूँ—सकुचा जाती हूँ।" उसने होंठ दबा लिये—"हाँ, देखो; ठीक, अब की उठ रहा है जमकर दर्द। मैं किसी प्रकार की मूर्खता का प्रदर्शन किए बिना एक योग्य गृहिणी बनना चाहती हूँ और शिशु को जन्म देना चाहती हूँ। तुम जाकर थोड़ा नाश्ता कर लो, प्रियतम! नाश्ता करके ही लौटना। तुम्हारी अनुपस्थिति खलेगी नहीं मुझे। मेरे प्रति परिचारिका का व्यवहार बड़ा ही उदार है।"

"समय काफ़ी है। आप निश्चिंत होकर नाश्ता कर सकते हैं।" परिचारिका बोली।

"तब मैं जाता हूँ। विदा, प्रिये।"

"विदा, प्रियतम!" कैथरीन ने कहा—"मेरे हिस्से का नाश्ता भी कर लेना। खूब अच्छी तरह, समझे।"

"कहाँ मिल सकता है यहाँ, नाश्ता ?" मैंने परिचारिका से पूछा।

"चौक में सड़क पर एक काफ़े है।" उसने उत्तर दिया—"इस समय तक निश्चय ही खुल गया होगा वह।"

बाहर पौ फट रही थी। मैं सूनी सड़क पर कॉफे की ओर चला। कॉफे की खिड़की में से छनकर प्रकाश बाहर निकल रहा था। मैं भीतर घुसा और मदिरा पीने की जगह जाकर खड़ा हो गया। बूढ़े खानसामा ने मुझे सफ़ेद शराब से भरा गिलास और ब्रीओंचे नामक खाद्य पदार्थ पकड़ा दिया, जो कल का बना था। मैं उसे शराब में डुबा-डुबाकर खा गया। फिर मैंने एक गिलास कॉफी पी।

"आप यहाँ इतने सबेरे कैसे आये हैं?" बूढ़े ने पूछा।

"मेरी पत्नी प्रसव के लिए अस्पताल आयी है।"

"ओह, ईश्वर आपकी सहायता करे!"

"मुझे एक गिलास शराब और दो।"

उसने बोतल से शराब उड़ेलकर गिलास भर दिया। उड़ेलते समय कुछ शराब बाहर छलक आयी और नीचे बिखर गयी। मैंने गिलास खाली किया, पैसे चुकाये और बाहर चला आया। बाहर, सड़क पर, आसपास के घरों के कचरा इकट्ठा करनेवाले डब्बे रखे थे और वे सब अब उन भंगियों की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो उनकी गंदगी बटोर कर ले जाते। एक कुत्ता उनमें से एक डब्बे को सूँघ रहा था।

"क्या चाहिए तुझे?" कहते हुए मैंने डब्बे में दृष्टि दौड़ाई, जिससे मैं उसमें से कुछ बाहर निकालकर उस कुत्ते को दे सकूँ। डब्बे के ऊपर की ओर कॉफी की तलछट, धूलकण और कुछ मुरझाए हुए फूलों के सिवा कोई चीज़ नहीं थी।

"इसमें कुछ नहीं है दोस्त।" मैं बोला। कुत्ते ने भी मानो मेरी बात समझ ली और सड़क पार करता हुआ चला गया। अस्पताल की सीढ़ियाँ चढ़कर मैं उस मंज़िल पर पहुँचा, जहाँ कैथरीन थी। वहाँ से बरामदे में चलता हुआ, मैं उसके कमरे के सामने जाकर खड़ा हो गया। मैंने दरवाज़ा थपथपाया; पर कहीं कोई नहीं बोला। दरवाज़ा ढेलकर मैं भीतर गया; पर कमरा सूना पड़ा था। केवल, एक कुर्सी पर कैथरीन का थैला रखा था। दीवार की एक खूँटी पर उसका लबादा लटक रहा था। मैं बाहर आया और किसी व्यक्ति की खोज में बरामदे का चक्कर लगाने लगा। तभी एक परिचारिका से मेरी भेंट हो गयी।

"क्या आप जानती हैं कि श्रीमती हैनरी कहाँ हैं?"

"अभी-अभी एक महिला प्रसूति-कक्ष में ले जायी गयी है।"

"कहाँ है वह?"

"आइए, मैं दिखा देती हूँ।"

वह मुझे बरामदे के अंतिम छोर पर ले गयी। प्रसूति-कक्ष का दरवाज़ कुछ खुला हुआ था। मैंने देखा कि एक चादर में लिपटी हुई कैथरीन मेज़ पर पड़ी थी। उसके एक ओर परिचारिका खड़ी थी और दूसरी ओर डाक्टर था। पास ही प्राणप्रद वायु (गैस) के वर्तुलाकार बेलन (सिलिंडर) रखे थे। डाक्टर के हाथ में एक नली से सम्बद्ध रबर का एक मॉस्क (नकाब) था।

"मैं आपको एक चोगा ला देती हूँ। उसे पहनकर आप भीतर जा सकते हैं।" नर्स ने कहा—"इधर आइए।"

उसने मुझे एक सफ़ेद चोगा पहना दिया और गर्दन के पिछले भाग में पिन लगा दी।

"अब जा सकते हैं, आप।" वह बोली। मैं कैथरीन के पास पहुँचा।

"ओह, प्रियतम!" कैथरीन ने थकान-भरे स्वर में कहा—"अभी तक कोई विशेष सफलता नहीं मिली है मुझे।"

"आप ही श्री हैनरी हैं?" डाक्टर ने पूछा।

"जी हाँ, क्या हाल है, डाक्टर?"

"सब ठीक चल रहा है।" उसने उत्तर दिया—"हम लोग यहाँ चले आए; क्योंकि पीड़ा के समय गैस आदि देने की यहाँ विशेष सुविधा है।"

"गैस दो मुझे।" कैथरीन कराही। डाक्टर ने उसके मुख पर रबर का मॉस्क रख दिया और एक डायल घुमाया। मैंने कैथरीन को जल्दी-जल्दी गहरी साँस खींचते हुए देखा। उसके बाद उसने मॉस्क दूर हटा दिया और डाक्टर ने गैस की नली का मुँह बंद कर दिया।

"इस बार की पीड़ा गहरी नहीं थी। कुछ समय पहले जो दर्द उठा था, वह प्राणलेवा था। डाक्टर साहब ने मुझे उससे बचा लिया। है न डाक्टर-साहब?" उसके स्वर में अस्वाभाविकता आ गई थी। बोलते समय 'डाक्टर' शब्द पर उसने काफ़ी ज़ोर दिया।

"फिर चाहिए गैस।" कैथरीन कराही। उसने बड़े ज़ोर से रबर का मॉस्क पकड़ कर अपने मुख पर दबा लिया और तेज़ी से साँस खींचने लगी। मैंने उसे दबी हुई आवाज़ में कराहते सुना। फिर उसने मॉस्क अलग हटा दिया और फीकी मुस्कान मुस्करायी।

"यह भी बड़ा जानलेवा दर्द था," वह बोली—"बड़ा भयानक! पर तुम चिन्ता मत करो प्रियतम—चिन्ता की कोई बात ही नहीं है। जाओ तुम। जाओ, दुबारा नाश्ता कर आओ।"

"नहीं, मैं यहीं रहूँगा—तुम्हारे पास !" मैं बोला।

हम प्रातःकाल लगभग तीन बजे अस्पताल पहुँचे थे और अब दोपहर हो चुकी थी। इस समय भी कैथरीन प्रसूति-कक्ष में ही थी। पीड़ा में कुछ कमी आ गई थी और वह बहुत थकी हुई प्रतीत होती थी। फिर भी वह प्रसन्न थी।

"मैं किसी काम की नहीं हूँ, प्राण !" वह बोली—"बड़ा दुःख है मुझे। मैंने सोचा था कि मेरा प्रसव बड़ी सरलता से सम्पन्न हो जाएगा। किन्तु, किन्तु अब—नहीं—आह, फिर उठी—पीड़ा—" उसने मॉस्क की ओर अपना हाथ बढ़ाया और उसे अपने मुख पर रख लिया। डाक्टर ने डायल घुमाया और कैथरीन का निरीक्षण करने लगा। कुछ समय बाद दर्द कम हो गया।

"अधिक दु.खदायी नहीं था।" वह बोली। उसके मुख पर मुस्कान लौट आयी—"मै भी कैसी पागल हो गयी हूँ इस गैस के पीछे ! पर बड़ी आश्चर्य-जनक वस्तु है यह।"

"हम अपने घर ले चलेंगे कुछ गैस !" मैंने कहा।

"लो, फिर उठा दर्द।" कैथरीन शीघ्रतापूर्वक बोली। डाक्टर ने यंत्र का डायल घुमाकर अपनी घड़ी में देखा।

"अब कितनी देर बाद पीड़ा उठ रही है ?" मैंने पूछा।

"क़रीब एक मिनट के अन्तर से।"

"क्या आप खाना खाने नहीं जायेंगे ?"

"अभी नहीं; पर शीघ्र ही मैं कुछ खा-पी लूँगा।" वह बोला।

"आपको खाने के लिए कुछ-न-कुछ मँगा लेना चाहिए, डाक्टर !" कैथरीन ने कहा—"प्रसव में इतना अधिक समय लग रहा है, इसका मुझे दुःख है। क्या मेरे पति मुझे गैस नहीं दे सकते ?"

"यदि आप चाहें, तो दे सकते हैं।" डाक्टर ने मुझसे कहा—"आप दो के अंक पर सुई घुमाइए।"

"समझा।" मैने कहा। डायल पर एक सुई थी, जो हैण्डल के साथ-ही-साथ घूमती थी।

"गैस दो मुझे, गैस !" कैथरीन बोली। उसने मॉस्क अपने मुँह पर कसकर रख लिया। मैंने दो के अंक पर सुई घुमाई। कैथरीन ने जब मॉस्क वापस रख दिया, तो मैंने गैस बन्द कर दी। वास्तव में डाक्टर की यह बड़ी कृपा थी कि उसने मुझे अपनी कैथरीन के लिए कुछ करने का मौका दिया।

"मुझे तुमने गैस दी, प्रियतम!" कैथरीन ने पूछा। उसने मेरी कलाई पकड़ ली।

"हाँ—हाँ।"

"ओह, तुम कितने प्रिय हो!" उस पर गैस का कुछ नशा-सा चढ़ गया था।

"मने अपना खाना यहीं मँगा लिया है। बगल के कमरे में खाने बैठ रहा हूँ मैं।" डाक्टर ने कहा—"आपको जिस क्षण आवश्यकता हो, उसी क्षण बुला सकते हैं मुझे।" समय बीतता गया। मैं खुले दरवाज़े से डाक्टर को भोजन करते हुए देखता रहा। कुछ समय बाद मैंने देखा कि वह लेटे लेटे सिगरेट पी रहा था। कैथरीन धीरे-धीरे और भी थकती जा रही थी।

"तुम्हारा क्या ख़याल है? कभी यह बच्चा मेरे पेट के बाहर भी आयेगा?" उसने पूछा।

"इसमें भी कोई शक है क्या?"

"मैं बड़ी चेष्टा कर रही हूँ। उसे यथा सम्भव नीचे ढकेलती हूँ मैं; किन्तु वह खिसक जाता है। हाँ—फिर आरम्भ हुई पीड़ा। गैस दो मुझे।"

दो बजे मैंने बाहर जाकर खाना खाया। कॉफे में बहुत कम व्यक्ति बैठे थे। उनकी मेज़ों पर जंगली बेरो तथा अन्य फलों से बनी शराब के गिलास रखे थे। मैं एक मेज़ पर बैठ गया। "क्यों, खाना मिल सकता है क्या?" मैंने खानसामा से पूछा।

"खाने का समय तो बीत गया साहब!" उसने उत्तर दिया।

"क्या ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जो यहाँ हमेशा मिल सके?"

"जर्मन तरीक़े से बनाई हुई मसालेदार गोभी मिल सकती है?"

"अच्छा मसालेदार गोभी और बीअर ले आओ।"

"साधारण पीली बीअर अथवा गहरे काले रंग की तेज़ बीअर?"

"बस साधारण पीली बीअर ही लाओ।"

खानसामा ने एक रकाबी में गोभी लाकर रख दी। गोभी शराब में डुबाई गई थी और गर्म थी। उसके भीतर डब्बों में बन्द माँस रख दिया गया था। ऊपर भूने हुए माँस का एक टुकड़ा था। मैंने उसे खाकर बीअर पी। मुझे, वास्तव में, बड़ी भूख लगी थी। मैंने कॉफे की मेज़ पर बैठे हुए व्यक्तियों पर नज़रें दौड़ाईं। एक मेज़ पर कुछ लोग ताश खेल रहे थे। मेरे समीप की मेज़ पर दो व्यक्ति धूम्रपान करते हुए गप्पें मार रहे थे। सारा

कॉफ़े धुएँ से भर रहा था। शराब पीने की उस जगह पर, जहाँ मैंने प्रातःकाल जलपान किया था, अब तीन व्यक्ति मौजूद थे। वे तीनों होटल के कर्मचारी थे। एक तो वही बूढ़ा था, जिससे मैंने सबेरे शराब लेकर पी थी। दूसरी थी एक मोटी स्त्री। उसके कपड़े काले थे। वह काउंटर के निकट बैठी थी। ग्राहकों में किसको क्या दिया जा रहा है, इसका भी वह ध्यान रखती थी। उन दोनों के अलावा होटल का एप्रान पहने हुए एक लड़का भी वहाँ था। मैं उधर देखते हुए सोच रहा था कि उस औरत के कितने बच्चे होंगे और उन्हें जन्म देते समय उसने कैसा महसूस किया होगा?

मसालेदार गोभी खा चुकने पर मैं अस्पताल लौट आया। सड़क अब साफ हो गई थी। उस पर अब कचरे का कोई डब्बा नहीं दिखाई देता था। आकाश मेघाच्छन्न था; किन्तु सूर्य बादलों के बीच से झाँकने का प्रयास कर रहा था। लिफ्ट द्वारा मैं अस्पताल की ऊपरी मंज़िल पर पहुँचा, लिफ्ट से बाहर आया और बरामदा पार करता हुआ उस कमरे में घुसा, जहाँ कैथरीन पहले रखी गयी थी। वहीं मेरा सफ़ेद चोगा रखा था। मैंने उसे पहन लिया और गर्दन के पीछे की ओर उसमें पिन लगा दी। तब मैंने शीशे में अपना चेहरा देखा। अपनी दाढ़ी के साथ मैं एक नकली डाक्टर-सा लग रहा था। वहाँ से पुनः बरामदे से होता हुआ मैं प्रसूति-कक्ष में गया। दरवाज़ा बन्द था। मैंने खटखटाया; पर भीतर से कोई उत्तर नहीं मिला। हैंडल घुमाकर मैंने द्वार खोल लिया और भीतर चला गया। डाक्टर कैथरीन के पास बैठा हुआ था। कमरे के दूसरे छोर पर परिचारिका कुछ कर रही थी।

"लीजिए, आपके पति आ गए।" डाक्टर ने कहा।

"ओह! तुम आ गए, प्राण। ये डाक्टरसाहब भी सचमुच अद्भुत व्यक्ति हैं।" कैथरीन ने बड़े अस्वाभाविक स्वर में कहा—"सुना तुमने कुछ; ये मुझे न-जाने कहाँ-कहाँ की बड़ी अजीबो-गरीब कहानियाँ सुनाते रहे हैं। और हाँ, ज्योंही मुझे प्राणघातक पीड़ा हुई, इन्होंने मुझे उसका अनुभव भी नहीं होने दिया। ये सचमुच बड़े अद्भुत हैं। हैं न आप अद्भुत, डाक्टर?"

"तुम नशे में हो, केट।" मैंने कहा।

"हाँ हाँ, जानती हूँ मैं।" कैथरीन बोली—"किन्तु तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए।" और तभी "लाओ, दो मुझे। जल्दी लाओ।" कहते हुए उसने मॉस्क अपने दोनों हाथों में दबाकर मुँह पर रख लिया। वह जल्दी-जल्दी

हाँफते हुए गहरी साँस लेने लगी। उसके साँस खींचते समय बीच-बीच में साँस लेनेवाली हवा को शुद्ध करने वाले यंत्र के चटखने की आवाज़ होती रही। कुछ समय बाद उसने एक दीर्घ निःश्वास खींचा। डाक्टर ने अपने बायें हाथ से उसके मुख पर रखा हुआ मॉस्क हटा दिया।

"बड़ी प्राणघातक पीड़ा थी।" कैथरीन ने कहा। उसके स्वर में अब और भी अस्वाभाविकता आ गई थी—"अब मैं नहीं मरूँगी, प्रियतम! नहीं मरूँगी मैं, अब। मैं उस स्थिति को पार कर चुकी हूँ, जहाँ मेरे मरने का भय था। मेरी जान बच गयी, क्या इससे तुम खुश नहीं हो?"

"पगली कहीं की! अब वैसी स्थिति पैदा मत होने देना, जिसमें तुम्हारी जान पर आ बने।"

"नहीं, अब ऐसा नहीं होगा। यों मैं मृत्यु से नहीं डरती—वैसी स्थिति से डरती नहीं हूँ मै। फिर भी विश्वास रखो, मैं मरूँगी नहीं, प्राण।"

"नासमझी की बातें मत कीजिये।" डाक्टर बोला—"हाँ, आप नहीं मर सकतीं—अपने पति को अकेला छोड़कर नहीं जा सकतीं! ऐसा नहीं हो सकता —नहीं होगा ऐसा!"

"नहीं होगा ऐसा। सचमुच नहीं होगा। मै नही मरूँगी। मर ही नहीं पाऊँगी। कोरी मूर्खता होगी यह तो। फिर उठी पीड़ा। गैस, गैस दो मुझे!"

कुछ समय बाद डाक्टर बोला—"आप कृपया कुछ समय के लिए बाहर चले जाइए, मि० हैनरी। मुझे इनकी जाँच करनी पड़ेगी।"

"ये देखना चाहते हैं कि मेरे गर्भ की क्या स्थिति है।" कैथरीन ने कहा —"बाद में तुम लौट आना, प्रियतम। क्यो डाक्टरसाहब, लौटकर आ सकते हैं न ये?"

"हाँ, हाँ; क्यों नहीं?" डाक्टर ने उत्तर दिया—"मैं इन्हें स्वयं सूचित करूँगा और तब ये भीतर आ सकते हैं।"

मैं कमरे से बाहर निकला। बरामदा पार करता हुआ मैं उस कमरे में पहुँचा जहाँ प्रसव के बाद कैथरीन रखी जानेवाली थी। मैं एक कुर्सी पर बैठ गया और कमरे के चारों ओर देखने लगा। दोपहर को जब मैं खाना खाने गया था, तो मैंने एक समाचारपत्र खरीदा था। वह मेरे कोट के जेब में ही रखा था। मैं उसे निकालकर पढ़ने लगा। बाहर अन्धकार की कालिमा ने अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया था। मैंने कमरे की बत्तियाँ जला दीं, जिससे अखबार पढ़ सकूँ। कुछ देर तक अखबार पढ़ने के बाद मैंने बत्तियाँ बुझा दीं और कमरे

की ओर बढ़ते हुए अन्धकार को चीरकर बाहर झाँकने लगा। मुझे लगा, जैसे काफी समय बीत गया हो और मुझे आश्चर्य भी हुआ कि डाक्टर ने मुझे अभी तक क्यों नहीं बुलाया। सोचा, कदाचित् मेरा कैथरीन से दूर रहना ही अच्छा था। डाक्टर, शायद यही चाहता था कि मैं कुछ समय के लिए उससे दूर ही रहूँ। मैंने अपनी घड़ी देखी और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यदि दस मिनट के भीतर मुझे कोई बुलाने नहीं आया, तो मै स्वयं ही वहाँ चला जाऊँगा।

रात्रि के उस बढ़ते अंधकार में मेरे मन में आने वाली भावनाएँ भी ज़ोर पकड़ती गयीं—कैथरीन—बेचारी भोला बालिका। मेरे हृदय की धड़कन कहे—आज तुम्हारी पीड़ा का अन्त नहीं। हम दोनों के सहवास का यह फल मिला है तुम्हें! हमारे सहवास का इतना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ रहा है तुम्हे! मेरे प्रणय-बन्धन का तुम्हारे जीवन में इस प्रकार अन्त हो रहा है! क्या एक-दूसरे को प्यार करने का यही परिणाम होता है? मन ने क्षणभर के लिए दिशा बदली—शुक्र है भगवान् का! यदि आज गैस न होती, तो क्या होता, कौन जाने! मनुष्य को चेतनाशून्य कर देने वाली औषधियों के आविष्कार के पहले अभागी रोगियों को कितना भयंकर कष्ट होता रहा होगा? एक बार कष्ट आरम्भ होते ही न जाने कितनी गर्भवती स्त्रियाँ चक्की के दो पाटों के बीच अनाज की तरह पिस जाती होंगी। गर्भ की अवस्था में कैथरीन के दिन बड़े सुख से बीते थे। उसे कोई कष्ट नहीं हुआ था। वह कभी बीमार नहीं पड़ी थी। सिर तक नहीं दुखा था उसका। दिन पूरे होने तक उसने कभी भयानक बेचैनी अथवा अस्वस्थता का अनुभव नहीं किया था। इसीलिए क्या विधाता ने अन्त में, उससे बदला लेने के लिए सब कष्टों को उसके पीछे छोड़ दिया है? प्रारब्ध का कोई नहीं टाल सकता। और टालना कैसा? व्यर्थ है सब—निरर्थक! एक बार तो क्या, यदि पचास बार भी हम विवाह करते, तो भी यही परिणाम होता। किन्तु यदि कैथरीन मर गयी तो? नहीं—नहीं, वह नहीं मरेगी। आजकल प्रसव पीड़ा से कोई स्त्री नहीं मरती। कम-से-कम, मर्द तो यही समझते हैं। हाँ, ठीक है; किन्तु यदि कैथरीन मर गई तो? नहीं—नहीं, ऐसा नहीं होगा। यह तो कुछ देर की तकलीफ़ है, जिससे वह मुक्त हो जाएगी। प्रथम प्रसव सामान्यतः दीर्घकाल तक कष्ट देता ही है। कथरीन को बस पीड़ा हो रही है और कुछ नहीं। यह पीड़ा समाप्त हो जायगी और तब सब लोग कहेंगे कि ओह, कैसी भयंकर आपत्ति आई थी, कैथरीन के ऊपर! उत्तर में कैथरीन स्वयं ही कहेगी—"अरे, नहीं—नहीं, ऐसी कोई

खास बात तो थी नहीं!" और इस पीड़ा ने यदि उसके प्राण ही ले लिये तो? पर नहीं, वह मर नहीं सकती। हाँ, नहीं मर सकती। और यदि वह मर गयी तो—तो क्या होगा? क्या होगा तब? पर वह मरेगी ही नहीं। मैं जानता हूँ, वह मुझे छोड़कर नहीं जा सकती। पर मैं भी कैसा पागल हूँ? अरे, यह तो केवल कुछ देर की तकलीफ़ है—प्रकृति उसे कुछ काल के लिए सता रही है। बस, प्रथम प्रसूति का कष्ट है यह तो। प्रथम प्रसूति का कष्ट, जो प्रायः सदैव दीर्घकालीन होता है। यह सब तो ठीक है; पर कहीं वह मर ही गई तो! फिर वही बात—नहीं—नहीं—वह नहीं मर सकती। क्यों मरेगी वह? किस अपराध पर वह मृत्युदण्ड भोगेगी? केवल एक बच्चा ही तो पैदा हो रहा है उसे—प्रसव ही तो कर रही है वह। प्रसव—एक शिशु का जन्म—उस शिशु का जन्म, जो मिलन में व्यतीत की गयी हमारी सुन्दर और प्रणययुक्त रातों का परिणाम है—उनकी देन है! वे ही सुन्दर रातें तो शिशु के रूप में पुनर्जन्म ले रही हैं। कष्ट देकर ही तो जन्म लेता है शिशु और—उसके जन्म के बाद लोग उसे पालते-पोसते हैं और उस पर अपना प्यार उड़ेलने लगते हैं। किन्तु कैथरीन मर गयी तो? नहीं, वह नहीं मरेगी। नहीं—नहीं, ऐसा नहीं हो सकता—वह मर ही नहीं सकती। वह बिलकुल ठीक है अब—उसे कोई कष्ट नहीं है। पर वह मर जाये, तो? ना, वह मर नहीं सकती। लेकिन यदि वह सचमुच मर गई तो? हे भगवन्! तब क्या होगा? किन्तु मैं भी क्या सोच रहा हूँ?

तभी डाक्टर अंदर आया।

"क्या प्रगति है, डाक्टर?"

"कोई प्रगति नहीं।" उसने कहा।

"क्या मतलब?"

"मतलब स्पष्ट है। मैंने अभी परीक्षण किया था।" उसने मुझे परीक्षण-विषयक सारी बातें विस्तार में बतायीं—"परीक्षण के बाद मैं कुछ देर तक प्रतीक्षा करता रहा कि देखें, आगे क्या होता है; किन्तु उसका कोई नतीजा नहीं निकला। गर्भ नीचे आता ही नहीं।"

"फिर आपकी क्या सलाह है?"

"देखिये दो मार्ग हैं। एक मार्ग तो यह है कि लम्बी संडसी डालकर प्रसव कराया जाए। किन्तु यह माँ और शिशु दोनों के लिए घातक है। इसमें शिशु को हानि पहुँचने की आशंका तो है ही साथ ही, गर्भाशय फट जाने का भी खतरा है। दूसरा मार्ग है पेट की शल्यक्रिया द्वारा बच्चे को बाहर निकालना।"

"शल्यक्रिया में क्या डर है!" मन में पुनः वही विचार उठा—और यदि वह मर गई तो?

"सामान्य प्रसव में जो डर होता है, वही शल्यक्रिया द्वारा प्रसव कराने में भी है। उससे अधिक नहीं।"

"आप स्वयं शल्यक्रिया करेंगे?"

"हाँ। शल्यक्रिया की तैयारी करने में लगभग एक घण्टा लगेगा। कदाचित् इससे कुछ कम लग।"

"आपके विचार से क्या ठीक रहेगा?"

"मैं तो आपको पेट की शल्यक्रिया कराने की ही सलाह दूँगा। यदि मेरी पत्नी की ऐसी हालत होती, तो मैं शल्यक्रिया ही करता।"

"बाद में, क्या प्रभाव होता है इसका?"

"कोई खास प्रभाव नहीं। शल्यक्रिया का निशान-भर रह जाता है।"

"कोई दूषित प्रभाव?"

"उसका भय शल्यक्रिया में उतना नहीं है, जितना संडसी द्वारा प्रसव कराने में।"

"और जो चल रहा है, वही चलने दिया जाये तो?"

"देखिये, हमें कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ेगा। यों भी श्रीमती हैनरी की शक्ति धीरे-धीरे क्षाण होती जा रही है। अब हम जितने जल्दी उनका शल्य क्रिया करेंगे, उतनी ही ज्यादा वे सुरक्षित रहेंगी।"

"तब जितनी जल्दी हो, आप शल्यक्रिया कर डालिए।" मैंने कहा।

"ठीक है। मैं अभी आवश्यक आदेश दे देता हूँ।"

मैं प्रसूति-कक्ष में पहुँचा। कैथरीन मेज़ पर लेटी थी। चादरों में लिपटी हुई वह बहुत बड़ी दिखायी दे रही थी। उसका मुख मुरझा गया था और वह बिलकुल पीली और थकी थकी नज़र आ रही थी। उसके निकट ही परिचारिका बैठी थी।

"क्या तुमने डाक्टर को शल्यक्रिया करने के सम्बन्ध में अपनी सम्मति दे दी?" उसने धीमे स्वर में पूछा।

"हाँ।"

"बड़ा अच्छा किया तुमने। बहुत सुन्दर। अब एक घण्टे के भीतर ही सारे कष्ट का अन्त हो जायेगा। मुझमें अब कुछ भी शेष नहीं रह गया है, प्रियतम! मेरा समस्त शक्ति क्षीण हो चुकी है—मेरा धैर्य समाप्त हो चुका

है। थोड़ी गैस दो मुझे। अब तो वह भी काम नहीं करती—वह भी नहीं, आह!"

"ज़रा गहरी साँस खींचो।"

"वही कर रही हूँ। आह, कोई उपयोग नहीं। व्यर्थ है—काम ही नहीं कर रही है गैस!"

"दूसरा बेलन लाइए गैस का।" मैंने परिचारिका से कहा।

"यह नया ही बेलन है।"

"मैं बड़ी नासमझ हूँ, प्रियतम!" कैथरीन बोली—"किन्तु मैं भी क्या करूँ। यह गैस अब बिलकुल काम नहीं करती।" कहते हुए वह रोने लगी—"ओह, मैं चाहती थी कि मेरे इस नन्हें शिशु से मेरी गोद भर जाये और मुझे कोई कष्ट न हो। किन्तु उसके बदले आज मेरी सारी शक्ति समाप्त हो गयी है—हिम्मत पस्त हो चुकी है—फिर भी प्रसव नहीं हो रहा है—हाय, प्रियतम! कोई फल नहीं—कोई अन्त नहीं इसका। यदि इसका कहीं अन्त हो सके, किसी प्रकार यदि यह पीड़ा रुक सके—मेरी मृत्यु से भी यदि यह बंद हो सके तो मुझे मरने की भी परवाह नहीं। प्रियतम, ओह, किसी भी तरह इस पीड़ा को रोको, प्राण! दया करो मेरे ऊपर। ओफ, मैं मरा! फिर उठी पीड़ा। फिर आयी वह। आह, हाय, हाय रे!" मॉस्क में मुँह ढँके वह सिसकियाँ भरती हुई साँस खींचने लगी—"ना, कोई उपयोग नहीं—कोई लाभ नहीं इस गैस का—यह काम ही नहीं करती अब। मेरी बातों का खयाल मत करो, प्राण। रोओ मत। कोई ध्यान मत दो मेरी इस बकवास पर। बिलकुल छलनी हो चुका है मेरा शरीर। कुछ भी शेष नहीं रहा अब इसमें। मेरे भोले जीवनसाथी! मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ। तुम्हारे इसी प्यार का सम्बल पा मैं पुनः तुम्हारी 'मधुर केट' बन जाऊँगी—बिलकुल स्वस्थ हो जाऊँगी मैं। मेरी पीड़ा का अन्त करने के लिए क्या ये लोग मुझे कोई अन्य औषध नहीं दे सकते? काश, वे मुझे और कुछ दे सकते! मेरे लिए कुछ कर सकते, ओह!"

"देखता हूँ, यह गैस कैसे प्रभाव नहीं डालती। मैं अभी डायल चारों ओर घुमाता हूँ।"

"लाओ, दो मुझे।"

मैंने चारों ओर डायल घुमाया और वह तीव्र तथा गहरी साँसें खींचने लगी। साँस खींचते-खींचते मॉस्क पर उसके हाथों की पकड़ ढीली पड़ गयी। मैंने तुरंत गैस बंद कर दी और उसके मुँह पर से मॉस्क उठा लिया। वह अचेत

हो चुकी थी। बड़ी देर बाद उसकी चेतना लौटी।

"बड़ा मज़ा आया इस बार, प्रियतम। ओह, तुम कितने उदार हो मेरे प्रति!"

"हिम्मत मत हारो, धैर्य से काम लो। मैं हर बार तुम्हारे लिए ऐसा नहीं कर सकता। इस प्रकार गैस देने से कदाचित् तुम्हारी जान पर आ बने।"

"अब मुझमें हिम्मत शेष नहीं रही है, प्राण। धैर्य छूट चुका है मेरा। इस पीड़ा ने मुझे खत्म कर दिया— इन अस्पतालवालों ने भी कोई कसर बाकी नहीं रखी है। सब समझ गई हूँ अब मैं।"

"ऐसा तो हर एक के साथ होता है, केट!"

"किन्तु कितना भीषण है यह—कितना भयानक! ये लोग उस समय तक कुछ नहीं करते, जब तक यह प्राणलेवा दर्द बिलकुल परास्त नहीं कर देता है— मरीज़ की हिम्मत नहीं तोड़ देता है!"

"घबराओ मत, एक घण्टे में ही सब ठीक हो जाएगा—इस पीड़ा से तुम मुक्ति पा लोगी।"

"कितना अच्छा होगा तब! है न, प्रियतम! मैं मरूँगी तो नहीं न!"

"नहीं, मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा।"

"मैं मरना नहीं चाहती; तुम्हें छोड़कर जाना नहीं चाहती, प्राण! परन्तु मैं इस असह्य पीड़ा से इतनी थक गई हूँ कि मुझे लगता है, अब मैं बचूँगी नहीं—मर जाऊँगी।"

"पागल हो तुम— बिलकुल नासमझ! अरे, प्रसव के पूर्व सभी औरतों को ऐसी पीड़ा होती है।"

"कभी-कभी तो मुझे अपने मरने के सम्बन्ध में तनिक भी शंका नहीं रह जाती।"

"नहीं, तुम नहीं मरोगी। तुम नहीं मर सकती।"

"किन्तु यदि मैं मर गयी तो?"

"मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा।"

"ओह, गैस दो, जल्दी करो। गैस, गैस दो मुझे।" और, कुछ समय बाद वह बड़बड़ायी—"नहीं, मैं नहीं मरूँगी। मैं स्वयं को मृत्यु के इन भयावह पंजों से बचाऊँगी— मरूँगी नहीं मैं!"

"केट मेरी, तुम मरोगी नहीं, प्रिये।" मैंने उसे ढाढ़स बँधाया।

"शल्यक्रिया के समय तुम मेरे पास ही रहोगे न?"

"मैं उसे देख नहीं सकूँगा।"

"कम-से-कम वहाँ रहोगे तो?"

"निश्चित रूप से। आरम्भ से अन्त तक मैं वहीं रहूँगा।"

"तुम मुझे कितना प्यार करते हो। आह, लाओ। फिर लाओ गैस। कुछ और दो। कोई असर नहीं हो रहा है।"

मैंने डायल घुमाया। धीरे-धीरे सुई तीन पर पहुँच गयी और अन्त में, मैंने चार के अंक पर सुई घुमा दी। मैं सोच रहा था कि डाक्टर आ जाता, तो अच्छा होता। दूसरे अंक के बाद सुई घुमाने में मुझे बड़ा भय लग रहा था।

और अंततः दो परिचारिकाओं के साथ एक नए डाक्टर ने कमरे में प्रवेश किया। उन्होंने एक पहियेदार टिकठी पर कैथरीन को लिटा दिया। हम लोग बरामदा पार करने लगे। शीघ्रता से बरामदा पार करते हुए टिकठी लिफ्ट पर पहुँचाई गई। टिकठी का लिफ्ट के भीतर जाने का मार्ग देने के लिए आसपास के लोग दीवार से सटकर खड़े हो गए। लिफ्ट द्वारा हम लोग ऊपरी मंज़िल पर पहुँचे, लिफ्ट का द्वार खोलकर बाहर आए और बरामदा पार करते हुए आपरेशन-थियेटर (शल्यक्रिया-कक्ष) में पहुँचे। सिर पर टोपी लगाए और मुँह ढँके डाक्टर को मैं पहचान भी न सका। कमरे में एक अन्य डाक्टर तथा कुछ और परिचारिकाएँ थीं।

"उन्हें मुझे कोई अन्य औषध देना चाहिए।" कैथरीन बड़बड़ा रही थी—"कोई और औषधि देनी पड़ेगी उन्हें। ओह, डाक्टर, दया करो मेरे ऊपर। मुझे पर्याप्त मात्रा में कुछ दो, जिससे मुझे कुछ लाभ हो।"

तभी एक डाक्टर ने उसके मुख पर मास्क रख दिया। मैं दरवाजे से दूसरी ओर झाँकने लगा। शल्यक्रिया-कक्ष के प्रकाशयुक्त तथा नन्हें मंच पर मेरी नज़रें घूमने लगीं।

"आप उस द्वार से जाकर वहाँ बैठ जाइए।" एक परिचारिका ने मुझे संकेत किया। एक रेलिंग के पीछे कुछ बेंचें रखी थीं। वहाँ से शल्यक्रिया की श्वेत मेज़ तथा चमियाँ दिखाई देती थीं। वहीं बैठकर मैं कैथरीन को देखने लगा। उसके मुख पर मास्क रखा हुआ था और अब वह बिलकुल शान्त थी। अस्पताल के नौकरों ने उसकी पहियोंवाली टिकठी को आगे बढ़ाया। मैं लौट पड़ा और बरामदे की ओर चल दिया। मैंने देखा कि दो परिचारिकाएँ बरामदे

के प्रवेशद्वार की ओर भागी भागी-सी जा रही हैं।

"पेट की शल्यक्रिया की जा रही है।" एक ने कहा—"शल्यक्रिया द्वारा प्रसव कराया जा रहा है।"

दूसरी हँस पड़ी—"चलो, हम ठीक समय पर पहुँच गयीं। भाग्यशाली हैं हम। हैं न?'

वे बरामदे के प्रवेशद्वार को पार करती हुई कमरे की ओर बढ़ गयीं। तभी एक दूसरी परिचारिका दिखाई दी। वह भी आपरेशन-थियेटर की ओर भागी जा रही थी।

"आप सीधे वहाँ चले जाइए। भीतर चले जाइए सीधे, आपरेशन-थिएटर में।" उसने मुझसे कहा।

'नहीं, मैं बाहर ही ठहरूँगा।" मैं बोला।

वह शीघ्रतापूर्वक आगे बढ़ गई। मैं बरामदे में चक्कर लगाने लगा। भीतर जाने में मुझे भय सा लग रहा था। मैंने खिड़की से बाहर झाँका। घना अंधेरा छाया हुआ था। किन्तु खिड़की से उस ओर पड़ते हुए प्रकाश में मैंने देख लिया कि वर्षा हो रही है। मै बरामदे के दूसरे छोर पर स्थित कमरे में पहुँचा और वहाँ एक काँच की आलमारी में रखी हुई बोतलों पर चिपके हुए लेबलों को पढ़ने लगा। कुछ समय बाद मै उस कमरे से बाहर निकला और सुनसान बरामदे में खड़ा होकर दरवाज़े से शल्यक्रिया-कक्ष के भीतर झाँकने लगा।

इसी बीच वहाँ से एक डाक्टर बाहर निकला। उसके पीछे एक परिचारिका भी बाहर आई। डाक्टर के दोनों हाथों में नवजात और कोमल झिल्लीदार खरगोश के बच्चे की भाँति कोई वस्तु थी। वह उसे लेकर जल्दी-जल्दी बरामदा पार करते हुए दूसरे कमरे में घुस गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे उसी कमरे मे पहुँचा। मैंने देखा कि वे दोनों मेरे नवजात शिशु के साथ कुछ कर रहे थे। मुझे दिखाने के लिए डाक्टर ने उसे ऊपर उठाया। फिर उसने उसकी एड़ियाँ पकड़कर उसे थपथपाया।

"ठीक तो है न, बच्चा?"

"बड़ा प्रतापी है। ग्यारह-बारह पौंड वजन होगा इसका।"

उस नन्हें शिशु के प्रति मेरे हृदय में तनिक भी प्यार नहीं जागा। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो उसका मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है। मुझमें उसके प्रति पिता की भावना पैदा ही नहीं हुई।

"क्या आपको अपने इतने सुंदर पुत्र पर अभिमान नहीं है?" परिचारिका ने पूछा। वे उसे स्नान कराने के बाद किसी चीज़ में लपेट रहे थे। मैंने बच्चे का नन्हा-सा साँवला-सलोना मुख देखा, उसके सलोने हाथ देखे; किन्तु न तो वह हिल डुल रहा था और न रो रहा था। डाक्टर पुनः उसके साथ कुछ करने लगा। वह बड़ी उलझन में पड़ा दिखाई दे रहा था।

"नहीं, मुझे इस पर कोई अभिमान नहीं है।" मैं बोला— "इसने अपनी माँ को क़रीब-क़रीब मार ही डाला।"

"किन्तु इसमें इस बेचारे नन्हें-मुन्ने का क्या दोष है? क्या आपको पुत्र की इच्छा नहीं थी?"

"नहीं।" मैंने कहा। डाक्टर बच्चे को लेकर व्यस्त था। उसने उसके पैर पकड़कर उसे ऊपर उठा लिया और पुनः थपथपाने लगा। पर यह सब देखने के लिए मैं वहाँ खड़ा नहीं रहा। मैं बरामदे में निकल आया। अब मैं शल्यक्रिया कक्ष में जाकर कैथरीन को देख सकता था। मैं दरवाज़े से भीतर घुसा और घेरे के पास रखी हुई बेंचों की ओर बढ़ा। कुछ परिचारिकाओं ने, जो वहीं बेंचों पर बैठी थीं, संकेत से मुझे अपनी ओर बुलाया, पर मैंने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। मैं जहाँ था, वहीं से, जो-कुछ चल रहा था, उसे भली-भाँति देख सकता था।

मुझे लगा कि कैथरीन मर चुकी है। वह बिलकुल मृत दिखाई दे रही थी। उसका मुख सफ़ेद पड़ गया था। कम-से-कम जितना भाग मैं देख सकता था, उतना तो सफ़ेद ही दिखाई दे रहा था। मेरे सामने, बत्ती के ठीक नीचे, डाक्टर चिरे हुए पेट के लम्बे तथा मोटी कोरोंवाले घाव को सी रहा था। मास्क पहने पास ही खड़ा हुआ एक दूसरा डाक्टर बेहोशी की दवा दे रहा था। दो पारचारिकाएँ आवश्यक वस्तुएँ देती जा रही थीं। उनके मुख पर भी मास्क थे। देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो वहाँ किसी के भाग्य का निर्णय करने के लिए पंचायत बैठी हो। टाँके लगते हुए देखकर मुझे लगा कि मैं शुरू से ही पूरी-की-पूरी शल्यक्रिया भी देख सकता था; किन्तु मुझे इस बात से प्रसन्नता ही हुई कि मैंने उसे नहीं देखा। कैथरीन का पेट काटे जाते समय वहाँ खड़ा रहकर मैं उसे देख सकता था—इसमें मुझे स्वयं सन्देह था। किन्तु उस घाव को, मैं मौन, सिलते हुए देखता रहा। किसी कुशल चमार द्वारा लगाए गए टाँकों के समान ही, बड़ी फुर्ती और चतुराई से, डाक्टर द्वारा लगाये गये टाँकों ने घाव को बड़ी खूबी से बन्द कर दिया। चीरने का निशान किसी कपड़े पर लगी हुई

गोट की तरह ही दीख रहा था। घाव बन्द होते देखकर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ। जब टांके लग गये, तो मैं बाहर बरामदे में आ गया और उसके एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर काटने लगा। कुछ समय बाद डाक्टर बाहर आया।

"कैसी है अब वह?"

"अच्छी तरह हैं। आपने शल्यक्रिया देखी?"

डाक्टर थका-सा लग रहा था।

"मैंने आपको घाव सीते हुए देखा था। बड़ा लम्बा घाव था।"

"क्या आपको ऐसा लगा?"

"हाँ। उसका निशान तो फैलकर बराबर हो जायगा न?"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं।"

कुछ देर बाद वह पहियोंवाली टिकठी बाहर निकाली गयी। शीघ्रतापूर्वक बरामदा पार करते हुए, अस्पताल के कर्मचारी उसे लेकर लिफ्ट के पास पहुँचे। मैं भी टिकठी के साथ-साथ चला। कथरीन कराह रही थी। नीचे की मंज़िल पर कैथरीन के कमरे में पहुँचने पर उसे बिस्तर पर लिटा दिया गया। मैं बिस्तर के पायताने एक कुर्सी पर बैठ गया। कमरे में एक परिचारिका थी। मैं उठकर बिस्तर के पास खड़ा हो गया। कमरे में अंधेरा छाया था। कैथरीन ने अपना हाथ बाहर निकाला। "प्रियतम!" वह बोली। उसका स्वर बड़ा क्षीण था। बड़ी अशक्त और थकी हुई आवाज़ थी उसकी।

"क्यों अब कैसी हो, प्राण?"

"कैसा बच्चा है हमारा?"

"श्-श्-बातें मत कीजिए।" परिचारिका ने कहा।

"लड़का है। हृष्ट-पुष्ट—लम्बा-चौड़ा और साँवला सलोना।"

"ठीक तो है न वह?"

"हाँ।" मैंने उत्तर दिया—"बहुत स्वस्थ है।"

मैंने देखा कि परिचारिका मेरी ओर अकचकाकर देख रही थी।

"मैं बुरी तरह थक गयी हूँ।" कैथरीन बोली—"और मेरा घाव भी कुछ कम गहरा नहीं है। तुम तो अच्छी तरह हो न, प्रियतम?"

"हाँ, मैं तो बिलकुल अच्छा हूँ। तुम बोलो मत, हँ!"

"तुम शुरू से मुझसे बहुत प्यार करते रहे हो। ओह, प्राण! बड़ा भयंकर आघात पहुँचा है मुझे। बच्चा कैसा दिखता है?"

"शरीर तो उसका किसी फ़िज़ीशियन खरगोश के समान है और मुँह ऐसा दिखाई देता है, मानो किसी बूढ़े का झुर्रियों से भरा चेहरा हो।"

"आप बाहर चले जाइए।" परिचारिका ने आदेश दिया—"श्रीमती हेनरी को इस समय एक शब्द भी नहीं बोलना चाहिए!"

"मैं बाहर ही ठहरूँगा।" मैंने कैथरीन से कहा।

"जाओ और जाकर कुछ खा लो।"

"नहीं, मैं यहीं बाहर रहूँगा, तुम्हारे पास ही।" मैंने कैथरीन का चुम्बन लिया। वह बिलकुल सफ़ेद, अशक्त और थकी प्रतीत हो रही थी।

"ज़रा सुनिए तो।" मैंने परिचारिका से कहा। वह मेरे साथ बाहर निकलकर बरामदे में आ गई। मैं कमरे से कुछ दूर जाकर रुक गया।

"यह, बच्चे के साथ क्या गड़बड़ी है?" मैंने पूछा।

"क्या? आपको नहीं मालूम?"

"नहीं तो।"

"वह जीवित नहीं था।"

"मरा हुआ था?"

"हाँ; डॉक्टर उसकी श्वास-संचालन-क्रिया आरम्भ नहीं करा सके। उसके गले के आसपास नाल लिपट गया था या ऐसी ही कुछ बात हुई थी, जिससे साँस रुक गई।"

"तो, वह मर गया!"

"हाँ। बड़ी लज्जा की बात है यह हमारे लिए। कितना सुन्दर और हृष्टपुष्ट बालक था! मैं तो समझती थी कि आपको यह सब मालूम होगा।"

"नहीं।" मैंने कहा—"अब आप जाकर कैथरीन के पास ही रहिये।"

मैं एक मेज़ के सामने पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गया। मेरे पास ही परिचारिकाओं द्वारा लिखित, रोगियों के सम्बन्ध में आवश्यक विवरण क्लिपों के सहारे दीवार पर लटके हुए थे। मैंने खिड़की की राह बाहर देखा; पर अन्धकार को छोड़कर मुझे और कुछ नहीं दीख पड़ा। हाँ, खिड़की से बाहर जाती हुई प्रकाश किरणों के बीच बरसते हुए पानी की झलक भी मुझे मिली। हूँ, तो यह बात थी—मैंने सोचा—बच्चा मर गया। इसीलिए डाक्टर इतना थका हुआ लग रहा था। किन्तु फिर उसने कमरे में उसे थपथपाया क्यों? शायद यह सोचकर कि वैसा करने से वह ठीक हो जाएगा, साँस लेने लगेगा। मेरा अपना कोई धर्म नहीं है।

मैं किसी धर्म में विश्वास नहीं रखता; तो भी इतना मैं जानता हूँ कि उसका जन्म-संस्कार होना चाहिए था। परन्तु जब उसने अपने जीवन की पहली साँस तक नहीं ली, तो फिर जन्म-संस्कार का महत्त्व ही क्या होता? एक साँस भी नहीं चली उसकी। क्षणभर भी जीवित नहीं रहा वह। हाँ, कैथरीन के गर्भ में वह अवश्य जीवित था। मैंने उसे कई बार गर्भ में पैर फटकारते हुए महसूस किया था। किन्तु गत एक सप्ताह से कदाचित् गर्भ में भी उसकी हलचल बन्द हो गई थी। हो सकता है, इन सात दिनों तक गर्भ में ही उसकी साँस घुटती रही हो। बेचारा अभागा नन्हा शिशु! मेरे मन में एक विचित्र-सी इच्छा उठी कि ठीक इसी प्रकार मेरा भी दम घुटे, मेरी भी साँस रुके—मैं भी तड़पूँ। किन्तु, नहीं-नहीं, मैं ऐसा नहीं चाहता। और यदि ऐसा हुआ भी, यदि मेरा साँस भी ऐसे ही रुक गई, तो मुझे इस प्रकार मृत्यु की असह्य यातना तो नहीं भुगतनी पड़ेगी। बच्चा मर गया! अब कथरीन मर जाएगी! सब के साथ—समस्त विश्व के साथ—यही तो होता है। प्रत्येक व्यक्ति मरता है—मैं, आप, सभी मर जाते हैं। आप मर जाते हैं और आपको पता भी नहीं चलता कि आप क्यों मर गए? आपको इतना समय भी नहीं मिलता कि आप अपनी मौत का कारण जान सकें। संसार में आपको ढकेल दिया जाता है; जीवन के सभी नियमों से आपको अवगत करा दिया जाता है और जहाँ आप पहली बार ही चूके, कि बस, आपकी मौत हुई। या फिर आयुर्वों की भाँति निष्कारण ही आपको मरना पड़ता है अथवा रिनाल्डी के समान उपदंश रोग से भी आप असह्य यातना सहते हुए मर सकते हैं। जैसे भी हो, यह तो निश्चित है कि अन्ततः आपको मृत्युदण्ड मिलेगा ही। यह निश्चित समझिए, इस पर विश्वास रखिए—प्रतीक्षा कीजिए और देखिए कि यह दुनिया आपकी जान लेती है या नहीं!

एक बार सैन्य-शिविर में मैंने आग में एक लकड़ी का ठूँठ रख दिया था। उस ठूँठ में चींटियों-ही-चींटियाँ भरी थीं। लकड़ी का वह ठूँठ जलने लगा। चींटियाँ झुण्ड-के-झुण्ड में रेंगती हुई पहले उस के मध्यभाग पर पहुँचीं, जहाँ से वह आग में जल रही थी। उसके तुरत बाद ही जब सब-की-सब चींटियाँ इकट्ठी हो गईं, तो वे आग में गिर पड़ीं। उनमें से कुछ बाहर भी निकल आईं। उनके शरीर आग में झुलसकर चपटे हो गए। वे बिना समझे-बूझे जिसे जहाँ राह मिली, उसी ओर भागने लगीं। किन्तु बहुत-सी चींटियाँ आग की ओर ही भागीं। वे फिर वहाँ से लौटीं और लकड़ी के उस ठूँठ के सिरे की ओर भागीं। अन्त में ठूँठ के ठण्डे छोर पर इकट्ठी होकर वे नीचे गिर गईं

और आग में जल मरीं। मुझे अब भी याद है कि उस समय मेरे दिमाग में कैसे विचार उठे थे। मैंने सोचा था कि अब विश्व का अन्त आ पहुँचा है। मसीहा बनने का एक सुन्दर मौका मिला है मुझे—और उसी धुन में मैंने इरादा किया कि ठूँठ को आग से निकालकर बाहर फेंक दूँ, जिससे चीटियाँ उसमें से निकलकर ज़मीन पर चली जायें। किन्तु मैंने ऐसा किया नहीं। किया केवल इतना ही कि अपने टीन के डब्बे का पानी ठूँठ पर फेंक दिया। मेरे इस कार्य में भी ठूँठ को बुझाकर, चीटियों को बचाने की इच्छा नहीं थी; बल्कि डब्बा खाली करके उसमें व्हिस्की उड़ेलने की इच्छा थी, जिससे मैं पानी में शराब मिलाने के स्थान पर शराब में पानी मिला सकूं। मेरी समझ में धधकते हुए ठूँठ पर पानी डालने से चीटियों के प्राण बचने के बदले वे उस पानी की भाप में और भी भुन गई होंगी।

हाँ, अब मैं बरामदे में बैठा हुआ इस समाचार की प्रतीक्षा कर रहा था कि कैथरीन कैसी है। परिचारिका कोई समाचार लेकर न आयी, अतः कुछ समय के बाद मैं स्वयं द्वार पर पहुँचा। धीरे से द्वार खोलकर मैंने भीतर झाँका। क्षणभर तो मैं कुछ भी न देख सका; क्योंकि मैं बरामदे से कमरे में आया था। बरामदे में तीव्र प्रकाश था; किन्तु कमरे में अंधेरा छाया था। आँखों के अभ्यस्त होते ही मैंने देखा कि बिस्तर के पास परिचारिका बैठी थी। चादर में लिपटी हुई कैथरीन बिछौने पर चित होकर लेटी थी। उसका सिर एक तकिये पर रखा था। मुझे देखकर परिचारिका ने होठों पर उँगली रखते हुए मुझे चुप रहने का संकेत किया और चुपचाप उठकर दरवाज़े पर आ गई।

"कैसी है वह?" मैंने पूछा।

"ठीक है।" नर्स बोली—"आप जाकर खाना खा लीजिये और उसके बाद यदि आपकी इच्छा हो, तो यहाँ चले आइये।"

बरामदा पार कर सीढ़ियाँ उतरता हुआ, मैं अस्पताल के दरवाज़े से बाहर आया और बरसात की झड़ी के बीच काली-अंधियारी सड़क को पार करते हुए कॉफे में घुसा। तीव्र प्रकाश में कॉफे का कोना-कोना जगमगा रहा था। मेज़ों के आसपास बहुत से व्यक्ति बैठे थे। मुझे बैठने के लिए कोई स्थान नहीं दिखाई दिया। तभी एक खानसामा ने आकर मेरा गीला कोट और टोप ले लिया। उसने मुझे एक प्रौढ़ मनुष्य के पास एक मेज़ के निकट बैठने का स्थान दिखाया। मैं वहाँ पहुँचा। प्रौढ़ व्यक्ति बीअर पीते हुए सायंकालीन दैनिकपत्र पढ़ रहा था। मैं वहीं बैठ गया।

"आज का विशेष पदार्थ क्या है?" मैंने खानसामा से पूछा।

"धीमी आँच में पकाया हुआ बछड़े का माँस—किन्तु वह खतम हो चुका है।"

"खाने के लिए और क्या मिल सकता है?"

"रान और अंडे, अंडे और पनीर या मसालेदार गोभी।"

"मसालेदार गोभी तो मैं दोपहर को खा चुका हूँ।" मैंने कहा।

"हाँ।" वह बोला—"ठीक कहते हैं आप। दोपहर में आपने मसालेदार गोभी खाई थी।" खानसामा एक प्रौढ़ व्यक्ति था। उसके सिर का ऊपरी भाग गंजा था। उस गंजे भाग पर उसके छितपुट केश चमक रहे थे। उसके मुख से उदारता टपक रही थी।

"आपको क्या चाहिए? रान और अण्डे अथवा अण्डे और पनीर?"

"रान और अण्डे लाओ।" मैंने कहा—"और बीअर भी।"

"साधारण पीले रंगवाली?"

"हाँ।" मैंने कहा।

"मुझे याद है।" वह बोला—"दोपहर को भी आपने साधारण पीले रंगवाली बीअर ली थी।"

मैंने रान का माँस और अण्डे खाना शुरू किया। उसी के साथ मैं बीअर भी पी रहा था। रान और अण्डे एक गोल रकाबी में लाए गए थे—नीचे रान का टुकड़ा था और उसके ऊपर थे अण्डे। दोनों वस्तुएँ बहुत गरम थीं। पहला ग्रास मुँह में रखते ही मेरा मुँह जल गया। उसे ठंडा करने के लिए मुझे बीअर पीनी पड़ी। मैं बहुत भूखा था, अतः मैंने तब तक खानसामा को अन्य वस्तुएँ लाने का आदेश दिया। बीअर के कई गिलास मैंने बैठे-बैठे खाली कर दिए और अपने-आपको कुछ समय के लिए चिन्तामुक्त कर लिया। खाते-खाते, मैं अपने सामने बैठे हुए उन प्रौढ़ महानुभाव का दैनिक पत्र पढ़ता रहा। समाचार ब्रिटिश मोर्चे के टूट जाने के सम्बन्ध में था। जब उन प्रौढ़ महाशय को अनुभव हुआ कि मैं पीछे से उनका दैनिकपत्र पढ़ रहा हूँ, तो उन्होंने उसे मोड़ लिया। मैंने खानसामा को पत्र लाने का आदेश देना चाहा; किन्तु मेरा मन बड़ा अस्थिर था, अतः मैं दत्तचित्त होकर पत्र नहीं पढ़ सकता था। कॉफे में बड़ी उमस थी। वहाँ बैठे हुए बहुत-से व्यक्ति एक-दूसरे से परिचित थे। जहाँ-तहाँ लोग ताश खेल रहे थे। खानसामे शराब पीने के कमरे से अलग-अलग मेज़ों पर शराब लाने में व्यस्त थे। इसी बीच, दो व्यक्ति और आये। उन्हें

बैठने के लिए कोई स्थान नहीं मिला, अतः वे मेरे सामने की मेज़ के पास आकर खड़े हो गए। मैंने खानसामा को और बीअर लाने के लिए कहा। मैं अभी कॉफे छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहता था। इतने शीघ्र अस्पताल लौट जाने की मेरी बिलकुल इच्छा नहीं थी। मैंने चिंताओं से दूर रहने का प्रयत्न किया। मैं चाहता था कि कुछ क्षण बिलकुल शांतिपूर्वक स्थिरचित्त होकर बैठा रहूँ। दोनो नवागत व्यक्ति मेज के पास खड़े रहे; किन्तु उन्हें किसी भी व्यक्ति के उठकर जाने के लक्षण नहीं दिखाई दिये, अतः वे स्वय ही बाहर चले गए। मैंने एक गिलास बीअर और पी। मेज़ पर मेरे सामने अब रकाबियो का एक बड़ा ढेर इकट्ठा हो गया था। मेरे सामने बैठे हुए व्यक्ति ने अपना चश्मा उतारकर उसे चश्मा रखने के डिब्बे में रख लिया। अखबार मोड़कर उसने उसे अपनी जेब मे ठूँस लिया और शराब का गिलास लेकर इतमीनान से बैठ गया। बैठे-बैठे वह कमरे मे चारो ओर दृष्टि दौड़ाता रहा। अचानक मुझे खयाल आया कि मुझे लौटना है। मैंने खानसामा को बुलाया, पैसे चुकाए, कोट पहना, टोप लगाया और द्वार से बाहर निकला। वर्षा मे पैर बढ़ाते हुए मैं अस्पताल पहुँचा।

ऊपर चढ़ते ही बरामदे में, परिचारिका से मेरी भेंट हो गई। वह मेरी ही ओर बढ़ी चली आ रही थी।

"मैंने अभी आपके होटल में फोन किया था।" वह बोली। सुनकर, मेरा हृदय बैठ गया।

"क्या बात है?"

"श्रीमती हैनरी को अभी-अभी रक्तस्राव होने लगा है।"

"क्या मैं भीतर जा सकता हूँ?"

"नहीं, अभी नहीं। डाक्टर उनकी जाँच कर रहे हैं।"

"क्या इसमे कोई खतरा है?"

"बहुत बड़ा खतरा है।" और वह कमरे में घुस गई। उसने द्वार बन्द कर लिया। मैं बाहर बरामदे में बैठ गया। मेरे सारे शरीर मे मानो कुछ रहा ही नहीं—एक शिथिलता सी व्याप्त हो गयी। मुझे कुछ नहीं सूझ रहा था। मैं कुछ नहीं सोच पा रहा था। मैं समझ गया कि कैथरीन अब नहीं बचेगी—मर जाएगी, अब मेरी केट। मैं मन-ही-मन प्रार्थना करने लगा कि वह मरने न पाये। मूक स्वर में मेरी आत्मा विनती करने लगी—"भगवान, उसे जीवन दान दे। हे प्रभु, उसे मृत्यु के मुख से बचा। यदि तू मेरी केट को जीवित रहने

देगा, तो मैं तेरे प्रत्येक आदेश का पालन करूँगा। जगत्पिता, मेरे ऊपर कृपा कर। दया, दया, मेरे प्रभु! मै तुझसे दया की भीख माँगता हूँ। मेरे हृदय की धड़कन को, मेरे जीवन की श्वास को, मेरी कोमल केट को, मुरझाने से बचा ले, भगवन्! उसे मृत्यु पथ से लौटा दे। यदि तू इस बार मुझे उसके प्राणों की भिक्षा दे देगा, तो जो तू कहेगा मैं वही करूंगा—जिस राह चलायेगा, उसी राह चलूँगा। तूने हमारे नन्हें मृगशावक-जैसे लाल को हमसे छीन लिया। अब उसकी माँ पर रहम कर मसीहा, उसे मुझसे मत छीन। तूने बच्चे को अपने पास बुला लिया, किन्तु अब मेरी जीवनसंगिनी को मुझसे मत छीन! कृपा कर मसीहा—दया कर मुझ पर! मेरी कैथरीन को मृत्यु से छुटकारा दिला—उसे मरने से बचा!"

अचानक परिचारिका ने द्वार खोला। उसने इशारे से मुझे भीतर बुलाया। मैं उसके पीछे-पीछे कमरे में घुसा। जब मै भीतर पहुँचा, तो कैथरीन मेरी ओर आँख उठाकर देख भी नहीं सकी। मै उसके पास पहुँचा। पलग के दूसरी ओर डाक्टर खड़ा था। धीरे-धीरे कैथरीन ने मेरी ओर देखा और उसके होंठों पर एक फीकी मुस्कान बिखर गई। मै उसके सिरहाने झुक गया। मेरे दुःख का बाँध टूट गया और मै ज़ोर से रो पड़ा।

"पागल कहीं के—भोले प्राण मेरे!" कैथरीन बड़े कोमल स्वर में बुदबुदाई। वह किसी मुरझाई हुई कली के समान निष्प्राण प्रतीत हो रही थी।

"तुम ठीक हो, केट।" मैं सिसका—"तुम ठीक हो जाओगी—बिलकुल।"

"नहीं प्राण, मैं अब नहीं बचूँगी।" वह बोली। उसकी साँस फूल गई। कुछ रुककर उसने फिर कहा—"मै मृत्यु से घृणा करती हूँ—नफ़रत करती हूँ उससे।"

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"मुझे छुओ मत।" वह बोली। मैंने उसका हाथ छोड़ दिया। वह मुस्कराई—"नहीं, नहीं, मेरे निस्सहाय प्रियतम! तुम जहाँ चाहो, वहाँ मुझे छू सकते हो—जितना चाहो, उतना स्पर्श कर सकते हो मेरा।"

"तुम ठीक हो जाओगी, केट मेरी। मै जानता हूँ तुम स्वस्थ हो जाओगी।"

"यदि कुछ हो जाता, तो मैं अपनी स्मृति-स्वरूप तुम्हारे लिए एक पत्र लिखकर रखनेवाली थी; किन्तु मैंने ऐसा नहीं किया।"

"क्या तुम चाहती हो कि मै तुम्हें देखने के लिए किसी पादरी अथवा किसी अन्य व्यक्ति को बुलाऊँ?"

"नहीं, केवल तुम्हीं रहो मेरे पास। बस, तुम—अन्य कोई नहीं!" क्षणभर मौन रहने के बाद उसने पुनः कहा—"मैं मृत्यु से डरती नहीं हूँ—उससे केवल घृणा करती हूँ—तीव्र घृणा!"

"आपको इतना अधिक नहीं बोलना चाहिए।" डाक्टर ने कहा।

"ठीक है।" कैथरीन ने एक ठंडी साँस छोड़ी।

"मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ, केट? क्या इच्छा है तुम्हारी? बोलो, मैं उसे हर सम्भव-असम्भव उपाय से पूरा करूँगा।"

वह मुस्करायी—"कुछ नहीं, प्रियतम। कुछ नहीं।"

क्षणभर के लिए फिर स्तब्धता छा गई। कैथरीन ने क्षीण स्वर में कहा—"मुझे वचन दो कि तुम किसी अन्य लड़की के साथ उसी प्रकार की प्रेम-क्रीड़ाएँ नहीं करोगे, जैसी हम दोनों ने की हैं या उन्हीं बातों को नहीं दुहराओगे जो हमारे-तुम्हारे बीच हुई हैं। बोलो, कर सकोगे इतना?"

"मैं वचन देता हूँ। मेरे जीवन में कभी कोई लड़की तुम्हारा स्थान नहीं पा सकेगी।"

"यद्यपि मैं यह चाहती हूँ कि लड़कियाँ तुम्हारे जीवन में आती रहें।"

"ना, मुझे इस जीवन में अब किसी लड़की के सम्पर्क की कामना नहीं है।"

"आप बहुत बातें कर रहे हैं।" डाक्टर बोला—"इस तरह आप बातें नहीं कर सकते। आपको बाहर चले जाना चाहिये, श्री. हैनरी! यदि आप चाहें, तो बाद में, फिर आ सकते हैं। आप मरेंगी नहीं, श्रीमतीजी। ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें नहीं करनी चाहिए आपको।"

"अच्छा है।" कैथरीन बुझे हुए स्वर में बोली—"मैं रात्रि की निस्तब्धता में सदा तुमसे मिलने आया करूँगी, प्राण।" उसे अब बातें करने में बड़ी तकलीफ़ हो रही थी।

"कृपया आप इसी क्षण कमरे से बाहर चले जाइये।" डाक्टर ने मुझे डाँटते हुए कहा। कैथरीन ने मुझे आँखों के द्वारा जाने का संकेत किया। उसका चेहरा धूमिल हो गया था। "मै बाहर कमरे के पास ही रहूँगा।" मैं बोला।

"चिन्ता मत करो प्राण!" कैथरीन बोली—"मैं मृत्यु से तनिक भी भय-भीत नहीं हूँ। तनिक भी नहीं डरती उससे। मौत तो बस एक घृणास्पद छलावा है।"

"मेरी प्रियतमा—मेरी निर्भीक मधुर केट!"

मैं बाहर दालान में जाकर प्रतीक्षा की घड़ियाँ गिनता रहा। न-जाने कब तक मैं उसी प्रकार बैठा रहा। एक लम्बे समय के बाद परिचारिका द्वार से निकल कर मेरे पास आयी।

"मुझे भय है कि श्रीमती हैनरी की तबीयत बहुत खराब है। कहीं वे..."

"क्या हुआ! मर गई वह?"

"नहीं; किन्तु इस समय वे बेहोश पड़ी हैं?"

कदाचित् उसे बार-बार रक्तस्राव होता रहा। अस्पताल के डाक्टर उस रक्तस्राव को बन्द नहीं कर सके। मैं कमरे में पहुँचा और कैथरीन की अन्तिम साँस टूटने तक उसके पास ही रहा। मृत्यु-पर्यन्त उसकी चेतना नहीं लौटी; पर उसकी मृत्यु में अधिक देर नही लगी।

कमरे के बाहर बरामदे में आकर मैंने डाक्टर से पूछा—"क्या आज रात मेरी यहाँ ज़रूरत है?"

"नहीं, अब कुछ करने को बाकी नहीं रह गया है। क्या मैं आपको आपके होटल तक पहुँचा दूँ?"

"जी नहीं, धन्यवाद। मैं कुछ समय तक यहीं ठहरूँगा।"

"मैं जानता हूँ कि कहने के लिए भी अब कुछ नहीं बचा है। मै आपसे क्या बताऊँ कि...।"

"नहीं।" मैंने कहा—"कुछ बताने लायक है ही नहीं अब।"

"अच्छा, मैं चलूँ फिर।" उसने कहा—"होटल तक पहुँचा दूँ आपको?"

"जी नहीं, धन्यवाद।"

"प्रसव का बस एक यही रास्ता था।" वह बोला—"शल्यक्रिया तो...।"

"मैं उस विषय में बात नहीं करना चाहता।" मैं झुँझलाया।

"मै आपको अपने होटल तक छोड़ आना चाहता था।"

"जी नहीं। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।"

वह बरामदा पार करता हुआ चला गया। मैं कमरे के द्वार पर पहुँचा।

"अब आप भीतर नहीं आ सकते।" एक परिचारिका ने कहा।

"क्यों नहीं, अवश्य आ सकता हूँ।" मैं बोला।

"मैं कहती हूँ कि आप भीतर नहीं आ सकते अभी।"

"मैं कहता हूँ निकल जाओ तुम। हटो, जाओ बाहर।" मैं चिल्लाया—

"और तुम भी! चलो, भागो यहाँ से।" मैं दूसरी परिचारिका पर बिगड़ा।

दोनों परिचारिकाओं को कमरे से बाहर निकालने के बाद मैंने कमरे के द्वार बन्द कर लिए। मैंने सभी बत्तियाँ बुझा दीं। किन्तु अब इस सब से क्या लाभ था? कैथरीन तो चली गयी थी। उसका मृत शरीर-भर मेरे सामने था। उससे विदा लेना किसी प्रस्तर-मूर्ति से विदा लेने के समान ही था। मैं कुछ क्षणों तक कमरे के उस गहन अन्धकार में अपने मन की शान्ति—अपनी मधुर केट को—खोजता रहा। फिर मै बाहर निकल आया और अस्पताल की ओर एक नज़र डाल, उस बरसते हुए पानी में ही अपने होटल की ओर चल पड़ा—।